Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पालि जातक एक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पालि जातक एक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

364

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

State Museum Library Lucknow 7127

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो॰ बी एन॰ पुरी संग्रह
लखनऊ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूज्यनीय

गुरूवर डा० बी० एन० पुरी

जी को सादर समर्पित

शिष्या:

कृष्णा श्रीवास्तव

11.3.85.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

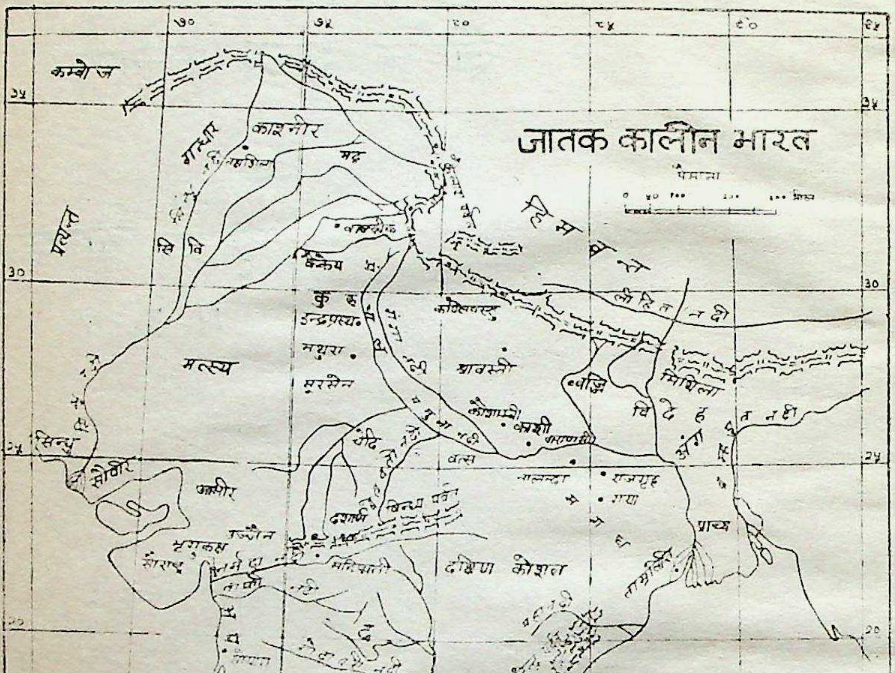

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

पालि जातक—एक सांस्कृतिक अध्ययन

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी संग्रह
लखनऊ

लेखिका
डॉ० कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव

State Museum Library
7127
Lucknow

प्रकाशक
सुलभ-प्रकाशन
लखनऊ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकाशक
सुलभ-प्रकाशन
१७ अशोक मार्ग,
लखनऊ

●

संस्करण : प्रथम १९८४

●

मूल्य १००) रु०

●

मुद्रक
वर्द्धमान मुद्रणालय
जवाहरनगर कालोनी, वाराणसी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समर्पण

पूज्यनीय,

गुरुवर डा. अँगने लाल जी, माता जी एवं पिता जी एवं स्वर्गीय पति श्री कृष्ण कान्त राय जी को सादर समर्पित ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का वैभव बताने वाले आकर ग्रन्थ जातक एवं महाभारत हैं। लोक जीवन के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से जातकों का महत्त्व बढ़ जाता है। लोक जीवन के प्रायः सम्पूर्ण पक्ष प्रस्तुत करते हुए उसे परार्थता की भावना से अनुप्राणित करना और जीवन को नैतिक आधार प्रदान करना जातकों की विशेषता है। यह बड़े सन्तोष की बात है कि सुश्री कृष्णा कुमारी ने अपने ग्रन्थ द्वारा जातक के उन सभी पक्षों को उजागर किया है। तत्कालीन भारतीय संस्कृति, भारतीय जीवन एवं समाज की मूल प्रवृत्तियों को समझने के लिए कृष्णा कुमारी का यह ग्रन्थ बहुत ही सहायक सिद्ध होगा। जातकों में वर्णित सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के अनेकानेक पक्षों पर स्वतन्त्र रूप से अध्ययन एवं शोध किया जाना चाहिए। इस प्रकार के कार्य के लिए यह ग्रन्थ मार्ग प्रशस्त करता करता है। वास्तव में यही इस ग्रन्थ की सफलता है। अवश्य ही इस ग्रन्थ के द्वारा भारतीय संस्कृति के अध्ययन के लिए डॉ० कृष्णा कुमारी ने हिन्दी साहित्य की आवश्यक पूर्ति की है।

जगन्नाथ उपाध्याय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूमिका

जातकों के अध्ययन से प्राप्त मूल सामग्री के आधार पर ही इस शोध-ग्रन्थ का प्रणयन किया गया है। जातकों में भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मों से सम्बन्धित कथाएँ हैं, जब वे बोधिसत्त्व के रूप में अवतरित होकर बहुजनहित और बहुजन सुख के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करते रहे। बोधि का अर्थ बुद्धत्व और सत्त्व का अर्थ प्राणी होता है। इस प्रकार बोधिसत्त्व का अर्थ बुद्धत्व प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील प्राणी है। जातकों में भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मों से सम्बन्धित रोचक कथाएँ हैं जिनसे ज्ञात होता है कि उन्होंने बुद्धत्व प्राप्ति के पूर्व ५५० बार जन्म लेकर दस पारमिताओं का आचरण करके लोक कल्याण किया था।

ये जातक कथाएँ जहाँ एक ओर बौद्ध साहित्य की प्रमुख अंग हैं वहीं दूसरी ओर वे विश्व की प्राचीनतम कथाएँ भी मानी जाती हैं। जातक कथा-संग्रह विश्व में सबसे बृहत् कथा-संग्रह भी है, जिसे कथा-कहानियों का समृद्ध कोष माना जाता है। भारतीय जीवन का कोई पहलू ऐसा नहीं, जिसका वर्णन इन कथाओं में न मिलता हो। इसलिए प्राचीनकाल के इतिहास के लिए इन मूल्यवान कथाओं का अपना महत्व है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के इतिहास के अध्ययन के लिए भी इन जातकों का अध्ययन अपरिहार्य और अनिवार्य है। इसीलिए इस कथा सागर के कुछ रत्नों को खोजने और विद्वत् समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

जातक साहित्य पर कई विद्वानों ने लेखनी चलाई है—महोदय टी० डब्ल्यू राईस डेविड्स प्रथम हैं, जिन्होंने "बुद्धिष्ट इण्डिया" ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रंथ सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य (पालि बौद्ध साहित्य) पर आधारित था, इसीलिए जातकों में बहुवर्णित सामग्री को पूर्णरूपेण इस ग्रन्थ के द्वारा प्रकाश में नहीं लाया जा सका। श्रीमती राईस डेविड्स ने भी "बुद्धिष्ट बर्थ स्टोरीज" का सम्पादन किया जिसमें केवल कथाएँ ही दी गई थीं।

कालान्तर में डॉ० रतीलाल मेहता ने "प्री बुद्धिष्ट इण्डिया" नामक शोध ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में जातकों के साथ-साथ महाभारत और रामायण की सामग्री का समावेश किया गया है। इसीलिए इस ग्रन्थ में भी जातकों का समुचित मूल्यांकन नहीं किया जा सका।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डॉ० रिचर्ड फिक द्वारा प्रणीत ग्रन्थ ''दि सोशल आर्गेनाइजेशन इन नार्थ ईस्ट इण्डिया'' में जातक-कथाओं की एक झलक सी दृष्टिगोचर होती है। इस ग्रन्थ पर एक विहंगम दृष्टि डालते हुए मैंने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जातक-कथाओं की सम्पूर्ण सामग्री को ध्यान में रखते हुए प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में पण्डित मोहनलाल महतो 'वियोगी' जी ने ''जातक कालीन भारतीय संस्कृति'' नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया, परन्तु यह ग्रन्थ जातकों में वर्णित भारतीय संस्कृति का सर्वांगीण चित्र प्रस्तुत नहीं करता। यही नहीं सामाजिक दशा का जो विवरण वियोगी जी ने दिया है वह जातक सामग्री पर कम किन्तु बाह्य सामग्री पर अधिक आधारित है। साथ ही इस ग्रंथ में इतिहास, कला, आयुर्वेद आदि विषयों की उपेक्षा की गई है। उपर्युक्त कमियों को दूर करने के लिए एक ऐसे शोध-ग्रन्थ की आवश्यकता थी जिसमें जातकों में निहित सम्पूर्ण सामग्री को प्रकाश में लाया जा सके। इसीलिए मैंने ''पालि जातक—एक सांस्कृतिक अध्ययन'' विषय चुना। इन जातकों में पालि जातक के साथ-साथ उनकी अट्ठकथाएँ भी सम्मिलित हैं। स्पष्टतः ईसवी सन् के बाद संस्कृत में लिखित जातक कथाएँ ही इस शोध ग्रन्थ की अध्ययन परिधि में समाहित नहीं हैं।

जातकों के विभिन्न प्रकाशन और संस्करण हुए हैं जिनका विस्तृत विवेचन इस शोध ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में ही कर दिया गया है। इस शोध ग्रंथ के लिए मैंने मुख्य रूप से फोसवाल द्वारा सम्पादित और पालि टैक्सट् सोसाइटी लन्दन द्वारा प्रकाशित रोमन संस्करण, ई० बी० कावेल द्वारा इंगलिश अनुवाद तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित भदन्त आनन्द कौसल्यायन हिन्दी अनुवाद को आधार बनाया है। प्रस्तुत शोधग्रन्थ निम्नलिखित दस भागों में विभक्त है—

प्रथम अध्याय में जातकों का महत्त्व दर्शाया गया है। साथ ही उनकी अट्ठकथाओं का भी वर्णन किया गया है।

दूसरे अध्याय में भौगोलिक सामग्री का समावेश है। जातक साहित्य से प्राचीन भूगोल पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। जातकों में पृथिवी इसके चातुर्द्वीप, देश-विभाग जनपदों, गणराज्यों (लिच्छवि, कोलिय और शाक्य) नगरों-ग्रामों, पर्वतों, वनों और नदियों का विस्तार से महत्व दर्शाया गया है।

महापृथिवी दस सहस्र ब्रह्माण्डों से युक्त और महासमुद्रों से आवृत्त थी। मध्य देश के व्यापारी और विचारक उत्तरापथ को जाते रहते थे। इसी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकार दक्षिणापथ से भी लोग उत्तरापथ और पुब्बन्त (पूर्वदेश) में आते-जाते रहते थे।

पृथिवी को चार महाद्वीपों में विभक्त बताया गया है। कालान्तर में अश्वघोष आदि विद्वानों ने पृथिवी के सात द्वीपों का भी उल्लेख किया है जिनकी पुष्टि पुराणों से भी होती है। इन चारों द्वीपों में जम्बूद्वीप, पूर्वविदेह, अपरगोयान, कुरुद्वीप या उत्तरकुरु थे। इन महाद्वीपों के अतिरिक्त कारद्वीप, ताम्रपर्णी, नागद्वीप, नारिकेल द्वीप, सिंहल द्वीप और सेरुम द्वीप आदि का उल्लेख मिलता है। इनमें से केवल जम्बूद्वीप का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। यद्यपि कालान्तर में पौराणिक भुवनकोष में भारतवर्ष को जम्बूद्वीप का एक भाग (वर्ष) बताया गया है परन्तु जातक साहित्य में जम्बूद्वीप का तात्पर्य भारत से ही है। भारत के दिग्विभागों उत्तरापथ, दक्षिणापथ, अपरान्त, पूर्वदेश तथा मध्यदेश (मज्झिमदेश) में विभक्त किया गया था। इसी बीच में १६ महाजनपद और १० गणराज्य भी स्थित थे। इसी अध्याय में नगर निगम और ग्रामों, पर्वतों, वनों और नदियों का वर्णन किया गया है।

तीसरे अध्याय में ऐतिहासिक सामग्री का वर्णन किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह साहित्य महत्वपूर्ण है। इस साहित्य से राजाओं और उनके विशाल राज्यों का पता चलता है। जातकों में मान्धाता वंश की पूरी तालिका प्राप्त होती है। महाकंस वंश तथा महासागर वंश का सम्बन्ध भी दिखाया गया है। शिवि जातक से राजा शिवि के महादान का पता चलता है। शाक्यवंशी तालिका में महाराजा शुद्धोदन तथा उनके पुत्र सिद्धार्थ गौतम का उल्लेख मिलता है। कोशल राज प्रसेनजित का इतिहास प्रसिद्ध ही है। बिम्बिसार तथा अजातशत्रु मगध के इतिहास में उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त पंचाल के शासक, वाराणसी के शासक और अन्य शासकों का वर्णन ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

चौथे अध्याय में जातक साहित्य से उपलब्ध राजतन्त्र और शासन-पद्धति का वर्णन किया गया है। राजत्व का उदय, राजवृत्ति, राजधर्म (दस राजधर्म प्रमुख थे), युवराज, अग्रमहिषी, अमात्यगण, बल, कोश, पुर, जनपद (राष्ट्र), मित्र आदि राज्यांगों का विवरण मिलता है। सैन्य संचालन, मन्त्री और अमात्यों की योग्यता और कार्यपद्धति व उपाय, नीति का वर्णन भी प्राप्त होता हैं। शासन संचालन दो प्रकार का था—राजतन्त्रात्मक और गणतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था में श्रेणियों, निगमों और संघों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान था। शासनाभार प्रायः राजपुरुषों के कन्धों पर ही आधृत था। राजा चक्रवर्ती चतुरन्त विजेता के लिए भगवान् बुद्ध के अनुसार धार्मिक धर्मराज होना चाहिए था।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाँचवाँ अध्याय सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है। सामाजिक जीवन में चतुवर्णव्यवस्था , वर्णावर्ण विचार, गोत्र-प्रवर, आश्रम, संस्कार, आवाह-विवाह, स्त्रियों की दशा, भोजन और पेय, वस्त्राभूषण और शृंगार, आमोद-प्रमोद तथा सामाजिक दोषों का वर्णन किया गया है। सामान्यतः तत्कालीन समाज पर्याप्त उन्नति पर था। लोग अच्छे-अच्छे वस्त्र (काशिकानि) पहनते थे जिनका मूल्य एक लाख के बराबर होता था। ये लोग नाना प्रकार के सुगन्धित द्रव्यों और आभूषणों का प्रयोग भी करते थे। केश-सज्जा प्रचलित थी। स्त्रियाँ सुखी और सुशिक्षित पण्डिता होती थीं। समाज में उनका ऊँचा स्थान था। परन्तु इतना कुछ होते हुए भी उनमें दोष भी थे।

छठे अध्याय में धर्म और दर्शन का विवरण दिया गया है। ब्राह्मण धर्म तथा उसके विभिन्न सम्प्रदायों—शैव, वैष्णव आदि का वर्णन किया गया है। यज्ञों तथा देवी-देवताओं का भी वर्णन किया गया है। भगवान् बुद्ध के जीवन की एक झलक दी गई है। बौद्ध धर्म का मानव के लिए महत्व तथा सभी सम्प्रदायों का विवेचन यहाँ किया गया है। बौद्ध धर्म से सम्बन्धित देवी-देवताओं का भी उल्लेख मिलता है। बौद्ध धर्म के प्रमुख सिद्धान्त प्रतीत्य समुत्पाद, दो अन्त और मध्यम मार्ग, चार आर्य सत्य, आर्य अष्टांगिक मार्ग, पंचशील, अष्टशील, त्रिरत्न, दस पारमिताओं का विस्तृत विवरण दिया गया है। जातक साहित्य से जैनधर्म पर भी यत्र-तत्र प्रकाश पड़ता है। जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर का उल्लेख हुआ है। साधारण जन लौकिक धार्मिक विश्वासों को मानते थे। उन्हें स्वर्ग-नरक, नाग, यक्ष, गरुड़, वृक्ष, नदी, पर्वत, दिशा आदि की पूजा पर भी विश्वास था। बोधि वृक्ष एवं स्तूपों की भी पूजा होती थी।

सातवें अध्याय में आर्थिक जीवन पर प्रकाश डाला गया है। अर्थ और उसका महत्व, कृषि-कार्य, पशु-पालन, शिल्पी एवं उनके संघ, उद्योग-धन्धे, व्यापार, विनिमय और सिक्के, मार्गों और व्यापारिक सम्बन्धी महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। रत्नद्वीप और ताम्रपर्णी आदि देशों से घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध था। ये लोग पण्य लेकर विदेशों में जाते थे और वहाँ से बहुमूल्य सामग्री लाते थे। इस प्रकार नाना प्रकार की सामग्री लेकर व्यापारी आवश्यकतानुसार सामान लेकर दूर-दूर तक जाते रहते थे। बाहर से भी आवश्यक सामान मँगाया जाता था। इन व्यापारिक यात्राओं में विभिन्न प्रकार की बाधाएँ भी उपस्थित होती थीं। स्थलीय व्यापार में लुटेरों और डाकुओं का भय बना ही रहता था। समुद्री यात्राओं में जल जीवों द्वारा जलयान के टूटने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का बराबर भय बना रहता था। कभी-कभी आँधी तूफान के कारण जलयानों को एक ही स्थान पर रुकना पड़ता था।

आठवें अध्याय में शिक्षा और उसके केन्द्र का विवरण दिया गया है। शिक्षा साहित्य का उद्देश्य अज्ञानान्धकार को दूर करना था। गुरुकुलों में गुरु-शिष्य सम्बन्ध मधुर थे। पाठ्य विषयों में जहाँ धार्मिक शिक्षा का महत्व था वहीं लौकिक-जीवनोपयोगी शिक्षा भी दी जाती थी। राजकुमारों का अस्त्र-शस्त्र चलाने उनसे बचाव की तथा हस्ति और अश्व पर सवार होने की भी शिक्षा दी जाती थी। ये शिष्य गुरुजनों को शुल्क भी प्रदान करते थे। गरीब शिष्य शुल्क के बदले सेवा-सुश्रूषा करके उसकी पूर्ति करते थे। वे आचार्य के होम-पूजन के लिए लकड़ी और पत्र-पुष्प लाते थे। जातकों के अध्यन से ज्ञात होता है कि तक्षशिला, श्रावस्ती, वाराणसी, शिक्षा केन्द्र सर्वाधिक प्रसिद्ध थे। इसी अध्याय में साहित्य और साहित्यकारों का भी विवेचन किया गया है। जातकों के अध्ययन से उस समय की शिक्षा की स्थिति का स्पष्ट चित्र प्राप्त होता है।

नवें अध्याय में आयुर्वेद और चिकित्सा का वर्णन किया गया है। चिकित्सा जगत् को जातक साहित्य की बहुत बड़ी देन है। उस युग में वैद्यकशास्त्र का विशेष महत्व था। वैद्य कुशल होते थे, वे उपचार के बदले में शुल्क लेते थे। शल्य चिकित्सा भी पर्याप्त उन्मत दशा में थी। नाना प्रकार के रोगी और उनके उपचारों का विवरण भी प्राप्त होता है। मनुष्यों की भाँति, पशु-पक्षियों से सम्बन्धित की भी चिकित्सा होती थी। सम्राट अशोक के दूसरे शिलाभिलेख से भी इसकी पुष्टि होती है।

दसवें अध्याय में कला का वर्णन किया गया है। कला के विभिन्न अंगों से सम्बन्धित जातक साहित्य में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है। भगवान बुद्ध के जीवन और उनके श्रेष्ठ विचारों से प्रभावित होकर चैत्य, स्तम्भ और विहारों का निर्माण किया गया था। इस साहित्य में उल्लिखित मूर्तियों, खिलौनों के अतिरिक्त चित्रकला पर भी प्रकाश पड़ता है। नगर नियोजन और भवन निर्माण का कार्य बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया जाता था। नगर सुरक्षा की भी व्यवस्था थी। सुन्दर भवनों का निर्माण होता था। सैकड़ों स्तम्भों वाले महल बनाये जाते थे। स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

इस शोध-प्रबन्ध के प्रणयन में डा० अंगने लाल, एम० ए० (गोल्ड मेडलिस्ट), पी-एच० डी०, साहित्यरत्न, डी० लिट् का निर्देशन प्राप्त हुआ है। पूजयन्ते के० चन्द्र रत्न पालि प्राध्यापक, लखनऊ विश्वविद्यालय से पालि जातकों में अनेक दुरुह स्थलों को समझने में विशेष सहायता मिली है। विभागाध्यक्ष

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आदरणीय डा० बी० एन० श्रीवास्तव से भी समय-समय पर निर्देशन और सुझाव मिलते रहे हैं। इनके अतिरक्त सम्माननीय श्री कृष्णकान्त राय तथा श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव एवं श्रीमती शांती देवी जी से भी पर्याप्त सहायता मिली है। इसके लिए मैं सभी विद्वत्जनों के प्रति अनुगृहीत हूँ।

इस प्रबन्ध के प्रणयन में जिन-जिन ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं से सहायता मिली है उनका यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है तथापि उनके लेखकों और प्रकाशकों के प्रति अनुग्रह मानती हूँ।

दिनांक ११ मार्च, १९७९

कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विषय सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
भूमिका		
संकेत-सूची		
अध्याय–१	जातकों और उनकी अट्ठकथाओं का महत्त्व	१–८
	जातक, त्रिपिटक के अभिन्न अंग जातक, जातक अट्ठकथा के अंग, कथानकों का वर्गीकरण, जातक अट्ठकथा के लेखक और उनका युग, जातक अट्ठकथा और 'जातकालवण्णना', जातक अट्ठकथाओं के प्रकाशन, जातकों की प्राचीनता व संख्या, महत्त्व, जातकों का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव।	
अध्याय–२	जातकों में वर्णित भूगोल	९–९६
	जातक साहित्य की भौगोलिक महत्ता, **भू-मण्डल**—जम्बूद्वीप, पूर्व विदेह, अपरगोयान, कुरुद्वीप या उत्तरकुरु, **अन्य द्वीप**—कारद्वीप, ताम्रपर्णी, नागद्वीप, नारिकेल द्वीप, सिंहल द्वीप, सेरुम द्वीप, **मध्य देश, जनपद, नगर-ग्राम, पर्वत, वन, नदियाँ, समुद्र और सरोवर।**	
अध्याय–३	ऐतिहासिक सामग्री	९७–११९
	जातकों का ऐतिहासिक महत्त्व, राजवंश, देशों के शासक, अन्य शासक।	
अध्याय–४	राजतन्त्र और शासन व्यवस्था	१२०–१५५
	राज्य के प्रकार—गणतन्त्रात्मक और राजतन्त्रात्मक, **गणतन्त्र**—गणस्वरूप, परिषद् के सदस्य, कार्य प्रणाली, कार्य शक्ति, **राजतन्त्र, राज्यांग, राजत्व**—राजा की आवश्यकता और उत्पत्ति, राजत्व का दैवी स्वरूप, राज-गुण, राज-शिक्षा, राज-धर्म, राज-कार्य, राज-परित्याग, उत्तराधिकार, युवराज, राज्याभिषेक, चक्रवर्ती राजा, राजमहिषी, राजविरुद, राज-दोष, **अमात्य गण**—अमात्यों का महत्त्व, अमात्य गुण, अमात्यों के प्रकार, अमात्यों के कार्य, अमात्यों की संख्या, अमात्य परिषद्, सर्वार्थसाधक अमात्य, **बल अथवा सैन्य व्यवस्था—**	

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	महत्त्व, **सैन्य-प्रकार**—चतुरंगिणी सेना, हस्ति सेना, रथ सेना, अश्व सेना, पदाति सेना, युद्ध, व्यूह, सैन्य संचालन, ध्वज, अस्त्र-शस्त्र, विजयोत्सव, **कोश**—कोश का महत्त्व, कोश आपूर्ति और कर व्यवस्था, **दुर्ग अथवा पुर, राष्ट्र**, **मित्र**, **शासन-व्यवस्था**—प्रशासनिक इकाइयाँ, **गुप्तचर-व्यवस्था, दूत-व्यवस्था, न्याय और दण्ड व्यवस्था**—न्यायाधिकारी, अपराधानुकूल दण्ड, दण्ड के प्रकार, घातक या जल्लाद, दण्ड मुक्ति तथा न्यूनता, राजमुद्रा, अधिकारी वर्ग ।	
अध्याय–५	सामाजिक दशा	१५६–२२०
	वर्णव्यवस्था और बौद्ध दृष्टिकोण, **प्रचलित वर्ण**—क्षत्रिय, ब्राह्मणा वैश्य, शूद्र, पुक्कस, चाण्डाल, **आश्रम**—ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, संन्यासाश्रम, ब्राह्मण और बौद्ध आश्रम व्यवस्था में अन्तर, **संस्कार**—संस्कारों का महत्त्व, गर्भाधान, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्रासन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन संस्कार, विद्यारम्भ संस्कार, पाणिग्रहण संस्कार, प्रव्रज्या एवं उपसम्पदा, मृत संस्कार, **आवाह-विवाह**—विवाहों का सामाजिक महत्त्व, सगोत्र विवाह, सजातीय विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, एक पत्नी और एक पतित्व, पुर्नविवाह, बहु विवाह, असुर विवाह, गान्धर्व विवाह, राक्षस विवाह, ब्राह्मण विवाह, स्वयंवर, **दहेज प्रथा, स्त्रियों की दशा, भोजन और पेय, वस्त्राभूषण और शृंगार**—वस्त्रों का महत्त्व, वस्त्रों की धुलाई और रंगाई, पुरुष वेष, स्त्री वेष, ब्राह्मण तपस्वियों के वस्त्र, बौद्ध भिक्षुओं के वस्त्र, धनुर्धारी की वेशभूषा, उपानह, वस्त्रों की सिलाई, **आभूषण**—चूड़ालंकार, कर्णाभूषण, हाथों के आभूषण, अन्य आभूषण, **शृंगार, आमोद-प्रमोद**—शिकार (आखेट), मल्ल युद्ध, उद्यान यात्रा, जल विहार, मायाकार, सपेरा, द्यूत क्रीड़ा, नृत्य, संगीत और वाद्य, सुरापान, बाल क्रीड़ा, **सामाजिक दोष** ।	
अध्याय–६	धर्म और दर्शन	२२१–२६२
	धर्म की परिभाषा, धर्म का मनुष्य के लिए महत्त्व, प्रमुख भारतीय धर्म, **ब्राह्मण धर्म**—यज्ञ, शैव सम्प्रदाय, वैष्णव	

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अध्याय | विषय | पृष्ठ

सम्प्रदाय, देवी, देवता, तपश्चर्या, आदर्श तपस्वी, सम तपस्वी, श्रमण, **बौद्ध धर्म**—भगवान् बुद्ध, **बुद्ध के प्रमुख सिद्धान्त**—प्रतीत्य समुत्पाद, दो अन्त और मध्यम मार्ग, चार आर्य सत्य, आर्य अष्टांगिक मार्ग, पंचशील, अष्टशील, त्रिरत्न, पारमिताएँ, **जैन धर्म**, **लौकिक धार्मिक विश्वास**—नाग पूजा, यक्ष पूजा, गरुड़ पूजा, वृक्ष पूजा, नदी पूजा, पर्वत पूजा, दिशा पूजा ।

अध्याय–७ आर्थिक जीवन २६३–३१०

अर्थ और उसका महत्त्व, **कृषि-कार्य**—उपज—ईख, कपास, अन्न, फल-फूल, **पशु-पालन**, **शिल्पी एवं उनके संघ**, **उद्योग-धन्धे**—मृण पात्र उद्योग, काष्ठ उद्योग, वस्त्र उद्योग, इक्षु उद्योग, धातु उद्योग, स्वर्ण उद्योग, चर्म उद्योग, हाथी दाँत का उद्योग, **व्यापार**—स्थलीय व्यापार, कठिनाइयाँ, समुद्री व्यापार, कठिनाइयां, बन्दरगाह, **सार्थवाह**, **पण्य**—अश्व, रेशमी वस्त्र, **विनिमय और सिक्के**, **माप-मान**, **व्यापारिक मार्ग**—स्थल मार्ग, उत्तरापथ, राजगृह-श्रावस्ती मार्ग, दक्षिणापथ, अन्य मार्ग, विदेह-चम्पा मार्ग, श्रावस्ती-संकाश्य मार्ग, जलमार्ग ।

अध्याय–८ शिक्षा और साहित्य ३११–३३०

शिक्षा का उद्‌देश्य, प्रवेश, गुरुकुल, दिनचर्या, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, लेखन सामग्री, **पाठ्य विषय**—वेद-ज्ञान, वेदाङ्ग, ज्योतिष, आयुर्वेद, पशु-शिक्षा, नाविक विद्या, सैनिक शिक्षा, धनुर्विद्या, सूत्रों की शिक्षा, गणित, इतिहास, शुल्क, **शिक्षा के केन्द्र**—तक्षशिला, काशी, श्रावस्ती, **साहित्य और साहित्यकार**।

अध्याय–९ चिकित्सा ३३१–३३८

शल्य, रोग, औषधि और उनका प्रयोग, विष का निदान, पेट के रोग और उनका निदान, घाव-उपचार, पशु रोग और निदान, परिचारक, चिकित्सा शुल्क ।

अध्याय–१० कला ३३९–३५२

मूर्तियां, खिलौने, चित्रकला, नगर-निर्माण, नगर-सुरक्षा, भवन निर्माण, स्वच्छता, चैत्य, स्तूप, विहार और संघाराम ।

सहायक ग्रन्थ-सूची ३५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संकेत सूची

अवदान०	: अवदान शतक
अ० नि०	: अंगुत्तर निकाय
अ० घो० का० भा०	: अश्वघोषकालीन भारत
आ० स० रि०	: आर्क्योलाजिकल सर्वे रिपोर्ट
आ० स० इ० ए० रि०	: आर्क्योलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया ऐनुवल रिपोर्ट
इ० हि० क्वा०	: इण्डियन हिस्टारिकल क्वारटर्ली
इ० ऐ० अ० ग्री० रा०	: इण्डिया ऐज़ नोन टु अर्ली ग्रीक राइटर्स
इ० वर्ल्ड०	: इण्डिया ऐण्ड द वर्ल्ड
एपी० इण्डि०	: एपीग्राफिया इण्डिका
ए० इ० ए०	: ऐशेण्ट इण्डियन एजूकेशन (मुकर्जी राधा कुमुद)
ए० जा० आफ० इ०	: ऐशेण्ट ज्याग्राफी आफ इण्डिया (कनिंघम)
ऐन्श० इ० न्यू०	: ऐशेण्ट इण्डियन न्यूमिसमेटिक्स
करुणा०	: करुणा पुण्डरीक
खु० नि० पा०	: खुद्दक निकाय पालि
ज० आ० ए० सो० आ० बं०	: जर्नल आफ ऐशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल
जा० अ० रो०	: जातक अनुवाद रोमन
जा० अ० अ०	: जातक अनुवाद अँग्रेजी
जा० अ० हि०	: जातक अनुवाद हिन्दी
जा० का० भा० सं०	: जातककालीन भारतीय संस्कृति
जि०	: जिल्द (वाल्यूम)
ट्र० इन० ऐ० इ०	: ट्रवेल्स इन ऐशेण्ट इण्डिया (बी० सी० ला०)
डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०	: ज्याग्राफिकल डिक्शनरी आफ ऐशेण्ट एण्ड मेडिकल इण्डिया
डि० आफ पा० प्रा० ने०	: डिक्शनरी आफ पालि प्रापर नेम्स
दिव्या०	: दिव्यावदान
दी० नि० पा०	: दीघनिकायपालि
पा० हि० को०	: पालि हिन्दी कोष
पा० इ० डि०	; पालि इंगलिश डिक्शनरी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पा० सा० का० इ०	: पालि साहित्य का इतिहास
पा० टि०	: पाद टिप्पणी
पो० हि० आफ ए० इ०	: पोलिटिकल हिस्ट्री आफ ऐशेंण्ट इण्डिया (राय चौधरी)
प्रा० भा० का ऐ० भू०	: प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल (लाहा)
प्रा० भा० का धा० सा० और आ० जी०	: प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन (सत्यकेतु विद्यालंकार)
प्रा० भा० का वि० से सम्बन्ध	: प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध
प्रा० भा० शि० प०	: प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति
प्रा० भा० सा० की सां० भू०	: प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका
प्रा० भा० का भौ० स्व०	: प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप
प्रा० भा० का सां० इ०	: प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास
प्रा० भा० में वर्ण व्य०	: प्राचीन भारत में वर्णव्यवस्था
प्रा० भा० की पद प०	: प्राचीन भारत की पद-पद्धति (मोतीचन्द्र)
प्री० बु० इ०	: प्री० बुद्धिष्ट इण्डिया
बु० च०	: बुद्ध चरित
बु० का भा० भू०	: बुद्धकालीन भारतीय भूगोल
बु० का० स० और ध०	: बुद्धकालीन समाज और धर्म
बौ० और जै० आ० में ना० जी०	: बौद्ध और जैन आगम में नारी जीवन
भा० का सां० वि०	: भारत का सांस्कृतिक विकास
भा० व० का सा० इति०	: भारतवर्ष का सामाजिक इतिहास
भा० का सां० और आ० इ०	: भारत का सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास
भा० सं० के मू० त०	: भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व
भा० सं० का वि०	: भारतीय संस्कृति का विकास
भा० की सं० सा०	: भारत की संस्कृति साधना
म० नि० पा०	: मज्झिमनिकायपालि
महावस्तु	: महावस्तु अवदान
मन्जु श्री०	: आर्य मन्जु श्री मूल कल्प
मनु०	: मनुस्मृति
मा० आ० सां०	: मानुमेण्टस आफ साँची (सर जान मार्शल)
मित्रा, ललित०	: ललित विस्तर (राजेन्द्र लाल मिश्रा, संस्करण)
मिलिन्द०	: मिलिन्दप्रश्न

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ला० हि० ज्या० ऐं० इ०	: हिस्टारिकल ज्याग्राफी आफ ऐंशेण्ट इण्डिया
ला० जा० आ० अ० बु०	: ज्याग्राफी आफ अर्ली बुद्धिज्म
ला० ज्या० ऐ०	: ज्याग्राफिकल ऐसेज
लेफमैन, ललित	: ललितविस्तर (लेफमैन संस्करण)
विनय०	: विनयपिटक
वैद्य, ललित	: ललितविस्तर (पी० एल० वैद्य संस्करण)
सद्धर्म०	: सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र
सुखावती०	: सुखावतीव्यूह
सौ०	: सौन्दरनन्द
हिस्ट० लि० इन्स०	: हिस्टारिकल एण्ड लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स

●

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रथम अध्याय

जातकों और उनकी अट्ठकथाओं का महत्त्व

जातक :

'जातक' शब्द का अर्थ है 'जात' अर्थात् जन्म-सम्बन्धी। यह शब्द जन् धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाकर 'क' के योग से बना है। जातक में भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मों से सम्बन्धित कथायें हैं।[१] जब उन्होंने बोधिसत्त्व के रूप में जन्म लिया था। बोधि का अर्थ बुद्धत्व और सत्त्व का अर्थ प्राणी है। इस प्रकार बोधिसत्त्व का अर्थ बुद्धत्व प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील प्राणी है।[२] अस्तु बुद्धत्व प्राप्त कर लेने की अवस्था से पूर्व भगवान् बुद्ध 'बोधिसत्त्व' कहलाते हैं।[३] जातक कथाओं में बोधिसत्त्व बहुधा नायक ही हैं। कहीं-कहीं उनका स्थान एक साधारण पात्र के रूप में और कहीं-कहीं वे एक दर्शक के रूप में भी वर्णित हैं।[४] उन्होंने बुद्धत्व प्राप्ति के पूर्व ५५० बार जन्म लेकर दस पारमिताओं का आचरण करके लोक कल्याण किया था।[५] ये जातक कथायें उपदेशात्मक होते हुए भी पूरे अर्थों में कलात्मक भी हैं।[६]

त्रिपिटक के अभिन्न अंग, जातक

जातक खुदद्कनिकाय का सुप्रसिद्ध दसवाँ ग्रन्थ है।[७] वास्तव में जातकों का संकलन सुत्तपिटक और विनयपिटक के आधार पर किया गया है। सुत्तपिटक में ऐसी कथाएँ हैं जिनका उपयोग उन ग्रन्थों में उपदेश देने के प्रसंग में किया गया

---

१. शर्मा, सरनामसिंह, पाली-साहित्य और समीक्षा, पृ० ४१-४२।
शास्त्री, चतुरसेन, बुद्ध और बौद्ध धर्म, पृ० १३१।

२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२ (वस्तुकथा)

३. उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० २९८

४. वही, पृ० २९९-३००

५. शर्मा, सरनाम सिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ४२; तिवारी, महेश, निदान कथा, पृ० २१

६. उपाध्याय, भरतसिंह, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० ३०८

७. तिवारी, महेश, निदान कथा, पृ० २१; भिक्षु धर्मरक्षित, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० ८९;
उपाध्याय, भरतसिंह, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० २९७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनेक है। इससे सिद्ध होता है कि संकलन का कार्य बाद में हुआ और सभी प्रत्येक कहानी को जातक का रूप दिया गया।[१]

त्रिपिटक में जिस जातक (ग्रन्थ) का समावेश है वह केवल गाथाओं का संग्रह है। जिस प्रकार धम्मपद एक चीज है और धम्मपद अट्ठकथा दूसरी। उसी प्रकार जातक एक चीज है और जातक अट्ठकथा दूसरी। अन्तर यह है कि धम्मपद का अर्थ बिना धम्मपद अट्ठकथा के समझ में आ सकता है परन्तु जातक की कथा यदि पहले से मालूम न हो तो गाथा मात्र से उसके उद्देश्य को नहीं समझा जा सकता। बिना जातक अट्ठकथा के जातक अधूरा है।[२] इनका विस्तृत वर्णन जातक अट्ठकथा में किया गया है। जातक अट्ठकथा के बिना इन गाथाओं का अर्थ स्पष्टतः ज्ञात नहीं होता है। अतः जातक अट्ठकथा की जानकारी जातक पढ़ने के लिये सर्वथा सापेक्ष है।[३]

जातक अट्ठकथा में अट्ठकथा सहित असली जातक कथाओं के आरम्भ होने से पहले निदान कथा नाम का एक लम्बा उपोद्घात है। इस निदान कथा में सिद्धार्थ गौतम बुद्ध के जीवन चरित्र के साथ उनके पूर्व के २७ बुद्धों का जीवन चरित्र भी वर्णित है।[४]

त्रिपिटक के सभी अंगों का उल्लेख जातकों में बहुधा हुआ है।[५] 'त्रिपिटक' के तीनों पिटकों के नाम इस प्रकार हैं—विनय पिटकम्, सुत्तपिटकम् (सुत्रपिटकम्), अभिधम्म पिटकम् (अभिधर्म पिटकम्)।[६] शेष सब उसकी व्याख्या है जिसे अट्ठकथा के अन्तर्गत रख सकते हैं।[७]

जातक अट्ठकथा के अंग

जातक अट्ठकथा तीन भागों में विभक्त है—(१) दूरेनिदान (२) अविदूरे-निदान (३) सन्तिके निदान। बोधिसत्त्व ने जब सुमेध तपस्वी का जन्म ग्रहण कर

---

१. शर्मा सरनामसिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ४४
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५ (वस्तु-कथा)
३. भिक्षु धर्मरक्षित, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० ९०
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५ (वस्तु-कथा)
५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६, ९१, १५०, ४५६; जि० २, पृ० १०८, ४५६, ४६७; जि० ३, पृ० १५८; जि० ४, पृ० २३६, ३७५, ४१९, ४३६, ४५८
६. शर्मा, सरनामसिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ३९
७. वही, पृ० ४५।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भगवान् दीपङ्कर के चरणों में जीवन समर्पित किया, उस समय से लेकर ''वेस्सन्तर'' का शरीर छोड़ तुषित स्वर्ग-लोक में उत्पन्न होने तक की कथा—''दूरेनिदान'' कही जाती है। तुषित लोक से च्युत होकर महामाया देवी के गर्भ से उत्पन्न हो बोधिगया में बुद्धत्व प्राप्त करने तक की कथा ''अविदूरेनिदान'' कही जाती है। जहाँ-जहाँ भगवान् बुद्ध ने विहार करते समय कोई जातक कहा उन स्थानों को जो उल्लेख है वह ''सन्तिकेनिदान'' है।[1]

हर जातक कथा चार विभागों में विभक्त है—(१) पच्चुपन्नवत्थु (२) अतीतवत्थु (३) अत्थवण्णना (४) समोधान।[2] कहीं पर गाथा को भी जातक का अलग भाग कर इसके पाँच भाग बतलाये हैं— (१) पच्चुप्पन्नवत्थु (२) अतीतवत्थु (३) गाथा (४) वैय्याकरण या अत्थवण्णना और (५) समोधान।[3] वस्तुतः जातक (गाथा और कथा) पालि साहित्य का अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण अंग है।[4]

कथानकों का वर्गीकरण

डा० विण्टरनित्ज ने कथानकों का वर्गीकरण ७ भागों में किया है।—(१) व्यावहारिक नीति सम्बन्धी कथाएँ (२) पशुओं की कथाएँ (३) हास्य और विनोद से पूर्ण कथाएँ (४) रोमांचकारी लम्बी कथाएँ (५) नैतिक वर्णन (६) कथन और (७) धार्मिक कथाएँ। इनकी वर्णन शैली भी भिन्न-भिन्न प्रकार की पायी गयी है। इन शैलियों का वर्णन विण्टरनित्ज ने पांच भागों में किया है—(१) गद्यात्मक शैली (२) आख्यान शैली (क) संवादात्मक शैली, (ख) वर्णन-संवाद मिश्रित शैली (३) अपेक्षाकृत लम्बे विवरण वाली शैली जिनका प्रारम्भ तो गद्य से होता है किन्तु बाद में गाथाएँ भी पायी जाती हैं (४) किसी विषय पर कथित वचनों का संग्रह काव्य शैली और (५) महाकाव्य और खण्ड काव्य जैसी शैली।[5] थेर और थेरी गाथाओं के समान जातक ग्रन्थ २२ निपातों में विभक्त माने गये हैं।

---

१. शर्मा, सरनाम सिंह, पालि साहित्य और समीक्षा, पृ० ४९।

२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६ (वस्तु-कथा)।

३. शर्मा, सरनाम सिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ४४; उपाध्याय, भरत सिंह, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० ३०४।

४. शर्मा, सरनाम सिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ४५।

५. विण्टरनित्ज, हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर, जि० २, पृ० १२५; शर्मा सरनाम सिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ५२-५३; उपाध्याय, भरत सिंह, पालि-साहित्य का इतिहास, पृ० ३१०।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातक अट्ठकथा के लेखक और उनका युग :

सबसे पहले आचार्य बुद्धघोष ने ही 'जातकट्ठवण्णना' की रचना की।[१] यह जातक संग्रह अपने वर्तमान स्वरूप में कम से कम लगभग दो हजार वर्ष पुराना है।[२] जातक कथा-संग्रह शुद्ध भारतीय साहित्य है और इतना महत्त्वपूर्ण है कि अनेक रूपों में अबौद्ध साहित्य की कथाओं में भी इनका साम्य पाया जाता है।

महावंश के अनुसार आचार्य बुद्धघोष अभिधम्म पिटक के प्रथम ग्रन्थ धम्मसगंणि पर अत्थसालिनी टीका लिख चुकने के बाद भारत से सिंहल गए। सिंहल जाने का उनका एक मात्र उद्देश्य था सिंहल भाषा में सुरक्षित अट्ठ-कथाओं का पालि में अनुवाद करना। जब वह विसुद्धिमग्ग नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखकर अट्ठकथाओं को पालि स्वरूप देने की अपनी योग्यता प्रमाणित कर चुके तभी सिंहल के भिक्षु संघ ने उन्हें उन सिंहल अट्टकथाओं को पालि में अनुवाद करने की अनुमति दी। महावंश के अनुसार उन्होंने सारी अट्ठकथाओं का पालि में अनुवाद किया। कहा जाता है कि अट्ठकथाएँ महेन्द्र के साथ भारत से सिंहल पहुँची थीं, इन्हीं का बुद्धघोष ने महास्थविर संघपाल की अधीनता में महाविहार, अनुराधपुर में रहकर अध्ययन किया था।[3]

जातक अट्टकथा और 'जातकालवण्णना' :

विण्टरनित्ज महोदय ने जातक अट्ठकथा तथा जातकत्थवण्णना को अलग-अलग माना है। उनका कथन है कि जातक अट्ठकथा मूलतः पालि में थी जो मौखिक परम्परानुसार त्रिपिटक के साथ ही लंका पहुँचायी गयी तथा वहीं लिपिबद्ध हुई। उसका अनुवाद सिंहली भाषा में किया गया।[४] राईज डेविड्स का कथन है कि जातक का संकलन और प्रणयन मध्यदेश (मध्यमण्डल) में प्राचीन जन-कथाओं के आधार पर हुआ था।[५] महोदय विण्टरनित्ज भी इसी मत का अनुमोदन करते हैं।[६]

---

१. जर्नल आफ पालि टेक्सट सोसाइटी, १८८६ में प्रकाशित संस्करण, पृ० ५९।
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३ (वस्तु-कथा)।
३. जा०अ०हि०जि० १, पृ० २१ (वस्तु-कथा)।
४. तिवारी, महेश, निदानकथा, पृ० २२।
५. बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ० १७२, २०७-२०८।
६. उपाध्याय, भरतसिंह, पालि-साहित्य का इतिहास, पृ० ३०३; इण्डियन लिटरेचर, जि० २, पृ० ११३-११४, १२१-१२३।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातक अट्ठकथाओं के प्रकाशन

जातकों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। पालि अट्ठकथाएँ सिंहली लिपि में सम्पादित हुई तथा प्रकाशित हुई हैं। ये कथाएँ महोदय साइमन हेवीटरेन के द्वारा श्री लंका में प्रकाशित की गई थीं। इसी प्रकार बंगला में जातक छः खण्डों में प्रकाशित हुआ और उनके अनुवादक श्री ईशान चन्द्र घोष हैं, परन्तु ये सभी उपलब्ध नहीं हैं। जातक अट्ठकथाओं के निम्नलिखित संस्करण ही उपलब्ध हो सके हैं :—

रोमन

खण्ड	अनुवादक/सम्पादक	प्रकाशक	वर्ष
प्रथम	बी० फोसबौल	ट्वनर एण्ड कम्पनी, लंदन	१८७७
द्वितीय	,, ,,	,, ,, ,,	१८७९
तृतीय	,, ,,	,, ,, ,,	१८८३
चतुर्थ	,, ,,	,, ,, ,,	१८८७
पंचम	,, ,,	,, ,, ,,	१८९१
षष्ठ भाग	,, ,,	,, ,, ,,	१८९६

अंग्रेजी

प्रथम, द्वितीय	ई० बी० कावेल	पालि टैक्सट् सोसायटी, लंदन	१९५७
तृतीय, चतुर्थ	,, ,,	,, ,, ,, ,,	१९५७
पंचम, षष्ठ	,, ,,	,- ,, ,, ,,	१९५७

हिन्दी

प्रथम	भदन्त आनन्द कौसल्यायन	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	१९४१
द्वितीय	,, ,, ,,	,, ,,	१९४२
तृतीय	,, ,, ,,	,, ,,	१९४६
चतुर्थ	,, ,, ,,	,, ,,	१९५१
पंचम	,, ,, ,,	,, ,,	१९५४
षष्ठ	,, ,, ,,	,, ,,	सं० २०१३

जातक की प्राचीनता व संख्या

जातक गद्य-पद्य मिश्रित रचनाएं हैं। पद्य भाग जिसमें गाथाएँ होती हैं, जातक का प्राचीनतम भाग माना गया है। इसी भाग की गणना त्रिपिटक के अन्तर्गत की जाती है। थेरवादियों व सिंहल, स्याम, वर्मा, हिन्दचीन आदि देशों के बौद्धों की मान्यता है कि जातकों की संख्या ५५० है। किन्तु इस समय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्यमान जातक 'ग्रन्थ' अट्ठकथाओं में ५४७ कथाएँ ही पाई गयी हैं।[१] चुल्लनिद्देश के अनुसार इनकी संख्या ५०० है—(पंचजातकसतानि)।[२] चीनी यात्री फाह्यान ने पाँचवीं शताब्दी में ५०० जातकों की कहानियों को देखा था।[३] द्वितीय-तृतीय शताब्दी ईसवी पूर्व के भरहुत और सांची के स्तूपों में जातकों के चित्र अंकित मिले हैं जिनमें से कम से कम २७ या २९ जातकों के चित्रों की पहचान महोदय रीज़ डेविड्स ने की थी।[४] ये सब प्रमाण 'जातकों' की प्राचीनता और उनके विकास के सूचक हैं।

महत्त्व :

जातक-कथा संग्रह संसार के कथा-साहित्य में प्राचीनतम संग्रह ही नहीं, अपितु सबसे बड़ा संग्रह भी है।[५] भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास इन कथाओं में सुरक्षित है। अतएव इस दृष्टि से जातक कथाओं का महत्त्व हमारे लिये सर्वाधिक है। नीतिशिक्षण की दृष्टि से इन कथाओं की बराबरी करने वाला ग्रन्थ विश्व में अन्यत्र दुर्लभ है। ये जातक कथाएं कथा-कहानियों का समृद्ध कोश है। श्री लंका, वर्मा आदि देशों में ये कथाएं इतनी लोकप्रिय हैं कि लोग रात-रात भर जागरण कर इन्हें बड़ी श्रद्धापूर्वक सुनते हैं।[६] इतिहास, साहित्य एवं धर्म की दृष्टि से ये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।[७] इनमें से कई कथाएं अजन्ता और भरहुत में चित्रित हैं और उनके नीचे जातकमाला के श्लोक खुदे हुए हैं।[८]

जातकों में जो कथाएं हैं, वे मानव कथाएं हैं, तत्कालीन मानव समाज और मानव-स्वभाव का जैसा चित्रण जातकों में हम पाते हैं, वैसा अन्यत्र नहीं मिलता है।[९] इनकी विशेषता अनन्त है और विश्व साहित्य में उनका अपना

---

१. जा०अ०हि०जि० १, पृ० १८-१९ (वस्तु-कथा)
२. मेहता, रतीलाल, प्रो० बु० इ०, पृ० xix।
३. गिलस, द ट्रैविल्स आफ फाह्यान, पृ० ७१।
पिलग्रिमेज आफ फाह्यान, पृ० ३८१
४. बुद्धिस्ट इण्डिया, पृ० २०९।
५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० २० (वस्तु-कथा)।
६. जैन, जगदीश चन्द्र, प्राकृत जैन कथा साहित्य, पृ० ९२।
७. भिक्षु, धर्मरक्षित, पालि साहित्य का इतिहास, पृ० ८९।
८. आर्य-शूर, जातकमाला, पृ० xii।
९. 'वियोगी' पण्डित मोहनलाल महतो, जातककालीन भारतीय संस्कृति, पृ० २।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अद्वितीय स्थान है ।[१] जातक साहित्य सच्चे अर्थों में जनता का साहित्य है । इसमें हमारे उठने-बैठने, खाने-पीने, ओढ़ने-बिछाने की साधारण बातों को लेकर शिल्पकला, व्यापार, अर्थनीति, राजनीति तथा हमारे समाज के सगठनों का विस्तृत इतिहास भरा पड़ा है । उस युग के भू-वृत्त की भी पर्याप्त सामग्री है । विशेष रूप से उस युग के जल-मार्गों तथा स्थल-मार्गों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है । भारतीय जीवन का कोई पहलू ऐसा नहीं है जिसका लेखा इन कथाओं में न मिलता हो ।[२]

अतः प्राचीन काल के इतिहास के लिये इन मूल्यवान कथाओं का सर्वश्रेष्ठ महत्त्व है । चित्रकारों और मूर्तिकारों के लिये ये उत्तम सामग्री प्रदान करते हैं । कितने ही काव्य ग्रन्थ भारत से बाहर जातकों को आधार बनाकर रचे गये हैं ।[३]

जातक कथाओं में प्रसंगवश विविध विषयों का उल्लेख हुआ है । अतः इनसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य भी उपलब्ध होते हैं । जहाँ तक तत्कालीन समाज में प्रतिष्ठित धार्मिक मान्यताओं का प्रश्न हैं, जातकों से अनेक रोचक तथ्यों का रहस्योद्घाटन होता है ।[४]

जातकों का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव :

इन जातकों का परवर्ती बौद्ध साहित्य पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है । बोधि-सत्त्व के पावन चरित्र (कलुषरहित-अवदान) को आधार बनाकर विस्तृत अवदान साहित्य की रचना की गई है । भाषा की दृष्टि से महावस्तु[५] अवदान इस श्रृंखला का सबसे प्राचीन ग्रन्थ माना जायेगा, तत्पश्चात् अवदान शतक और दिव्यावदान का स्थान आता है । आर्यसूर ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ जातकमाला में ३४ जातकों का वर्णन परिष्कृत संस्कृत भाषा में किया है ।

काश्मीर में प्रसिद्ध कवि क्षेमेन्द्र ने भी इन्हीं जातकों के आधार पर संस्कृत भाषा में अपने विशाल काव्य-ग्रन्थ (अवदान-कल्पलता) की रचना की । इस प्रकार इन जातक कथाओं ने परवर्ती बौद्ध साहित्य को अत्यधिक प्रभावित किया है । बौद्ध साहित्य ही नहीं ब्राह्मण साहित्य भी इन कथाओं से प्रभावित हैं ।

---

१. 'वियोगी' पंडित मोहनलाल महतो, जातककालीन भारतीय संस्कृति, पृ० ३ ।
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३० (वस्तु-कथा) ।
३. सांकृत्यायन, राहुल, पालि-साहित्य का इतिहास, पृ० १४१ ।
४. पाण्डेय, राजबलि, स्मृति ग्रन्थ, पृ० ३६८ ।
५. शर्मा, सरनामसिंह, पालि-साहित्य और समीक्षा, पृ० ४७ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रामायण और महाभारत में इनके अनेक कथानक उपलब्ध हैं। प्रसिद्ध जातक 'शिवि जातक' का महाभारत में वर्णन है।[1] दशरथ जातक[2], देवधम्म जातक[3] का रामायण पर स्पष्ट प्रभाव है। रामायण में बुद्ध का स्पष्ट नामोल्लेख है परन्तु यहाँ उनको हेय रूप में उल्लेख किया गया है।[4] 'मिलिन्दपञ्ह' की उत्तरवर्ती रचनाओं में अनेक वर्णन जातक रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। इसी प्रकार भारत और भारतेतर देशों के साहित्य ने इन भारत की प्राचीनतम लोक कथाओं से प्रेरणा लेकर अपने साहित्य का कलेवर पूरा किया है।

इस प्रकार निस्सन्देह रूप से यह कहा जा सकता है कि जातक और उनकी अट्ठकथाओं का भारतीय इतिहास और संस्कृति के लिए अपरिहार्य महत्त्व है।

●

१. जातक संख्या ४९९।
२. वही, संख्या ४६१।
३. वही, सं० ६।
४. एपिक मैथोलोजी, पृ० २१८; रामायण, अयोध्याकाण्ड, १०९।३४।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

द्वितीय अध्याय

जातकों में वर्णित भूगोल

जातक साहित्य की भौगोलिक महत्ता :

जातक पालि बौद्ध साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग है। इससे भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश पड़ता है। तत्कालीन भौगोलिक ज्ञान के लिए तो जातक भौगोलिक कोश ही है।

जातक कथाओं में भूमि[1], मही[2], पृथ्वी[3], महापृथिवी[4], वसुन्धरा[5], समुद्र[6], चारों द्वीपों (चतुरोदीपा)[7], देशों[8], राज्यों[9], नगर-निगमों[10], ग्रामों[11], नदियों[12],

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३२, जि० ६, पृ० ३९८, जा० अ० हि० जि० १; पृ० २१८ जि० ६, पृ० ३३८
२. वही ५, पृ० ४२५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८
३. वही १, पृ० १९; ,, १, पृ० ७९
४. वही १, पृ० २६, ६३; ,, १, पृ० ८७, १३३
५. वही ५, पृ० ४२५, जि० ६, पृ० ३७२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८, वही ६, पृ० ४१८
६. वही १, पृ० २८; जा० अ० हि० जि०, पृ० ८८
७. जा० अ० रो० हि १, पृ० ४९, ५७, ६३, ६८; जि० ३ पृ०, ४८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११५, १२५, १३३, १४०; जि० ४, पृ० १३९; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ९, ७४
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८; जा अ० हि० जि० १, पृ० ११५
९. वही ६, पृ० १३८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १५८
१०. वही ३, पृ० ३७३; जि० ४, पृ० ३६२; जि० ५, खु० ७२; खु० नि० पा० जि० ३, पृ० १, पृ० १५७।१४, २९८।१६, ३८४।२०
११. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५२५; पृ० ३६२; खु० नि० पा० जि० ३, पृ० १, पृ० २९८।१६
१२. वही १, पृ० १८, ५१, ७६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७७, ११९, १४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पर्वतों[1], तड़ागों (जलाशयों)[2], झीलों[3], बन्दरगाहों[4], और वनों का भी विस्तार रूप से उल्लेख किया गया है।

भू-मण्डल :

जातकों के आधार पर हमें भौगोलिक विवरण दो रूपों में प्राप्त होता है। प्रथमतः भूगोल का सम्बन्ध लोक संस्थान से है और दूसरा पक्ष भारतवर्ष से सम्बन्धित है।

महापृथिवी[5] दो लाख चौरान्नबे नहुत और चालीस हजार योजन घनी[6], चार नहुत दो लाख योजन मोटी है।[7] दस सहस्र ब्रह्माण्ड[8] तथा महासमुद्र से आवृत्त है। महापृथिवी कुम्हार के चक्के के समान तथा शकट के पहिए के सदृश ऊँची-नीची होती है।[9] चौरासी हजार योजन गहरे समुद्र का जल मीठा था।[10] एक स्थान पर कहा गया है—पृथिवी खुशी और नाराजी छोड़ (अपने ऊपर) शुचि और अशुचि सभी को धारण करती है।[11] यह पृथिवी अचेतन है। सुख-दुःख से प्रभावित नहीं होती है।[12]

जम्बूद्वीप :

जातकों में जम्बूद्वीप का उल्लेख कई बार हुआ है। यह सुमेरु पर्वत के दक्षिण में अवस्थित है और इसका विस्तार दस हजार योजन है (दससहस्स-

---

१. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७८
२. वही १, पृ० ८; जि० २, पृ०, २९५, २९६; जा० अ० हि० जि० १, ६४; जि० ३, पृ० २४-२५
३. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४९
४. वही १, पृ० २०४
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६, ६३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६, १३३
६. वही ३, पृ० ४२, १८१; जि० ६, पृ० ४६८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २११, ३४२; जि० ६, पृ० ५२४
७. वही १, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६
८. वही १, पृ० ५१; ,, ,, १, पृ० ११८
९. वही १ पृ० ६३, ७१; ,, ,, १, पृ० १३३, १४२
१०. वही १, पृ० ५१, ७६; ,, ,, १, पृ० ११९, १४८
११. वही १, पृ० २५; ,, ,, १, पृ० ८६
१२. वही १, पृ० ४७; ,, ,, १, पृ० ११३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

योजनप्पमाणं जम्बूद्वीपं)।[१] यह सागर से परिवृत्त (परिब्बत) है।[२] गान्धार और कम्बोज नामक जनपद जम्बूद्वीप के सोलह महाजनपदों में सम्मिलित हैं जिसका आधुनिक तात्पर्य यह है कि अफगानिस्तान और काश्मीर का काफी भाग जम्बूद्वीप के अन्तर्गत था।[३] इस द्वीप में तिरसठ हजार निगम थे।[४] यहाँ महान उत्सव मनाये जाते थे।[५]

पूर्व विदेह :

विधुर जातक में पूर्व विदेह का उल्लेख हुआ है।[६] यह महाद्वीप सुमेरु पर्वत के पूर्व में स्थित था। डा० हेमचन्द्र राय चौधरी ने इसे वर्तमान पूर्वी तुर्किस्तान या उत्तरी चीन बताने का प्रयत्न किया है।[७]

अपरगोयान :

जातक में अपरगोयान का उल्लेख मिलता है।[८] यह सुमेरु पर्वत के पश्चिम में स्थित था।[९] डा० राय चौधरी ने अपरगोयान को वर्तमान पश्चिमी तुर्किस्तान से मिलाया है।[१०]

कुरुद्वीप या उत्तरकुरु :

जातक में कुरुद्वीप (उत्तर कुरु) का उल्लेख हुआ है।[११] उत्तरी कोरिया से प्राचीन उत्तर कुरु की पहचान की जा सकती है।

अन्य द्वीप :

इन उपर्युक्त चारों महाद्वीपों के अतिरिक्त जातक साहित्य में अनेक द्वीपों का वर्णन हुआ है जिनमें भारतीय लोगों का आना-जाना रहता था। ऐसे द्वीपों का वर्णन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ ११६
२. महाउम्मग्ग जातक सं० ५४६
३. बु० का० भा० भू०, पृ० ६२
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८५
५. वही ३, पृ० ५३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १९८
६. वही ६, पृ० २७८; ,, ,, ६, पृ० ३१७
७. स्टडीज़ इन इण्डियन ऐन्टिक्विटीज़, पृ० ७५-७६
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६; जि० ६, पृ० ३१७
९. बु० का० भा० भू०, पृ० ७०
१०. स्टडीज़ इन इण्डियन ऐन्टिक्विटीज़, पृ० ७५
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६; जि० ६, पृ० ३१७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कारद्वीप :

अकित्ति जातक में कारद्वीप का उल्लेख हुआ है।[1] कारद्वीप सीलोन के पास स्थित था।[2]

ताम्रपर्णी :

जातकों में ताम्रपर्णी द्वीप का उल्लेख हुआ है।[3] जहाँ यक्ष और यक्षणियाँ रहती थीं।[4] ताम्रपर्णी द्वीप के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध थे।[5] डा० पुरी इसे सीलोन मानते हैं।[6] यूनानी इतिहासकारों—स्टैबो और प्लीनी ने इसे "टप्रोबेन" कहा है।[7] डा० बुद्ध प्रकाश का मत है कि ताम्रपर्णी सीलोन ही नहीं अपितु वृहत्तर सीलोन या दक्षिणी पूर्वी एशिया के उसके उपनिवेश भी उसमें सम्मिलित थे।[8]

नागद्वीप :

जातक में नागद्वीप का उल्लेख मिलता है।[9] इसके समीप ही कारद्वीप स्थित था। इसे अहिद्वीप भी कहा गया है।[10]

नारिकेल द्वीप :

भेरु जातक में नारियल के द्वीप (नारिकेल द्वीप) का उल्लेख हुआ है।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३९; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १५०
२. जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १५०
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७, १२८; जि० ४, पृ० ४९०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२, ३१३, जि० ५, पृ० ७९; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ३०४
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७, १२८, जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२, ३१३
६. इ० डे० अ० ग्री० रा०, पृ० २८
७. क्लासिकल अकाउण्टस आफ इण्डिया, पृ० २५१, ३४५-३४८
८. इ० वर्ल्ड०, पृ० ५०
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२८, जि० ४, पृ० २३८; जि० ३, पृ० १८७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२, जि० ३, पृ० ३४८; जि० ४, पृ० ४३९, जा० अ० अ० जि० २, पृ० ९०, जि० ३, पृ० १२४, जि० ४, पृ० १५०
१० जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३८, जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६५
११ जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७३, जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिंहल द्वीप :

जातकों में सिंहल द्वीप का उल्लेख हुआ है।[1] इसे श्रद्धावान महेन्द्र महा-स्थविर, जिसने बुद्ध शासन का प्रचार किया था।[2] उनके सम्मान में सिंहल (ताम्रपर्णी) में महाविहार बनवाया था।[3] आज इसे अनुराधपुर महाविहार कहा जाता है। ताम्रद्वीप या ताम्रपर्णी, रत्नद्वीप और राक्षसी द्वीप, सिंहल द्वीप के विभिन्न प्राचीन नाम हैं।

सेरुम द्वीप :

सुसन्धि जातक में सेरुम द्वीप का उल्लेख हुआ है।[4]

मध्य देश :

जातक में मध्यदेश (मज्झिम देश) का उल्लेख मिलता है।[5] मध्यदेश की पूर्व दिशा में कजंगल नामक कस्बा है, उसके बाद बड़े शाल के वन हैं और फिर आगे सीमान्त (प्रत्यन्त) देश है।[6] पूर्व दक्षिण में सलिलवती नदी है, उसके आगे सीमान्त देश, दक्षिण दिशा में संतकण्णिक नामक कस्बा है, उसके बाद सीमान्त देश, पश्चिम दिशा में थून नामक ब्राह्मण ग्राम है, उसके बाद सीमान्त देश, उत्तर दिशा में उशीरध्वज नामक पर्वत है, उसके बाद सीमान्त देश।

इससे स्पष्ट है कि बुद्ध के जीवन काल में मध्य देश की पूर्वी सीमा कजंगल नामक कस्बे तक मानी जाती थी। विनयपिटक[7] में भी मध्यदेश (मज्झिम देश) की यही सीमाएँ वर्णित हैं।

मध्यदेश की लम्बाई तीन सौ योजन, चौड़ाई ढाई सौ योजन और घेरे में नौ सौ योजन है। इसी प्रदेश में बुद्ध, प्रत्येक बुद्ध, प्रधान, अग्रश्रावक (प्रधान-शिष्य), महाश्रावक, अस्सी महाश्रावक, चक्रवर्ती राजा तथा दूसरे महाप्रतापी

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७, ८५, जि० ३, पृ० १८८, जि० ६, पृ० ३०, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६३, १५९, जि० ३, पृ० ३४९, जि० ६, पृ० ३३
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८५, जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५९
४. वही ३, पृ० १८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४८, जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १२४
५. वही १, पृ० ४९, ८०, ३३९, जि० ३, पृ० ४६३, जि० ५, पृ० १३४, वही १, पृ० ११६, १५३, ४८५, जि० ४, पृ० १२३, जि० ५, पृ० २१५
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६
७. विनय० ५।३।२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऐश्वर्यशाली, क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य पैदा हुए थे। कपिलवस्तु नामक नगर भी यहीं पर स्थित था।[1]

मध्यदेश के व्यापारी और विचारक मध्यदेश से उत्तरापथ को जाते रहते थे।[2] इसी प्रकार दक्षिणापथ से भी लोग आते-जाते रहते थे।[3]

जनपद

जातकों का भौगोलिक विवरण अत्यन्त विस्तृत है। यही कारण है कि देश के एक कोने के दूसरे कोने तक स्थित जनपदों का वर्णन जातक ग्रन्थों में मिलता है। यों तो बुद्धकालीन भारतीय में सोलह महाजनपद प्रसिद्ध थे, जिनका उल्लेख पालि ग्रन्थों[4] के अतिरिक्त संस्कृत बौद्ध ग्रन्थ महावस्तु[5] में भी मिलता है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि उस समय और जनपद अस्तित्व में नहीं थे। चूँकि सोलह महाजनपद प्रधान थे, अतएव इस युग को १६ जनपदों का युग भी कहते हैं। जातक ग्रन्थों में उल्लिखित और वर्णित जनपदों का क्रमिक वर्णन किया गया है।

अवन्ति :

जातकों मे अवन्ति का उल्लेख हुआ है।[6] जिसकी राजधानी उज्जैनी थी। 'अवन्ति दक्षिणापथ'[7] से पता चलता है कि यह जनपद दक्षिणापथ में स्थित था। वस्तुतः अवन्ति के दो भाग थे उत्तरी अवन्ति और दक्षिणी अवन्ति। इस दक्षिणी अवन्ति को अवन्ति दक्षिणापथ कहा गया है।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९, जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६६
२. दिव्या० ३८।८-९
३. महावस्तु० ३।३०६, अवदान० जि० २।२०३।५-६
४. अ० नि० जि०, १।१९७।७-१०
५. महावस्तु जि० १।३४।७-९
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जि० ४, पृ० ३९०; जि० ५, पृ० ३१७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३, ५९८, ६०५; जि० ५, पृ० ३९९; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २७७; जि० ४, पृ० २४४; जि० ५, पृ० १६८; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३०९।२३; जि० ७, पृ० ३८४।१६
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्धक :

अन्धक[1] प्राचीन भारत का प्रसिद्ध जनपद था, जो मथुरा के आस-पास फैला हुआ था।[2] अन्धक लोगों को देश-पालक कहा गया है।[3]

आन्ध्र :

आन्ध्र राज्य[4] दक्षिणापथ में सम्मिलित था।[5]

अश्मक (अस्सक) :

अश्मक महाजनपद[6] जिसकी राजधानी पोतलि अथवा पोन्दय थी (अस्सकांन च पोलन)। इसकी पहचान वर्तमान बोधन से की जाती है। यह जनपद गोदावरी के तट पर बसा था।[7] डॉ० हेमचन्द्र राय चौधरी के अनुसार यह राज्य अवन्ति की दक्षिणी सीमा तक फैला था।[8]

अंग :

अंग[9] प्राच्य देश का यह प्रसिद्ध जनपद था, जिसकी राजधानी अंग नगर चम्पा (आधुनिक चम्पापुर, भागलपुर प्रान्त) थी।[10] इसका उल्लेख मगध के साथ

---

१. जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १०, १३८
२. बी० सी० ला० टू० इन ऐं० इ०, पृ० ४२
३. बु० च०, पृ० २८।२९
४. जा० अ० अ० जि० १, पृ० २०३
५. बु० का० भा० भू०, पृ० १५९
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५५, जि० ३, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३४५; जि० ३, पृ० १७४, १७५, १७६, १७७-१७८, जि० ५, पृ० ३९९; जि० ६, पृ० ११३; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १०८; जि० ३, पृ० २, ५; जि० ५, पृ० १६८; जि० ६, पृ० ५५
७. बु० का० भा० भू०, पृ० ४४७-४४८; प्रा० भा० का० रा० इ०, पृ० ७६
८. पो० हि० आव ए० इ०, पृ० १४३
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८७; जि० २, पृ० २११; जि० ४, पृ० ४५४; जि० ५, पृ० ३१६-१७; जि० ६, पृ० २५६, २७१, २७४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६२; जि० २, पृ० ४१२-१३, जि० ५, पृ० ३९७, ३९९; जि० ६, पृ० २३९, २९४, ३१२; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १४८; जि० ४, पृ० २८१; जि० ५, पृ० १६७-६८; जि० ६, पृ० १२७, १३३-३४; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ५७।१६
१०. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मिलता है।[1] दोनों ही राष्ट्र एक दूसरे को जानते थे।[2] अंग जनपद की पूर्वी सीमा सम्भवतः राजमहल की पहाड़ियाँ थीं।[3] उसकी उत्तरी सीमा कोसी नदी थी और दक्षिण में उसका विस्तार समुद्र तक था।[4] महोदय कनिंघम के अनुसार अंग जनपद का विस्तार आधुनिक बिहार राज्य के भागलपुर और मुंगेर जिलों के प्रायः समान था।[5] महोदय नन्दोलाल डे ने भी इसी मत को स्वीकार किया है।[6] अंग राष्ट्र में काल चम्पानगर भी था।[7]

अटवी (कालमत्तिक अटवी, महाअटवी) :

धत जातक तथा महासुतसोम जातक में अटवी का उल्लेख मिलता है।[8] समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में आटविक राज्य का उल्लेख मिलता है।[9] अटवी प्रायः विन्ध्याटवी का ही संक्षिप्त स्वरूप माना गया है।[10] ललितविस्तर[11] और दिव्यावदान[12] में भी अटवी का उल्लेख मिलता है। इसे मगध जनपद में[13] श्रावन्ती से राजगृह जाने वाले मार्ग पर स्थित बताया गया है।[14] इसी भूखण्ड में बुद्ध ने आटविक यक्ष तथा कुमार हस्तक का उपदेश दिया था।[15]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९; जि० २, पृ० २११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६२; जि० २, पृ० ४१२-१३
२. जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१२
३. बु० का० भा० भू०, पृ० ३४४
४. वही, पृ० ३४४
५. एन्शियन्ट ज्योग्रेफी आव इण्डिया, पृ० ३४६
६. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ७
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २५६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २९४
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८८; जि० ५, पृ० १३३, ४७१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८९; जि० ५, पृ० २१५, ५४९
९. समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति, पृ० २१
१०. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २५
११. लेफमैन ललित, ३३३।४; दिव्या० ६०।७
१२. दिव्या १६।१७
१३. वही, ५९।१९-२०
१४. वही, ६३-६६
१५. बु० च०, २१।१८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तर पंचाल :

जातकों में उत्तर पंचाल का उल्लेख मिलता है।[१] इसकी राजधानी अहिच्छत्र नामक नगरी थी।[२] जिसकी पहचान जिला बरेली से आंवला के पास स्थित रामनगर से की जाती है।

उत्तरापथ :

जातकों में उत्तरापथ का उल्लेख मिलता है।[३] इससे प्राय: उस व्यापारिक मार्ग का बोध होता है जो राजगृह से प्रारम्भ होकर तक्षशिला तथा उसके भी आगे मध्य एशिया तक जाता था। इसे प्राचीन ग्रांड ट्रंक रोड कहा गया है।[४] इस मार्ग के व्यापारियों का आना-जाना होता था।[५]

एकबल राष्ट्र :

महाउम्मग्ग जातक में एकबल राष्ट्र का उल्लेख हुआ है।[६] संखपाल नाम का राजा यहीं राज्य करता था।

कम्बोज :

कम्बोज जनपद घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था।[७] इसका उल्लेख यवनों के[८]

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७९, ४६१; जि० ४, पृ० ४३०, ४३३; जि० ५, पृ० २१; जि० ६, पृ० ३९१-९२, ४१६, ४६१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१४, जि० ३, पृ० २४६; जि० ४, पृ० ३९, १२०; जि० ५, पृ० १८, २०, ३२, ११०; जि० ६, पृ० ४३७, ४३९, ४६७, ५०६

२. राय चौधरी, पो० हि० ए० इ०, पृ० १३४-३५

३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२४; जि० २, पृ० २८७; जि० ४, पृ० ७९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०८; जि० २, पृ० १९६; जि० ३, पृ० १६; जि० ४, पृ० २८१; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २२, १९३, २०३, २०७, २४०, २६०, २६३, २७४, ३१७; जि० ४, पृ० ५०

४. बु० का० भा० भू०, पृ० ५३८

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०८

६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९०, जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १९८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३७

७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४६४; जि० ५, पृ० ४४६; जि० ६, पृ० २१०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५२, ५२४; जि० ६, पृ० २४६; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २४२; जि० ५, पृ० २१९-२२१; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २४६-२२

८. दिव्या ३४१।२६-२७; ३४५।१९, २३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

साथ किया गया है।[१] महोदय डे इसे अफगानिस्तान मानते हैं।[१]

कोटूम्बर :

महाजनक जातक में कोटूम्बर रट्ठ का उल्लेख मिलता है।[२] इसे क्षोभ वस्त्रों (खोमकोटुम्बराणि) के लिए प्रसिद्ध बताया गया है।[३] मिलिन्दपञ्ह में भी कोटूम्बर जनपद का उल्लेख किया गया है।[४]

कोलिय :

इस जनपद का उल्लेख जातकों में मिलता है।[५] यह जदपद शाक्य गण के पूर्व में रोहिणी नदी के तट पर स्थित था।[६] कुणाल जातक में शाक्यों के भगिनी-विवाह और कोलियों में पूर्वजों को कोल वृक्ष (वन) में निवास करने का उल्लेख मिलता है।[७]

कोशल :

जातकों में कोशल का उल्लेख कई बार हुआ है।[८] प्राचीन भारत का प्रसिद्ध जनपद था। इसकी राजधानी श्रावस्ती थी, जहाँ पर बुद्ध ने अपने[९]

---

१. डे जा० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ८७
२. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २५९
३. वही ६, पृ० ५९
४. मिलिन्द-प्रश्न, पृ० ३२४
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०७; जि० ५, पृ० ४१२-१३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४, ५७४-७५; जि० ५, पृ० ४९७, ४९९
६. सं० बो० सा० में भा० जे०, पृ० ३०
७. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९८
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६५, १७०, १९८, २१५, २३४, २४९, ३०६, ३१७, ३२९-३२; ज० अ० हि० जि० १, पृ० २६१, २६८, ३०६, ३२७, ३५२, ३७१, ४४३, ४५७, ४७२-७५; जि० ३, पृ० २०१, ४२५, ४५७; जि० ४, पृ० ५०, ३३१, ३५८; जि० ५, पृ० ३९७, ५०८; ज० अ० अ० जि० १, पृ० ५०, ७७, ९१, १०५, ११८, १६४, १७२, १८३-८४; जि० ३, पृ० २१, १९१, २९१; जि० ४, पृ० ८३, ९९; जि० ५, पृ० १६६, २२६; खु० नि० पा० जि० १, पृ० ३३४; जि० ३, ख० १, पृ० ३५।१४, १३६।२०, १३७।२; १६४।८; जि० ७, पृ० १२१। २५, ३८४।१४
९. दिव्या ९७।२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विचारों का प्रचार किया था।[१] काशी और कोशल का उल्लेख साथ-साथ मिलता है।[२] नलकपान ग्राम कोशल में ही स्थित था।[३] कोशल राज्य का विस्तार ३०० योजन था।[४] अंग-मगध के समान काशी-कोशल में ८०,००० गाँव थे और जिस प्रकार से राजगृह को अंग-मगध की आमदनी का मुख कहा गया है, उसी प्रकार श्रावस्ती को काशी-कोशल की आय का मुख कहा गया है।[५]

कलिंग :

जातकों में कलिंग का उल्लेख मिलता है।[६] यह प्रदेश सुह्म जनपद के नीचे, महानदी और गोदावरी नदियों के बीच स्थित था।[७] प्राचीन-भारत का प्रसिद्ध जनपद था जिसकी राजधानी दन्तपुर थी (कलिंगेषु दन्तपुरं नाम नगरम्)।[८] अभिलेखों में भी इसका उल्लेख हुआ है।[९] इस नगर की पहचान गोदावरी के तट पर स्थित 'राजा महेन्द्री' से की गई है[१०], परन्तु डे महोदय इसकी पहचान 'पुरी' से करते हैं।[११] सुब्बाराय ने इसकी पहचान चिकाकोल से

---

१. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३१
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २०१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६८
४. बु० का० भा० भू०, पृ० २३३
५. विनयपिटक हि० अ०, पृ० १४
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६७, ३६९; जि० ३, पृ० ३, ३७६, ५४०; जि०४, पृ० २३०, जि० ६, पृ० ४८७, ५२१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९०, ९२, १०१, १७४, १७६, १७७; जि० ४, पृ० ३७, २००, ४३१; जि० ६, पृ० ५२५, ५६७, ५६९, ६३२; जा० अ० अ० जि० २, पृ० २५२, २६०; जि० ३, पृ० २, २२८, ३२२; जि० ४, पृ० १४३; जि० ६, पृ० २५२, २७१; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ७५।१२; जि० ३, ख० २, पृ० ३४९।१६
७. बु० का० भा० भू०, पृ० १६०
८. जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९०, १७४; जि० ४, पृ० ४३१
९. एपी० इण्डि० जि० २५, भाग ६, पृ० २८५
१०. ला० हि० ज्या० ऐ० इ०, पृ० १४९
११. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तीन मील वंशधरा नदी के तट पर विद्यमान दन्तपुर दुर्ग के ध्वंसावशेषों से की है।[1] कलिंग राष्ट्र में दुन्निविट्ठ ग्राम का भी उल्लेख हुआ है।[2]

केकय :

केकय राष्ट्र का उल्लेख जातकों में मिलता है।[3] इसकी राजधानी केकय नामक नगरी थी और इसकी गणना जम्बूद्वीप के तीन अत्यन्त प्रसिद्ध नगरों में की जाती थी।[4] केकय लोगों की दो शाखाएँ थीं, जिसमें से एक उत्तरापथ में बसी हुई थी और दूसरी दक्षिण के महिश्मक मण्डल में थी।

काशी :

काशी जनपद का उल्लेख जातकों में कई बार हुआ है। इसकी राजधानी वाराणसी थी।[5] काशी राज्य का विस्तार ३०० योजन था।[6] काशीनगर[7] धम्मपाल ग्राम[8], सुरुद्धन नगर[9], पत्तम-ग्राम[10], पोतली नगर[11] इस जनपद के विशेष उल्लेखनीय थे। काशी नगर वस्त्रों और चन्दन के लिए प्रसिद्ध था।[12]

---

१. ला० हि० ज्या० ऐ० इ०, पृ० १४९
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५२१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५६७-६८
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१३; जि० ६, पृ० २८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६९; जि० २, पृ० ४१४; जि० ६, पृ० ३१९; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १४९-५०
४. जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१४
५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७६, १८६, २०७, २११
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३०४; जि० ५, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४५४; जि० ५, पृ० १३०
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १६५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १९९
८. वही ४, पृ० ५०, जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २५०
९. वही ४, पृ० १०४; ,, ,, ४, पृ० ३०६
१०. वही २, पृ० १०३; ,, ,, २, पृ० २८४
११. वही २, पृ० १५५; ,, ,, २, पृ० ३४५
१२. जा०हि०रो०जि० १, पृ० ५३, ६५, ३५५; जि० ३, पृ० १०; जि० ४, पृ० ३५२; जि० ५, पृ० ७८, ४९०; जि० ६, पृ० ५००, ५०६; जा०अ० हि०जि० १, पृ० १२०, १३५, ५०५; जि० ३, पृ० १०१, जि० ४, पृ० ५६०; जि० ५, पृ० १६६, ५६७; जि० ६, पृ० ५५, ६०-६१, १७०, १८०, १८५, ५४२, ५४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

काशी के समीप पवित्र उद्यान ऋषिपतन[१] मृगदाय ही सर्वप्रथम बुद्ध के विचारों और वचनों से परिचित और प्रभावित हुए थे।[२]

कश्मीर :

कुम्भकार जातक में कश्मीर का उल्लेख हुआ है।[३] इसका प्रयोग प्रायः गन्धार के साथ किया गया है—'कश्मीर-गन्धार'। डा० लाहा के अनुसार इसका विस्तार ७,००० ली था और यह चारों ओर ऊँचे पर्वतों से परिवृत्त था।[४]

कुरु :

जातकों में कुरू-जनपद का उल्लेख हुआ है। इन्द्रप्रस्थ नामक नगरी इसकी राजधानी थी।[५] कुरु राष्ट्र का विस्तार तीन सौ योजन[६] तथा इन्द्रप्रस्थ नगरी का विस्तार सात योजन था।[७] कम्मासधम्म कुरुओं का एक अन्य प्रसिद्ध निगम था।[८] उत्तर में पंचाल नगर तथा पश्चिम में उत्तरापथ स्थित था।[९] आधुनिक मेरठ, मुजफ्फरपुर, बुलन्दशहर, सहारनपुर, दिल्ली, कुरुक्षेत्र और थानेश्वर कुरु राज्य में सम्मिलित थे।[१०]

कोकालिक राष्ट्र :

व्यग्घ जातक[११] और तक्कारिय जातक[१२] में कोकालिक राष्ट्र का उल्लेख हुआ है।

---

१. जा०अ०रो०जि० २, पृ० ३५४; जा०अ०हि०जि० १, पृ० १३९; जि० ३, पृ० ७९
२. बु०च०, पृ० १४।१०८
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५, ३७८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २२२, २२९
४. लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० १६४-६५
५. जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९०; जि० ४, पृ० ६०-६१, ५६९; जि० ५, पृ० १४५, ५३६, ५५१; जि० ६, पृ० २९३
६. जा० अ० रो० हि० ५, पृ० ४८४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५६१
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४८४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५६१
८. वही ५, पृ० ५११; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५८९
९. वही ४, पृ० ४४४; ,, ,, ५, पृ० ३२
१०. बु० का० भा० भू०, पृ० ४०४; जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ७९, ३७९; जि० ५, पृ० २१, ३४-३५, ९८; जि० ६, पृ० ३९४, ४६४
११. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३५६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८१
१२. वही ४, पृ० २४२-२४३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४४५-४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गन्धार :

जातकों में गन्धार जनपद का उल्लेख मिलता है ।[१] यह उत्तरापथ का प्रसिद्ध जनपद था जो 'कुनड़ या काश्कर नदी से तक्षशिला तक फैला हुआ था' ।[२] जिसकी राजधानी तक्षशिला थी ।[३] गन्धार देश पाण्डु कम्बलों के लिए प्रसिद्ध था ।[४] विदेह के साथ गन्धार के व्यापारिक सम्बन्ध थे ।[५] यह राज्य धन-धान्य से परिपूर्ण था ।[६]

चेतिय :

जातकों में चेतिय राष्ट्र का उल्लेख मिलता है ।[७] यह वर्तमान पूर्वी बुन्देलखण्ड है ।[८] सोत्थिवती नगरी इसकी राजधानी थी ।[९]

दशार्ण :

दसण्णक जातक में दशार्णक का उल्लेख मिलता है ।[१०] यह मध्य-प्रदेश का प्रसिद्ध जनपद था ।[११] यह दशार्ण (आधुनिक यशान नदी) द्वारा अभिसिंचित प्रदेश

---

१. जा० अ० हि० जि० १, पृ० २९६, ४००, ४०१, ४१६, ४५८-५९; जि० २, पृ० १९६, २१६, ४१९; जि० ४, पृ० २६, २९, ३८, २९९; जि० ६, पृ० ५४१; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ७१, १३७, १४८, १७३, २३३; जि० २, पृ० ४२, १५२-५३; जि० ३, पृ० २२१-२४, २२९; जि० ४, पृ० ६३; जि० ६, पृ० २५९
२. पाणिनि-भारत, पृ० ६२
३. जा० अ० रो० जि० २. पृ० ४७; जि० ३, पृ० ३७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २९६, २५८; जि० २, पृ० २१६, ४१९; जि० ४, पृ० ३८, २९९
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५००, जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५४१
५. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७-२९
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २९
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५३, २५६; जि० ३, पृ० ४५४; जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७६, ३७८, ३७९; जि० ४, पृ० ११४, ११७-१८; जि० ६, पृ० ५५९; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १२१; जि० ३, पृ० २७२
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७६
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४५४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ११
१०. वही ३, पृ० ३३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३
११. महावस्तु जि० २।४१९।८-९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है । जो नदी विदिशा के निकट बहती थी[१] अतः इस जनपद की पहचान पूर्वी मालवा से की गई है ।[२]

दक्षिणागिरि :

जातक में दक्षिणागिरि का उल्लेख हुआ है[3] जो राजगृह के समीप स्थित था ।[४] डा० जे० एस० स्पेयर का विचार है कि पर्वतों के दक्षिण में विस्तृत होने के कारण इसे दक्षिणागिरि कहा गया है ।[५]

दमिल राष्ट्र :

अकित्ति जातक में दमिल राष्ट्र का उल्लेख हुआ है ।[६] दमिल रट्ठ कावीर-पट्टन के आस-पास स्थित राज्य था । धम्मपदट्ठकथा में भी इस तथ्य की पुष्टि होती है ।[७] कावीरपट्टन दमिल रट्ठ का मुख्य बन्दरगाह था । इसके पास ही कारदीप नामक एक द्वीप स्थित था ।[८]

पंचाल :

जातकों में पंचाल जनपद का उल्लेख मिलता है ।[९] यह दो भागों में विभक्त था, उत्तर पंचाल और दक्षिण पंचाल, उत्तर पंचाल की राजधानी अहिच्छत्र और दक्षिण पंचाल की राजधानी कम्पिल्ल नगर थी । महोदय राय चौधरी के

---

१. ला० हि० ज्या० ऐ० इ०, पृ० ३१४
२. दिव्या० ३५९।२९-३०
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३४३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३९; जि० ३, पृ० ६९
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३९
५. अवदान जि० १, पृ० ३
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३९; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १५०
७. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५०
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३८
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१४; जि० ४, पृ० ३९८, ४३३, ४८६; जि० ५, पृ० १०४, १०६; जि० ६, पृ० २८०, ३९७, ४१२, ४१५, ४१६, ४१८, ४२४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१६; जि० ४, पृ० ६०६; जि० ५, पृ० २०, ७५, १९०, १९२; जि० ६, पृ० ३१९, ४४३, ४५५, ४५८, ४५९, ४६१, ४६५, ४७८, ५०६-५०७, ५१३, ५१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनुसार अहिच्छत्र (बरेली प्रान्त आंवला के निकट स्थित रामनगर) और कम्पिल्ल (फर्रुखाबाद) जिले में स्थित वर्तमान काम्पिल्ल नगर है।[१]

बावेरु राष्ट्र :

बावेरु जातक में बावेरु राष्ट्र का उल्लेख मिलता है।[२] बावेरु बेबीलोन ही है। भारतीय व्यापारी सामुद्रिक यात्रा के लिए गये हुए थे।[३] बावेरु राजधानी का भी उल्लेख हुआ है।[४]

वाह्लीक :

अट्ठसद्द में बाह्लीक राष्ट्र का उल्लेख हुआ है।[५] उत्तरापथ का प्रसिद्ध जनपद था, जिसकी पहचान वलख से की गई है।[६]

भर्ग (भग्गरि) :

जातक में भग्गरि (भर्ग) का उल्लेख हुआ है।[७] भर्ग जनपद की राजधानी शुशुमारगिरि थी, जिसके पास भेसकलावन मृगदाव या मृगोद्यान था जहाँ भगवान् बुद्ध भग्ग देश में चारिका करते हुए अक्सर ठहरते थे।[८] डा० राय चौधरी के अनुसार भर्गों का गण यमुना और सोन के मध्य विंध्याचल का भाग है।[९]

---

१. प्रा० भा० का० रा० इ०, पृ० १२२
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २९०; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० ८३; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १०४
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २९०
४. जा० अ० अ० जि० ३, पृ० ८३
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ९२, खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १६९
६. ला० हि० ज्या० ऐ० इ०, पृ० १३३
७. जा० आ० रो० जि० ३, पृ० १५७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२०; जि० ५, पृ० ७९; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० १०५
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२०
९. राय चौधरी, पो० हि० ऐ० इ०, पृ० १९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भरु राष्ट्र (भिरुकच्छ-भृगुकच्छ) :

भरु राष्ट्र का उल्लेख जातकों में मिलता है।[१] यह वर्तमान भड़ौच है। भरुकच्छ सुरट्ठ जनपद का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था।[२] सुसन्धि जातक में सग्ग की वाराणसी से भरुकच्छ तक की यात्रा का वर्णन किया गया है।[३] भरुकच्छ से व्यापारी जलयानों द्वारा माल लेकर स्वर्ण भूमि जाते थे।[४] स्थलीय मार्ग के द्वारा मरुकच्छ माहिष्मती से जुड़ा हुआ था।[५] दिव्यावदान में भरु जनपद को 'भिरु' और भरुकच्छ को 'भिरुक' या भिरुकच्छ कह कर पुकारा गया है।[६] इस बन्दरगाह के समीप एक पत्तन ग्राम स्थित था।[७] जिसे सकल भरु राष्ट्रवासी भी कहा गया है।[८] इस जनपद का विस्तार तीन सौ योजन बताया गया है।[९]

मगध :

मगध[१०] प्राचीन भारत का सबसे प्रसिद्ध और चिरस्थायी जनपद था। पूर्व

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७१-७२; जि० ३, पृ० १८८, १९०; जि० ४, पृ० १३७-४२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६४-६५; जि० ३, पृ० ३४९-५०; जि० ४, पृ० ३३७, ३३९-४०, ३४२; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० १२४; जि० ४, पृ० ८६

२. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८४

३. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४२; जि० ३, पृ० ३४९

४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४९

५. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८४

६. दिव्या०, पृ० ५७६

७. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३९

८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७२. जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६५

९. वही २, पृ० १७२; जा० अ० हि० जि०, २, पृ० ३६५

१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८७, १४३, १५४, १६२, १९९, २१२, २१३, २४६, ३७२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६, १६२, २३४, २४८, २५६, ३०७, ३२३-२४, ३६७, ५२८; जि० २, पृ० ७४, १०१, २२५, ४१२-१३; जि० ४, पृ० ३, ४, १३८, ४७९, ५३१; जि० ५, पृ० ४२, २४१, २५४, ३९७, ३९९; जि० ६, पृ० २७५; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ८९, २६९; जि० २, पृ० १४८, जि० ३, पृ० १८४, ३८५, जि० ४, पृ० ९८; सु० नि० पा० जि० १, पृ० २८०, ३२९, ४२२; महावस्तु जि० २।२०९।१, ४११।९; दिव्या० ३४५।७, ३५९।२१; अवदान जि० १।११९।६, १।१३४।५, १।१४८।५, १।२५८।२; जि० २। २०४।१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में कोसी नदी तक फैला था।[१] दक्षिण पूर्व में सुह्म लोगों का जनपद था और दक्षिण में कलिगारण्य तक फैला हुआ था।[२] राजगृह (गिरिव्रज) इस महा जनपद की राजधानी थी।[३] जो विहार प्रदेश (वर्तमान राजगिरि) है।[४] अशोक के समय इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।[५]

मत्स्य :

विधुर जातक में मत्स्य जनपद का उल्लेख मिलता है।[६] यह जनपद कुरु राष्ट्र के दक्षिण और सूरसेन के पश्चिम में स्थित था।[७] मत्स्य जनपद का उल्लेख पंचाल, सूरसेन, मद्र और कैकय के साथ किया गया है।[८] इसकी राजधानी विराटनगर आधुनिक वैराट (जयपुर प्रान्त) थी। इस जनपद में जयपुर-अलवर और भरतपुर प्रान्तों के भू-भाग सम्मिलित थे।[९]

मद्र :

जातकों में मद्रराष्ट्र[१०] का उल्लेख मिलता है, जो उत्तरापथ का प्रसिद्ध जनपद था।[११] जिसकी राजधानी सागल या साकल नगर थी।[१२] मद्र राष्ट्र पंजाब में, रावी और चिनाव नदियों के बीच, स्यालकोट के आसपास स्थित प्रदेश था।[१३]

---

१. बु० का भा० भू०, पृ० १७४
२. वही, पृ० १७४
३. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६; खु० नि० पा० जि० १, पृ० ३२९
४. डा० लाल, सं० बौ० सा० में० भा० जी०, पृ० ३५; महापरिनिब्बानसुत (हि० अ०), पृ० ३५
५. महावस्तु जि० ३।४७।११-१२
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १३७
७. बु० का भा० भू०, पृ० ४३६
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१९
९. डा० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ३५
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३०, ३८८, ३८९; जि० ५, पृ० ४०, २८३, २९४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३२, ५९५, ५९६, ५९७; जि० ५, पृ० १२८, ३६५, ३७५
११. बु० का भा० भू०, पृ० ४७१
१२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३०; जि० ५, पृ० २८३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३२; जि० ५, पृ० ३६५
१३. बु० का० भा० भू०, पृ० ४७२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मलय :

पञ्चूपोसथ जातक में मलय राष्ट्र का उल्लेख हुआ है ।[1]

मल्ल :

मल्ल राष्ट्र बुद्धकालीन प्रसिद्ध गणराज्य था ।[2] जिसकी राजधानी कुसावती थी ।[3] इस जनपद के दो भाग बताये गये हैं—पावा के मल्ल और कुसीनगर के मल्ल ।[4]

महिंसक :

जातकों में महिंसक राष्ट्र का उल्लेख हुआ है ।[5] इसकी पहचान नर्मदा के द्रविण तट पर, इन्दौर से लगभग चालीस मील दूरस्थ महिष्मती से की गयी है ।[6] इसी राष्ट्र में सकुल नगर स्थित है ।[7]

लिच्छवि :

लिच्छवि[8] बुद्धकालीन प्राचीन भारत का प्रसिद्ध गणराज्य था, जिसका मुख्य अधिष्ठान वैशाली था ।[9] महावस्तु में इसका महत्तर तोमर बताया गया है ।[10]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५३३
२. वही ४, पृ० ८२, १४९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८३, ३५०, ३५२; जि० ५, पृ० ३६१; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १४१; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३२७; महावस्तु जि० १।३४।९-१०; जि० २।४१९।९-१०; अवदान जि० १।२२८।४; दिव्या० ३६०।१३
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६१
४. अवदान जि० १।२२७।५-६, १।२३४।९; जि० २।१९७।५; प्रा० भा० भू०, पृ० ४०
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १६२, ३३७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०६; जि० ५, पृ० २४२, ४२०; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ८४, १७८
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०६
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३३७, जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२०
८. वही १, पृ० ४२०, ५०४; जि० ३, पृ० १; जि० ४, पृ० १४८-४९; जि० २, पृ० ४२, १५२, १५७; जि० ३, पृ० १७२; जि० ४, पृ० ३४९-५०; जा० अ० अ० जि० २, पृ० ४, ७, जि० ३, पृ० १; जि० ४, पृ० ९४
९. दिव्या० ३४।२, ९; महावस्तु जि० १।२५४।१५, २५७।१-२, २-३
१०. महावस्तु जि० १।२५४।१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वज्जि :

निमि जातक में वज्जि जनपद का उल्लेख हुआ है ।[१] यह वृज्जियों[२] (आधुनिक वजिया) का प्रसिद्ध गणराज्य था, जिसकी गणना सोलह महाजनपदों में की गई है । यह एक संघ राज्य था जिसमें लिच्छवि, विदेह, ज्ञात्रिक, वृज्ज, उग्र, भोज, कौरव और ऐक्ष्वाकु आठ कुल सम्मिलित थे ।[३] वर्तमान मुजफ्फरपुर चम्पारन और दरभंगा के जिलों में यह जनपद विद्यमान था ।[४]

विदेह :

विदेह की राजधानी मिथिला थी ।[५] इस जनपद का विस्तार तीन सौ योजन था ।[६] इस राज्य में सोलह हजार गाँव थे ।[७] चम्पा और मिथिला की दूरी ६० योजन थी ।[८] यह नगरी धन-धान्य से परिपूर्ण थी ।[९] इसकी पहचान वर्तमान उत्तरी बिहार के जनकपुर नगर से की गई है ।[१०]

वंस (वङ्क) :

वंस[११] भी महान और प्राचीन जनपद था जो मगध और अवन्ति के बीच में स्थित था ।[१२] डॉ० लाहा के अनुसार वंस जनपद की राजधानी कौसाम्बी थी

---

१. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १२०
२. बु० च० २३।१
३. राय चौधरी, पो० हि० ऐ० इ०, पृ० ११८
४. महापरिनिब्बानसुत (हिन्दी-अनुवाद) पृ० ३
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५; जि० ४, पृ० ३१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७, ५२२
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५-६६; जि० ४, पृ० ३१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७, २९, ५२२
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५, ३६७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७, २९
८. वही, ६, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३६
९. वही, ३, पृ० ३६५, ३६७, जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७, २९
१०. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ३९
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८; जि० ६, पृ० २३७, जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २२७; जि० ६, पृ० २७५; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १७; जि० ६, पृ० १२०
१२. बु० का० भा० भू०, पृ० २६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जो यमुना नदी के किनारे स्थित वर्तमान कौसम है।[१] कौसाम्बी नगर का शासक कौसाम्बिक नामक राजा बताया गया है।[२]

शाक्य :

शाक्य जनपद[३] हिमालय की तलहटी में स्थित प्रसिद्ध जनपद था। इस प्रदेश के लोग अभिमानी स्वभाव के थे।[४] शाक्य तथा कोलिय गणराज्यों के बीच रोहनी नदी बहती थी जिससे दोनों राज्यों के लोग खेती के लिए पानी लेते थे जिससे कई बार युद्ध हो चुका था।[५]

शिबि :

जातकों में शिबि राष्ट्र की दो राजधानियाँ अरिट्ठपुर और जेतुत्तर बताई गई है[६] दोनों ही स्थानों पर कहा गया है कि "पूर्व समय में शिबि राष्ट्र के अरिट्ठपुर नगर में शिबि महाराजा राज्य करते थे।" अरिट्ठपुर को महोदय नन्दूलाल डे टालमी के एरिष्टोब्रोथ्रा से मिलाकर उत्तरी पंजाब में स्थित बताया है।[७] इसकी समता यूनानी इतिहासकारों द्वारा उल्लिखित शिब्बॉय के साथ की जा सकती है।[८] जिसकी पहचान झंग प्रान्त में स्थित शोरकोट से की गई है।[९] डॉ० अग्रवाल के अनुसार 'झंग मंघियाना वाला उत्तरी हिस्सा उशीनर जनपद

---

१. लाहा, प्रा भा० का० ऐ० भू०, पृ० ८२
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २२७
३. वही, १, पृ० ८६, ८८, ३२७, ४०७; जि० २, पृ० १५; जि० ४, पृ० १४४, १४७; जि० ६, पृ० ४७९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६१, १६३-६४, ४६९, ५७४; जि० २, पृ० १५९; जि० ४, पृ० ३२७-२८, ३४५, ३५३, ३५८, ४१९, ४६६; जि० ६; पृ० ५१७-१८; जा० अ० अ० जि० २, पृ० ३०१; जि० ३, पृ० २०५; जि० ४, पृ० ९९, २६३, २६७; जि० ५, पृ० २१९-२१; जि० ६, पृ० २४६
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६२
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१२, जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९७; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २१९
६. वही, ६, पृ० ४१९, ४८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६१, ५१८
७. डे, ज्या० डि० ए० मे० इ०, पृ० ११
८. डॉ० लाहा, सं० बौ० सा० में० भा० जी०, पृ० ४०
९. वही, पृ० ४०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था और दक्षिण में शोरकोट के चारों ओर के इलाके का नाम शिबि जनपद था।[१]

शूरसेन :

शूरसेन जनपद[२] को मच्छ जनपद के दक्षिण-पश्चिम और कुरु राष्ट्र के दक्षिण में स्थित बताया गया था।[3] इसके पूर्व में पंचाल जनपद और दक्षिण में अवन्ति महाजनपद का दसण्ण (दशार्ण) भाग था।[४] इसका उल्लेख मत्स्य, भद्र और कैकय लोगों के साथ किया गया है।[५] इसकी राजधानी मथुरा थी।[६] यह यह नगर धन-धान्य पूर्ण था। डॉ० अवस्थी के अनुसार यह मथुरा मंडल ही है।[७]

सिन्धु :

जातकों में सिन्धु प्रदेश का उल्लेख कई बार हुआ है।[८] इसी के समीप सौवीर देश स्थित था।[९] यह प्राचीन काल में सिन्धु नदी की निचली घाटी में बसा हुआ था।[१०] अच्छी नस्ल के तेज दौड़ने वाले घोड़ों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था।

---

१. अग्रवाल, पाणिनि० भारत, पृ० ६८
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १३७; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २९८।१५
३. बु० का० भा०, पृ० ४३७
४. वही, पृ० ४३७
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१९
६. बु० का० भा० भू०, पृ० ४३८
७. प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ११३
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८९; जि० ४, पृ० ३५५; जि० ६, पृ० ३०२, ५१०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२८; जि० ३, पृ० १८, १९, २०, ६३, ६४, ९८; जि० ४, पृ० ५६३; जि० ६, पृ० ३४२, ५५५; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ६१, ६३; जि० २, पृ० ११६, २३३; जि० २, पृ० ५; जि० ५, पृ० १३२; जि० ६, पृ० १४, ११६, १७१, २६१, २६२; खु० नि० पा० जि० २, पृ० ६२, ३८९
९. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८२
१०. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ४१-४२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुम्भ :

तेलपत्त जातक में सुम्भ राष्ट्र का उल्लेख हुआ है ।[१] इसके समीप सेतक नामक निगम था ।[२] ला महोदय आधुनिक मेदनीपुर जिले के प्रायः समस्त भाग को प्राचीन सुम्भ (सुम्ह) जनपद मानते हैं ।[३]

सुरट्ठ (सौराष्ट्र) :

सुरट्ठ जनपद[४] को सातोदिका नदी के तट पर स्थित बताया गया है । पश्चिमी भारत का प्रसिद्ध देश था, जो आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है ।[५] यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक देश था ।[६]

सुवर्ण भूमि :

जातक में सुवर्ण भूमि का उल्लेख हुआ है ।[७] भरुकच्छ के व्यापारी समुद्री मार्ग से माल लेकर सुवर्ण भूमि (दक्षिणी वर्मा) तक व्यापार के लिए जाते थे ।[८] चम्पा के व्यापारी भी सुवर्ण भूमि (दक्षिणी वर्मा) तक व्यापार के लिए जाते थे ।[९]

सेरिव :

सेरिवाणिज जातक में सेरिव नामक देश का उल्लेख हुआ है ।[१०] डा० हेमचन्द राय चौधरी ने श्री राज्य या मैसूर के गंगा राज्य से मिलाने का

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५६; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २३२
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५६
३. प्रा० भा० भौ० स्व०, पृ० ८२-८३
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जि० ५, पृ० १३३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; जि० ५, २१५; जा० अ० अ० हि० ३, पृ० २७७; जि० ५, पृ० ७१
५. डा० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी० पृ० ४२
६. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; जि० ५, पृ० २१५
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५, ४६८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५; जि० ५, पृ० ५८; जि० ६, पृ० ३८; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० १२४; जि० ६, पृ० २२
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५
९. वही ६, पृ० ६४
१०. वही १. पृ० १११, जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९०; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्ताव किया है।[१] इस राज्य के व्यापारी तेलवाह नदी को पार करने के बाद उसके दूसरे किनारे पर स्थित अन्धपुर नामक नगर में पहुँचे थे।[२] पहचान अनिश्चित है।

सौवीर :

सौवीर राष्ट्र जिसकी राजधानी रोरुव नगर थी।[३] इसका उल्लेख सिन्धु जनपद के साथ किया गया। इससे दोनों देशों में सान्निध्य सिद्ध होता है।[४] सिन्धु देश के ऊपर सौवीर देश स्थित था।[५] डा० अग्रवाल के अनुसार "इस समय जो सिन्धु प्रान्त है उसका पुराना नाम सौवीर था।"[६] इसकी स्थिति सिन्धु नदी के निचले काठे में बताई गई है। रौरुव या रौरुक नगर की आधुनिक पहचान रौरा या रौरी गाँव से की गई है, जो सिन्धु देश के उत्तरी भाग में स्थित है।[७]

इस प्रकार जातकों में उल्लिखित जनपदों से भारत के विभिन्न भागों का भौगोलिक और आर्थिक ज्ञान प्राप्त होता है। इन जनपदों में से कुछ में राजतन्त्रात्मक शासन था और कुछ जनपदों में गणतन्त्रात्मक शासन प्रचलित था।

नगर-ग्राम

जातक साहित्य के युग में नगरों-निगमों और ग्रामों का बहुत अधिक महत्त्व था। नगर भारतीय संस्कृति के आदि केन्द्र रहे हैं। शनैः शनैः सभ्यता के विकास के साथ-साथ गाँव से बड़े निगम स्थापित हुए जिन्हें इस समय अंग्रेजी में 'टाउन' कह सकते हैं। कालान्तर में इन निगमों से भी बड़े शहर स्थापित होने लगे। जातकों में श्रावस्ती, तक्षशिला, राजगृह, साकेत, अयोध्या, उज्जैनी, तक्षशिला, महिष्मती, कौशाम्बी, प्रतिष्ठान, सोपारा, भृगुकच्छ आदि विशाल नगरों का वर्णन मिलता है। ये नगर आध्यात्मिक शान्ति से दूर कोलाहल के केन्द्र थे। यहाँ पर जातकों में प्राप्त नगर, निगम और ग्रामों का संक्षिप्त भौगोलकि विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

---

१. राय चौधरी, पो० हि० ऐ० इ०, पृ० ९२
२. जा अ० रो० जि० १, पृ० १११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९०
३. वही ३, पृ० ४७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२९; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २८०
४. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ४२
५. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८२
६. अग्रवाल, पाणिनि भारत, पृ० ६४
७. बु० का भा० भू०, पृ० ४८३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्धपुर नगर :

सेरिववाणिज जातक में अन्धपुर नामक नगर का उल्लेख हुआ है।[1] यह नगर नीलवाहिनी नदी के पास स्थित था। डा० हेमचन्द्रराय चौधरी ने अन्धपुर को आधुनिक विजयवाड़ा (वैजवाड़ा) या उसके किसी पड़ोसी नगर से पहचानने का प्रस्ताव किया है।[2]

अनुपम नगर :

विश्वभू, बुद्ध के नगर का नाम अनुपम नगर था।[3]

अनूपिय नगर :

अनुपिय नगर[4] तथा अनुपिय आम्रवन बिहार कपिलवस्तु और राजगृह के बीच स्थित था।[5] अनूपिया मल्लों का एक प्रसिद्ध निगम था।[6] शाक्य कुमार ने महाभिनिष्क्रमण के बाद अनोमा नदी को पारकर अनूपिया के आम्रवन में सात दिन तक ध्यान किया था।[7] सुखबिहारी जातक का उपदेश अनूपिया के आम्रवन में ही दिया गया था।[8]

अनोमा नगरी :

यह प्रियदर्शी बुद्ध का नगर था।[9]

अमर नगर :

सुमेध पण्डित संन्यास के समय अमर (नामक) नगर से निकलकर हिमालय के धम्मक पर्वत पर पहुँचे थे।[10] इससे यह आभासित होता है कि नगर हिमालय पर्वत के समीप स्थित रहा होगा।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९०; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १२
२. पो० हि० आव ए० इ०, पृ० ९२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५, १४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३६, २२९; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ३२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५-६६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३६
६. बु० का० भा० भू०, पृ० ३२८
७. जा० अ० रो० जि १, पृ० ६५-६६; जा० अ० हि जि० १, पृ० १३६
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४०; जा अ० हि० जि० १, पृ० २२९
९ जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०२
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ ६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६०
११. महावस्तु जि० २, पृ० ११८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमरवती नगर (अमर नगर) :

अमरवती काल्पनिक नगरी है।[१] 'बुद्धवंश' में इसे अमरावती नगरी कहा गया है।[२]

अयोध्या नगर :

धत जातक में अयोध्या नगर का उल्लेख हुआ है।[३] यह साकेत के समीप स्थित था।[४] अयोध्या का उल्लेख संयुक्त-निकाय के फेण-सुत्त में भी हुआ है। इस सुत्त में भगवान् बुद्ध को अयोध्या में गंगा नदी के तट पर विहार करते देखते हैं।[५] यह हिन्दुओं के सात तीर्थ स्थानों में से एक है, जो अयोध्या नामक दूसरी संज्ञा से विख्यात है।[६] कालसेना का निवास स्थान था।[७] यह फैजाबाद जिले में स्थित वर्तमान अयोध्या ही है।

अयुद्धपुर :

कुलावक जातक में अयुद्धपुर का उल्लेख हुआ है।[८] शक्र ने असुरों का फिर दुबारा आना रोकने के लिए पाँच जगहों पर पहरा (आरक्षा) स्थापित किया। यह नगर युद्ध से अजय होने के कारण अयुद्धपुर कहलाया था।[९]

अरुणवती नगरी :

इसे शिखी बुद्ध का नगर बताया गया है।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २-३;
   जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६-५७
२. बु० का० भा० भू०, पृ० ३३
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८४;
   जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ५२
४. वही, पृ० ५२
५. सं० नि० (हिन्दी अनुवाद) भाग १, पृ ३८२
६. लाहा, प्रा भा० का ऐ० भू०, पृ० ११३
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८२;
   जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८४
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ २०४;
   जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१२
९. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१२
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४१;
   जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अरिट्ठपुर (अरिष्टपुर) :

अरिट्ठपुर[१] शिवि राष्ट्र की राजधानी थी। महोदय नन्दोलाल डे ने इसे टालमी के एरिष्टोबोथ्रा से पहचान की है और उत्तरी पंजाब में स्थित बताया है।[२]

अश्वपुर :

चेतिय जातक में अश्वपुर का उल्लेख हुआ है।[३] चेतिय नरेश उपचर के सबसे बड़े पुत्र ने इस नगर को बसाया था।[४]

असितञ्जन नगर :

धत जातक में असितञ्जन नगर का उल्लेख हुआ है।[५] यह कंसभोग की राजधानी थी जो उत्तरापथ में स्थित थी।[६]

आलवी नगर :

आलवी[७] नगर अग्गालव चैत्य के समीप स्थित था जहाँ पर उपासिकायें और भिक्षुणियाँ, धर्म सुनने के लिए जाती थीं। आलवी में भगवान् बुद्ध ने अपना सोलहवाँ वर्षावास किया था।[८] आलवी पंचाल देश में स्थित बताया गया है।[९] महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने आलवी को वर्तमान अर्वलपुर से मिलाया है जो

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०१; जि० ५, पृ० २१०-२१२; जि० ६, पृ० ४१९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६१०; जि० ५, पृ० २९३, २९५; जि० ६, पृ० ४६१; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २५०; जि० ५, पृ० १०७, १०९; जि० ६, पृ० २१५

२. डे० ज्या० डि० ऐं० में इ०, पृ० ११

३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०

४. वही, ३, पृ० ४६०-६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०

५. वही, ४, पृ० ७९, ८२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८१, २८४; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ५०

६. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८१

७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६०; जि० २, पृ० २८३; जि० ३, पृ० ३५१; जा० अ० हि० हि० जि० १, पृ० २५६; जि० ३, पृ० ११-१२; जि० ४, पृ० १६; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ४७; जि० २, पृ० १९७; जि० ३, पृ० ५२, २१६

८. बु० का० भा० भू०, पृ० ११०, ४१८

९. वही, पृ० ४१८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कानपुर और कन्नौज के बीच में स्थित है[१], परन्तु पालि साहित्य में उल्लिखित आलवी की पहचान वर्तमान नेवल से करना समीचीन है जो जिला उन्नाव में बांगरमऊ कस्बे से डेढ़ मील दूर स्थित है।

इन्द्रप्रस्थ :

इन्द्रप्रस्थ कुरु राष्ट्र की राजधानी थी।[२] विधुर-पण्डित जातक तथा महा-सुतसोम जातक में इसका विस्तार सात योजन बताया गया है।[३] इसे इन्द्रपत्तन भी कहा गया है जो 'उत्तरापथ' मार्ग पर पड़ने वाला एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव था।[४] अंग, मगध, विदेह, कोसल और वाराणसी के व्यापारी इन्द्रप्रस्थ होते हुए ही तक्षशिला जाते थे।[५]

उत्कल :

उत्कल[६] की पहचान महानदी और सुह्म के मध्य स्थित उड़ीसा के उत्तरी भाग से की जाती है[७] परन्तु महावस्तु नामक ग्रन्थ में इसे उत्तरापथ का प्रसिद्ध अधिष्ठान बताया गया था (उत्तरापथे उत्कलं नामाधिष्ठान)।[८] तपस्सु-भल्लिक नामक दो व्यापारी पाँच सौ गाड़ियों के साथ उत्कल उत्तरी उड़ीसा देश से मध्य देश को आये थे।[९]

उत्तर नगर :

उत्तर-नगर भगवान मंगल का बताया गया था।[१०] यह उत्तर या उत्तर के कोलियों का एक कस्बा था। यहाँ भगवान बुद्ध एक बार गये थे। यहीं पाटलि

---

१. बुद्धचर्या, पृ० २४२, पद-संकेत २
२. जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१६; जि० ३, पृ० ९०; जि० ४, पृ० ६०, ५६९; जि० ५, पृ० १४५, ५३६, ५५१, ५६१; जि० ६, पृ०२९३
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४८४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५६१
४. बु० का० भा० भू०, पृ० ४०६
५. वही, पृ० ४०६
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०,
जा० अ० हि० जि० १, पृ०१५३
७. बु० का० भा० भू०, पृ० ४९६
८. महावस्तु जि० ३। ३०३।४
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८० ;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्रामणी उनसे मिलने आया था और उसे पाटलि-सुत्त का उपदेश दिया गया था।[१]

उद्दियान (उद्यान) :

महावाणिज जातक में उद्दियान का उल्लेख हुआ है।[२] उद्दियान कम्बलों के लिए प्रसिद्ध था (उद्दियानि च कम्बला)।[३] डा० भरतसिंह उपाध्याय के अनुसार स्वात की घाटी से लेकर पूर्व में सिन्धु नदी तक यह प्रदेश फैला था।[४]

उपकारि नगर :

महाउम्मग्ग जातक में उपकारि नगर का उल्लेख हुआ है।[५] उत्तर पन्चाल से गंगा तट के मार्ग पर स्थित यह पन्चाल राष्ट्र का एक नगर था।

उलुम्प (उलुम्पा) :

भद्दसाल जातक में उलुम्प नामक निगम का उल्लेख हुआ है।[६] शाक्यों के जनपद में स्थित था।[७]

उदुम्बर :

महावेस्सन्तर जातक में उदुम्बर का उल्लेख हुआ है।[८] महापण्डित राहुल सांकृत्यापन ने उदुम्बर नगर को कानपुर जिले में कोई स्थान माना है।[९] यह नगर वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था।

उक्कट्ठा :

मूल परियाय जातक में उक्कट्ठा का उल्लेख हुआ है।[१०] इसके समीप ही सुभग वन था। उक्कट्ठा कोशल देश का एक प्रसिद्ध ब्राह्मण ग्राम था।[११]

---

१. सं० नि० (हिन्दी अनुवाद) जि० २, पृ० ५९३-९४
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६०
३. वही
४. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८१
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४४८, ४५९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४८९, ५००; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २३१-३२
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५२; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ९५
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५२
८. वही ६, पृ० ५१०; ज० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५४
९. बुद्धचर्या, पृ० ५४६
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५९;
जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६७-६८
जा० अ० अ० जि० २, पृ० १८०
११. बु० का० भा० भू०, पृ० २५८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उज्जैनी (उज्जयिनी) :

गुत्तिल जातक तथा चित्तसम्भूत जातक में उज्जैनी का उल्लेख हुआ है।[1] यह अवन्ती राष्ट्र की राजधानी थी।[2] दीपवंश के अनुसार राजा अच्चुतगामि ने उज्जयिनी नगरी की स्थापना की थी।[3] इसके बाहर चण्डाल ग्राम स्थित था।[4]

उरुबेला :

जातकों में उरुबेला का उल्लेख हुआ है।[5] यह आधुनिक बोध गया जिला गया (बिहार)[6] से छः मील दक्षिण नैरंजना नदी के किनारे स्थित था।[7] यह रमणीय, योगार्थी कुल-पुत्र के योगाभ्यास के लिए उपर्युक्त था।[8] ऊरुबेला में जटिल तपस्वियों को साढ़े तीन हजार प्रातिहार्य (चमत्कार) दिखाकर प्रव्रजित किया गया था।[9] यह काश्यप महाश्रमण (गौतम) का स्थान था। भगवान् बुद्ध तीन महीने उरुबेला में रहे थे।[10]

ऋषिपत्तन मृगदाव :

ऋषिपत्तन मृगदाव[11] वाराणसी के समीप स्थित था।[12] भगवान् बुद्ध ने यहीं

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४८, २५०; जि० ४, पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५६-५७; जि० ४, पृ० ५९८; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १७२; जि० ४, पृ० २४४
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९८
३. दीपवंश, पृ० ५७
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९८
५. वही, १, पृ० ५६, ६८, ८२, ८६; जि० ४, पृ० १८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२५, १३९, १५६, १६१; जि० ४, पृ० ३७९; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ३, १७९; जि० ६, पृ० ११४; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० १३१
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२५
७. बु० का० भा० भू०, पृ० २१०
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२५
९. वही, जि० १, पृ० १५६
१०. वही, जि० १, पृ० १६१
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६८; जि० २, पृ० ३५४; जि० ६, पृ० ४८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३९; जि० ३, पृ० ७९; जि० ६, पृ० ५१८; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३८१
१२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५४; जि० ३, पृ० ७९; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३८१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पर धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।[1] ऋषिपत्तन जलाशय भी था।[2] इसे कल्याणकर मृगदाव भी कहा गया है।[3] यह वर्तमान सारनाथ (पूर्वोत्तर रेलवे) जिला बनारस से ५ मील दूर स्थित है।[4] महावस्तु में इसे 'ऋषिवत्तन मृगदाव' कहा गया है।[5]

कटकन्धवार :

हत्थिपाल और महाजनक जातक में कटकन्धकार वासी का भी उल्लेख हुआ है।[6]

कपिलवस्तु (कपिलपुर) :

कपिलवस्तु (कपिलवत्थु) शाक्यों की राजधानी थी।[7] यद्यपि कुछ विद्वान् इसे वर्तमान तिलौराकोट, तौलिहवा (नेपाल-तराई) से दो मील उत्तर में स्थित मानते है[8], परन्तु पुरातात्त्विक खुदाई से जो साक्ष्य और सामग्री पिपराहवा (जिला बस्ती, उत्तर प्रदेश) से मिली है उससे यह सिद्ध होता जा रहा है कि यही पिपराहवा ही प्राचीन कपिलवस्तु है। इस नगर में दस हजारवासियों का उल्लेख मिलता है।[9] यह भगवान् बुद्ध की पितृ-भूमि थी तथा यहीं पर शाक्यों का प्रमुख अधिष्ठान था।[10] कपिलवस्तु में आषाढ़ उत्सव का उपदेश हुआ था।[11] 'सौनदरनन्द' से ज्ञात होता है, कि इस नगर की स्थापना इक्ष्वाकुवंशी राजकुमारों ने अपने गुरु 'कपिल मुनि गौतम' की स्मृति में करवायी थी।[12]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५४
२. वही, २, पृ० ३५४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ७९
३. वही, ६, पृ० ४८०; ,, ,, ६, पृ० ५१८
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३९; जि० ३, पृ० ७९
५. महावस्तु जि० २।१३८।२-७
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९०; जि० ६, पृ० ३०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ७९; जि० ६, पृ० ३३
७. वही, पृ० १४४-४५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४५
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७४, ११६; महापरिनिव्वानसुत्त, पृ० १९३
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६२
१०. जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ९२
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७
१२. सौ० १।१८-२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसकी पुष्टि महावस्तु से भी होती है।[1] कपिलवस्तु के समीप ही निग्रोधाराम बिहार था।[2] कपिल ऋषि के आश्रम पर बसाये जाने के कारण ही यह नाम पड़ा।[3] ललितविस्तर में इसे 'कपिलपुर'[4] तथा कपिलाह्वयं पुर,[5] कपिलवस्तु महानगर[6] और कपिलाह्वय महापुर[7] भी कहा गया है।

कम्पिल्ल नगर (किम्बिली नगरी) :

जातकों में कम्पिल नगर का उल्लेख हुआ है।[8] यह दक्षिणी पंचाल की राजधानी थी। कम्पिल नगर की पहचान जनरल कनिंघम ने आधुनिक काम्पिल्य से की है, जो उत्तर-प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में, फतेहगढ़ से २८ मील उत्तर-पूर्व, गंगा के समीप स्थित है।[9] यह नगर समृद्धशाली था।[10] किम्बला नगर में एक वेणुवन था, जहाँ भगवान् ने आयुष्मान किम्बिल सुत्त का उपदेश दिया था।[11]

कालवेल :

हत्थिपाल जातक और महाजनक जातक में कालवेल का उल्लेख हुआ है।[12]

---

१. महावस्तु जि० १।३५१।१७-१९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०८; जि० ४, पृ० ६, २८२, जि० ६, पृ० ४७९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१८; जि० ४, पृ० २०८, ४८६, जि० ६, पृ० ५१७
३. सो०, १।५७
४. लेफमैन, ललित, २४३।२
५. वही, २८।३
६. वैद्य ललित, ५७।१३, ७१।१, २, ३
७. वही, ५३।१०,२५, ५७।७, २२
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७९; जि० ६, पृ० ४३३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९; जि० ६, पृ० ४७३
९. कनिंघम, ए० जा० आव० इ०, पृ० ४१३; आ० सर्वे० आ० इ० को० रि० जि० १, पृ० २५५
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७३
११. बु० का० भा० भू०, पृ० ४१५
१२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९०; जि० ६, पृ० ३०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ७९; जि० ६, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

काशी नगर :

जातकों में काशी नगर का उल्लेख हुआ है।[१] यह नगर पुष्य बुद्ध का था।[२] दूतजातक के अनुसार बोधिसत्त्व ने अपने एक पूर्वजन्म में काशी-ग्राम के एक ब्राह्मण के रूप में गंगा नदी के तट पर ध्यान किया था।[३]

कुण्डिय नगर :

असातरूप जातक में कुण्डिय नगर का उल्लेख हुआ है।[४] यह नगर शाक्य देश में स्थित कुण्डिधान वन के समीप था।[५]

कुम्भवती नगर :

इन्द्रिय जातक तथा सरभंग जातक में कुम्भवती नगर का उल्लेख हुआ है।[६] यह नगर मज्झिम देश (मध्य-देश) में स्थित था। यही राजा दण्डकी की राजधानी थी। इन्द्रिय जातक के अनुसार ऋषि किसबच्छ ने कुम्भवती नगर में निवास किया था।[७]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४१; जि० २, पृ० ७०, २०३, ४०३, ४०४; जि० ३, पृ० ३६, ३१०, ५१०; जि० ४, पृ० ११४, ११५, २२४, ३४२; जि० ५, पृ० ६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०५; जि० २, पृ० २४५, ३६६, ४०२, ४०६; जि० ३, पृ० १२३, १२५, २०४, ४०६, ४६०, जि० ४, पृ० १७०, ३१५-१६, ४२५, ५४९; जि० ५, पृ० १५५

२. ज० अ० रो० जि० १, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०५

३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २२५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४२६

४. वही, १, पृ० ४०७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५७४; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २४२

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०७, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५७४; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २४२

६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जि० ५, पृ० १३४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; जि० ५, पृ० २१५; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २७७; जि० ५, पृ० ७१

७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुसावती (कुसी नारा) :

चौरासी हजार नगर में कुसावती[१] राजधानी प्रमुख थी।[२] कुसावती का प्राचीन नाम कुसीनारा था। मल्ल राष्ट्र की एक राजधानी थी।[३] चीनी यात्री फाहियान ने कुसीनारा की यात्रा की थी और उसने इसे पिप्फलिवन के मोरियों के अंगार-स्तूप के पूर्व में बारह योजन की दूरी पर स्थित बताया है और वैशाली से कुसीनारा की दूरी २५ योजन बताई है।[४] महापीर निव्वानसुत्त में कुशीनारा (कुशीनगर, जिला देवरिया) के मल्लों को शालबन उपवत्तन के समीप बताया गया है।[५]

कोटिग्राम :

महापणाद जातक में कोटिग्राम का उल्लेख हुआ है।[६] यह वज्जि जनपद में स्थित था।[७] संयुक्त-निकाय के अनुसार भगवान् बुद्ध दस सुत्तों का उपदेश कोटिग्राम में निवास करते समय ही दिया था[८]।

कोलिय नगर :

कुणाल जातक में कोलिय नगर का उल्लेख हुआ है।[९] कोल वृक्षों की

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९१; जि० ४, पृ० १४८, १५१; जि० ५, पृ० २०८, २८५, २९४, २९७, ३११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५३-५४; जि० ४, पृ० ३४९, ३५२; जि० ५, पृ० ३६१, ३६६, ३६७, ३७५, ३७९, ३९३; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २३१; जि० ४, पृ ९३; जि० ५, पृ० १४१, १४६-४७, १५३-५५, १६३; खु० नि० पा० जि० २, पृ० ७१-७२; जि० ७, पृ० २८९, ३८३।

२. जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १४१।

३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २०८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६१।

४. गिलस ए, ट्रेविल्स आव फाहियान, पृ० ४१।

५. महापरिनिव्वसुत्त (हिन्दी अनुवाद), पृ० १३७।

६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ५८; जा० अ० अ० जि० २, पृ० २३०।

७. बु० का० भा० भू०, पृ० ३९८।

८. संयुक्त-निकाय (हि० अ०), भाग २, पृ० ८११, ८१३।

९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१२-१३, ४१५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९७, ४९९, ५००; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २१९-२०; खु० नि० पा० जि० २, पृ० २९१; जि० ७, पृ० १४१।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थिति पर यह नगर बसाया गया था, इसलिए इसका नाम 'कोल नगर' या 'कोलिय-नगर' पड़ा।[१] कोलिय नगर के बीच रोहिनी नदी बहती थी।[२]

कौशाम्बी :

कौशाम्वी[३] प्राचीन भारत का प्रसिद्ध नगर था। यह इलाहाबाद से तीस मील पश्चिम यमुना के बायें किनारे पर स्थित था। इसकी पहचान वर्तमान कोशम (जिला इलाहाबाद) से की गई है।[४] भगवान् ने कौसम्बी के बदरिकाराम में बिहार किया था।[५] दिव्यावदान में जनपद भी कहा गया है, जहाँ का राजा उदयन था।[६] यहाँ पर 'घोषित कुब्जोत्तरा' तथा अन्य स्त्रियों और पुरुषों ने बौद्ध-दीक्षा ली थी।[७]

कंजगल :

कंजगल निगम[८] मध्य देश की पूर्वी सीमा पर स्थित था। इसकी पहचान कंकजोल जिला संथाल परगना बिहार से की गयी है।[९]

---

१. बु० का० भा० भू०, पृ० २८६।
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९७; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २१९।
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६०; ३९०, जि० ३, पृ ६४, २११. ३८४, ४९०; जि० ४, पृ ५६, ३७५, ३९२; जि० ६, पृ० २३७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५६, ५१०, ५११; जि० ३, पृ० २३१, ३७२; जि० ४, पृ० ४४, १४९, २५६, ५८३, ६००; जि० ६, पृ० २७५; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ४७, २०६; जि० ३, पृ० ४३, १३९, २३३; २८९, जि० ४, पृ० १७, ३६, २४६, २३५; जि० ६, पृ० १२०।
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६; सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ५०।
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६०; जि० ३, पृ० ६४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५६; जि० ३, पृ० २३१।
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३७५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८३; दिव्या० ४५८/९, १२।
७. बु० च० २१/३३।
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६; जि० ४, पृ० ५१५; जा० आ अ० जि० ४, पृ० १९६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १२७।
९. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खेमवती (खेमनगर) :

खेमनगर[१] ककुसन्ध बुद्ध तथा भगवान् सुमन के नाम से अभिहित किया जाता था।[२] इसका अभिज्ञान हमें निदान-कथा से मिलता है। प्राचीन नगरियों में खेमवती नगर का उल्लेख महापदान-सुत्त में हुआ है।[३]

खोम (खोमदुस्स) :

महावेस्सन्तर जातक में खोम का उल्लेख मिलता है।[४] यह वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। खोमदुस्स शाक्य जनपद में ब्राह्मणों का एक कस्बा था।[५]

गग्गलि ग्राम :

महाउम्मग्ग जातक में गग्गलि ग्राम का उल्लेख हुआ है।[६] यह गंगा के पार स्थित था।[७] इसकी आधुनिक पहचान नहीं हो सकी है।

गया :

जातक कथाओं में गया का भी उल्लेख हुआ है।[८] आचार्य बुद्धघोष के अनुसार गया एक तीर्थ के अलावा एक ग्राम का भी नाम था।[९] बुद्धत्व प्राप्ति के बाद तथागत बुद्ध अपनी प्रथम यात्रा में बोधि-गया या उरुवेला से गया होते हुए ही वाराणसी पहुँचे थे।[१०] बोधिवृक्ष से गया तीर्थ तीन गावुत (करीब ६ मील) की दूरी पर स्थित था और वाराणसी से उसकी दूरी १५ योजन थी।[११] बोधि

---

१. जा०अ०रो०जि० १, पृ० ३४, ४२, जा०अ०हि०जि० १, पृ० ९७, १०७; खु०नि०पा० जि० ७, पृ० ३५९, ३७१।

२. जा०अ०रो०जि० १, पृ० ३४, ४२; जा०अ०हि०जि० १, पृ० ९७, १०७

३. बु० का भा० भू०, पृ० ९।

४. जा०अ०रो०जि० ६, पृ० ५००; जा०अ०हि०जि० ६, पृ० ६।

५. बु० का० भा० भू०, पृ० ३०५।

६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७२; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २०२।

७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७२।

८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६; जि० ५, पृ० ४७२।

९. सारत्थप्पकासिनी, जि० १, पृ० ३०२।

१०. विनयपिटक (हि० अ०), पृ० ७९।

११. पपंचसूदनी, जि० १, पृ० ३८७।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गया से ६ मील दक्षिण में स्थित है[1] जहाँ विशाल महाबोधि मन्दिर तथा बोधि वृक्ष विद्यमान हैं ।

गोवड्ढमान भोग ग्राम :

घत जातक में इस ग्राम का उल्लेख हुआ है ।[2] उत्तरापथ का एक ग्राम था, इसे कंस के राज्य (कंस भोग) में स्थित बताया गया है ।[3] इसे आधुनिक गोवर्द्धन गाँव से मिलाया गया है, जो मथुरा से १४ मील दूर गोवर्द्धन पर्वत के समीप स्थित है ।[4]

चन्द्रावती नगर (चन्दवतिया) :

जातक साहित्य में चन्द्रावती नगर का उल्लेख हुआ है ।[5] यह नगर भगवान् अनोमदर्शी का नगर था ।[6]

चम्पक नगर :

चम्पक नगर[7] भगवान् पद्म से सम्बन्धित बताया गया है ।

चम्पा नगरी (कालचम्पा नगर) :

चम्पा[8] अंग जनपद की राजधानी थी ।[9] इसे ही सम्भवतः कालचम्पा भी कहा गया है ।[10] यह नगरी चम्पा नामक नदी के तट पर बसी हुई थी[11] जो

१. ला० जा० आ० अ० बु०, पृ० २६ ।
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८२; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ५१ ।
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ २८१ ।
४. बु० का० भा० भू०, पृ० ४४७ ।
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९९; खु० नि० पा० जि० ६, पृ० ८७, ९०, जि० ७, पृ० ३३६ ।
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९८ ।
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९९; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३३९ ।
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५३; जि० ६, पृ० ३६-३७ ।
९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४५४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२ ।
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३१-३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३५-३६ ।
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४५४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मिथिला से १८० मील दूर थी।[१] गौतम बुद्ध की मृत्यु के समय तक चम्पा भारत की छः प्रमुख नगरियों में से एक मानी जाती थी।[२] चम्पा नगरी अपने धन वैभव के साथ-साथ व्यापार-वाणिज्य के लिए भी प्रख्यात थी। यहाँ के व्यापारी अपने वाणिज्य-व्यवसाय के सम्बन्ध में सुवर्ण-भूमि (दक्षिणी वर्मा) भी जाते थे।[3]

चुल्लकम्मासदम्म (महाकम्मासदम्म) :

महासुतसौम जातक और जयद्दिस जातक में चुल्लकम्मासदम्म (महाकम्मासदम्म) निगम का उल्लेख हुआ है।[४] कम्मासदम्म के दमन के स्थान पर बसा होने के कारण यह गाँव कम्मासदम्म निगम कहलाया।

डॉ० भरतसिंह उपाध्याय के अनुसार, कस्बा बागपत (जिला-मेरठ) से सात-आठ मील दूर यमुना के उस पार पंजाब राज्य में स्थित कमासपुर कुसमापुर कस्बा है।[५]

चूड़ामणि चैत्य :

जातक कथाओं में चूड़ामणि चैत्य का उल्लेख मिलता है।[६] अनोमा नदी को पारकर शाक्य कुमार ने जिस स्थान पर अपने जूड़े (चूड़ा) को अपनी तलवार से काटा था वहीं बाद में 'चूड़ामणि चैत्य' की स्थापना की गई थी। 'चूड़ामणि चैत्य' को महोदय कनिंघम ने वर्तमान चुरेय नामक गाँव से पहचाना है, जो चन्दावली से तीन मील उत्तर में है।[७]

चोर ग्राम :

सतिगुम्ब जातक में चोर ग्राम का उल्लेख हुआ है।[८] यहाँ पाँच सौ चोरों का निवास था।

---

१. महाजनक जातक, सं० ५३९।
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९१ ; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५३।
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३२-३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३८।
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ १२४, ५८९।
५. बु० का० भा०, भू० पृ० ४०८-१०।
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५।
७. बु० का० भा० भू०, पृ० ९२।
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १८।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जेतुत्तर नगर :

वेस्सन्तर जातक में जेतुत्तर नगर का उल्लेख हुआ है।[1] यह शिवि राष्ट्र की राजधानी थी। जेतुत्तर नगर की चेत राष्ट्र के मातुलनगर से तीस योजन की दूरी पर बताया गया है।[2] यह बंक गिरि से साठ योजन की दूरी पर स्थित था।[3]

थून नगर (थून नामक ब्राह्मण ग्राम) :

थून नगर[4] को मध्य देश के पश्चिमी सीमा पर स्थित बताया गया है।[5] इसकी पहचान थानेश्वर, जिला कर्नाल से की गई है।[6] दिव्यावदान में इसे 'स्थूण' कहकर पुकारा गया है।[7] महाजनक जातक के अनुसार यह मल्ल राष्ट्र में स्थित था, जिसे मिथिला और हिमवन्त के बीच स्थित बताया गया है।[8]

दन्तपुर :

दन्तपुर[9] कलिंग देश की राजधानी थी "कलिंगेषु दन्तपुरं नाम नगरम्"। इसकी पहचान उड़ीसा में स्थित पुरी (जगन्नाथपुरी) से की गयी है।[10]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८०, ४८४, ४८६-८७, ५१४, ५६६, ५७४, ५९२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १८, ५२२, ५२४-२५, ६२३, ६३२, ६५४, ६५५; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २४७, २४९, २५१-५२, ३०४; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३९३।
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९।
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५९२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६५४।
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९; जि० ६, पृ० ६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६; जि० ६, पृ० ७२।
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६।
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६।
७. दिव्यावदान, पृ० २२।
८. महाजनक जातक सं० ५३९।
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६७, ३८१; जि० ३, पृ० ३७, ३७६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९०, १०१, १७४; जि० ४, पृ० ३७, ४३१, ४३३, ४३७; जा० अ० अ० जि० २, पृ० २५२, २६०; जि० ३, पृ० २, २२८; जि० ४, पृ० १४३।
१०. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ५३।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दद्दरपुर :

चेतिय जातक में दद्दरपुर का उल्लेख हुआ है ।[१] यह दद्धर पर्वत के समीप स्थित था । चेति (चेदि) राजा उपचर के पाँचवें पुत्र ने उस स्थान पर बसाया था, जहाँ दो पर्वत आपस में रगड़ कर 'दद्दर' शब्द करते थे ।[२]

दुर्निविष्ट ग्राम :

महावेस्सन्तर जातक में (दुर्निविष्ट) नामक ब्राह्मण ग्राम का उल्लेख है ।[३] यह ग्राम पाँच योजन के विस्तार में स्थित था ।[४] यह ग्राम जेतुत्तर नगर से बीस योजन कोन्तिमार नदी से दस योजन और अरंजरगिरि से पाँच योजन दूर स्थित था ।[५]

देवदह निगम :

जातक में देवदह निगम का उल्लेख हुआ है ।[६] पालि निकायों में देवदह को प्रायः शाक्यों का ही कस्बा (निगम) बताया गया है ।[७] देवदह नगरी रोहणी नदी के पूर्वी किनारे पर बसी हुई थी ।[८]

देवनगर (देवपुर) :

जातकों में देवनगर का उल्लेख हुआ है ।[९] यह नगर दस योजन के विस्तार में स्थित था ।

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०; जा० अ० अ० ज़ि० ३, पृ० २७५ ।
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६१ ।
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २६६, २७० ।
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९ ।
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९ ।
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११९ ।
७. बु० का० भा० भू० पृ० ३०० ।
८. वही, पृ० ३०१ ।
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६६; जि० २, पृ० १८८, १९१; जि० ४, पृ० ३५७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३६; जि० २, पृ० ३८८; जि० ४, पृ० ५६४; खु० नि० पा० जि० २, पृ० ३४ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

द्वारवती (द्वारका) :

धत जातक में द्वारवती नगरी का उल्लेख हुआ है।[1] इस नगरी के एक ओर समुद्र था और दूसरी ओर पर्वत। इन दोनों के बीच यह सुदृढ़ नगरी बसी हुई थी। पश्चिमी समुद्र तट पर, काठियावाड़ के पश्चिमी किनारे पर स्थित द्वारका नगरी ही पालि को 'द्वारका' या 'द्वारवती है।[2]

धम्मपाल ग्राम :

महाधम्मपाल जातक में धम्मपाल ग्राम का उल्लेख हुआ है[3] जो काशी राष्ट्र में स्थित था।

धान्यवती नगर (धन्यवती) :

जातकों में धान्यवती नगर[4] का सम्बन्ध रेवत बुद्ध से बतलाया गया है। इसे सुधन्यवती नगर भी कहते थे।[5]

नलकपान ग्राम :

नलपान जातक में नलकपान ग्राम का उल्लेख हुआ है।[6] यह कोशल जनपद में स्थित था, इसके समीप ही नलकपान पुष्करिणी पर केतक वन था।

नलनी राजधानी :

इस राजधानी का विधुर जातक में उल्लेख हुआ है।[7]

नालक ग्राम :

सारिपुत्र स्थविर कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन नालक ग्राम में ही उत्पन्न हुए थे।[8] यह ग्राम राजगृह के समीप स्थित था।[9] इसकी पहचान आधुनिक

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८२, ८४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८४-८५, खु० नि० पा० जि० ६, पृ० २३९।
२. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८५, ४८६।
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ५०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २५०।
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५, ३७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९८, १००; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३२२, ३४१; जि० ६, पृ० १८७।
५. खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३३२।
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६८; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ५४।
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३१३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३५३।
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९१; जि० ५, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५३; जि० ५, पृ० २०७।
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०७।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नालन्दा (बिहार प्रदेश) से की जानी चाहिए जहाँ सम्राट् अशोक ने सारिपुत्र चैत्य बनवाया था जिसके अवशेष मिले हैं ।

निर्वाण नगर :

दूरे निदान में निर्वाण नगर का उल्लेख हुआ है ।[१] यह सम्भवतः शाक्य मुनि बुद्ध की निर्वाण भूमि कुशीनारा का द्योतक है ।

निषाद ग्राम :

निषाद ग्राम[२] वाराणसी के समीप स्थित था । यहाँ पाँच सौ कुल निवास करते थे ।[३] इस ग्राम में शिकारियों की बस्ती अधिक थी ।[४]

पत्तन गाँव :

दधिवाहन जातक में पत्तन गाँव का उल्लेख हुआ है[५] जो काशी राष्ट्र में स्थित था ।

पुष्पवती (पुप्पवती) :

पुष्पवती[६] बनारस का पुराना नाम था ।[७]

पोतली नगर :

पोतली नगर[८] अस्सक (अश्मक) महाजनपद की राजधानी थी ।[९]

प्रयाग :

जातक साहित्य में प्रयाग तीर्थ का उल्लेख हुआ है ।[१०] आचार्य बुद्धघोष ने

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५९-६० ।
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३३७; जि० ६, पृ० ७१; जा० अ० हि० जि० ५ पृ० ४२०; जि० ६, पृ० ८२ ।
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ८२ ।
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३३७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२० ।
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १०३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २८४ ।
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ११९-२०; जि० ६, पृ० १३१-३२, १४५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३२०; जि० ६, पृ० १५०-५१, १७२; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ७६; जि० ६, पृ० ६९-७०, ७६; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३९१ ।
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १५० ।
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५५; जि० ३, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३४५; जि० ३, पृ० १७४; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १०८ ।
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३, जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७४ ।
१०. जा० अ० रो० जि० ६, १९८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३४ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रयाग (पयाग) को गंगा का एक घाट (तित्थ) कहा है।[१] प्रयाग तीर्थ से स्पष्टतः अभिप्राय गंगा-यमुना के संगम से ही है।[२] यह इस समय प्रयाग नाम से ही प्रसिद्ध है।

बढ़ई ग्राम :

यह बढ़ई ग्राम[3] वाराणसी के समीप स्थित था यहाँ पाँच सौ बढ़इयों का निवास था।[४] इसे हजार परिवार वाला महाग्राम भी कहा गया है।[५]

बन्धुमती :

महावेस्सन्तर जातक में बन्धुमती नगर का उल्लेख हुआ है।[६] विपश्यी बुद्ध का जन्म इसी नगरी में हुआ था।[७]

ब्रह्मवद्धनं नगर (ब्रह्मवर्द्धन) :

गामणीचण्ड जातक में ब्रह्मवद्धन (ब्रह्मवर्द्धन) नगर का उल्लेख हुआ है।[८]

भद्दवती (भद्दवतिका) :

सुरापान जातक में भद्दवती (भद्रवती) नगर का उल्लेख हुआ है।[९] एक व्यापारिक कस्बा था जो कौशाम्बी के समीप स्थित था। भगवान् बुद्ध एक बार भद्रवतिका में गये थे वहाँ काफी दिन तक रहकर भगवान् पुनः कौशाम्बी चले गये थे जहाँ उन्होंने सुरापान-निषेध का उपदेश दिया था।[१०] इसे वर्तमान भाँदक नामक गाँव माना जाता है, जो मध्य प्रदेश के जिला चाँदा में स्थित है।[११]

---

१. पंपचसूदनी, जि० १, पृ० १७८।
२. बु० का० भा० भू०, पृ० १२७।
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८, ४०५; जि० ४, पृ० १५९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८३, जि० ३, पृ० १२५; जि० ४, पृ० ३५९।
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८३।
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५९।
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५१८; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २४७; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० २०, ४०, ८८, १४३, १८५, १९०, १९३, २५६, २८३, २८५, ३६३-६४।
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०५।
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३१२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३९४, खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ४१२।
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१०।
१०. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५११।
११. बु० का० भा० भू०, पृ० ४३१।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भद्दिय नगर :

भद्दिय नगर[1] अंग जनपद का एक नगर था।[2] जैन साहित्य में भी इसका उल्लेख हुआ है।[3] महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भद्दिय नगर को वर्तमान मुंगेर से पहचाना है।[4] परन्तु डे महोदय इसको भदरिया नामक स्थान से करते हैं, जो भागलपुर से ८ मील दक्षिण में स्थित है।[5]

भोग ग्राम :

भोगग्राम[6] मल्ल राष्ट्र का प्रसिद्ध ग्राम था, जो वैशाली और पावा के बीच में स्थित था।[7]

भोगवती :

जातक में भोगवती नगर का उल्लेख हुआ है।[8]

मिथिला :

मिथिला विदेह राष्ट्र की राजधानी थी।[9] इसका विस्तार सात योजन था।[10] मिथिला के चारों ओर प्राची यवमज्झक, दक्षिण यवमज्झक और

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ५६।
२. द कमेन्ट्री आफ दि धम्मपद, पृ० ३८४।
३. जैन शास्त्रों के अनुसार भगवान महावीर ने अपने दो वर्षावास भद्दिय में किये थे।
४. विनयपिटक (हि० अ०) पृ० २०७, पद संकेत १, बुद्धचर्या, पृ० १४२, पद संकेत २।
५. जर्नल आव एशियाटिक सोसाइटी आव बंगाल, १९१४, पृ० ३३७ (नन्दीलाल डे लिखित "नोट्स आन एन्शियन्ट अंग" शीर्षक लेख); बु० का० भा० भू०, पृ० ३५६।
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६४, ४१२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१६-१७; जि० २, पृ० ३२, ७०, खु० नि० पा० जि० १, पृ० ४२२।
७. बु० का० भा० भू०, पृ० ३२६।
८. जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १३२; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २९१।
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३७; जि० २, पृ० ३३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२६; जि० ४, पृ० ३९; जि० ६, पृ० ४४३।
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६६; जि० ४, पृ० ३१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २९, ५२२।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तर यवमज्झक (आदि) चार निगम थे ।[1] मिथिला नगरी समृद्ध, विशाल प्रकाशित और अनेक प्राकारों तथा तोरणों वाली नगरी थी । यह गाँवों, घोड़ों से युक्त थी ।[2] महोदय डे इसे उत्तरी विहार का जनकपुर मानते हैं ।[3]

मोलनी नगर :

संख्यजातक में मोलनी नगर का उल्लेख हुआ है ।[4] पूर्व समय में वाराणसी का नाम मोलनी था ।[5]

मलच गाँव :

कुलावक जातक में मचल गाँव का उल्लेख हुआ है ।[6] जो मगध राष्ट्र में स्थित था ।

मातुल नगर :

महावेस्सन्तर जातक में मातुल नगर का उल्लेख हुआ है ।[7] यह चेतराष्ट्र में स्थित जेतुत्तर नगर से ३० योजन को दूरी पर था । इसका विस्तार १० योजन था ।

यवमज्झक ग्राम :

महाउम्मग्ग जातक में यवमज्झक ग्राम का उल्लेख मिलता है ।[8]

रम्भनगर : (रम्भवती नगरी, रम्भक नगर) :

रम्भनगर[9] बनारस का पुराना नाम था ।[10] यहीं के सुदर्शन महाविहार में

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३०-३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७१ ।
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५८-५९ ।
३. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० १३० ।
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५, २१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५, २१९-२०; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ९, १२, १३; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १९९ ।
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५ ।
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९; जा० अ० हि० जि० १, पृ ३०७ ।
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४, जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९ ।
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३४, ३४०-३४२, ३४४, ३६४, ३६६, ३६९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७४-३७५, ३८२-३८६, ३८९, ४१०, ४१२, ४१६, ४२० ।
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११, १३, २६, २८, ३०; जि० ४, पृ० ११९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६९, ७२, ८६-८७, ८९-९१; जि० ४, पृ० ३२०, ३२३; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ७५, ७७ ।
१०. जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ७५ ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भगवान् बुद्ध रुके थे।[१] समयानुसार रम्भनगर का नाम बदलता रहा। उदय-जातक[२] में सुरंधन सोणनन्द जातक में[३] ब्रह्मवर्धन, चुल्लसुतसोम जातक[४] में सुदर्शन, खण्डहाल जातक[५] में पुष्पवती और युवञ्जय जातक[६] में रम्भनगर नाम मिलते हैं। इसे श्री रम्भवती नगरी भी कहा गया है।[७] यही नगरी कौण्डिन्य बुद्ध तथा दीपंकर बुद्ध की (जन्म-भूमि) थी।[८]

राजगृह (राजगह) :

राजगृह मगध की राजधानी थी।[९] यह वर्तमान राजगिरि, जिला पटना (बिहार) में है।[१०] इसी नगर में जीवक का आम्रवन उद्यान[११], वेलवन उद्यान[१२], तपोदाराम[१३], सक्खर निगम[१४] आदि स्थित थे।

रामग्राम :

रामग्राम[१५] कोलियगण की राजधानी थी। दिव्यावदान के अनुसार तथागत

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६९; जि० ४, पृ० ३२०।
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १०४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३०६।
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३१२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३९४।
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १७७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २६०।
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १४५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १७२।
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ११९-१२०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३२०-३२१।
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९०।
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २९-३०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९०-९१।
९. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६।
१०. महापरिनिव्वानसुत, पृ० ३।
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९४।
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६०।
१३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २२७।
१४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४५; वही, १, पृ० ४९२।
१५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की अस्थियों पर बने हुए दस स्तूपों में आठवाँ स्तूप रामग्राम में बना था।[1] सम्राट् अशोक ने इस स्थान की धर्म यात्रा की थी।[2] महोदय ला के अनुसार बस्ती जिले का रामपुर देवरिया ही प्राचीन रामग्राम है।[3] परन्तु रामग्राम की पहचान गोरखपुर शहर के पास रामगढ़ से करना अधिक समीचीन है।

रोरुव नगर :

आदित्त जातक में रोरुव नगर का उल्लेख हुआ है।[4] यह आधुनिक रोरा या रोरी गाँव ही है, जो सिन्धु देश के उत्तरी भाग में स्थित है।[5] यह प्राचीन सौवीर राष्ट्र में स्थित था।[6]

लम्बचूलक निगम :

इन्द्रिय जातक में लम्बचूलक निगम का उल्लेख हुआ है। इसे प्रद्योत या चण्ड प्रद्योत(पज्जोत) के राज्य में स्थित बताया गया है।[7]

वल्मी :

तित्तिर जातक में वल्मी नगर का उल्लेख मिलता है।[8]

वाराणसी :

वाराणसी काशी राष्ट्र की राजधानी थी।[9] वाराणसी नगर का घेरा (प्राकार) बारह योजन का था[10]। पूर्व समय में वाराणसी का नाम मोलनी तथा

---

१. दिव्यावदान, २४०।१४
२. वही, २४०।११-१३
३. ला० हि० ज्या० ऐ० इ०, पृ० ११९
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२९; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २८०
५. बु० का० भा० भू०, पृ० ४८३
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२९
७. जा० आ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; बु० का भा० भू०, पृ० २८२
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५८
९. वही, १, पृ० १०७, १२०, १२७; ,, ,, १, पृ० १८६, २०२, २११
१०. वही, १, पृ० १२६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०९, ३८५; जि० २, पृ० १८३, ४५१, ४६०; जि० ३, पृ० १२२; जि० ४, पृ० ७०, ३२०, ३४८, ४१४, ५८५, ५८६; जि० ५, पृ० ७५, ७६, ७८, ८१, १५३, २०९, जि० ६, पृ० १९४, २३१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्पवती था।[१] यह नगर व्यापार के लिए भी प्रसिद्ध था।[२] बनारस के पास स्थित ऋषिपत्तन मृगदाव में भगवान् बुद्ध ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था।[३] वाराणसी नगर सारे जम्बूद्वीप में श्रेष्ठ नगर माना जाता था।[४] वाराणसी के निम्नलिखित नाम भी जातक कथाओं में उल्लिखित मिलते हैं :—सुरुन्धन[५], सुदस्सन[६], ब्रह्मवर्धन,[७] पुष्पवती[८] (पुष्फवती), रम्मिनगर[९] और मोलनी-नगर।[१०]

वाराणसी नगरी दर्शनीय थी जो सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थी।[११] आधुनिक वाराणसी गंगा नदी के उत्तरी किनारे पर, गंगा और वरणा के संगम पर ही स्थित है।[१२] वरणा और असी नदियों से घिरी होने के कारण ही इसे वाराणसी कहा गया।[१३]

वामन्तपब्भार :

हत्थिपाल जातक में वामन्तपब्भार का उल्लेख हुआ है।[१४]

वेभार नगर :

वेभार नगर[१५] का सम्बन्ध भगवान् (सिद्धार्थ)[१६] से बताया गया है।

---

१. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १७२; जि० ४, पृ० २१५, २१९, २२०
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१-१२२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४
३. वही, १, पृ० ८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५४
४. वही २, पृ० २५०; ,, ,, १, पृ० ३८८; जि० २, पृ० ४५८
५. वही, ४, पृ० ११९; ,, ,, ४, पृ० ३२०
६. वही, ५, पृ० १७७; ,, ,, ५, पृ० २६०
७. वही, ५, पृ० ३१२; ,, ,, ५, पृ० ३९४
८. वही, ६, पृ० १३१; ,, ,, ६, पृ० १५०
९. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३२०-३२१
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५
११. वही जि० १, पृ० ५३; ,, ,, १, पृ० १२०
१२. बु० का० भा० भू०, पृ० ३७३
१३. सौ० ३।१०
१४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ७९
१५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०३; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ६०, ३५७
१६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वेत्रवतीनगरी :

मातंग जातक में वेत्रवती नगरी का उल्लेख हुआ है।[१] यह नगरी वेत्रवती (आधुनिक बेतवा) नदी के समीप स्थित थी।[२]

वैशाली :

वैशाली[३] नगर में सात हजार सात सौ लिच्छवी राजा रहते थे, जो सभी शास्त्रार्थ में कुशल थे।[४] वैशाल में मावुत-गावुत-२ मील की दूरी पर तीन प्राकारें बनीं थीं, तीनों जगह पर गोपुर थे। अट्टालिकाओं और कोठे से युक्त यह नगरी अत्यन्त शोभायमान थी।[५] पाटिकाराम बिहार यहीं पर स्थित था[६] और यहीं पर कूटागारशाला भी थी।[७]

पाँच सौ शाक्य देवियों के साथ महाप्रजापति गौतमी ने कपिलवस्तु से प्रव्रज्या से याचना की थी और उपसम्पदा पैदल चलकर वैशाली में ही प्राप्त की थी।[८] यह वर्तमान वैशाली ही है जो वसाढ़ जिला (मुजफ्फरपुर) से प्रायः २ मील उत्तर वर्तमान कोल्हुआ जहाँ आज अशोक स्तम्भ खड़ा है, वहीं स्थित है।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३८८ जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९५; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २४२
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९५
३. वही, १, पृ० ७७, ११७, ३८९, ४२०, ५०४; जि० २, पृ० ५, २५९, २६२, २९२; जि० ३, पृ० ३; जि० ४, पृ० १४८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९, ३३०, ५५०; जि० २, पृ० ४२, १५२, १६७, ४६८, ४७०; जि० ३, पृ० ११३, १७२; जि० ४, पृ० ३४९; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ९२, २२९, २५१, ३१६; जि० २, पृ० ४, १८०; जि० ३, पृ० १; जि० ४, पृ० ९४; खु० नि० पा० जि० ६, पृ० ९०; जि० १, पृ० ४२२; जि० ७, पृ० २००, ३८३
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७२
५. जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५०
७. वही, २, पृ० ३९२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११३
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३९२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११३
९. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९; डे, ज्या० डि० ऐ० मे० इ० पृ० १७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रावस्ती

श्रावस्ती प्राचीन भारत का अत्यन्त प्रसिद्ध नगर था। यह कोशल महाजनपद की राजधानी थी।[१] भगवान बुद्ध श्रावस्ती के अनाथपिण्डिक के जेतवन आराम में विहार करते थे।[२] यह व्यापारिक केन्द्र भी था। पाँच-पाँच सौ बैलगाड़ियों के साथ व्यापार करने यहाँ आया जाया करते थे।[3] श्रावस्ती बलरामपुर से १० मील दूर वर्तमान सहेट-मेहेट (जिला गोण्डा, उत्तर प्रदेश) है।[४] दिव्यावदान के अनुसार यह नगरसूर्पारक नगर से सौ योजन दूर था।[५] श्रावस्ती में ही भिगार माता का प्रासाद स्थित था।[६]

सकल नगर :

जातक में सकल नगर का उल्लेख हुआ है।[७] यह महिसक राष्ट्र की राजधानी थी।[८]

सक्खर (सक्कर) :

इल्लीस जातक में सक्खर निगम का उल्लेख हुआ है।[९] यह राजगृह के समीप स्थित था।[१०] भगवान् बुद्ध आनन्द के साथ एक बार यहाँ गये थे। सक्खर या सक्कर की दूरी श्रावस्ती के जेतवनाराम से ४५ योजन बताई गई है।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३६७
२. वही, १, पृ० ७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४८-१४९
३. वही, १, पृ० ३३२, ३७७, ४०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४७६, ५३४, ५६९
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४८
५. दिव्यावदान २६।९-१९, २७।९
६. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३३७; जि० ५, पृ० ३३७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४६; जि० ४, पृ० १, जि० ५, पृ० ४२०
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३३७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२०
९. वही १, पृ० ३४५; ,, ,, १, पृ० ४९२, ४९४
१०. वही १, पृ० ३४५; ,, ,, १, पृ० ४९२, ४९४
११. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९२; द कमेन्ट्री आफ दि धम्मपद, जि० १, पृ० ३६७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सरण नगर :

धर्मदर्शी बुद्ध के नगर का नाम सरण था ।[1]

साकेत :

जातकों में साकेत का उल्लेख कई बार हुआ है ।[2] इसको भी कोशल की राजधानी बताया गया है, यह अवध में स्थित था ।[3] विनयपिटक[4] में श्रावस्ती से साकेत की दूरी छः योजन बताई गई है । साकेत के समीप एक रमणीय स्थान अंजनवन मृगदाव था ।[5] डा० मललसेखर साकेत को सुजानकोट के खण्डहरों से, जो सई नदी के किनारे उन्नाव जिले में स्थित है, यह पहचानना स्वीकार किया है ।[6]

सागल नगर :

सागल नगर[7] मद्र राज्य की राजधानी थी । डा० हेमचन्द्र राय चौधरी के अनुसार सागल या शाकल नगर की पहचान आधुनिक सियालकोट ही है ।[8]

सालिन्दिय ब्राह्मण ग्राम :

सुवण्णकक्कटक जातक और सालिकेदार जातक में सालिन्दिय ब्राह्मण ग्राम

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०३
२. वही ३, पृ० २७०, २७२; जि० ५, पृ० १३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५३; जि० ३, पृ० ४२६; जि० ५, पृ० १००; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १६६; जि० २, पृ० १६२; जि० ३, पृ० १७२-१७३; जि० ५, पृ० ७; खु० नि० पा० जि० १, पृ० ४२२, जि० ३, ख० २, पृ० २७३, जि० ३, ख० १, पृ० १३६
३. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६६
४. विनयपिटक, पृ० २५६
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४४५
६. डि० आव पा० प्रां० ने जि० २, पृ० १०८६; बुद्धिष्ट इण्डिया, पृ० ३९
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३०; जि० ५, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६६, ३७०, ३७१; जि० ४, पृ० ४३२; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १४४; जि० ५, पृ० १४५, १४६, १५०; जि० ६, पृ० २४३
८. प्र० भा० का० रा० इ० पृ० ५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का उल्लेख हुआ है।[१] यह राजगृह के पूर्व या पूर्वोत्तर की ओर स्थित था। कोसिपगोत्र ब्राह्मण यहीं का निवासी था।

साँचो :

जातक में साँची का उल्लेख हुआ है।[२] इस समय साँची का विशाल स्तूप भेलसा (प्राचीन विदिशा) से थोड़ी दूर ही स्थित है।

सिंहपुर :

चेतिय जातक में सिंहपुर का उल्लेख हुआ है।[3] चेतिय नरेश उपचर के सबसे बड़े पुत्र ने इस नगर को बसाया था।

सिरीसवत्थु नगर :

लोसक जातक और वालाहस्स जातक में सिरीसवत्थु नगर का उल्लेख हुआ है।[४] यह यक्ष नगर था जिसे ताम्रपर्णी द्वीप में बताया गया है।

सुधर्म्म नगर :

सोभित बुद्ध के नगर का नाम सुधर्म्म नगर था।[५]

सुमंगल नगर :

सुजान बुद्ध के नगर का नाम सुमंगल नगर बताया गया है।[६]

सुदर्शन नगर :

सुदर्शन नगर[६] का सम्बन्ध भगवान सुमेध से बताया गया है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९३; जि० ४, पृ० २७६, २७९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४४; जि० ४, पृ० ४७९, ४८२; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० १८४; जि० ४, पृ० १७५
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९ (वस्तुकथा)
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५९; जि० २, पृ० १२६-१२७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५९; जि० २; पृ० ३१२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९८
६. वही, १, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०१; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३४७, ३४९
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०१; खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ३४५, ३४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सेतकण्णिक निगम :

इस निगम[१] की पहचान हजारी बाग जिले में किसी स्थान से की गई है। यह मध्य देश की दक्षिणी सीमा पर स्थित था।

सोभवती नगरी :

कोणागमन बुद्ध के नगर का नाम सोभवती नगरी था।[२]

संकिस्स नगर :

कण्ह जातक और सरभमिग जातक में सकिस्स (संकाशय) नगर का उल्लेख हुआ है।[३] यह श्रावस्ती से ३० योजन की दूरी पर स्थित था।[४] इसकी आधुनिक पहचान संकिसा जो उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में उत्तरी रेलवे के मोटा स्टेशन से करीब ५ मील दूर स्थित है।[५] स्टेशन और गांव के बीच काली या कालिन्दी नदी बहती है[६]। स्वर्ग में अपनी माता को उपदेश देकर शाक्य मुनि बुद्ध संकशाय (संकस्स) नगर में ही उतरे थे।[७] जिसकी स्मृति में सम्राट् अशोक ने स्मारक बनवाया था। इस समय भी अशोक स्तंभ का ऊपरी खण्ड वहीं मौजूद है।

हस्तिपुर नगर :

चेतिय जातक में हस्तिपुर नगर का उल्लेख हुआ है।[८] यह चेतिय राज्य की राजधानी सोत्थिवती के पूर्व में स्थित था। चेतिय नरेश उपचर के सबसे बड़े पुत्र ने इस नगर को बसाया था।

हंसवती नगरी (हंससन्हपे)

पद्मोत्तर बुद्ध के नगर का नाम हंसवती नगरी था।[९] यह उत्तरापथ में

---

१. जा० अ० रो० १, पृ० ८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६
२. वही १, पृ० ४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०७
३. वही १, पृ० १९३; जि० ४, पृ० २६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३००; जि० ४, पृ० ४६९
४. वही ४, पृ० २६५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४६९
५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३००
६. बुद्धिस्ट सेन्टर्स इन उत्तर प्रदेश, पृ० ११
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २६५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४६९
८. वही ३, पृ० ४६०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०
९. वही १, पृ० ३७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १००; खु० नि० पा० जि० ६, पृ० ४५, ८५, १४६; जि० ७, पृ० ४, ११, ७३, ८४, १७५, १८८, १९५, १९७, ३४४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थित थी ।[१] "अपदान" के अनुसार हंसवती नामक नगरी फूलों के लिए प्रसिद्ध थी ।[२]

क्षेमनगर

तिष्य बुद्ध के नगर का नाम क्षेम नगर था ।[३]

पर्वत

प्राचीन भारतीय संस्कृति में नदियों की भाँति पर्वतों का भी महत्त्व रहा है । यह पर्वत जन-जीवन में बहुत ही उपयोगी रहे हैं । इन्हीं पर्वतों में ऋषि-मुनियों के आश्रम होते थे, जहाँ आध्यात्मिक शिक्षा के साथ-साथ जीवन उपयोगी लौकिक शिक्षा भी दी जाती थी । उन आश्रमों में कुछ इतने विशाल थे जिनमें ५०० शिष्य[४] रहते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे । ऐसे ही आश्रमों में कपिल मुनि का आश्रम और असित मुनि का आश्रम आते थे । इन्हीं पर्वतों से नाना प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती थीं जिनसे नाना रोगों का निदान होता था । विभिन्न प्रकार की लकड़ी भी इन्हीं पर्वतों से प्राप्त होती थी । पर्वतों से निकलने वाली नदियाँ देश के विभिन्न भागों में बहती थीं । जो कृषि आदि के लिए जल प्रदान करती थीं । आवागमन के लिए माध्यम बनती थी, व्यापारी लोग इन्हीं नदियों से आते-जाते थे । ऋषि-मुनि पर्वतों पर ही (तपश्चर्या)[५] करने जाते थे ।[६] ऐसे ही जिन पर्वतों का वर्णन जातकों में मिलता है उनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है ।

अंजन पर्वत :

इस पर्वत का उल्लेख सरभंग जातक और महावेस्सन्तर जातकों में मिलता

---

१. बु० का० भा० भू०, पृ० १२९
२. वही, पृ० ३४
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०४
४. वही १, पृ० १४०; अ० हि० जि० १, पृ० २३०
५. दिव्या० १२६।२२-२३
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४०, ३१४; अ० हि० जि० १, पृ० २३०, ४५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है ।[1] यह पर्वत महाअटवी में स्थित था ।[2] महोदय डे ने इस पर्वत को पंजाब की सुलेमाना पर्वत श्रेणी से मिलाया है ।[3]

अरंजर पर्वत (अरंजर गिरि) :

जातकों में अरंजर पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[4] इन्द्रिय जातक और जयद्दिस जातक में अरंजर पर्वत (गिरि) को मध्य (मज्झिम) देश में सम्मिलित बताया गया है। महावेस्सन्तर जातक में अरंजर पर्वत को जेतुत्तर नगर से ५ योजन और कोन्तिमार नदी से ५ योजन की दूरी पर स्थित बताया है ।[5]

इसिगिलि पर्वत :

सरभंग जातक में इसिगिलि पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[6] यह पर्वत राजगृह के समीप स्थित था जहाँ पर कालशिला बिहार था। महोदय कनिंघम के अनुसार पालि साहित्य का इसिगिलि, रत्नगिरि है जो राजगृह की पाँच पहाड़ियों में एक है ।[7] इसका आधुनिक नाम रत्नगिरि है। इसिगिलि नाम स्पष्टतः संस्कृत शब्द ऋषिगिरि का पालि रूप है, जिसका अर्थ तपस्वियों का पर्वत है ।[8]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३४२; जि० ५, पृ० १३३, ४१५; जि० ६, पृ० ५२८; अ० हि० जि० ३, पृ० ६७, जि० ५, पृ० २१५, जि० ६, पृ० ५७९, खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० १२०/८-९, जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ७१
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३३; अ० हि० जि० ५, पृ० २१५
३. डे०, ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ८
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जि० ५, पृ० १३४; जि० ६, पृ० ४९३, ५१४; अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; जि० ५, पृ० २१५; जि० ६, पृ० ५३३, ५५९; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २७७, जि० ५, पृ० ७१, जि० ५, पृ० २५६, २६६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० ३३०।२२
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९; अ० अ० जि० ६, पृ० २५६
६. वही ५, पृ० १२५; अ० हि० जि० ५, पृ० २०७; अ० अ० जि० ५, पृ० ६५
७. कनिंघम, ऐ० ज्या० इ०, पृ० ३९०
८. लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० ३७४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उशीरध्वज पर्वत :

उशीरध्वज पर्वत हिमालय का एक भाग था।[१] इसे मज्झिम देश की उत्तरी सीमा पर स्थित बताया गया है जिसके पास प्रत्यन्त देश स्थित था।[२]

कैलाश पर्वत :

जातकों में कैलाश पर्वत का उल्लेख मिलता है।[३] पालि परम्परा के अनुसार हिमालय की सबसे ऊँची चोटी कैलाश पर्वत ही है। जिसे हिमाच्छादित तथा श्वेत वर्ण का बताया गया है।[४]

कंचन पर्वत :

जातकों में कंचन (कांचन) पर्वत का उल्लेख मिलता है।[५] कंचन पर्वत को वर्तमान कंचनचंगा माना है।[६]

कालगिरि पर्वत :

विधुर-पण्डित जातक में कालगिरि (काला पर्वत) पर्वत का उल्लेख हुआ है यह पर्वत साठ योजन ऊँचा था।[७]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९, अ० हि० जि० १, पृ० ११६
२. विनय० ५/३/२
३. जा० अ० रो० जि०, १, पृ० ३२१; जि० ४, पृ० २३२; जि० ५, पृ० ३९; जि० ६, पृ० ४९०, ५१५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६२; जि० ४, पृ० ४३३; जि० ५, पृ० १२८; जि० ६, पृ० ५२८, ५६१; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १७६; जि० ४, पृ० १४६, जि० ५, पृ० २२, २९ जि० ६, पृ० २५४, २६७
४. बु० का० भा० भू०, पृ० १४२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४; जि० २, पृ० ३९७, ३९९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९७, जि० ३, पृ० ११७, ११९; जि० ६, पृ० ११३
६. बु० का० भा० भू०, पृ० १४२
७. जा० अ० हि० जि० १, पृ० २९३, ३०३, ३४२, ३४४, ३४९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १२६, १३१, १४६, १४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गन्धमादन पर्वत :

जातकों में अनेक बार गन्धमादन पर्वत का उल्लेख हुआ है[1] जिसे मानसरोवर के उत्तर में स्थित बताया गया है।[2] इस पर अशोक वृक्ष होते थे[3] तथा औषधियाँ भी पायी जाती थीं।[4] इसका वर्णन एक शैलकूट के रूप में किया गया है, जहाँ राजा वेस्सन्तर अपने बाल-बच्चों के साथ गये थे।[5] महावस्तु में भी इस पर्वत का उल्लेख हुआ है।[6] महोदय नन्दोलाल डे ने इस पर्वत की पहचान रुद्र हिमालय से की है।[7]

गृद्धकूट पर्वत :

गृद्धकूट[8] पर्वत राजगृह का प्रसिद्ध पर्वत था।[9] आचार्य बुद्ध घोष ने बताया है कि पहाड़ी का नाम गृद्धकूट इसलिए पड़ा कि इसकी चोटी का आकार गृद्ध पक्षी की चोंच के समान था अथवा इसकी चोटी पर गृद्ध निवास करते थे।[10]

---

१. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १११, ११३, १३६, २१५, ४९१, जि० ५, पृ० २५, १५२, २७९, ४७७, ४७९; जि० ६, पृ० ९०, ९४, ९५, १०५, ५६५, ५६६, ५७९, ६४०, जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २७०, जि० ४, पृ० ४०, १५९, जि० ५, पृ० ३५, १०२, २१०, २११, जि० ६, पृ० ४७, ५१, २६८, खु०नि० पा० जि० १, पृ० ३६७, जि० २, पृ० १५५, जि० ३, ख० १, पृ० १७७/११, ३२७/३

२. दिव्या० २५९/१, महावस्तु जि० १/१८६/१८; जि० २/९३/१५; जि० २/५५/४

३. दिव्या० ९७/२४

४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४९१

५. महावेस्सन्तर जातक, ५४७

६. महावस्तु जि० १, पृ० २२४

७. डे, ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ६०

८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५०, ५४, ५५; जि० ३, पृ० २५५, ४८४; जि० ५, पृ० ३३३, ४२४; जि० ६, पृ० २०४, २१२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २१९, २२५, २२६; जि० ३, पृ० ४११; जि० ४, पृ० १४२; जि० ५, पृ० ४१५, ५०७; जि० ५, पृ० २४०, २५१; जा० अ० अ० जि० २, पृ० ३४, ३७, ३८; जि० ३, पृ० १६४, २८७, ३१९; जि० ५, पृ० १७५, २२४; जि० ६, पृ० ६८

९. बु० का भा० भू०, पृ० १८१

१०. वही, पृ० १८१-१८२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महापरिनिब्बान-सुत्त में गृद्धकूट पर्वत को 'रमणीय' बताया गया है (रमणीयां गिज्झकूटो पब्बतो)।[1] इस पर्वत पर बुद्ध विहार करते थे।[2] गृद्धकूट पर्वत फाहियान द्वारा वर्णित शैलगिरि के ऊपर स्थित "वल्चरपीक" और युअनच्वांग द्वारा वर्णित "इन्दसिल-गुहा" है।[3] इसे गिरियेक पहाड़ी भी कहते थे।[4]

गयाशीर्ष पर्वत :

गयाशीर्ष पर्वत[5] गया के समीप स्थित था।[6] आधुनिक गया नगर के एक मील दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम में करीब ४०० फुट की ऊँचाई पर यह पर्वत स्थित है।[7] इसका आधुनिक नाम ब्रह्मयोनि पर्वत है।[8] बुद्ध ने यहीं पर अग्नि-स्कन्ध का प्रवचन दिया था और उसको सुनने के बाद एक हजार जटिलों ने अर्हत पद प्राप्त किया था।[9] राजकुमार अजातशत्रु ने इस पर्वत पर देवदत्त के लिए एक विहार बनवाया था, राजा की ओर से भिक्षुओं के लिए भोजन के ५०० थाल प्रतिदिन भेजे जाते थे।[10]

धनसेल पर्वत :

इन्द्रिय जातक और सरभंग जातक में धनसेल पर्वत का उल्लेख हुआ है।[11] यह पर्वत अवन्ति-दक्षिणापथ में स्थित था।

---

१. महापरिनिब्बान सुत्त (हिन्दी अनुवाद) पृ० ९४-९५
२. वही, पृ० ९५
३. कनिंघम, ऐं० ज्या० इ०, पृ० ३९४
४. डे० ज्या० ड० ऐं० मे० इ०, पृ० ७२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८३, १४२, ४२५, ४९०, ५०८; जि० २, पृ० ३८, १९६; जि० ४, पृ० १८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६, २३३, २३४, २८९; जि० २, पृ० ४९, १३३, १५७, २०५, ३९४; जि० ४, पृ० ३७९; जा० अ० अ० जि० १, पृ० ३४, ६७, २५५, ३०५, ३१९; जि० २, पृ० २६, १३८; जि० ४, पृ० १११
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६
७. बु० का० भा० भू०, पृ० २१८
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६, २९९; जि० २, पृ० १३३
९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १८०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३७९
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८९
११. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जि० ५, पृ० १३३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; जि० ५, पृ० २१५; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ७१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चण्डोरण पर्वत :

मातिपोसक जातक में चण्डोरण पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[1] डॉ० जायसवाल ने इस पर्वत को अल्ताई पर्वत का एक भाग माना है ।[2]

चन्द्रक पर्वत :

संखपाल जातक में चन्द्रक पर्वत का उल्लेख हुआ है । यह पर्वत कर्णपेण्ण नदी के तट पर स्थित बताया गया है ।[3]

चित्रकूट पर्वत :

जातकों में चित्रकूट पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[4] पालि परम्परा का चित्रकूट हिमवन्त प्रदेश में स्थित बताया गया है ।[5] यह चित्रकूट रायायण में वर्णित चित्रकूट (आधुनिक जिला बाँदा में स्थित) से भिन्न ही था ।[6]

दण्डक हिरण्य पर्वत :

मोर जातक में दण्डक-हिरण्य पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[7] यह पर्वत हिमालय में स्थित था ।

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ९०, ९३; जा० अ० हि० जि०, ४, पृ० २९१, २९३, २९४; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ५८, ६०; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० २१८/१२

२. इण्डियन एण्टिक्वेरी, भाग ६२, पृ० १७०

३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १६२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २४२; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १८०

४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १०७, १७६; जि० ३, पृ० २०८, २०९, २४७, २४८; जि० ४, पृ० २१२, २१३, २१६, २१८, ४२३, ४३०; जि० ५, पृ० ३३८, ३४३; जा० अ० हि० जि०, २, पृ० २८८, ३६९; जि० ३, पृ० ३७०, ३७१, ४०४, ४०५; जि० ४, पृ० ४१३, ४१४, ४१६, ४१८; जि० ५, पृ० ११, १७, ४२०, ४२५, ४३६, ४३७, ४३९, ४४१, ४४७, ४६४, ४७५; जा० अ० अ० जि० २, पृ० ७४; १२३; जि० ३, पृ० १३७, १३६, १६०; जि० ४, पृ० १३२, १९७, २६४; जि० ५, पृ० १७८, १८५, १८९, २०१, २०२, २०५

५. बु० का० भा० भू०, पृ० १४२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६९; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १२३

६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १२७

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३, ३६, ३८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २००, २०२, २०३, २०४; जा० अ० अ० जि० २, पृ० २३, २४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दद्दर पर्वत (महा दद्धर) :

जातकों में दद्धर पर्वत का उल्लेख हुआ है।[1] यह पर्वत हिमालय में स्थित था।[2] दद्धर पर्वत की आधुनिक पहचान काश्मीर के उत्तर में स्थित हिन्दुकुश पर्वत के एक भाग से की गई है।[3] सम्भवतः यह मार्कण्डेय पुराण का दर्दुर पर्वत है।[4] दद्धरपुर नामक एक नगर भी दद्धर पर्वत के पास स्थित था।[5] चेतिय जातक के अनुसार इसे उपचर के पाँचवें पुत्र ने उस स्थान पर बसाया था, जहाँ दो पर्वत आपस में रगड़ कर 'दद्दर' शब्द करते थे। इसे महादद्धर पर्वत भी कहा गया है।[6]

धम्मक पर्वत :

धम्मक पर्वत हिमालय में स्थित था।[7]

नन्दमूलक पर्वत :

नन्दमूलक पर्वत को भी हिमालय में स्थित बताया गया है।[8]

नेमिन्धर पर्वत :

निमि जातक में नेमिन्धर पर्वत का उल्लेख हुआ है।[9] इस पर्वत को (कर्राकुर्रम) श्रेणी माना गया है।[10]

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ६७; जि० ३, पृ० १६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २४१; जि० ३, पृ० १८६; जा० अ० अ० जि० २, पृ० ४६; जि० ३, पृ० ११, २७५; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ४१/७
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १८६
३. बु० का० भा० भू०, पृ० १३८
४. वही, पृ० १५१
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २७५
६. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६, ७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६०, ६१, ६२
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २४०, ३७७, ३७९, ४३३, ४३९, ४७१, ४७२; जि० ४, पृ० ११४, ११५, ३४२, ३६७, ३७०; जि० ५, पृ० २४८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९९, ४००, जि० ४, पृ० ३८, ४०, ९२, ९९, १३०, १३१, ३१५, ३१६, ५४८, ५७५, ५७८; जि०५, पृ० ३३२
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४३; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ६६
१०. बु० का० भा० भू०, पृ० १५०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निसभ पर्वत :

भूरिदत्त जातक में निसभ पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[१] निसभ पर्वत को पुराणों के 'निषध' नामक पर्वत से मिलाया गया है ।[२] इसकी आधुनिक पहचान हिन्दुकुश पर्वत के रूप में की गई है, जिसे यूनानियों ने 'परोपनिसोस' या 'परोपनिसद' कहकर पुकारा है ।[३]

पाण्डव पर्वत :

पाण्डव पर्वत[४] को आधुनिक रत्नगिरि या रत्नकूट पर्वत कहा जाता है ।[५] महावस्तु में इसे 'पाण्डवगिरि' कहा गया है ।[६] महोदय कनिंघम के अनुसार पालि साहित्य का पाण्डव पर्वत वर्तमान रत्नगिरि ही है जो राजगृह की पाँच पहाड़ियों में से एक है ।[७]

पण्डरक पर्वत :

भल्लाटिय जातक में पण्डरक पर्वत का उल्लेख मिलता है ।[८] इस पर्वत का उल्लेख मल्लगिरि के साथ किया गया है ।[९] इसको पीला पहाड़ भी कहा जाता था ।[१०] पण्डरक पर्वत को गढ़वाल में स्थित रुद्र हिमालय का एक भाग बताया गया है । डा० भरतसिंह उपाध्याय के अनुसार ये पहचाने विशेषतः अनुमानिक ही हैं ।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०४, २१२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४०, २५१
२. बु० का० भा० भू०, पृ० १५०
३. वही, पृ० १५०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३७
५. कनिंघम, ए० ज्या० इ०; पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३७
६. महावस्तु, जि० ३, पृ० ४३८/१२
७. कनिंघम, ऐ० ज्या० इ०, पृ० ३९०
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २६; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २७३
९. बु० का० भा० भू०, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २६; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २७३
१०. जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २७३
११. बु० का० भा० भू०, पृ० १५१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फलिक पर्वत :

कुणाल जातक में फलिक पर्वत का उल्लेख हुआ है।[१] यह पर्वत हिमालय में स्थित था।

मणि पर्वत :

सगामावचर जातक में मणि पर्वत का उल्लेख हुआ है।[२] यह भी हिमालय क्षेत्र में स्थित था।

मिश्रक पर्वत :

महामहेन्द्र मिश्रक पर्वत (मिहिन्तले) पर उतरे थे।[3] इसी पर्वत पर एक विहार का ही निर्माण करवाया गया था। यह श्री लंका में स्थित था।

मालागिरि पर्वत (मल्लगिरि) :

भल्लाटिय जातक और भूरिदत्त जातक में मालागिरि पर्वत का उल्लेख हुआ है।[४] इस पर्वत को भी कराकोरम श्रेणी का कोई पर्वत माना गया है।[५]

महानेरु पर्वत :

पलास जातक में महानेरु पर्वत का उल्लेख हुआ है।[६] यह पर्वत चित्रकूट रास्ते पर स्थित था।[७] इसे नेरु नाम का कंचन पर्वत भी कहा जाता था। दीघ-निकाय में इसे पर्वतराज कहा गया है।[८] यह सुमेरु पर्वतराज का दूसरा नाम है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०१
२. वही २, पृ० ९२; जि० ६, पृ० ४४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७१; जि० ६, पृ० ४९
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६३
४. वही० ४, पृ० ४३८; जि० ६, पृ० २०४, २१२; जा० अ० हि जि० ५, पृ० २६; जि० ६, पृ० २४०, २५१; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २७३
५. बु० का० भा० भू०, पृ० १५०
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २१०, २४७, २४८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३७१, ४०४-४०५, जा० अ० अ० जि० ३, पृ० १३८, १६०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २४७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४०४
८. दीघ० नि० पा० जि० ३, पृ० १५३/१९, १६१/१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

युगन्धर पर्वत :

जातकों में युगन्धर पर्वत का उल्लेख हुआ है।[1] सिनेरु (मेरु) पर्वत जिन सात मुख्य पहाड़ियों से घिरा हुआ था, उनके मध्य में युगन्धर पर्वत स्थित था।[2] महावस्तु में भी इस पर्वत का उल्लेख हुआ है।[3] इसकी निश्चित पहचान करना कठिन है।

यामुन पर्वत :

अम्ब जातक में यामुन पर्वत का उल्लेख हुआ है।[4] महोदय नन्दोलाल डे इसे यमुनोत्तरी पर्वत मानते हैं।[5]

वंक पर्वत :

जातकों में वंक पर्वत का उल्लेख हुआ है।[6] जिसे हिमालय में स्थित बताया गया है।

वेभार पर्वत :

महोदय कनिंघम के अनुसार पालि साहित्य का वेभार पर्वत[7] रत्नगिरि है

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६४; ११९; जि० ४, पृ० २१३, २६५; जि० ६, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४, २०२, ४६३; जि० ४, पृ० ४१४, ४६८; जि० ६, पृ० १४३; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १८; जि० ४, पृ० १३३, १६८; जि० ६, पृ० २८, ६६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २१०/९; दीघ नि० पा० जि० ३, ख० १५७/१४, १६४/२१

२. जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १६८

३. महावस्तु जि० २, पृ० ४१०/१२

४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २००

५. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० २१५

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१; जि० ६, पृ० ५०५, ५०७, ५११, ५१३, ५१५, ५१६, ५१७, ५२०, ५२१, ५२३, ५२५, ५२७, ५८०, ५८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९३, जि० ६, पृ० ५४८, ५५१, ५५५, ५५८, ५६१, ५६२, ५६४, ५६६-५६७, ५७१, ५७४, ५७७, ६४०, ६४२; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २६९; खु० नि० पा० जि० २, पृ० २१२/१८; जि० ३, ख० २, पृ० ३९०/२

७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १००; मज्झिम नि० पा०, जि० ३, पृ० १३१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जो राजगृह की पाँच पहाड़ियों में एक है।[१] महाभारत में वेहार और जैन अभिलेखों में वेभार और व्यवहार कहकर पुकारा गया है। इस पर्वत के समीप ही कालशिला स्थित थी।[२] इसका आधुनिक नाम वेभार गिरि है।[३]

वैपुल्य पर्वत :

जातकों में वैपुल्य पर्वत का उल्लेख हुआ है।[४] जो राजगृह के समीप स्थित था।[५] यह राजगृह को परिवृत करने वाली पाँच पहाड़ियों में से एक थी।[६] यह आधुनिक विपुल्लगिरि है।

सान पर्वत (सानु) :

महावेस्सन्तर जातक में सान (सानु) पर्वत का उल्लेख हुआ है।[७] महावस्तु में भी इस पर्वत का उल्लेख है[८] परन्तु इसकी स्थिति के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

स्वर्ण पार्श्व पर्वत :

छद्दन्त जातक में स्वर्ण पार्श्व पर्वत का उल्लेख हुआ है।[९] इसे महान सुपुष्पित पर्वत कहा गया है।

---

१. कनिंघम, ऐ० ज्या० इ०, पृ० ३९०
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १००
३. कनिंघम, ऐ० ज्या० इ०, पृ० ३९०
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३२; जि० ६, पृ० २७१, २७२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७५; जि० ४, पृ० ४३३; जि० ६, पृ० ३०९, ३१०, जा० अ० अ० जि० १, पृ० २७०; जि० ४, पृ० १४५; जि० ६ पृ० २६८
५. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१०
६. लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० ४५१
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१९, ५४१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५६६, ५९४
८. महावस्तु जि० १, पृ० २७४; जि० २, पृ० २४२/९; २९९/६, ३२६/५, ३४९/७, ५५६/६
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८, ४२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १२७, १३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुदस्सन पर्वत (सुदर्शन) :

सुदस्सन पर्वत को हिमवन्त में स्थित बताया गया है।[१]

सुमेरु पर्वत (सिनेरु) :

जातकों में सुमेरु (सिनेरु) पर्वत का उल्लेख हुआ है। इसको गिरिराज[२] सुमेरु पर्वतराज[३] और 'शैलराज'[४] आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। सुमेरु पर्वत के चारों ओर नेमिन्धर, युगन्धर, इषधर, खदरिक, अश्वकर्ण, विनतक और सुदर्शन नामक सात पर्वत स्थित थे।[५]

"युगन्धरो ईसधरो करवीको सुदस्सनो,
नेमिन्धरो विनतको अस्सकणों गिरि ब्रहा।"

सुमेरु पर्वत की ऊँचाई १६८ योजन थी।[६] इसे बदरिकाश्रम के समीप गढ़वाल में स्थित रुद्र हिमालय माना जाता है।[७]

स्वर्णगिरिताल पर्वत :

महावेस्सन्तर जातक में स्वर्णगिरिताल पर्वत का उल्लेख हुआ है।[८] यह पर्वत जेतुत्तर नगर से पाँच योजन की दूरी पर स्थित था। स्थिति अज्ञात है।

सर्वं स्वर्णमय गिरि :

भूरिदत्त जातक में सर्व स्वर्णमय गिरि पर्वत का उल्लेख हुआ है।[९] यह पर्वत यमुना नदी के समीप ही स्थित था।

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १२५, २१२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९०; जि० ६, पृ० १४३, २४०, २५१; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ६६
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ ५८६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४७
३. वही १, पृ० ४८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११४; महावस्तु जि० ३, ६८/७, १३६/७, १३७/१५, ३००/१७
४. महावस्तु जि० २/६८/७
५. वही, जि० २, ३००/१७, १९
६. बु० का० भा० भू०, पृ ५८
७. लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० २१५
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २६६
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुसूक्षम-सुनिपुण पर्वत :

कुणाल जातक में सुसूक्षम-सुनिपुण पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[१] इसे हिमालय के पूर्व में स्थित माना गया है ।

हिंगुल पर्वत :

कुणाल जातक में हिंगुल पर्वत का उल्लेख हुआ है ।[२] यह पर्वत हिमवन्त में स्थित था । हिंगुल पर्वत (आधुनिक हिंगलाज) सिन्ध और बिलोचिस्तान की पहाड़ियों के बीच करांची से ९० मील उत्तर में स्थित था ।[३]

हिमालय पर्वत :

जातकों में हिमालय पर्वत का उल्लेख अनेकों बार हुआ है । यह पर्वत बहुचर्चित पर्वत है, जिसका उल्लेख जातकों में बहुधा मिलता है । यह उत्तर में स्थित था "उत्तरे हिमवन्ते" । इसे पर्वतराज कहा गया है ।[४]

यह पर्वत सुगन्धित पुष्पों, मनोहर सघन वनों, बाग-बगीचों, फलदार वृक्षों, नाना प्रकार के पक्षियों, किन्नर-यक्षों से सेवित तथा सैकड़ों प्रकार की औषधियों एवं धातुओं से मण्डित था ।[५]

रमणीय हिमालय प्रदेश नीले, पीले, ताम्रवर्ण, श्वेत शिखर[६] नदियों, झरनों सरोवरों से सुशोभित था ।[७] विद्याधर, सिद्ध, श्रमण तथा तपस्वीगण रहते थे, वरदेव, यक्ष, राक्षस, दानव, गन्धर्व, किन्नर महोरग थे ।[८] यह शान्तिप्रिय मुनियों तथा सिद्ध और चारणों के यज्ञों के धुएँ से आच्छादित रहता था ।[९] हिमवन्त खण्ड के निवासियों को हिमवन्त पर्वतवासी कहते थे ।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०४
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०१; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २२१
३. बु० का० भा० भू०, पृ० १३८
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०४; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २२१/१८; दिव्या २६१/१२, २९२/१५, २९६/२२
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०३
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४९१
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०३; जि० ४, पृ० ४९१
८. वही ५, पृ० ४१५-२०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०१-५०५
९. सं० बां० स० मे० भा० जी०, पृ० १४
१०. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ६७; सं० बौ० सा० मे० भा० जी०, पृ० १४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह पर्वत ५०० योजन ऊँचा था और ३०,००० योजन की परिधि में फैला हुआ था। इसमें ८४ हजार चोटियाँ थीं। जिनसे ५०० नदियाँ निकलती थीं।[१]

त्रिकूट पर्वत :

भल्लाटिय जातक में त्रिकूट पर्वत का उल्लेख हुआ है।[२] उत्तरापथ के पास स्थित था।[३] त्रिकूट पर्वत को त्रिकोट पर्वत से मिलाया है, जो पंजाब के उत्तर और कश्मीर के दक्षिण में स्थित एक पर्वत शिखर है।[४]

जातकों में कई अन्य पर्वतों का उल्लेख हुआ है जिनमें से कुछ की पहचान नहीं हो सकी है, जिनका विवरण अधोलिखित है :—

अस्सकण पर्वत : साम जातक में अस्सकण पर्वत का उल्लेख हुआ है।[५] इस पर्वत की पहचान नहीं हो सकी है।

आकीर्ण-नालिक पर्वत : महावेस्सन्तर जातक में आकीर्ण-नालिक पर्वत का उल्लेख हुआ है।[६] इस पर्वत की पहचान नहीं हो सकी है।

ईषधर पर्वत : साम जातक में ईषधर पर्वत का उल्लेख हुआ है।[७] इसकी पहचान अनिश्चित है।

उदकपश्य पर्वत : छद्दन्त जातक में उदकपश्य पर्वत का उल्लेख हुआ है।[८] इसकी पहचान नहीं हो सकी है।

काकनेरु पर्वत : भूरिदत्त जातक में काकनेरु पर्वत का उल्लेख हुआ है।[९] इसकी पहचान नहीं हो सकी है।

कारवीक पर्वत : सामजातक में कारवीक पर्वत का उल्लेख हुआ है।[१०] इसकी पहचान कठिन है।

---

१. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०१-५०२, मिलिन्द०, ४/८/७२
२. वही ५, पृ० २६; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २७३
३. बु० का० भा० भू०, पृ० १५१
४. वही, पृ० १५१
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४३; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २१०/१०
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१९; जा०अ० हि०जि० ६, पृ० ५६५, ५६६
७. वही ६, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४३; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २१०।९
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १२७
९. वही ६, पृ० २०४, २१८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४०, २५१
१०. वही ६, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चन्द रजत पर्वत : चन्दकिन्नर जातक में चन्द रजत पर्वत का उल्लेख हुआ है।[1]

चन्द्रपश्य पर्वत : छद्दन्त जातक में चन्द्रपश्य पर्वत का उल्लेख हुआ है।[2]

चुल्लकाल पर्वत : छद्दन्त जातक में चुल्लकाल पर्वत का उल्लेख हुआ है।[3]

चक्रवाल पर्वत : सटह जातक में चक्रवाल पर्वत का उल्लेख हुआ है।[4]

तक्रमूलक पर्वत (नन्दमूलक पर्वत) : धजविहेठ जातक में तक्रमूलक पर्वत का उल्लेख हुआ है।[5] इसकी पहचान नहीं हो सकी है।

तुंग पर्वत : अट्टसद्द जातक में तुंग पर्वत का उल्लेख हुआ है।[6] इसकी भी पहचान नहीं हो सकी है।

नारदकूट पर्वत : जातक में नारदकूट पर्वत का उल्लेख मिलता है।[7]

मणिपश्य पर्वत : छद्दन्त जातक में मणिपश्य पर्वत का उल्लेख हुआ है।[8]

महाकाल पर्वत : छद्दन्त जातक में महाकाल पर्वत का उल्लेख हुआ है।[9]

रजत पर्वत : सिगाल जातक में रजत पर्वत पर स्फटिक गुफा थी।[10] इसकी स्थिति अज्ञात है।

विनतक पर्वत : निमि जातक में विनतक पर्वत का उल्लेख हुआ है।[11] महावस्तु में भी इस पर्वत का उल्लेख मिलता है।[12] इसकी पहचान कठिन है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८३, २८८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४८७, ४९२

२. वही ५, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १२७

३. वही ५; पृ० ३८; ,, ,, ५, पृ० १२७

४. वही ३, पृ० ३२; ,, ,, ३, पृ० २०२

५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३०४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४५४

६. वही ३, पृ० ४३३; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ९२

७. वही १, पृ० २९; जा० अ० हि० जि०१, पृ० ९०

८. वही ५, पृ० ३८; ,, ,, ५, पृ० १२७

९. वही ५, पृ० ३८; ,, ,, ५, पृ० १२७

१०. वही १, पृ० ५०; ,, ,, १, पृ० ११७, ११८; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ६६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २१०

११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४२, १४३; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ६६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० २१०

१२. महावस्तु जि० २, पृ० ४१०।१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शैल पर्वत : जातक में शैल पर्वत का उल्लेख मिलता है।[1]

सूर्यपश्य पर्वत : छद्दन्त जातक में सूर्यपश्य पर्वत का उल्लेख हुआ है।[2] इसकी स्थिति अज्ञात है।

स्वर्ण पर्वत (सुवर्ण पर्वत) : जातकों में स्वर्ण पर्वत का उल्लेख हुआ है।[3]

वन

भारतीय संस्कृति के इतिहास में वनों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन वनों का बौद्ध भिक्षुओं के जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध था। भगवान् बुद्ध ने वन में ही जन्म ग्रहण किया था, बुद्धत्व प्राप्त किया था, प्रथम उपदेश दिया था और महापरिनिर्वाण भी प्राप्त किया था।[4] हम उन्हें वनों में बिहरते देखते हैं।[5] हजारों की संख्या में बौद्ध भिक्षुओं के संघ वनों में रहते हुए धार्मिक धर्मोपदेश करते थे तथा आगन्तुओं को उपदेश देते थे।[6] यहाँ जातकों में उल्लिखित वनों का क्रमिक वर्णन किया जा रहा है।

अशोक नन्दन वन :

जातकों में अशोक नन्दन वन का उल्लेख मिलता है। इसे नन्दन पुष्करिणी के समान आनन्ददायक कहा गया है।[7] यह वन देवताओं का नन्दन वन कहलाता था।[8] इसे तुषित लोक का नन्दन वन भी कहा गया है।[9]

आम्रवन (मखादेव आम्र उद्यान) :

जातकों में कई आम्रवनों का उल्लेख मिलता है। अनूपिय नगर के समीप

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८४
२. वही ५, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १२७
३. वही १, पृ० ५०, ५५; वही १, पृ० ११८, १२४; जि० ६, पृ० २७१
४. वही १, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६
५. वही १, पृ० ३६; ,, ,, १, पृ० ९९
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १०६, १५०
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३८६
८. वही १, पृ० ४९; जि० ३, पृ० ४९५; जि० ६, पृ० ५२९, ५३४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७; जि० ४, पृ० १५६; जि० ६, पृ० ५८१, ५८६, जा० अ० अ० जि० २, पृ० १३३; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १८२, १८३
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थित अनूपिय आम्रवन था जहाँ इसी नाम का एक विहार था।[१] राजगृह के पास स्थित जीवक का आम्रवन था (जीवकम्बवन)।[२] कौमार भृत्य जीवक (बुद्ध का समकालीन प्रसिद्ध वैद्य) ने इसे आम्रवन में बुद्ध की पूजा की थी और धर्मोपदेश सुना था।[३] भगवान् बुद्ध ने प्रव्रजित होने के पश्चात् अनूपिया नामक कस्बे के आम्रवन में एक सप्ताह सुख से बिताया था।[४]

खदिरवन :

कन्दगलक जातक में खदिरवन का उल्लेख हुआ है।[५] यह वन हिमवन्त प्रदेश में था।

चित्रलता वन :

जातकों में चित्रलता वन का उल्लेख हुआ है।[६] यह वन चित्रा के मरने के पश्चात् उसके नाम पर 'चित्रलता वन' नाम का उद्यान बनवाया गया था। इसे इन्द्र उद्यान भी कहा गया है।[७] इस वन में आशावती नाम की लता उत्पन्न हुई थी।[८]

जामुन वन :

कुणाल जातक में जामुन वन का उल्लेख हुआ है।[९] यह जामुन पर्वत या यामुन पर्वत का ही एक वन था।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४०; जा अ० हि० जि० १, पृ० २२९
२. ,, ,, १, पृ० ११४, ११६; ,, ,, १, पृ० १९४, १९७
३. ,, ,, १, पृ० ११६; ,, ,, १, पृ० १९७
४. ,, ,, १; पृ० १४०; ,, ,, १, पृ० २२९
५. ,, ,, २, पृ० १६२; ,, ,, २, पृ० ३५३, ३५५; खु० नि० पा० जि० ६, पृ० ६१
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०४; जि० २, पृ० १८८; जि० ३, पृ० २५०, २५१; जि० ६, पृ० २७८, ५९०; जा० आ० हि० जि० १, पृ० ३१३; जि० २, पृ० ३८५; जि० ३, पृ० ४४७, ४०८; जि० ६, पृ० ३१८, ६५२; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १३६, ३०३; खु० नि० पा० जि० ३, पृ० १३१
७. जा० अ० अ० जि० ६, पृ० १३६
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २५१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४०८; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १३१
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१७, ४२१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०३, ५०५; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० १२०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जेतवन :

जेतवन का उल्लेख जातकों में कई बार हुआ है। यह वन श्रावस्ती के समीप स्थित था।[१] इसे महाजेतवन कहा गया है।[२] जेतवन से गव्यूति (१/४ योजन), आधे योजन की दूरी पर निगम ग्राम था।[३] यही अनाथपिण्डिक द्वारा निर्मित जेतवनाराम में भगवान् बुद्ध ने निवास किया था—('भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे')।[४]

तपोदा वन (तपोदाराम) :

समिद्धि जातक में तपोदावन विहार का उल्लेख हुआ है।[५] यह वन राजगृह के समीप स्थित था।

दण्डकारण्य वन :

जयद्दिस जातक में दण्डकारण्य वन का उल्लेख हुआ है।[६] यह वन गोदावरी नदी के तट पर विन्ध्याचल के नीचे स्थित था।[७] राजा दण्डकी की दुष्टता के कारण कलिंग वन उजाड़ हो जाने के बाद उसके स्थान पर जो वन उगा, वही दण्डकारण्य कहलाया।[८] ललितविस्तर में दण्डकवन को दक्षिणापथ में स्थित माना गया है।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७७, ९५; जि० २, पृ० ३४१; जि० ६, पृ० ७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९, १७२; जि० ३, पृ० ६६ जि० ६, पृ० ७९; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ९९; खु० नि० पा० जि० ६, पृ० १, ९; जि० ७, पृ० ६७, १४५
२. खु० नि० पा० जि० ७, पृ० ६७
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४११
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९; बु० का० भा० भू०, पृ० ८; खु० नि० पा० जि० १, पृ० २८५, २८७, ३०७, ३२३, ३३०, ३६८, ३६९
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २२७; जा० अ० अ० जि० २, पृ० ३९
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ११८; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १६
७. बु० का० भा० भू०, पृ० १६४
८. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३
९. ललितविस्तर, पृ० ३१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

न्यग्रोधाराम (निग्रोधाराम) :

जातकों में न्यग्रोधाराम विहार का भी उल्लेख मिलता है। यह कपिलवस्तु के समीप स्थित था।[१]

पारिलेयक वन :

कोसम्बी जातक में पारिलेयक वन का उल्लेख हुआ है।[२] यह वन चेतिय राज्य में स्थित था।[३] भगवान् ने इस वन में अपना दसवाँ वर्षावास किया था।[४]

महावन :

जातकों में महावन का उल्लेख हुआ है।[५] यह वन वैशाली में स्थित था। भगवान् बुद्ध वैशाली के समीप महावन की कूटागारशाला में विहार करने गये थे— ('भगवाये सलियं विहरति महावने कूटागारसालाया')।[६]

भद्दकुच्छि मिगदाय (मिगप्रदाय) :

जातक में भद्दकुच्छि मिगदाय का उल्लेख हुआ है।[७] इसे भद्दकुच्छि (भद्र-कुक्षि) नामक स्थान में स्थित बताया गया है। यह भी एक सुरम्य स्थान था जहाँ उन्होंने एक बार निवास किया था।[८] विनयपिटक में भी भद्दकुच्छि मिगदाय का

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ६; जि० ६, पृ० ४७९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २०८; जि० ६, पृ० ५१७

२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ ४८९; जा० अ० हि जि० १४९

३. बु० का० भा० भू०, पृ० १४५

४. वही, पृ० ४३१

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७७, ५०४; जि० २, पृ० ३५८; जि० ५, पृ० ४५६, जि० ६, पृ० ८९, २३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९, जि० २, पृ० १५२; जि० ३, पृ० ८३, जि० ५, ५३५, जि० ६; पृ० १०१, २७६; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २५१, ३१६; जि० २, पृ० ४, २४५; खु० नि० पा० जि० १, पृ० ९१, ९२, ९३, ११४, १३६, जि० ३, ख० २, पृ० १८७, २७८; जि० ३ ख० १; पृ० ७४, जि० २, पृ० ७६

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९

७. वही ४, पृ० ४३०; वही ५, पृ० १७, जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २६७

८. दीघ निकाय (हिन्दी अनुवाद) पृ० १३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उल्लेख है ।[१] इस वन में मृगों को अभयदान दिया गया है, उन्हें यहाँ भोजन दिया जाता था और वे स्वच्छ रूप से विचरते थे ।[२]

यष्ठिवन (लट्ठोवन) :

जातकों में यष्ठिवन का उल्लेख हुआ है ।[३] यह वन राजगृह नगर के समीपवर्ती जठियाँव (लट्ठिवन-उद्यान) में स्थित था ।[४] इसे वर्तमान जेठियन (जेठियाँव) वन कहा गया है ।[५] भगवान, बुद्धत्व प्राप्ति के बाद लट्ठिवन उद्यान के सुप्रतिष्ठित नामक चैत्य में ठहरे थे ।[६]

महोदय कनिंघम ने इसे आधुनिक तपोवन माना है ।[७] आजकल इस वन को 'तप्पो' भी कहा जाता है ।[८] यष्ठिवन उद्यान हमेशा हरा-भरा रहता था । यहाँ जनसमूह भगवान के सुन्दर स्वरूप को देखते हुए तृप्त नहीं होते थे ।[९]

लुम्बिनी वन :

जातकों में लुम्बिनी वन का उल्लेख हुआ है ।[१०] यहाँ शाक्य मुनि का जन्म हुआ था (अस्मिन् प्रदेशे भगवन जातः) ।[११] इसकी पुष्टि सम्राट् अशोक द्वारा स्थापित स्तम्भ पर अंकित अभिलेख से भी होती है—"हिद बुधे जाते सक्य मुनिसि" ।[१२] यह नेपाल की तराई में स्थित वर्तमान लुम्बिनी ही है । जो नौतनवा स्टेशन (पूर्वोत्तर रेलवे) से प्रायः ८ मील दूर स्थित है ।

---

१. विनयपिटक (हिन्दी अनुवाद), पृ० १४०; ३९६
२. बु० का० भा० भू०, पृ० २०४; जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५०-१५२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २४४-४६
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८३; जि० ६, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६-१५७; जि० ६, पृ० २५६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६-५७
५. वही १, पृ० ८४; वही १, पृ० १५७
६. बु० का० भा० भू०, पृ० ९८
७. वही, पृ० १९९
८. वही, पृ० १९९
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५७
१०. वही १, पृ० ५२, ५५, जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२०, १२२; खु० नि० पा० जि० १, पृ० ३७५; जि० ७, पृ० १५२
११. दिव्या० ६१/८, २४८/१६; वैद्य ललित ६१/५-६, बु० च० १/८-९
१२. अशोक का रुम्मिन देई स्तम्भ लेख पं० २

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बेलुवन :

बेलुवन का उल्लेख जातकों में कई बार हुआ है। यह वन राजगृह के समीप स्थित था।[१] तथागत ने इस इस उद्यान में विहार किया था।[२]

शालवन (लाल शालीवन) :

शालवन[३] को सुन्दर शाल वन कहा गया है। यह वन हिमवन्त प्रदेश में स्थित था।[४] यह योजन भर विस्तार में फैला हुआ था। यह फूलने पर लाल वन दिखाई पड़ता था।[५-६] इसे मल्लों का शालवन भी कहा गया है।[७] यह ज्ञात है कि मल्ल राज्य गोरखपुर और देवरिया जिलों में फैला हुआ था। इसी शाल वन में भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था। वर्तमान कसिया (जिला देवरिया) के आस-पास यह शाल वन फैला हुआ था।

सिम्बली वन :

जातकों में सिम्बली वन का उल्लेख हुआ है।[८] जातकों में कहा गया है कि असुर लोग पराजित होने के बाद सिम्बली वन चले गये थे।[९] इसे मेरु पर्वत के समीप स्थित बताया गया है।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५०
२. वही १, पृ० ८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५९
३. वही १, पृ० ५२, ७०; जि० ४, पृ० २७७; जि० ५, पृ० ३८; जि० ६, पृ० १८९, ३००, ३८२, ३८६; जा० ज० हि० जि० १, पृ० १२०, १४२, ४७०; जि० ४, पृ० ४८०; जि० ५, पृ० १२७; जि० ६, पृ० २२४, ३३९, ४२९, ४३३; खु० नि० पा० जि० १, पृ० १०६; जि० ३, ख० १, पृ० ३४७, जि० ६, पृ० १२०
४ वही १, पृ० ३२८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४७०
५. वही ५, पृ० ३७; ,, ,, ५, पृ० १२६
६. वही १, पृ० ७०; ,, ,, १, पृ० १४२
७. महापरिनिव्वाणसुत्त (हिन्दी अनुवाद), पृ० १३१, १३७, १४१, १८१
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०२; जि० ३, पृ० ३९७; जि० ५, पृ० ४५५; जि० ६, पृ० १७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१०-३११; जि० ४, पृ० ५७; जि० ५, पृ० ५३४; जि० ६, पृ० २११; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० ६०-६१; जि० ६, पृ० १२७; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० १३७; जि० ३; ख० १, पृ० ९, ९८
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१०, ३११
१०. जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ६०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातकों में उल्लिखित ऐसे वनों का भी उल्लेख हुआ है जिनकी पहचान करना कठिन है—

अंजन वन : अंजन वन का उल्लेख जातकों में मिलता है[1] जिसे साकेत के समीप स्थित बताया गया था।[2]

अरण्ड वन (एरण्ड) : अरण्ड वन[3] की पहचान कठिन है।

एरक वन : काकाती जातक में एरक वन का उल्लेख हुआ है। यह वन सरोवर के समीप स्थित था।[4]

केतक वन : नलपान जातक में केतक वन का उल्लेख हुआ है।[5] यह वन नलकपान के समीप स्थित था।

कविट्ठ वन (खैर वन) : सरभंग जातक में कविट्ठ वन का उल्लेख हुआ है।[6] यह वन गोदावरी नदी के समीप स्थित था।

कुण्डधान वन : असातरूप जातक में कुण्डधान वन का उल्लेख हुआ है।[7] यह वन कुण्डिया नगर के समीप स्थित था। स्थिति अज्ञात है।

कुरंग वन[8] : कुरंगमिग जातक में इस वन का उल्लेख हुआ है।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०८, ३०९; जि० ३, पृ० २७०, २७२, २७४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४४५, ४४६; जि० ३, पृ० ४२५-४२६, ४२८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६६; जि० ३, पृ० १७२; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १३७; जि० ३, ख० २, पृ० १२०
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०८; जि० ३, पृ० २७२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४४५; जि० ३, पृ० ४२६
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४४०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १६०; जि० ४, पृ० २८९
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २५७
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६८
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१३-२१४; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ६९-७०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५७४; जा० अ० अ० जि० १, पृ० २४२; खु० नि० पा० जि० ६, पृ० ९७-९८
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३४४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्णिकार वन : इस वन का उल्लेख खण्डहाल जातक में हुआ है।[१]

कुमुद वन[२] : छद्दन्त जातक में इस वन का उल्लेख हुआ है।

कदली वन : महावेस्सन्तर जातक में कदली वन का उल्लेख हुआ है।[३]

कप्पासिय वन : उरुवेला को जाते तीस भद्रवर्गीय कुमारों को कप्पासिय वन में भगवान् बुद्ध ने दीक्षित (विनीत) किया था।[४]

जातीय वन : महापणाद जातक में जातीय वन का उल्लेख हुआ है।[५]

नारियल वन : कुणाल जातक में नारियल वन (नारिकेल वन) का उल्लेख हुआ है।[६]

नारीवन : अलम्बुस जातक में नारीवन का उल्लेख हुआ है।[७]

नील वर्ण वाले वन : महावेस्सन्तर जातक में इस वन का उल्लेख हुआ है।[८]

पाटलीवन : खण्डहाल जातक में पाटलीवन का उल्लेख हुआ है।[९]

पाळिमद्धक वन : कन्दगळक जातक में पाळिमद्धक वन का उल्लेख हुआ है। यह वन हिमवन्त में था।[१०]

बरहल वन : कुणाल जातक में बरहल वन का उल्लेख हुआ है।[११]

मृगाकीर्ण वन : सोननन्द जातक में मृगाकीर्ण नामक वन का उल्लेख हुआ है।[१२]

---

१. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १७३
२. ,, ,, ५, पृ० ३७; ,, ,, ५, पृ० १२६
३. ,, ,, ६, पृ० ५२०; ,, ,, ६, पृ० ५६६
४. ,, ,, १, पृ० ८२; ,, ,, १, पृ० १५६
५. ,, ,, २, पृ० ३३१; ,, ,, ३, पृ० ५६
६. ,, ,, ५, पृ० ४१७, ४२१; ,, ,, ५, पृ० ५०५; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० १२१, १२३
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १५२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २३३
८. ,, ,, ६, पृ० ५१८; ,, ,, ६, पृ० ५६५
९. ,, ,, ६, पृ० १४६; ,, ,, ६, पृ० १७३; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० ३३
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १६२, १६४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३५३, ३५५
११. ,, ,, ५, पृ० ४२१; ,, ,, ५, पृ० ५०५
१२. ,, ,, ५, पृ० ३२३; ,, ,, ५, पृ० ४०३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मृगाचिरं वन : महाकपि जातक में मृगाचिरं नामक वन का उल्लेख हुआ है।[1]

रम्यवन : भिस जातक में रम्यवन का उल्लेख हुआ है।[2]

लतावन : सुधाभोजन जातक में लतावन का उल्लेख हुआ है।[3]

सेमर वन : सालिकेदार जातक में सेमर वन का उल्लेख हुआ है।[4]

सुभग वन : मूल परियाय जातक में सुभग वन का उल्लेख हुआ है।[5] यह वन उकट्ठा के समीप स्थित था।[6]

सरकण्ड वन : दुतीय पलासी जातक में सरकण्ड के वन का उल्लेख हुआ है।[7]

सीतवन : जातकों में सीतवन का उल्लेख हुआ है।[8] यह वन राजगृह के समीप स्थित था। भगवान् ने इस वन में विहार किया था। इसे महाश्मशान वन भी कहा गया है।[9]

सुपुत्र वन : भूरिदत्त जातक में सुपुत्र वन का उल्लेख हुआ है।[10]

उपर्युक्त वनों के अतिरिक्त छद्दन्त जातक में अधोलिखित वनों का भी उल्लेख हुआ है :—

शुद्ध सुन्दर वन, नीलोत्पल वन, रक्तोत्पल वन, श्वेतउत्पल वन, मिश्रित वन, लाल शालीवन, नीले, पीले, रक्त वर्ण, श्वेत वर्ण, सुगन्धित छोटे-छोटे फूलों वाला छोटे पेड़ों का वन, छोटे उड़द-बड़े उड़द तथा मूँग का वन, कद्दू,

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ६८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १५६ ८
२. ,, ,, ४, पृ० २१०; ,, ,, ४, पृ० ५१५; ख० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० २८१
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४७५
४. ,, ,, ४, पृ० २८०; ,, ,, ४, पृ० ४८२
५. जा० अ० रो० जि० २; पृ० २५९, जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६७
६. जा० अ० हि० जि० २, पृ०, ४६७
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२२
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९२; जि०३, पृ० ३४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६८; जि० २, पृ० ५०, ६४, ८९, १२७; जि० ३, पृ० २०४
९. जा० अ० हि० जि० २, पृ० १२७
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १७५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २०८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लौकी, पेठे की लताओं के वन, सुपारी के वन, केले के वन, मीठे फलों वाले वन, इमली के वन, कपिट्ठ वन एवं बाँसों के वन आदि ।[१]

नदियाँ

प्राचीन काल से ही भारतीय जीवन में नदियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है । वैदिक काल में भी इन्हें पूज्या माना जाता था । ऋग्वेद के नदी शूक्त में नदियों की स्तुति की गई है । ये जलदायिनी हैं । देश के एक शिरे से दूसरे शिरे तक प्रवाहित नदियों का विवरण जातक कथाओं में मिलता है । यहाँ पर इन नदियों का वर्णक्रम से वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है । यही नहीं उनकी पहचान भी करने का प्रयास किया गया है—

अनोमा नदी :

जातकों में अनोमा नदी का उल्लेख हुआ है ।[२] यह नदी कपिलवस्तु और अनुपिया के बीच बहती थी ।[३] इसे वर्तमान ओमी नदी माना गया है ।[४] जो गोरखपुर जिले में प्रवाहित है ।

अचिरवती नदी :

अचिरवतो नदो आधुनिक राप्ती नदी है ।[५] सालित्त—जातक और कुस्सम जातक से पता चलता है कि यह नदी श्रावस्ती के पास बहती थी ।[६] यह उत्तर प्रदेश में गोंडा, बहराइच, बस्ती, गोरखपुर और देवरिया जिलों में बहने वाली प्रसिद्ध और पवित्र राप्ती नदी है ।[७]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १३६
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६४; जि० ४, पृ० ११९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४-३५, जि० ४, पृ० ३२०; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० ७५
३. बु० का० भा० भू०, पृ० १३३; डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ८; जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४
४. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४
५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४६; डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० १
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६६; जि० १, पृ० ४१६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९, जि० ३, पृ० ८९
७. डॉ० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एनि नदी :

बक ब्रह्मा जातक में एनि[1] (एणी) नामक नदी का उल्लेख है, जिसकी पहचान करना कठिन है।

केबुक नदी :

काकाती जातक में जम्बूद्वीप समुद्द (जम्बूद्वीप समुद्र) का उल्लेख है। जिसके परे केबुक[2] नामक नदी बहती थी। इसकी पहचान नहीं की जा सकी है।

कल्याणी नदी :

बलाहस्स जातक में कल्याणी नदी का उल्लेख हुआ है।[3] इसे ताम्रपर्णी द्वीप की कल्याणी नदी बताया गया है। उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव में भी कल्याणी नाम की नदी बहती है।

कोसिकी नदी (कोसी) :

किछन्द जातक में कोसिकी नदी का उल्लेख हुआ है जहाँ उसे हिमवन्त प्रदेश में प्रवाहित गंगा की सहायक नदी बताया गया है।[4] यहीं उसके किनारे पर स्थित तीन योजन विस्तृत आम्रवन का भी उल्लेख हुआ है। कोसिकी नदी आधुनिक कोसी नदी ही है।[5]

कोन्तिमार नदी (कोनित्मा, केतुमती) :

वेस्सन्तर (महावेस्सन्तर) जातक में कोन्तिमार नदी का उल्लेख हुआ है।[6] यह नदी जेतुत्तर नगर से पाँच योजन की दूरी पर स्थित स्वर्णगिरिताल नामक पर्वत से भी पाँच योजन की दूरी पर बहती थी।[7] इसकी पहचान कठिन है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २४; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २२०; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १५५/७
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २५८, जा० अ० अ० जि० ३, पृ० ६१; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ९८/१४
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२
४. वही ५, पृ० २, ९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ९०, ९३; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३५८/४
५. बु० का० भा० भू०, पृ० १४६
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४४३, ५१४, ५१९, ५२०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५३३, ५५९, ५६५-६६; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २५६, २६८; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० ३३०।२२, ३४८।२१
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्णपेण्ण नदी (पुण्ण नदी) :

संखपाल जातक में कर्णपेण्ण नदी (कण्णपेण्णा या कण्णवेण्णा और काकपेण्य) का उल्लेख हुआ है ।[१] यह नदी संखपाल नामक झील से निकल कर महिसक राष्ट्र में बहती थी ।[२] उपर्युक्त झील का समीपवर्ती चन्द्रक पर्वत से उद्गम हुआ था । डॉ० जायसवाल ने इस नदी को वर्तमान वेन या वेनगङ्गा माना है, जो कंहन नामक नदी से मिलकर भंडारा जिले में वर्धा नदी से मिलती है ।[3]

खेमा नदी :

नलिनिका जातक में खेमा नदी का उल्लेख हुआ है ।[४] यह नदी हिमालय के उत्तर में बहती थी ।

गोदावरी नदी :

गोदावरी नदी[५] दक्षिणापथ की मुख्य नदियों में एक है[६] जिसका उल्लेख पालि त्रिपिटक और उसकी अट्ठकथाओं में हुआ है ।[७] पालि साहित्य की गोदावरी (गोधावरी) आधुनिक गोदावरी ही है, जो नासिक से २० मील दूर ब्रह्मगिरि से निकलकर पूर्वी समुद्र में गिरती है ।[८] सरभंग जातक के अनुसार यह नदी कविट्ठवन (खैर-वन) के समीप प्रवाहित थी ।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७४; जि० ५, पृ० १६२, १६३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६७; जि० ५, पृ० २४२-४३; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १२२; जि० ५, पृ० ८४
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १६२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २४२; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ८४
३. बु० का० भा० भू०, पृ० १६२
४. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २८२; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १०३; खु० नि० पा० जि० १, पृ० २०३/२६; जि० ३, ख० २, पृ० ३७/८
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१३-१४, २१७; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ६९-७०, ७२-७३
६. बु० का० भा० भू०, पृ० १५०
७, वही, पृ० १६०
८. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ६९; बु० का० भा० भू०, पृ० १६०
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गंगा नदी (भागीरथी) :

गंगा नदी पवित्र नदी है। इसे भागीरथी भी कहा गया है।[१] पुराणों में भी गंगा नदी का विस्तृत वर्णन हैं।[२] तक्क जातक,[३] सिगाल जातक[४] और चक्कवाक जातक[५] में वाराणसी के समीप इसे प्रवाहित बताया गया है। महाउम्मग्ग जातक के अनुसार गंगा नदी समुद्र में मिलती थी (गंगा समुद्द पटिपज्जमाना)।[६]

जातकों में गंगा के विभिन्न भागों—'आकाश-गंगा'[७], 'अधोगंगा'[८], 'उद्द गंगा'[९], 'उपरिगंगा'[१०] 'पारगंगा'[११] का भी उल्लेख मिलता है।

गया नदी :

महाउम्मग्ग जातक में गया नदी का उल्लेख हुआ है।[१२] गया में ही एक गया पुष्करिणी भी थी। इसी नदी के किनारे गया तीर्थ भी स्थित था। पालि साहित्य के अनुसार इस गया तीर्थ को आधुनिक 'विष्णुपाद' नामक मन्दिर के

---

१. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १८०; ला० ज्या० ऐं०, भाग १, पृ० ४२; दिव्या० ४६७।१०-११
२. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ६१
३. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२९
४. वही, जि० २, पृ० १४९
५. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १८०
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३५९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४०५; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३१७/३
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३४४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७२; जि० २, पृ० २३९; जि० ४, पृ० ८; जि० ५, पृ० २०६
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६५
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८३, जि० ६, पृ० ४२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६६
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८३
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४९३
१२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४७२; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २०७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आसपास क्षेत्र से मिला सकते हैं जो बुद्ध गया से लगभग सात मील की दूरी पर फल्गु नदी के बांयें तट पर स्थित है ।[१]

घड़ियाल नदी :

पदकुसलमाणव जातक में घड़ियाल नदी का उल्लेख मिलता है ।[२] यह काशी ग्राम के पश्चिम में बहती थी ।

चम्पा नदी :

चम्पेय जातक में चम्पा नदी का उल्लेख मिलता है ।[३] यह नदी अंग और मगध जनपदों के बीच में होकर बहती थी ।[४] यह आधुनिक चांदन नदी है ।[५]

तेलवाह नदी (नीलवाहिनी नदी) :

सेरिवाणिज जातक में तेलवाह नदी[६] का उल्लेख हुआ है । यह सेरिवरट्ठ (सेरि राष्ट्र) के समीप बहती थी । इसके तट पर अन्धपुर नामक नगर स्थित था । सेरिवरट्ठ के व्यापारी इस नदी को पार कर उपर्युक्त नगर को गये थे । डॉ० डी० आर० भण्डारकर ने तेलवाह नदी को मद्रास राज्य और मध्य प्रदेश की सीमाओं पर बहने वाली तेल या तेलिनगिरि नामक दो नदियों में से किसी एक से पहचान करने का प्रस्ताव किया है[७], परन्तु डॉ० हेमचन्द्र राय चौधरी का विचार है कि सम्भवत: तुंगभद्रा-कृष्णा ही तेलवाह नदी है ।[८] इस समय इसे तिलार नदी कहते हैं जिसका पानी तेल के समान गन्धपूर्ण है ।[९] महाकप्पिन ने नीलवाहिनी (नीलवाहिना) नदी को पार किया था ।[१०]

---

१. बु० का० भा० भू०, पृ० २१८
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५१०-११; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १७०-७१; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० ३०३
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२, ४३
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४५४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२; डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० ४३; बु० का० भा० भू०, पृ० १३४, १४६
५. बु० का० भा० भू०, पृ० १३४
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९०; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १२
७. बु० का० भा० भू०, पृ० १६२
८. बु० का० भा० भू०, पृ० १६३
९. बु० का० भा० भू०, पृ० ३००
१०. बु० का० भा० भू०, पृ० १५२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नर्मदा नदी :

कक्कट जातक[1] और चित्तसम्भूत जातक[2] में नर्मदा नदी का उल्लेख मिलता है। पालि साहित्य की नर्मदा (नम्मदा) नदी आधुनिक नर्मदा नदी ही है, जो अमरकण्टक पर्वत से निकलकर खम्भात की खाड़ी में गिरती है।[3] कक्कट जातक से पता चलता है कि इस नदी में बड़े-बड़े केकड़े पाये जाते थे।[4]

नेरन्जरा नदी (निरंजना) :

जातकों में उल्लिखित नेरन्जरा[5] नदी को अन्य बौद्ध ग्रन्थों में निरंजना नदी भी कहते हैं। यह आधुनिक नीलांजन नदी है, जो गया में बहती है।[6] इसके पश्चिम में करीब २०० गज की दूरी पर बोध-गया (बुद्ध गया) स्थित बताया गया है।[7] आज भी यह बुद्ध-गया के समीप बहती है।[8] डे महोदय के अनुसार नीलजना या नैलजंना और मोहना दो नदियों को मिलाकर फल्गु नदी कहते हैं।[9]

वाहुका नदी :

सुधा भोजन जातक में बाहुका नदी का उल्लेख हुआ है।[10] यह नदी कोसल

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३४४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ६८; जा० अ० अ० जि० २, पृ० २३७
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९२, ३९७
३. डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० १३८; बु० का० भा० भू०, पृ० १६१
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३४४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ६८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२, ७०; जि० ४, पृ० ३९२, ३९७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७५, १४१; जि० ४, पृ० ६००, ६०५; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २४६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३०९/२३; जि० १, पृ० ६३/२, ६४/२, २२, ६५/२३, ७३/२, १००/६; जि० ७, पृ० ३०९/२६, ३६४/६-७, ३७६/२४; महावग्गपालि, पृ० ३/१, २६/२७, ३२/१०; सं० नि० पा० जि० १, पृ० १०३/१९, १०४।१२, १३७/२, १३९/१७, १२१/२३; जि० ४, पृ० १४३/११
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७५; बु० का० भा० भू०, पृ० १३५
७. बु० का० भा० भू०, पृ० १३५; डे० ज्या० हि० ऐ० मे० इ०, पृ० १३५; लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० ४०९
८. बु० का० भा० भू०, पृ० १३५
९. बु० का० भा० भू०, पृ० १३५; ला० ज्या० ऐं० भाग १, पृ० ३५; डे० ज्या० डि० ऐ० मे० इ०, पृ० १३५
१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४७२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जनपद में बहती थी। इसे आधुनिक धुमेल नदी से मिलाया गया है, जो राप्ती की एक सहायक नदी है।[1]

मिग नदी :

साम जातक में मिग नदी का उल्लेख हुआ है।[2] यह हिमालय से निकलकर गंगा में मिलती थी।[3] गिरि गह्वर से निकलने के कारण इसे गिरिगब्भरा भी कहा जाता था।[4]

यमुना नदी :

गंगेय्य जातक[5] और भूरिदत्त जातक[6] में यमुना नदी का उल्लेख मिलता है। पालि त्रिपिटक में यमुना नदी का उल्लेख गंगा के साथ-साथ हुआ है—(गंगोदकं च यमुनोदकम्)।[7] यह नदी वंस (वत्स) देश के दक्षिण में बहती थी, तथा चेदि जनपद को विभक्त करती थी।[8] यह आधुनिक यमुना नदी है।[9]

रोहिणी नदी :

रुक्खधम्म जातक[10], फन्दन जातक[11] और कुणाल जातक[12] में रोहिणी नदी

---

१. बु० का० भा० भू०, पृ० १३४
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७२, ७६, ७९, ८४, ८६-८७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ८३, ८६, ९०, ९४-९५, ९७, ९९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ४०, ४३, ४७
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ८३
४. ,, ,, ६, पृ० ८६; ,, ,, ६, पृ० ९७
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३४०; जा० अ० अ० जि० २, पृ० १०५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १५८, १६२, १६३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १९२, १९६-९७, २०२, २०५, २१३, २३३-३४, २३६; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ८०, ८३, ८५, ८७-८९, ९४
७. बु० का० भा० भू०, पृ० १३१; महावस्तु जि० ३, पृ० २०३/८, ३६३/१९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३४०
८. बु० का भा० भू०, पृ० २६५
९. डा० अँगने लाल, सं० बौ० सा० में० भा० जी०, पृ० १८
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६९; जा० अ० अ० जि० १, पृ० १८१
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २०७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४०७; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० १२९
१२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१२; जा० अ० हि० जि०५, पृ० ४९७;

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का उल्लेख मिलता है। कुणाल जातक के अनुसार शाक्य और कोलिय जनपदों की सीमा पर बहती थी।[1] यह आधुनिक रोहिणी नदी है, जो डेमिनगढ़ और गोरखपुर के बीच राप्ती नदी में मिलती है।[2]

विधवा नदी :

इन्द्रिय जातक में विधवा नदी का उल्लेख हुआ है।[3] यह नदी हिमालय से निकली थी।

वैतरणी नदी :

आदित्त जातक[4], संकिच्च जातक[5] और निमि जातक[6] में वैतरणी नदी का उल्लेख हुआ है। संयुक्त निकाय के साधु-सुत में वैतरणी नदी को यम की नदी कहा गया है।[7] उड़ीसा में आज भी इसे यम की नदी कहते हैं।[8] यह भारत की पवित्र नदियों में से एक है।[9]

वैत्रवती नदी :

मातंग जातक में वेत्रवती नदी का उल्लेख हुआ है।[10] इसके समीप ही

जा० अ० अ० जि० ५, पृ० ११९; खु० नि० पा० जि० २, पृ० ४४१/७; जि० ६, पृ० १९४/१६

१. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९७; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० २१९; डे० ज्या० डि० ऐं० मे० इ०, पृ० १७०; ला० ज्या० आ० अ० बु०, पृ० ३८
२. बु० का० भा० भू०, पृ० १३४
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२५
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३१
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३५८; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १३९
६. जा० अ० रो० जि० ६; पृ० १०५, १०६, २५०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ११७-११८, २८८-२८९; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ५७-५८; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० १७५/१८, ३५५/१९; जि० ३, ख० २, पृ० ६८/२३, ६९।२, १९६/४, २८५/८
७. बु० का० भा० भू०, पृ० १३६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३१, ४७७
८. डॉ० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १९
९. लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० ४४७
१०. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९५; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २४२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वैत्रवती नगरी बसी हुई है। यह आधुनिक बेतवा नदी है।[१] जो गंगा की सहायक नदी है।[२]

वाराणसी नदी :

मितचिन्ती जातक में वाराणसी नदी का उल्लेख हुआ है।[३] संस्कृत परम्परा के आधार पर वरण या वरुण और असी नामक नदियों के बीच में स्थित होने के कारण इसका नाम 'वाराणसी' पड़ा था।[४]

सोतुम्बर नदी (सोदुम्बर) :

महावेस्सन्तर जातक में सोतुम्बर नदी का उल्लेख मिलता है।[५] इसकी पहचान नहीं हो सकी है।

सातोदिका नदी (शीतोदका) :

इन्द्रिय जातक, सरभंग जातक और भल्लाटिय जातक में सातोदिका नदी का उल्लेख हुआ है।[६] यह सुरट्ठ (सौराष्ट्र) देश की सीमा पर बहती थी।

सललवती नदी :

सललवती नदी[७] वर्तमान सिलाई नदी है, जो हजारीबाग और मेदनीपुर जिले में होकर बहती है।

सीदा नदी :

निमि जातक में सीदा नदी का उल्लेख हुआ है।[८] यह उत्तर हिमालय में

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३८८; बु० का० भा० भू०, पृ० १३३; लाहा, प्रा० भा० का० ऐ० भू०, पृ० ५६८
२. ला० ज्या० आ० अ० बु, पृ० ३५
३. जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५२; जा० अ० अ० जि० १, २५६
४. बु० का० भा० भू०, पृ० ३७२
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५०७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५५१; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० २६३, खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० ३४१/१४
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२३; जि० ५, पृ० २६, २१५; जा० अ० अ० जि० ३, पृ० २७७; जि० ५, पृ० ७१; खु० नि० पा० जि० २, पृ० १७०/१; जि० ३, ख० १, पृ० ३२७/१४
७. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६; महावग्गपालि, पृ० २१६/१९
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १००; जा० अ० हि० जि० ६; पृ० ११३-१४; जा० अ० अ० जि० ६, पृ० ५५-५६; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २, पृ० १९४/३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थित, कांचन पर्वत में होकर बहती थी। इसे गम्भीर, दुरतिक्रम कहा गया है। "उत्तरेन नदी सीदा गम्भीरा दुरतिककमा"। दस हजार ऋषि इसके तट पर निवास करते थे। सीदा (सीता) नदी को आधुनिक यारकन्द या जरफ्शाँ नदी से मिलाया गया है।[1]

हेमवती नदी :

भल्लाटिय जातक में हेमवती नदी का उल्लेख हुआ है।[2] यह हिमवन्त प्रदेश की रमणीय नदी थी, जो गंगा में गिरती थी।[3]

क्षार नदी (खार नदी) :

संकिच्च जातक में इस नदी का उल्लेख हुआ है।[4] इसकी पहचान नहीं हो सकी है।

इस प्रकार पर्वतों और वनों की भाँति ही जातकों में नदियों पर भी प्रकाश पड़ता है।

समुद्र और सरोवर

समुद्र :

जातकों में जिन समुद्रों का उल्लेख मिलता है, वे इस प्रकार हैं—अग्नि-माल[5], खुरमाल[6], दधिमाल,[7] नलमाल[8]; नीलवर्णकुशमाल[9], बालनामक[10], बल-

---

१. बु० का० भा० भू०, पृ० १४४
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २५-२६; जा० अ० अ० जि० ४, पृ० २७२; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३२७/९
३. बु० का० भा० भू०, पृ० १४४; खु० नि० पा० जि० ३, ख० १, पृ० ३२७/९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २५
४. जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३५८; जा० अ० अ० जि० ५, पृ० १३९; खु० नि० पा० जि० ३, ख० २ पृ० ६९/२१
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४०
६. ,, ,, ४, पृ० १४०; ,, ,, ४, पृ० ३३९-३४०
७. ,, ,, ४, पृ० १४०; ,, ,, ४, पृ० ३४०-३४१
८. ,, ,, ४, पृ० १४०; ,, ,, ४, पृ० ३४२
९. ,, ,, ४, पृ० १४०; ,, ,, ४, पृ० ३४१
१०. ,, ,, ४, पृ० १४१; ,, ,, ४, पृ० ३४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मामुख या बडवामुख नामक समुद्र[१], परिण्ड सागर और महासागर (महासमुद्र)।[२]

सरोवर और झील :

जातक कथाओं में सरोवरों और झीलों का भी वर्णन मिलता है। मानस या मानसरोवर सुप्रसिद्ध ही है। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सरोवरों का भी उल्लेख मिलता है—अनोतप्त दह (झील)[३], कुणाल सरोवर[४], खेम निर्भय सरोवर[५], छद्दन्त सरोवर[६], पद्म सरोवर[७], सङ्खपाल सरोवर[८], मुचलिंद सरोवर[९], मानुसिय सद्धम[१०] एवं चक्र सरोवर।[११]

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४१
२. ,, ,, ६, पृ० ४३२; ,, ,, ६, पृ० ४७३
३. ,, ,, १, पृ० २३२; जि० ३, पृ० २५८, २६४; जि० ५, पृ० ३१४, ३२०, ३९२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४९; जि० ३, पृ० ४१४, ४१९; जि० ४, पृ० ४१३, ५८७; जि० ५, पृ० ३९६, ४०१
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५९७
५. ,, ,, ५, पृ० ३५६, ३५७; ,, ,, ५, पृ० ४३९, ४४०
६. ,, ,, ५, पृ० ३७; ,, ,, ५, पृ० १२६-१२७
७. ,, ,, ३, पृ० ३०७-३०८ ,, ,, ३, पृ० ४५७
८. ,, ,, ५, पृ० १६२ ,, ,, ५, पृ० २४२
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५६५-५६६, ५८६, ५८९, ६४२
१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३३७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४२०
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तृतीय अध्याय

ऐतिहासिक सामग्री

जातकों का ऐतिहासिक महत्व :

जातक साहित्य के अध्ययन से हमें बहुमूल्य प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। ये कथाएँ अनेक राजाओं का विवरण प्रस्तुत करती हैं। यद्यपि इनके अनेक राजाओं की ऐतिहासिकता के विषय में इतिहासवेत्ताओं को अभी सन्देह है और पुरातत्त्व वेत्ताओं के फावड़े की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। अशोक और समुद्रगुप्त जैसे शासकों के विषय में कौन जानता था परन्तु उनके अभिलेखों ने उनके कार्यों को प्रकाशमान कर दिया है। यहाँ पर जातकों में उल्लिखित राजवंशों और राजाओं का वर्णक्रम में विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है :—

राजवंश

जातक साहित्य आदि काल से अपनी विशिष्टता का दिग्दर्शन जातक की विभिन्न कथाओं द्वारा कुछ राजवंशों की वंशावली द्वारा कराता है। प्रस्तुत अध्याय में राजवंशों की तालिका का अधोलिखित सविस्तर विवेचन किया गया है।

इक्ष्वाकु वंश

यह वंश भारतीय इतिहास का प्राचीन प्रसिद्ध राजवंश था। मान्धाता जातक तथा चेतिय जातक में इस वंश के प्रसिद्ध शासक मान्धाता राजा का उल्लेख हुआ है।[1]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३११-३१२; जि० ३, पृ० ४५४;
जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८-४०; जि० ४, पृ० ११४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मान्धाता :

यह ऋद्धियों से सम्पन्न चक्रवर्ती सम्राट् थे ।[१] मान्धाता के विषय में कहा गया है—"जहाँ तक चन्द्र-सूर्य का प्रकाश होता है, वहाँ तक के सभी पृथिवी-वासी प्राणी मान्धाता के दास हैं ।[२]"

मुचलिन्द :

इसे मान्धाता का पुत्र बताया गया है ।[३] भूरिदत्त जातक के अनुसार यह महान् शासक था ।[४] पार्जिटर ने इसे मुचकुन्दा कहा है ।[५]

उपचर :

इसे चेतिय जातक में अपचर भी कहा गया है, जो चेतिय राष्ट्र का शासक था । उसकी राजधानी सोत्थिवती नगरी थी । कपिल नामक ब्राह्मण उसका पुरो-

---

संस्कृत बौद्ध साहित्य में भी इक्ष्वाकु वंश की तालिका प्राप्त होती है, जो इस प्रकार है :—

महासम्मत
|
रोज
|
वररोज
|
कल्याण
|
वरकल्याण
|
उपोसथ
|
वरउपोसथ
|
मान्धाता
|
वरमान्याता

१. पार्जिटर, ऐ० हि० ट्रे०, पृ० ६, ७३; महावस्तु जि० १।३४८।८-१०
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३१३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४०
३. पार्जिटर, ऐ० हि० ट्रे०, पृ० ४१
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३९
५. पार्जिटर, ऐ० हि० ट्रे०, पृ० ४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हित था।[1] बाद में उपचर ने कपिल के प्रव्रजित हो जाने के बाद उसके छोटे भाई कोरकलम्ब को अपना पुरोहित बनाया था।[2] संस्कृत बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि राजा उपचर, सम्राट् मान्धाता की परवर्ती चौथी पीढ़ी में शासक हुआ था।[3] पुराणों में इस राजा को चेत्य उपचर या चेतिय उपचर कहा गया है।[4]

चेतिय जातक के अनुसार राजा उपचर के पाँच पुत्रों ने अलग-अलग पाँच राजधानियाँ बनायी थीं जो इस प्रकार थीं—(१) हस्तिपुर (२) अश्वपुर (३) सिंहपुर (४) उत्तर पंचाल और (५) दद्दरपुर।[5] इस तथ्य की पुष्टि महाभारत और पुराणों में भी होती है, जिनमें इन पाँचों पुत्रों के नामों का विवरण प्राप्त होता है।[6]

दद्दर :

दद्दर जातक से ज्ञात होता है कि दद्दर के पुत्र का नाम महादद्दर और छोटे भाई का नाम चूल दद्दर था।[7]

उदेन वंश

उदेन :

जातकों में उदेन राजवंश का भी उल्लेख हुआ है। ज्ञात ही है कि उदेन वत्स राज्य का प्रसिद्ध राजा था।[8] उदयन का कुमार बोधिराज सुसुमारगिरि में रहता था।[9]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४५४-४६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ११४-१२०
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४५४-४६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ११४-१२०
३. सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ६४-६५
४. डॉ० राय चौधरी, पो० हि० आव ए० इ०, पृ० ९१-९२; मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० १७
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६०-४६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२०
६. डॉ० राय चौधरी, पो० हि० आव ए० इ०, पृ० ९१-९२
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १६-१७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १८६-१८७
८. वही, ३, पृ० १५७, ३८४-३८५; जि० ४, पृ० ३७५, जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२१; जि० ४, पृ० ४४-४६, ५८३
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२०-३२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कोरव्य वंश

धनञ्जय :

कुरु राष्ट्र की राजधानी इन्द्रप्रस्थ का राजा था।[1] धूमकारि जातक के अनुसार धनञ्जय, युधिट्ठिल (युधिष्ठिर) गोत्र का राजा था।[2] इसकी पुष्टि महासुतसोम जातक से भी होती है।[3] यह राजा दानी, पुण्यवान धार्मिक था। विधुर जातक के अनुसार, "धनञ्जय कोरव्य को जुए का बहुत शौक था।"[4] सम्भव जातक के अनुसार राजा ने धर्म से सारी पृथ्वी जीतने का निश्चय किया था। उसे अधर्म से भय लगता था।[5] धनञ्जय के दान से सारे जम्बूद्वीप में हलचल मच गयी थी।[6]

State Museum Library Lucknow 7127

पाण्डव वंश

युधिष्ठिर :

यह पाण्डु के पुत्र थे। युधिष्ठिर के अन्य चार भाईयों के नाम अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव थे, जिन्हें पाण्डुसुत्त होने के कारण पाण्डव कहा गया।[7]

बिम्बिसार वंश

यह मगध का प्रसिद्ध राजवंश था जिसे अश्वघोष ने हर्यंकवंश का बताया है। इस राजवंश में निम्नलिखित शासक हुए :—

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६६; जि० ३, पृ० ४००; जि० ४, पृ० ३६१, ४४४; जि० ५, पृ० ५७, ४५७, ४७४, ४८४; जि० ६, पृ० २५५, ३२३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६०, ५६९; जि० ५, पृ० ३२, १४५, ५३६, ५५१, ५६१; जि० ६, पृ० २९३, ३६४
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४००; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६०
३. ,, ,, ५, पृ० ४५७; ,, ,, ५ पृ० ५३६
४. ,, ,, ६, पृ० २७१; ,, ,, ६, पृ० ३०९
५. ,, ,, ५, पृ० ५७-५८; ,, ,, ५, पृ० १४५-१४६
६. ,, ,, ४, पृ० ३६१; जि० ६, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६९-५७०; जि० ६, पृ० ३००
७. ,, ,, ५, पृ० ४२४-४३०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बिम्बिसार :

हरितमात जातक[१], वड्ढकीसूकर जातक[२] तथा तच्छ सूकर जातक[३] के अनुसार प्रसेनजित के पिता महाकोशल ने बिम्बिसार के साथ अपनी लड़की कोशल देवी का विवाह कर दिया था और स्नान चूर्ण के मूल्य के रूप में (दहेज) उसे काशी ग्राम दे दिया था जिससे लाख रुपये की आय होती थी। इसे श्रेण्य[४] या श्रेणिक[५] भी कहा गया है। बिम्बिसार बुद्ध भक्त थे। वे तथागत के दर्शनार्थ राजगृह के पास स्थित लट्ठिवन गये थे[६] और दशबल धारी बुद्ध को शिव देश का बना हुआ दुशाला (दुस्सा) भी भेंट किया था।[७] दिव्यावदान में बिम्बिसार को 'धार्मिको धर्मराजा' कहा गया है।[८]

अजातशत्रु :

अजातशत्रु अपने पिता बिम्बिसार को मारकर मगध का राजा हुआ था।[९] फलस्वरूप कोशल देवी भी शीघ्र ही चल बसी थी। इससे दुःखी होकर प्रसेनजित ने अजातशत्रु से काशीग्राम वापस ले लिया जिसके कारण दोनों में परस्पर युद्ध होता रहा। अन्त में प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वजीरा का विवाह अजातशत्रु के साथ करके अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिये थे।[१०] अजातशत्रु भी बुद्ध के परम अनुयायी थे। सञ्जीव जातक के अनुसार सर्वप्रथम जीवक की

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २३७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४३
२. ,, ,, २, पृ० ४०३; ,, ,, ३, पृ० १२३
३. ,, ,, ४, पृ० ३४२-३४३; ,, ,, ४, पृ० ५४९
४. दिव्या० ९०।१६, १७, २६, ३१, ९१।४, ७, ११; महावस्तु जि० १। २६३।९, २८९।१६ (श्रेणियों); वही, जि० २।१९८।५; वही, जि० ३। ४३७।१, ३, ९, ११, १६, ४६१।७
५. महावस्तु जि० १।२५७।१५, २५८।३, २८६।१७, २८८।३; दिव्या० १६६।२२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८२-८३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६
७. ,, ,, ४, पृ० ४०१; ,, ,, ४, पृ० ६०९
८. दिव्या० १७३।२२
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २३७, ४०३; जि० ४, पृ० ३४२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४३; जि० ४, पृ० ५४९
१०. ,, ,, ४, पृ० ३४२-३४३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५४९-५५०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सहायता से अजातशत्रु ने भगवान् बुद्ध के दर्शन किये।[1] उसने गयासीस पर्वत पर एक विहार भी बनवाया था।[2]

भरहुत स्तूप में भी अजातशत्रु द्वारा भगवान् बुद्ध के दर्शन की घटना चित्रित है।[3] बुद्ध का महापरिनिर्वाण होने पर अजातशत्रु ने उनकी अस्थियों को राजगृह लाकर एक स्तूप बनवाकर उसमें प्रतिष्ठापित किया था।[4] यह स्तूप राजगृह में आज भी दृश्यमान है। अजातशत्रु को 'कलिराज' भी कहा गया है।[5]

मल्ल वंश

ओक्काक :

कुरु जातक के अनुसार मल्ल राष्ट्र की राजधानी कुसावती में यह राजा धर्मानुसार राज्य करता था। शीलवती नामक उसकी पटरानी थी जिससे कुश-तृण तथा जयम्पति पुत्र उत्पन्न हुए थे।[6] डा० राय चौधरी के अनुसार शाक्य की भाँति मल्ल वंशी राजा भी इक्ष्वाकु वंश परम्परा के थे।[7]

महाकंस वंश

घत जातक में कंस वंश का इतिहास प्राप्त होता है। उत्तरापथ में कंसभोग के असितञ्जन नगर में महाकंस नाम का राजा का राज्य था। उसके दो पुत्र कंस और उपकंस तथा देवगर्भा नाम की पुत्री थी। राजा के मरने के पश्चात् कंस राजा हुआ और उपकंस उपराजा हुआ।[8]

महासागर वंश

मथुरा का एक राजवंश था जिसके निम्नलिखित राजाओं का उल्लेख मिलता है :—

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०८-५०९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५७-१५९
२. ,, ,, १, पृ० ५०८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५७
३. एज आफ इम्पीरियल यूनिटी, पृ० २७
४. सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ७०
५. दिव्या० २४०।८-१०; बु० च० २८।१-५४
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २७८-२८३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६१-३६५
७. पो० हि० आव० ऐ० इ०, पृ० १२७
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७९-८९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८१-२९०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महासागर :

मथुरा के राजा महासागर के दो पुत्र--सागर और उपसागर थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् सागर राजा हुआ और उपसागर उपराजा हुआ।[१] उपसागर, महाकंस वंशी उपराजा उपवंश या उपकंस का मित्र था। उपकंस की बहन देवगर्भा का विवाह उपसागर के साथ हुआ था। उसके दस पुत्र हुए थे। ज्येष्ठ पुत्र का नाम वासुदेव था। इन सबकी वंश तालिका इस प्रकार प्राप्त होती है :--

महासागर
|
सागर | उपसागर (देवगर्भा पत्नी)

वासुदेव, बलदेव, चन्ददेव, सूर्यदेव, अग्निदेव, वरुणदेव, अर्जुन, प्रदयुम्न, शत-पण्डित और दसवां शङ्कर

ये सब अन्धकवेणु दास-पुत्र या दस दुष्ट भाई नाम से प्रसिद्ध हैं। जातकों के अनुसार वास्तव में वासुदेव को 'कण्डा' (कृष्ण) भी कहते थे जो कि उसके गोत्र का नाम था।[२] महाउम्मग्ग जातक में भी इसकी पुष्टि होती है जिसमें वासुदेव कृष्ण का उल्लेख हुआ है।[३]

कुम्भ जातक में अन्धक वेण्डु (अन्धक वृण्णी) पुत्रों का उल्लेख हुआ है।[४] संकिच्च जातक से ज्ञात होता है कि अन्धक वेण्हु और कृष्ण द्वीपायन एक दूसरे की मूसलों से हत्या कर यमलोक सिधारे थे—

'कण्हदीपायन आसज्ज इसिं अन्धकवेण्हुयो
अञ्ञमञ्ञं मुसले हन्तवा सम्पत्ता यमसादनं।'[५]

विदेह वंश

मिथिला के विदेह वंशी शासक अपने कार्य-कलापों और ज्ञान गरिमा के कारण भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध हैं। इस वंश के निम्नलिखित शाक्यों का उल्लेख जातक साहित्य से उपलब्ध होता है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७९-८१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८१-२८३
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८४-८६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८५-२८७
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४२१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६३
४. ,, ,, ५, पृ० १८; ,, ,, ५, पृ० १०७
५. ,, ,, ५, पृ० २६७; ,, ,, ५, पृ० ३५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अंग राजा :

महानारद कश्यप जातक में अंग को भी विदेह राष्ट्र का राजा बताया गया है। वह धर्मानुसार राज्य करता था। उसके विजय, सुनाम और अलात नाम के तीन अमात्य थे।[1]

मखादेव :

यह भी विदेह राष्ट्र का धार्मिक राजा था जिसकी राजधानी मिथिला नगरी थी।[2] इसकी पुष्टि निमि जातक से भी होती है।[3] मखादेव जातक के अनुसार राजा ने अपने सफेद बाल को देखकर ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर स्वयं गृहत्याग किया था।[4]

साधीन राजा :

यह भी मिथिला का धार्मिक और दानी राजा था,[5] जो चारों द्वारों पर छः दानशालाएँ बनवाकर प्रतिदिन छः लाख महादान बाँटता था। वह पंचशीलीव्रती उपोसथ व्रती था।

सुरुचि राजा :

इसे भी मिथिला का शासक बताया गया है। इसका पुत्र सुरुचि कुमार तक्षशिला शिल्प सीखने के लिए गया था। वाराणसी नरेश के पुत्र ब्रह्मदत्त की पुत्री सुमेधा से उसका विवाह हुआ था जिससे महापणाद राजकुमार का जन्म हुआ।[6] जिसका वर्णन महापणाद जातक में मिलता है।[7]

मिथिला के उपर्युक्त विदेश वंशी शासकों के अतिरिक्त निम्नलिखित अन्य शासकों का वर्णन प्राप्त होता है :—

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २२०-२२१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २५७-२५८; पार्जिटर, ए० हि० ट्रे०, पृ० १३२

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३७, जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२८

३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ९५, जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १०९

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३७-१३९; जि० ६, पृ० ९५-९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२६-२२८; जि० ६, पृ० १०९-११०

५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३३५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६२

६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१५-३२३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२१-५२८

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाजनक जातक[१] के द्वारा हमें विदेश वंश की तालिका इस प्रकार प्राप्त होती हैं :—

महाजनक
- अरिट्ठजनक
  - महाजनक (विवाह सीवली देवी)
    - दीर्घायुकुमार
- पोळजनक

महाजनक :

विदेह राष्ट्र के राजा थे जिनकी राजधानी मिथिला नगरी थी।[२] वह एक महान दार्शनिक राजा थे।[३] उनका राज्य धनधान्य से सम्पन्न था।[४] डा॰ राय चौधरी के अनुसार उपनिषदों और रामायण-महाभारत में भी उक्त जातकों का यह विवरण प्राप्त होता है।[५]

अरिट्ठजनक (अरिष्ठजनक) :

ये महाजनक के पुत्र थे परन्तु इनके विषय में विवरण प्राप्त नहीं होता।[६]

महाजनक द्वितीय :

अरिट्ठजनक का पुत्र था जिसने सोलह वर्ष की आयु में ही तीनों वेद और सभी शिल्प सीख लिए थे।[७] वह नगर के बीच में और चारों द्वारों पर पाँच दानशालाएँ बनवाकर महादान देता था। उसका विवाह सीवली देवी से हुआ था जो पोळजनक राजा की पुत्री थी। जिससे दीर्घायुकुमार पुत्र उत्पन्न हुआ था।[८]

---

१. जा॰ अ॰ रो॰ जि॰ ६, पृ॰ ३०-४४; जा॰ अ॰ हि॰ जि॰ ६, पृ॰ ३४-४९
२. जा॰ अ॰ रो॰ जि॰ ३, पृ॰ ३६४-३६५; जि॰ ६, पृ॰ ३०; जा॰ अ॰ हि जि॰ ४, पृ॰ २७, जि॰ ६, ३४
३. डा॰ राय चौधरी, पो॰ हि॰ आव॰ ऐ॰ इ॰ पृ॰ ५७
४. मेहता, प्री॰ बु॰ इ॰, पृ॰ ४६
५. पो॰ हि॰ आव॰ ऐ॰ इ॰, पृ॰ ५७; मेहता, प्री॰ बु॰ इ॰, पृ॰ ४८
६. जा॰ अ॰ रो॰ जि॰ ६, पृ॰ ३०-४४; जा॰अ॰ हि॰ जि॰ ६, पृ॰ ३४-४९
७. जा॰ अ॰ रो॰ जि॰ ६, पृ॰ ३३-३४; जा॰ अ॰ हि॰ जि॰ ६, पृ॰ ३८
८. जा॰ अ॰ रो॰ जि॰ ६, पृ॰ ३०-४४; जा॰ अ॰ हि॰ जि॰ ६, पृ॰ ३४-४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दीर्घायुकुमार :

महाजनक द्वितीय का पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। अपने पिता के समय से ही यह उपराजा था। पिता के बाद राजा बना।[1] इसे विदेह पुत्र राष्ट्रवर्धन दीर्घायुकुमार भी कहा गया है।[2]

विदेह वंशी शासकों में अन्य शासक निमि को कलार जनक का नाम भी उल्लेखनीय है, परन्तु इनका महाजनक वंश से क्या सम्बन्ध था इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं होता।

निमि :

मिथिला का प्रसिद्ध विदेह वंशी शासक था जिसने मिथिला नगर की स्थापना करवाई थी।[3] इसे दानी और 'शील पंथानुगामी' कहा गया है।[4] यह पंचाल के शासक दुमुख, गान्धार के शासक नग्गजित या नग्गति तथा कलिंग के शासक करण्डु का समकालीन था।[5]

कलार जनक :

यह निमि का पुत्र और उत्तराधिकारी था।[6] डा० राय चौधरी के अनुसार कलार जातक से ही मिथिला वंश समाप्त हुआ।[7]

शाक्य वंश

शाक्य वंश इतिहास प्रसिद्ध था जिसकी लम्बी वंशावली महावस्तु अवदान से प्राप्त होती है। जिससे पता चलता है कि इस वंश के संस्थापक सिंहहनु थे। सिंहहनु के चार कुमार—शुद्धोधन, धोतोदन, शुक्लोदन, अमुतोदन थे और पाँचवीं पुत्री अमिता थी।[8] परन्तु जातकों में यह वंशावली निम्न रूप से ही प्राप्त होती है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४९
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ६१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ७१
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५९
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १२९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४७
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७६-३८१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७-४२; पो० हि० आव ए० इ०, पृ० ८२, १३५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १२९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १४७
७. पो० हि० आव ऐ० इ०, पृ० ८२-८३
८. सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुद्धोदन (महामाया और प्रजापति रानियाँ)
|
सिद्धार्थ (यशोधरा)
|
राहुल कुमार (पुत्र)

शुद्धोदन :

कपिलवस्तु के राजा थे जिन्होंने देवदह के शाक्य महत्तर संभूति की कन्या माया देवी और प्रजापति से विवाह किया था।[1]

सिद्धार्थ गौतम—बुद्ध माया देवी से उत्पन्न शुद्धोदन के ही पुत्र थे जिसकी कहानी जातकों में बड़े सुन्दर ढंग से वर्णित है। कुमार सिद्धार्थ का विवाह यशोधरा के साथ हुआ था जिसे राहुल माता भी कहा गया है जिससे पुत्र राहुल उत्पन्न हुआ था।[2]

शिवि वंश

शिवि देश का प्रसिद्ध राजवंश था जिसकी निम्नलिखित वंशावली प्राप्त होती है—

शिवि :

राजा शिवि का वर्णन शिवि जातक में हुआ है जिससे पता चलता है कि शिवि राष्ट्र के अरिट्ठपुर नगर में शिवि महाराजा राज्य करते थे।[3] शिवि की माता का नाम जम्बावती था।[4] शिवि राष्ट्र की दूसरी राजधानी जेतुत्तर नगर थी।[5] महावेस्सन्तर जातक के अनुसार शिवि वंश तालिका इस प्रकार प्राप्त होती है—

शिवि
|
सञ्जय (रानी फुसती)
|
वेस्सन्तर-विवाह मद्दी (माद्री)
|
जालीय कुमार (पुत्र) — कृष्णाजिन (कण्हाजीवा) (पुत्री)

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०-५२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७-११९; बु० च० १/१-२, सौ० २/४९; महावस्तु जि० १/३५५-३५९

२. जा० अ०रो०जि० १, पृ० ५८-६०; जा०अ०हि०जि० १, पृ० १२७-१३०

३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६१०

४. ,, ,, ६, पृ० ४२१; ,, ,, ६, पृ० ४६३

५. ,, ,, ६, पृ० ४८०-४८४; जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५१८-५२५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सञ्जय :

यह शिवि राज का पुत्र था जिसका विवाह मद्र राज्य की राजकुमारी फुसति के साथ हुआ था जिससे उत्पन्न पुत्र वेस्सन्तर था।[१]

वेस्सन्तर :

शिवि के शासक सञ्जय का पुत्र था, जिसने मढ़ देश के राजकुल से अपने मामा की माद्री नामक पुत्री के साथ विवाह करके उसे पटरानी बनाया था।[२] अभिषिक्त होने के बाद राजा वेस्सन्तर ने प्रतिदिन छः लाख का दान बाँटना प्रारम्भ कर दिया था।[३]

जाली कुमार (जालीय) :

यह वेस्सन्तर का माद्री से उत्पन्न राजकुमार था जिसकी बहन का नाम कृष्णार्जिवा था।[४]

हर्यश्व वंश

यह कौशल का राजवंश था, जिसमें निम्नलिखित शासक हुए थे—

महाकौशल :

यह इस वंश का प्रथम ज्ञात शासक था, जिसने अपनी पुत्री कौशल देवी का विवाह मगधाधिप बिम्बिसार से किया था।[५]

प्रसेनजित :

प्रसेनजित को सिद्धार्थ तथा राहुल का उत्तराधिकारी कहा गया है।[६] जबकि प्रसेनजित कौशल के राजा थे जिनकी समृद्धि बुद्ध युग में अपने शिखर पर पहुँच चुकी थी।[७] यह सम्भवतः उनका भगवान् बुद्ध से घनिष्ट धार्मिक सम्बन्ध के

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८०-४८४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५१८-५२२
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८०-४८७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५१८-५२५
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५२५
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८६-४८७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५२५
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २३७, ४०३; जि० ४, पृ० ३४२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४३; जि० ३, पृ० १२३; जि० ४, पृ० ५४९
६. डॉ० राय चौधरी, पो० हि० आव ऐ० इ०, पृ० १०२-१०३
७. सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ६७; वैद्य, ललित० १५/७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ही कारण कहा गया। दिव्यावदान के अनुसार प्रसेनजित महामण्डल के उत्तराधिकारी पुत्र थे। जातकों के अनुसार कोशल नरेश की पटरानी वासवखत्तिया थी जो कपिलवस्तु के महानाग शाक्य कुल की नागमुण्डा नामक दासी की कोख से उत्पन्न हुई थी। इसी से विड्डूम उत्पन्न हुआ था।[1]

विड्डूम :

प्रसेनजित के पश्चात् विड्डूम इस वंश का शासक हुआ। जब उसे इस सत्य का ज्ञान हुआ कि उसकी माँ शाक्य कुल की नहीं बल्कि दासी पुत्री है तो उसने सभी शाक्यों को नष्ट करने के लिए उन पर आक्रमण किया और शाक्य संहार किया।[2]

पंचाल के शासक

चूलनी ब्रह्मदत्त :

महाउम्मग्ग जातक में उत्तर पांचाल राष्ट्र के काम्पिल्य नगर के शासक चूलनी ब्रह्मदत्त को बतलाया गया है।[3]

दुर्मुख राजा :

यह उत्तर पांचाल राष्ट्र के काम्पिल्य नगर में राज्य करता था।[4] दुर्मुख (दुर्म्मुख) को मिथिला के अन्तिम राजा निमि तथा कलिंग राष्ट्र के शासक करण्डु, गान्धार राष्ट्र के शासक नग्गजी का समकालीन था।[5]

पांचाल राजा :

इसे भी उत्तर पांचाल का शासक बताया गया है।[6]

रेणु राजा :

इसे उत्तर पांचाल का शासक बताया गया है।[7]

---

१. जा० रो० जि० १, पृ० १३३-१३४; जि० ४, पृ० १४४-१४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२०; जि० ४, पृ० ३४५-३४८
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५३
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३७
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७९-३८१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९-४२
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३७६-३८१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७-४२
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७-४२
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४४४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वाराणसी के शासक

आदासमुख :

वाराणसी का राजा जनसन्ध राजा का कुमार था, जिसका मुख काँच के समान ओजपूर्ण होने के कारण यह नाम पड़ा था।[१] राजा के मरने के पश्चात् आदासमुख ही राजा बना था।[२]

उग्रसेन :

यह वाराणसी का राजा था।[३]

एकराजा :

यह भी वाराणसी का राजा था जिसके पिता का नाम वंशवर्ती था। एक-राजा के राजकुमार का नाम चन्द्रकुमार तथा पुरोहित का नाम खण्डहाल था।[४]

कंस राजा :

वाराणसी के राजा कंस ने धनुष और तूणीर को त्याग कर शील समाचरण का मार्ग अपनाया था।[५] भूरिदत्त जातक में कंसराजा को अमर-पति कहा गया है।[६]

कण्डरी :

यह भी वाराणसी का राजा था जिसकी भार्या का नाम किन्नरा बताया गया है।[७]

कलाबु :

इसे भी वाराणसी का राजा बताया गया है।[८] निरपराध एक बौद्ध भिक्षु को दण्ड देने के कारण वह महावीचिनरक को प्राप्त हुआ था।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २९७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २९९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २८
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४५८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४६
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १५०
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४०३; जि० ५, पृ० ११२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १२३; जि० ५, पृ० १९८
६. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १९८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३५
७. ,, ,, ५, पृ० ४३७; ,, ,, ५, पृ० ५१३
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३५-१४५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१६-२२५
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३५-१४५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१६-२२५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

काशीराजा :

मूगपक्ख जातक में काशी राजा का उल्लेख हुआ है जिसकी सोलह हजार रानियों में चन्द्रादेवी प्रमुख थी। इससे उत्पन्न पुत्र का नाम तेमिय कुमार था।[1]

कितवास :

यह वाराणसी का राजा था, जिसके पुत्र का नाम दुष्टकुमार था।[2]

धृत कुमार :

धत जातक के अनुसार यह भी वाराणसी का राजा था। यह ज्ञात होता है कि काशीराज और श्रावस्ती के शासक धंकराज में युद्ध हुआ था जिसमें काशीराज की पराजय उसके ही एक दुष्ट अमात्य के कारण हुई थी।[3]

जनक राजा :

इसे वाराणसी का राजा बताया गया है।[4]

जनसन्ध :

जनसन्ध[5] जातक में इसे वाराणसी के राजा का पुत्र बताया गया है।[6] परन्तु राजा का नामोल्लेख नहीं हुआ है। विधुर जातक में कुरुक्षेत्रवासी जनसन्ध को ऐश्वर्यवान राजा कहा गया है।[7] ये दोनों अलग-अलग राजा प्रतीत होते हैं क्योंकि एक वाराणसी का और दूसरा कुरुक्षेत्र का राजा बताया गया है।

तम्बराजा :

वाराणसी का शासक था जिसकी भार्या का नाम सुसन्धि था।[8]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १-३; जा० अ० हि० जि० ६, १-३
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९४-१९५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९२
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १६८-१६९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३३०-३३१
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३४१-३४२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २९७; जि० ४, पृ० १७६; जि० ६, पृ० २९१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६; जि० ४, पृ० ३७५-३७६; जि० ६, पृ० ३३०
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७६
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २९१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३३०
८. ,, ,, ३, पृ० ३८५; ,, ,, ४, पृ० ४५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दळ्हधम्म :

यह भी वाराणसी का राजा था इसके पास एक औट्ठिव्याधि नामक शक्तिशालिनी हस्तिनी थी जो संदेशवाहक का कार्य करती थी ।[१]

दशरथ राजा :

दशरथ को वाराणसी का धार्मिक राजा बताया गया है । उनकी ज्येष्ठ पटरानी के दो पुत्र राम और लक्ष्मण तथा एक पुत्री सीता देवी थी ।[२] राम का वर्णन सर्वप्रथम दशरथ जातक में मिलता है ।[३] इसके अतिरिक्त जयद्दिस जातक[४] और महावेस्सन्तर जातक[५] में भी सीता और राम का उल्लेख हुआ है ।

धनञ्जय :

यह भी वाराणसी का राजा था ।[६]

पादञ्जली :

पादञ्जली जातक के अनुसार वाराणसी के राजा ब्रह्मदत्त का पुत्र था जो बहुत ही आलसी था ।[७]

पायासपाणी राजा :

यह वाराणसी का राजा था, उसके सेनापति का नाम कालक था ।[८]

पिलीयक्ख :

यह भी वाराणसी का शासक था, जिसे मृगया का बड़ा चाव था ।[९]

पदुम राजा :

यह भी वाराणसी का राजा था, जो दस राजधर्मों के अनुसार राज्य करता था । यह दानी राजा था ।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३८५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५
२. ,, ,, ४, पृ० १२४; ,, ,, ४, पृ० ३२५
३. ,, ,, ४, पृ० १२४-१३०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४, पृ० ३२५-३३०
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ११८
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५५७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६१४
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६३
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २६४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४७२
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३८३
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ८६
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ११८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३०२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वक राजा :

वाराणसी का राजा था, जिसकी पटरानी का नाम पञ्चपापा था।[१]

बहुपुत्तक :

वाराणसी का राजा था, जिसकी भार्या का नाम खेमा था।[२]

मद्दव राजा :

इसे वाराणसी का राजा बताया गया है।[३]

महाप्रताप राजा :

यह वाराणसी का राजा था जिसकी पटरानी का नाम चन्द्रादेवी था और पुत्र का नाम धर्मपाल था।[४]

महापिंगल राजा :

इसे महापिंगल जातक में वाराणसी का राजा बताया गया है। वह अधार्मिक राजा था जो रौद्र स्वभाव वाला, कठोर और दुस्साहसी था।[५]

महाश्वारोह :

यह वाराणसी का राजा था। यह ज्ञात होता है कि एक बार यह प्रत्यन्त देश में विद्रोह शान्त करने के लिये सेना सहित गया था परन्तु उसे पराजित होना पड़ा था।[६]

विस्सेन राजा :

यह वाराणसी के एक शासक थे।[७]

सामराजा :

वाराणसी का राजा था। उसके घोड़े का नाम पण्डव मंगल था तथा उसके शिक्षक का नाम गिरिदत्त था।[८]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४४०-४४२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५१७-५२०

२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४२३-४२४; जा० आ० हि० जि० ५, पृ० ११

३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३३७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १

४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १७८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४०

५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४६-४४७

६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८-१०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७८-१७९

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३४५-३४६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ७०-७१

८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सीलव महाराजा :

यह वाराणसी का धार्मिक राजा था।[१] महासीलव को भी कोशल राज से युद्ध करना पड़ा था और अपने ही दुष्ट अमात्य के कारण काशीराज की पराजय हुई थी।[२]

सुसीम राजा :

यह भी वाराणसी का राजा था।[३]

सेव्य राजा :

यह वाराणसी का राजा था जिसकी पटरानी का नाम खेमा था।[४]

सेनक राजा :

यह भी वाराणसी का राजा था।[५]

सोमकुमार (सुतसोम) :

यह वाराणसी के शासक ब्रह्मदत्त का राजकुमार था, जिसका मुखपूर्णचन्द्र की भाँति सुशोभित था, जिसके कारण ही इसे सोमकुमार कहा गया था। राजा सोमकुमार के सोलह हजार रानियाँ बताई गयी हैं जिनमें चन्द्रादेवी प्रमुख थीं, जो कुछ समय बाद भिक्षुणी बन गयी थी। ऊपर वर्णित वाराणसी शासक महाप्रताप की पटरानी का नाम भी चन्द्रादेवी था।[६] ऐसा प्रतीत होता है कि महाप्रताप और सोमकुमार एक ही शासक के दो नाम थे।

अन्य शासक

जातक साहित्य के अध्ययन से उपर्युक्त वंशों के अतिरिक्त कुछ अन्य राजाओं का भी उल्लेख मिलता है जिसके सम्बन्ध में न तो विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है और न उनकी पहचान करना ही सम्भव हो सका है, ऐसे राजाओं का वर्णक्रम से यहाँ उल्लेख किया जा रहा है :—

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८७
२. ,, ,, १, पृ० २६२-२६४; ,, ,, १, पृ० ३८८-३८९
३. ,, ,, २, पृ० ४६; ,, ,, २, पृ० २१५
४. ,, ,, ५, पृ० ३५४; ,, ,, ५, पृ० ४३७
५. ,, ,, ३, पृ० २७५; ,, ,, ३, पृ० ४२९
६. ,, ,, ५, पृ० १७७-१७८; ,, ,, ५, पृ० २६०-२६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अज्जुन :

गौतम ऋषि के अभिशाप से विशालकाय, धनुर्धारी, सहस्त्रबाहु अज्जुन (अर्जुन) अधोगति को प्राप्त हुआ।[१]

अट्ठक :

अट्ठक राजा किसवच्छ के प्रति अपराधी होकर सराष्ट्र विनाश को प्राप्त हुआ।[२]

अरिन्द :

इसे मगध का शासक बताया गया है, जिसकी राजधानी राजगृह थी। अरिन्द ज्येष्ठ पुत्र का नाम दीर्घायु कुमार था।[३] अरिन्द के बाद दीर्घायु कुमार का राज्याभिषेक हुआ, वह साठ हजार ग्रामों का राजा था।[४] अन्य जातकों में भी दीर्घायुकुमार का उल्लेख हुआ है।[५]

अलीनचित :

अलीनचित राजा और कोशल नरेश के मध्य युद्ध का भी उल्लेख मिलता है, परन्तु इसकी पहचान नहीं हो सकी है।[६]

अश्मक :

अश्मक देश का शासक था, जिसकी राजधानी पोतली थी।[७] यह कलिंग

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३५, १४३, १४५, २६७, ४२४, जि० ६, पृ० २०१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१६-२१७, २२५, ३५६, ५०८; जि० ६, पृ० २३८

२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३५-१३७, जि० ६, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१६-२१८, जि० ६, पृ० ११३

३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४७-२४९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३३१-३३३

४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २५८-२५९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४१-३४२

५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २११, ४८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३७२; जि० ४, पृ० १४६

६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२-२३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८७-१८८

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५५-१५८; जि० ३, पृ० ८; जि० ५, पृ० २१०; जि० ६, पृ० ४८०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३४५-३४८; जि० ३, पृ० १७४-१७९; जि० ५, पृ० २९३; जि० ६, पृ० ५१८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राज नन्दिसेन का समकालीन शासक था। अस्सक राजा को अरुणराज भी कहा गया है।[१] जातकों से यह भी पता चलता है कि अस्सक राजा ने कलिंग राज नन्दिसेन पर आक्रमण कर उसे पराजित कर दिया था और उसका सारा कोश अपनी राजधानी उठवा लाया था, परन्तु बाद में दोनों राजाओं के मध्य मैत्री हो गई थी।[२]

उसीनर :

उसीनर राजा का वर्णन महाकण्ह जातक में विस्तार पूर्वक हुआ है।[३] उसने बहुत से यज्ञ करके देवगति प्राप्त की थी।[४]

कालसेन :

यह अयोध्या का राजा था।[५]

किकी राजा :

महावेस्सन्तर जातक में किकी राजा तथा उसके सात पुत्रियाँ—समणी, समणगुप्ता, भिक्खुणी, भिक्खदायिका, धम्मा, सुधम्मा तथा सङ्घदासी का उल्लेख मिलता है।[६]

कुश राजा :

मल्ल राष्ट्र का राजा था जिसका विवाह मद्रदेश की राजकुमारी प्रभावती के साथ हुआ था।[७]

कैकय :

संकिच्च जातक में कैकय राजा को सहस्त्रबाहु केकक-नरेश कहा गया है।[८] राजा केकय को केकक भी कहा गया है। पार्जिटर ने भी अपनी सूची में इसे

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७५
२. ,, ,, ३, पृ० ४-८; ,, ,, ३, पृ० १७५-१७८
३. ,, ,, ४, पृ० १८१; जि० ६, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३८०; जि० ६, पृ० ११३
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ११३
५. ,, ,, ४, पृ० ८२; ,, ,, ४, पृ० २८४
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २८४
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २८३-२८५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६५-३६६
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २३६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

केकय और केकय लिखा है।[1] पालि साहित्य में इसे "केककाधिप" कहा गया है जिससे यह सिद्ध होता है कि वह केकक देश का राजा था।[2] विधुर जातक में पंचाल, शूरसेन, मत्स्य, मद्र तथा केकक के राजागण एक साथ वर्णित हैं।[3]

चम्पेय्य नागराज :

जातक निदान कथा में शील-पारमिता के अन्तर्गत शीलव नाग-राज, चम्पेय्य नागराज, भूरिदत्त नागराज, छद्दंत नागराज आदि राजाओं का उल्लेख हुआ है।[4]

दण्डकी :

राजा दण्डकी का उल्लेख नालिकीर, अर्जुन तथा कलाबू के साथ हुआ है।[5]

दुदीप राजा :

निमि जातक में दुदीप राजा का उल्लेख हुआ है जिसने बहुत से यज्ञ करके देवगति प्राप्त की थी।[6] भूरिदत्त जातक से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।[7]

नग्गजी :

यह गान्धार का राजा था, जिसकी राजधानी तक्षशिला थी।[8] यह कलिंग के राजा करण्डु[9] के समकालीन था।

नन्दिसेन :

यह कलिंग का राजा अस्सक राज का समकालीन था। दोनों राजाओं के मध्य युद्ध और मैत्री का उल्लेख मिलता है।[10]

---

१. पार्जिटर, ए० हि० ट्रे०, पृ० १०९
२. मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० ११
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ०, ३१९
४. वही १, पृ० ४५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १११
५. वही ५, पृ० १३४-१४३; ,, ,, ५, पृ० २१५-२२५
६. वही ६, पृ० ९९; ,, ,, ६, पृ० ११३
७. वही ६, पृ० २०३; ,, ,, ६, पृ० २३९
८. वही ३, पृ० ३७७; ,, ,, ४, पृ० ३८
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९; डॉ० राय चौधरी, पो० हि० आव ए० इ०, पृ० १३५
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४-८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७५-१७८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नालिकीर :

कलिंग राष्ट्र के दन्तपुर नगर का राजा था।[१] इसे नामिकीट, नालिकेरा, नालिकेला और नारिकेला भी कहा गया है।[२]

पण्डर नागराज :

पण्डर जातक में पण्डर नागराज का उल्लेख हुआ है।[3]

पावारिय राजा :

पावारिय राजा और बक राजा के मध्य युद्ध हुआ था।[४]

भगीरथ :

प्रसिद्ध प्राचीन राजा थे।[५]

भद्र राजा :

भद्र राष्ट्र के सागल नगर का शासक था जिसकी कन्याओं में ज्येष्ठ प्रभावती कलिंग के राजकुमार की व्याही थी।[६]

मग (मध) राजा :

संकिच्च जातक में मग राजा को अधार्मिक बताया गया है।[७]

मेद (मेज्झ) राजा :

मातंग जातक के अनुसार यह भेद राष्ट्र का शासक था।[८]

लोमपद :

इसे अंग जनपद का राजा बताया गया है।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३५-१४३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१७-२२४

२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३५-१४३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१७-२२५

३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६३

४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४४३-४४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५२०-५२१

५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ११३

६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २७८-२७९, २८३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६१, ३६५

७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २६७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३५७

८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९५

९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३९; पार्जिटर, ए० हि० ट्रे०, पृ० २३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सब्बदत्त :

युवञ्जय जातक में इसे रम्भनगर का राजा बताया गया है, जिसके हजार पुत्र थे। राजा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र युवञ्जय को उपराजा बनाया था।[1]

संखपाल नागराज :

संखपाल जातक के अनुसार संखपाल नागराज की स्थिति कृषापेण (कृष्णा) नदी के समीप प्रतीत होती है।[2]

सागर :

प्राचीन भारत का प्रसिद्ध राजा था, जिसने सागर पर्यन्त पृथिवी जीती थी। उसने विश्वानर अग्नि की पूजा करके देवगति प्राप्त की थी, पुराणों में भी इसका उल्लेख मिलता है।[3]

सेल :

निमि जातक में सेल राजा का उल्लेख हुआ है।[4]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ११९-१२०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३२०-३२१

२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १६२-१६३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २४२-२४३

३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३९ पार्जिटर, ए० हि० ट्रे० पृ० ४०; मेहता, प्री० बु० इ० पृ० ५

४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ११२-११३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्थ अध्याय

राजतन्त्र और शासन व्यवस्था

राज्य के प्रकार-गणतन्त्रात्मक और राजतन्त्रात्मक :

पालि जातक राजतन्त्र और शासन संचालन व्यवस्था के अक्षय कोष हैं। बारीक से बारीक राजतन्त्र की गुत्थी को कथाओं के माध्यम से स्पष्ट रूप से हल कर दिया गया है। राजत्व के प्रत्येक पहलू का सूक्ष्माति सूक्ष्म विवरण इन जातक कथाओं में प्राप्त होता है। इन कथाओं से यह स्पष्टतः ज्ञात होता है कि उस समय दो प्रकार का शासन तंत्र राजतन्त्र और गणतन्त्र प्रचलित था। दोनों तन्त्रों की विशिष्टताओं का भी वर्णन इन्हीं कथाओं में प्राप्त होता है। यहाँ पर जातकों से प्राप्त सामग्री के आधार पर तत्कालीन राजनैतिक जीवन का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

गणतन्त्र :

अल्टेकर महोदय के अनुसार गण का एक निश्चित वैधानिक अर्थ है और इससे ऐसे राज्य का बोध होता है जहाँ अधिकार एक व्यक्ति के हाथ में न होकर गण अथवा अनेक व्यक्तियों के हाथ में होता है।[१] इन राज्यों में शासनाधिकार एक ही व्यक्ति अथवा मुट्ठी भर व्यक्तियों के हाथ में नहीं वरन् विशाल जन-समूह के हाथ में होता है।[२] वैशाली के लिच्छवियों के गण संचालकों (राजाओं) की संख्या सात हजार सात सौ सात थी। उतने ही उपराजा, सेनापति और भाण्डागारिक थे।[३] वे शास्त्रार्थ कुशल होते थे।[४] गणतन्त्र के लोग स्वाभिमानी होते थे। वे बड़ों का मान और दूसरों का सम्मान भी करने वाले होते थे।[५]

बहुसंख्यक गणतन्त्र क्षत्रिय प्रधान होते थे जिनके शासक क्षत्रिय ही होते

---

१. प्रा० भा० शा० प०, पृ० ७९
२. वही, पृ० ८२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५२
४. ,, ,, ३, पृ० १; ,, ३, पृ० १७२
५. ,, ,, १, पृ० ८८; जि० ६, पृ० ४७९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६३; जि० ६, पृ० ५१७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

थे। अल्टेकर का मत है कि वे गण वर्तमान लोकतन्त्रात्मक राज्यों की भाँति न थे जिनमें अधिक संख्या में वोट दिया जा सके।[1]

जातकों के अध्ययन से पता चलता है, ये गणराज्य सम्पूर्ण उत्तरी भारत में विद्यमान थे।[2]

बुद्ध युग में दस गणराज्यों का ऐतिहासिक महत्व सर्वविदित ही है।[3] इन दस गणराज्यों में वैशाली का लिच्छवि गणराज्य तथा शाक्यों का कपिलवस्तु का गणराज्य एवं कुसीनारा और पावा का मल्ल गणराज्य प्रसिद्ध थे। बौद्ध साहित्य से इनकी कार्य-प्रणाली पर प्रकाश पड़ता है। स्वयं भगवान् बुद्ध ने लिच्छवि राज्य के निम्नलिखित सप्त अपरिहार्य गुणों का वर्णन किया है :—

१. सम्मति के लिए बार-बार एक साथ बैठते हैं और एकमत होकर निर्णय लेते हैं।

२. एक साथ सब मिलकर करणीय कार्यों को करते हैं।

३. वैधानिक (प्रज्ञात) का उच्छेद नहीं करते और अवैधानिक (अप्रज्ञात) को नहीं मानते हैं।

४. वे बुद्धों का सत्कार करते हैं, गौरव करते हैं, पूजा करते हैं उनकी सुनने योग्य बात मानते हैं।

५. वे स्त्रियों का सम्मान करते हैं।

६. वे चैत्यों (देव स्थानों) का सत्कार करते हैं, पूजते हैं।

७. अर्हतों की रक्षा, सम्मान करते हैं ताकि वे राज्य में सुख से विचरण कर सकें और उपदेश कर सकें।[4]

इन गुणों या लक्षणों से गणराज्य के संवैधानिक स्वरूप तथा उनकी राजनैतिक महिमा का भी परिचय मिलता है। महापरिनिब्बानसुत्त से गणों के इन

---

१. अल्टेकर, प्रा० भा० शा० प०, पृ० ८३

२. जा० अ० रो०. जि० १, पृ० ४९, ५६, ६४; जा० हि० जि० १, पृ० ११६ १२५, १३५

३. त्रिपिटक साहित्य के अनुसार बुद्धयुगीन १० गणराज्य इस प्रकार थे—(१) कपिलवस्तु के शाक्य (२) सुसुमारगिरि के भग्ग (३) अल्लकप्प के बुलि (४) केसपुत्त के कलाम (५) रामग्राम के कौलिय (६) कुसीनारा के मल्ल (७) पावा के मल्ल (८) पिप्लीवन के मोरिय (९) मिथिला के विदेह (१०) वैशाली के लिच्छवि (वज्जि)।

४. महापरिनिब्वान सुत्त, पृ० ५-९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपर्युक्त लक्षणों के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में भी गणों के संविधान तथा शासन-पद्धति और परिषद् के कार्य प्रणाली पर प्रकाश पड़ता है जिसमें एक साथ मिलकर काम करने और बहुमत की एकता को विशेष मान्यता दी गयी थी।

गण स्वरूप :

भद्दसाल जातक के अनुसार शाक्य अपने सन्थागार में एकत्र होकर सन्धि-विग्रह आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार किया करते थे।[1] युद्ध आदि के समय महत्त्वपूर्ण विषयों पर सर्वोपरि निर्णय परिषद् का ही होता था और सदस्य उसे कार्यान्वित करते थे।

परिषद् के सदस्य :

भद्दसाल जातक के अनुसार छोटे-छोटे गणतन्त्रों की केन्द्रीय समिति के सदस्य अधिकतर राजधानी में ही रहते थे और वहीं सन्थागार (सभा-भवन) में एकत्रित होकर गणकार्य के विषय में निश्चय करते थे। राजा के पुत्र को उप-राजा की पदवी दी जाती थी।[2] प्रायः इन सन्थागारों में ग्राम-पंचायतों की भाँति सभी वर्गों के लोगों को प्रवेश और शासनाधिकार मिलता था।[3]

कार्य प्रणाली :

सन्थागारों में मुकदमों का निर्णय भी होता था। गणाध्यक्ष ही मन्त्रिमंडल का प्रधान और परिषद् का अध्यक्ष होता था।[4] गणराज्य की शासनसत्ता की नीति और कार्य परिषद् तथा कर्मचारियों के माध्यम से होती थी। गणाध्यक्ष की अधीनता में सम्पूर्ण कार्य का संचालन होता था। आपस में प्रस्ताव रखे जाते थे, उन पर वाद-विवाद होता था और मतभेद होने पर मत (छन्द) लिया जाता था।[5] गणतन्त्रों का शासन प्रायः संस्थापिका सभा द्वारा होता था जिसकी बैठकें प्रायः सन्थागारों में होती थीं।[6] सन्थागार सभी लोगों के लिए खुले हुए थे।

सभाएँ नित्य समय पर ही होती थीं। सदस्यों की संख्या की पूर्ति गणना-धिकारी करते थे।[7] लोसक जातक के अनुसार मत शलाका (मत पत्र या बैलट

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४७
२. ज० अ० रो० जि० ४, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४७; अल्टेकर, प्रा० भा० शा० प०; पृ० ८९
३. अल्टेकर, प्रा० भा० शा० प०, पृ० ९०
४. वही, पृ० ९७
५. डा० रामजी उपाध्याय, प्र० भा० की० स० सं०, ५२८
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४७
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पेपर) द्वारा लिये जाते थे। शलाकायें उतनी ही कार्य में लायी जाती थीं जितने सदस्य होते थे।[१] तण्डुनालि जातक के अनुसार शलाकाएँ भोजन के समय बाँटी जाती थीं।[२] इसीलिए उसे 'छन्द' (स्वच्छन्दता पूर्वक) कहा गया है। मतदान सदा स्वतन्त्र रूप से होता था। कोई भी विषय एक बार समाप्त हो जाने पर दोबारा दोहराया नहीं जाता था।

कार्य शक्ति :

गणतन्त्रों में सर्वशासनाधिकार केन्द्रीय समिति में निहित थे। उसे अपने अधिकारों और अपनी शक्ति का बड़ा ध्यान रहता था।[3] भद्दसाल जातक के अनुसार गणतन्त्रों की केन्द्रीय समितियाँ दूसरे राष्ट्रों पर पूरी निगाह रखती थीं। विदेशी राज्यों से आने वाले राजदूतों से मिलकर उनके संदेशों पर परामर्श करती थीं और सन्धि-विग्रह के प्रश्न का समाधान भी करती थीं।[४] आपत्ति काल में यह अधिकार समिति के प्रमुखों को ही दे दिया जाता था। गणतन्त्र-राज्यों की सरकार पर केन्द्रीय समिति का पूरा नियन्त्रण रहता था।

सन्थागारों (सभा गृह) में गोष्ठी भी होती थी जिसमें सामाजिक और धार्मिक विषयों पर भी वार्तालाप होती थी।[५] कुशीनारा के मल्लों ने अपने सन्थागारों में ही एकत्र होकर भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के विषय पर विचार किया था।[६]

राष्ट्र के महत्वपूर्ण प्रश्नों या विषयों पर विचार परिषद् में ही किया जाता था और यहाँ ही निर्णय किये जाते थे जो सभी को मान्य होते थे।

इस प्रकार जातक कथाओं में तत्कालीन गणराज्यों उसके लिए आवश्यक गुणों, कार्य संचालन अन्य गणराज्यों या राज्यों से सम्बन्ध आदि विषयों पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३९-२४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५८
२. जा० अ० रो० जि० १; पृ० १२३-१२४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०६-२०७
३. अल्टेकर, प्रा० भा० शा० प०, पृ० ९१
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४५-१४६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४५-३४६
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४७
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५३-५५४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राजतन्त्र

राजतन्त्रात्मक राज्यों का भी जातक साहित्य में उल्लेख मिलता है। कौशाम्बी, अवन्ति, कोशल और मगध सुप्रसिद्ध साम्राज्यवादी राज्य थे। इस साहित्य में राज्यांग, राजत्व, राजा की आवश्यकता एवं उत्पत्ति, अभिषेक, गुण-दोष, राजधर्म, अमात्यगण, सैन्यव्यवस्था आदि का महत्त्वपूर्ण वर्णन मिलता है।

राज्यांग

प्रायः सभी राजनीति शास्त्रों ने राज्य के सात अंग बतलाये हैं।[१] जातक साहित्य के अध्ययन से हमें राज्य के सप्तांगों का ज्ञान प्राप्त होता है। ये सप्तांग स्वामी (राजा)[२], अमात्य[३], दुर्ग[४], राष्ट्र[५], कोश[६], दण्ड[७] और मित्र[८] बतलाये गये हैं।[९] बुद्धचरित में भी इन सात राज्यावयवों का उल्लेख प्राप्त होता है।[१०] यहाँ पर इन सप्तांगों में से प्रत्येक का संक्षिप्त वर्णन जातकों के आधार पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

राजत्व

राजा की संज्ञा की उत्पत्ति पर जातक साहित्य से प्रकाश पड़ता है। यहाँ कहा गया है कि प्रजा का रंजन करने के कारण ही राजा कहलाया। बिना राजा के राज्य शोभाहीन है।[११] इसीलिए राजा के सात अंगों में राजा का स्थान प्रथम

१. धर्मशास्त्र का इतिहास, जि० २, पृ० ५८५
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५६; जि० ६, पृ० १५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६४; जि० ६, पृ० १८३
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १५२, २९३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १८३, ३३२
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३७३; जि० ६, पृ० ५१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४५५; जि० ६, पृ० ६२
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२३; जि० ६, पृ० १३८, २९४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२८; जि० ६, पृ० १५९
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९-२००; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०८
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८८-२८९; जि० ६, पृ० १५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८८; जि० ६, पृ० १८३
९. मनु० ९/२९४
१०. बु० च० २/४१
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है। जातक साहित्य से राजा की आवश्यकता राजोत्पत्ति, राजा का दैवी स्वरूप, राजगुण, राजशिक्षा, राजधर्म, राजकार्य, राज्य परित्याग, उत्तराधिकार, युवराज, अभिषेक, राजमहिषी, राजविरुद, राजदोष आदि अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त होता है। यहाँ पर राजत्व का पूर्ण विवरण किया गया है।

राजा की आवश्यकता और उत्पत्ति :

प्रायः सभी साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि मात्स्य न्याय के दोषों अर्थात् अराजक राज्य की विपत्तियों से बचने के लिए राजा की आवश्यकता होती है। जातकों के अध्ययन से भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जातकों से राजा के वरण-सिद्धान्त की भी पुष्टि होती है। राजा की आवश्यकता मानव समाज के लिए ही नहीं अपितु पशु-पक्षी समाज के लिए भी थी। इसीलिए राज्यांगों में राजा ही राज्य का महत्वपूर्ण और प्रभावशाली अंग माना गया था। राजा विहीन राज्य की रक्षा नहीं की जा सकती थी। इसीलिए सप्तांगों में राजा सर्वश्रेष्ठ माना गया है।[1] उलूक जातक के अनुसार चतुष्पदों ने एकत्रित होकर राजा की आवश्यकता का अनुभव किया था और एक सिंह को राजा बनाया था।[2] इसी प्रकार से मछलियों और पक्षियों को भी राजा बनाते हुए पाते हैं। उपर्युक्त जातक से ज्ञात होता है कि पक्षियों ने भी हिमालय प्रदेश में एक चट्टान पर एकत्रित होकर विचार किया कि मनुष्यों में राजा दिखायी देता है, वैसे ही चतुष्पदों और मछलियों में भी, किन्तु हमारे बीच राजा नहीं है। अराजकता की अवस्था में रहना उचित नहीं लगता, अस्तु हमें भी राजा प्राप्त करना चाहिए। उन्होंने एक उल्लू को सम्बोधित करके कहा—"यह हमको अच्छा लगता है।" और सब पक्षियों की सम्मति जानने के लिए तीन बार घोषणा करके उसे राजा चुन लिया।[3]

राजत्व का दैवी स्वरूप :

तेजस्वी राजा अग्नि, इन्द्र, सोम, यम और वरुण इन पाँचों देवताओं के रूप में माने जाते थे। उनमें इन पाँचों देवताओं के गुण-प्रताप, पराक्रम, सौम्य और हृत चिन्तन का समन्वय माना जाता था।[4] महाकपि जातक में राजा को ईश्वर

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४४; धर्मशास्त्र का इतिहास, जि० २, पृ० ५८५
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३५२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ७७
३. वही
४. शान्तिकुमार नानूराम व्यास, रामायणकालीन समाज, पृ० २५७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कहा गया है।[१] उसमें देवों के समान कल्याणकारी गुणों के कारण ही उसे 'देव' या 'देवराज' कहा गया है।[२] कुषाण राजा कनिष्क को भी देवपुत्र की उपाधि दी गयी थी।[३]

राजगुण :

राजा को विचारवान होना चाहिए। विचारपूर्वक (काम) करने वाले राजा का यश और कीर्ति बढ़ती है।[४] तपोधम्म जातक के अनुसार जिस पुरुष में ये तीन गुण—दक्षता, शौर्य और प्रज्ञा पाये जाते हैं, वह अपने शत्रु को भी जीत लेता है।[५] तेसकुण जातक में राजा के लिए धर्मज्ञान आवश्यक बतलाया गया है।[६] गण्डतिन्दु जातक में राजा के लिए अप्रमाद (समयोचितकार्य) को अमृत तथा प्रमादों को मृत्यु बतलाया गया है।[७] बुद्धिमान राजा द्वारा राष्ट्र, सेना तथा राष्ट्रवासियों को सुख प्राप्त होता है।[८] पाँच प्रकार राजबलों में प्रज्ञा बल श्रेष्ठ और अग्र बताया गया है। प्रज्ञा बल से युक्त राजा अर्थ को समझता है।[९] राजोवाद जातक से राजा के गुणों पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है, "राजा कठोर के साथ कठोरता का व्यवहार करे, कोमल के साथ कोमलता से, भले आदमी को भलाई से, बुरे को बुराई से।"[१०] इस प्रकार उसमें सम्यक् दृष्टि की आवश्यकता रहती है। राजा को चाहिए कि विचार कर कार्य करे, बिना विचारे न करे। विचार कर कार्य करने वाले राजा का यश और कीर्ति बढ़ती है।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २९८-२९९; जि० ६, पृ० ३८४, ५८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २७-२८; जि० ६, पृ० ४३१, ६४९
३. एपी० इण्डि० जि० ९, पृ० २४०, पंक्ति २
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १०५-१०६, १५४; जि० ४, पृ० ४५१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २७१, ३१७; जि० ५, पृ० ३९
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४११-४१२
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०५
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १८७
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४-३५
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०४
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३-४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १६४-१६५
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४५१; जि० ६, पृ० ३७५-३७६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३९; जि० ६, पृ० ४२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दान गुण :

सङ्खपाल जातक में दान गुण का महत्व बतलाया गया है, जहाँ राजा कहता है, "मैंने प्रसन्नतापूर्वक अन्न-पान का विपुल दान दिया। सभी श्रमण ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया। यही मेरा व्रत है, यही मेरी श्रेष्ठ चर्या है।"[१] राजा के दान से सारे जम्बूद्वीप में हलचल मच गई थी।[२]

राजशिक्षा :

राजा के गुणों के विकास तथा दोषों के दमन के लिए राजपुत्रों की शिक्षा पर राजशास्त्रों में विशेष बल दिया गया है। जातकों के अध्ययन से भी ज्ञात होता है कि राजाओं के लिए अनेक प्रकार की शिक्षाएँ आवश्यक थीं। इसीलिए राजकुमारों को बचपन से ही विविध शिक्षाएँ दी जाती थीं। जातकों से ज्ञात होता है कि बहुधा सोलह वर्ष की अवस्था में ही राजकुमार तीनों वेद तथा सब शिल्प सीख लेते थे।[३] राजकुमारों को तक्षशिला में भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते हुए पाते हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद तथा अन्य विद्याओं में स्मृति, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष, शिक्षा, मोक्ष ज्ञान, क्रियाविधि, धनुर्वेध, हस्तशिक्षा कामतन्त्र, लक्षण, पुराण, इतिहास, नीति, तर्क तथा वैद्यक आदि की शिक्षा राजपुत्रों को दी जातो थी।[४]

राजधर्म (राजकर्तव्य) :

राजाओं के राज्य पर प्रतिष्ठित होने के लिए दस राजधर्म अपेक्षित थे। चार अगतियों से बचकर दस राजधर्म के विरुद्ध न जाकर धर्मपूर्वक राज्य करने का उल्लेख प्राप्त होता है।[५] इसी प्रकार अन्य जातकों में भी दस राजधर्मों से विरुद्ध न जाकर धर्म से राज्य करने तथा नगर के बीच में, चारों द्वारों तथा महल के द्वार पर छः दानशालाएँ बनवाकर प्रतिदिन दान वितरित करने का वर्णन प्राप्त होता है।[६]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १७१-१७२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २५४
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५७५
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७३; जि० ३, पृ० १२२-१२३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४००-४०१; जि० ३, पृ० २८७
४. जा अ० रो० जि० १, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८३
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८२; जि० ३, पृ० ४७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८४; जि० ४, पृ० १२९
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ११८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३०२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राजकार्य :

सुव्यवस्था के लिए उस युग में राजा स्वयं रात्रि में भेष बदलकर नगर का हाल जानने के लिए निकलते थे।[१]

राज परित्याग :

जातक साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि प्रायः वृद्ध होने पर राजा राज्य का परित्याग कर वन चले जाते थे। सोमदत्त जातक के अनुसार राजा ने अपने छोटे भाई को राज्य सौंपते हुए कहा, "मैं पिंजरे में पड़े पक्षी की भाँति उद्विग्न हूँ।"[२] महासागर जातक में भी 'सन्दूक में बन्दी' के समान अनुभव करने का उल्लेख हुआ है।[३] इस प्रकार से अनेकों उदाहरण जातकों में देखने को मिलते हैं, जिनसे राज्य त्याग का परिचय मिलता है, किन्तु राज्य त्याग के पूर्व उसे अपना उत्तराधिकारी भी नियुक्त करना आवश्यक था।

उत्तराधिकार :

जातक युग में उत्तराधिकार का विशेष महत्त्व था जिसमें राज्य और राष्ट्र का हित निहित था। प्रायः ज्येष्ठ पुत्र ही राजपद पर प्रतिष्ठित होता था।[४] कभी-कभी राजा मन्त्रियों पर भी यह भार छोड़ देते थे कि सुयोग्य राजकुमार को श्वेत-छत्र (राजछत्र) प्रदान करे।[५]

युवराज :

राज्य की समृद्धि और वंश वृद्धि के लिए उत्तराधिकारी (दायाद) राजपुत्र युवराज का होना अति आवश्यक था। मृगपक्ख जातक के अनुसार राजा ने अमात्यों से पूछा—"मेरे पुत्र के पैदा होने पर क्या तुम्हें प्रसन्नता हुई है।" देव! "हम पहले अनाथ थे अब सनाथ हो गये हैं। हमें स्वामी मिल गया

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४१३; जि० ४, पृ० ३७; जि० ५, पृ० ४४१; जा० हि० जि० ३, पृ० १३३; जि० ४, पृ० ५७८; जि० ५, पृ० ५१८

२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २६८

३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५३९-५४०

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३३; जि० २, पृ० २१२-३६६; जि० ४, पृ० १६८; जि० ६, पृ० ३०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २१९; जि० २, पृ० ४१४; जि० ३, पृ० ९०; जि० ४, पृ० ३६९; जि० ६, पृ० ३४

५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है।"[१] राजा की सहायता के लिए उपराजा होता था। वह राजा के द्वारा निर्दिष्ट कार्यों को सम्पादित करता था और अपने कार्य क्षेत्र में राजा के प्रति उत्तरदायी होता था।[२] गङ्गमाल जातक में स्वयं राजा ने एक भिस्ती से उपराजा बनने के लिए कहा था।[३] सुरुचि जातक में वंश की रक्षा करने के लिए राजपुत्र की कामना की गई है।[४] राजा की मृत्यु के पश्चात् वही राजसिंहासन का अधिकारी होता था।[५] इस प्रकार जातक साहित्य में वंश की रक्षा करने वाले पुत्र की कामना की गई है क्योंकि उत्तराधिकारी न होने पर अन्य कोई राज्य पर अधिकार कर राष्ट्र को चौपट कर सकता था। इसीलिए धर्मानुकूल राज्य करने में समर्थ पुत्र की कामना की जाती थी।

राज्याभिषेक :

जातकों में राजा के राज्याभिषेक का भी उल्लेख कई बार हुआ है। तच्छ सूकर जातक के अनुसार दक्षिणावर्त शङ्ख-रत्न को पानी से भरकर और गूलर वृक्ष के नीचे बिठाकर अभिषिक्त किया गया, और कहा गया था, "तू हमारा ईश्वर है, राजा है (राजासि इस्सरो)।[६] अयोधर जातक और संवर जातक से ज्ञात होता है कि राजा ने अमात्यों से कहा था कि "मेरे पुत्र को रत्नों के ढेर पर प्रतिष्ठित कर, तीन शङ्खों से अभिषेक कर, स्वर्णमाला तथा श्वेत-छत्र धारण कराओ।"[७] निग्रोध जातक में भी रत्नों की ढेरी पर बिठाकर राज्याभिषेक करने का वर्णन मिलता है।[८] वड्ढकीसूकर जातक से भी ज्ञात होता है कि गूलर के पीढ़े पर बिठाकर तीन शंखों से अभिषेक किया जाता था।[९] युवराज

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३११; जि० ४, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८; जि० ४, पृ० ४९३; डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० की सा० सं०, पृ० ४८७
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४४८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १०८
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२२-५२३
५. जैन आगम साहित्य में भारतीय जीवन, पृ० ४२
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५५६
७. ,, ,, ४, पृ० १३२, ४९३; ,, ,, ४, पृ० [illegible]; जि० ५, पृ० ८२
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३९
९. ,, ,, २, पृ० ४०९; ,, ,, ३, पृ० १२९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पद के लिए राजकुमार में महापुरुष लक्षण देखे जाते थे।[१] उनके लिए रमणीय प्रासाद एवं युवराजपद के उपयुक्त वस्त्रों का प्रबन्ध किया जाता था।[२] युवराज में चक्रवर्ती चिह्न दिखाई देने पर ही उसको रत्नों की ढेरी में बिठाकर उसका राज्याभिषेक किया जाता था।[३] उसके सिर पर छत्र सजाया जाता था।[४] उसकी देखरेख के लिए अमात्य नियुक्त रहते थे।[५] राजछत्र या श्वेत-छत्र प्रदान[६] करने के बाद राजदीक्षा (समुदीक्षमाण:)[७] दी जाती थी। विशेषकर क्षत्रिय ही राजा होते थे।[८]

चक्रवर्ती राजा :

जातकों में राजा को चक्रवर्ती राजा की उपाधि से भी सम्बोधित करने का उल्लेख हुआ है।[९] चक्रवर्ती सम्राट् मान्धाता इतिहास में प्रसिद्ध ही हैं।[१०]

राजमहिषी :

राज्य के संचालन में राजमहिषी (राजपत्नी) का भी विशेष योगदान रहता था। उदय जातक के अनुसार रानी उदय भद्रा ने राज्य कार्य संभाला था और राजधानी की देखभाल की थी उसकी आज्ञा के अनुसार ही अमात्य शासन चलाते थे।[११] धत जातक में भी भाइयों ने बहन देवगर्भा को राज्य में हिस्सा दिया था जिसके आधीन नौ राजा द्वारवती राजधानी में रहते थे।[१२] राजपत्नी,

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३८-२३९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९८
२. जा० अ० रो० जि० ३२३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२८; जि० १, पृ० १२७
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३९
४. ,, ,, ४, पृ० २३१-२३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३३
५. ,, ,, ६, पृ० ५८८; ,, ,, ६, पृ० ६४९
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९३; जि० ६, पृ० ३९, जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ८२; जि० ६, पृ० ४४
७. बु० च० ९/२२
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६; जि० २, पृ० १०६; जि० ४, पृ० ५२६
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३११; जि० ३, पृ० ४५४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८; जि० ४, पृ० ११४
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३१३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४०
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १०५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३०७
१२. ,, ,, ४, पृ० ८४; ,, ,, ४, पृ० २८५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रानी को लोक में अकेली विचरने का भी उल्लेख मिलता है।[1] वे पण्डिता तथा ज्ञानसम्पन्न होती थीं।[2] इन्हें लोक में सबसे अधिक बलवान कहा गया है।[3] जातकों से पता चलता है कि सोलह हजार रानियों में ज्येष्ठ पटरानी अग्रमहिषी होती थी[4] और उसकी देखरेख के लिए सहभार्या होती थी।[5] इन्हें देवी[6], कल्याणी[7], यशस्विनी[8], राजमाता[9] भी कहा गया है।

राजविरुद :

जातकों में विभिन्न राजविरुद का भी उल्लेख हुआ है। उससे राजा[10], महाराज[11], भूमिपति[12], भूमिपाल[13], भूतपति[14], दिशापति[15], राजश्रेष्ठ[16],

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४८७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ७७
२. ,, ,, ३, पृ० ४७०; ,, ,, ४, पृ० १२९
३. ,, ,, ३, पृ० ५१८; ,, ,, ४, पृ० १७८
४. ,, ,, १, पृ० ५८; जि० ४, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२७; जि० ४, पृ० ३२५
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१९-३२०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२५-५२६
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६७, १८९
७. ,, ,, ४, पृ० १०७; ,, ,, ४, पृ० ३०८
८. ,, ,, ४, पृ० ३२१; ,, ,, ४, पृ० ५२६
९. ,, ,, ५, पृ० २८६; ,, ,, ५, पृ० ३६८
१०. ,, ,, १, पृ० ९८; ,, ,, १, पृ० १७६
११. ,, ,, १, पृ० ५०-५२; ,, ,, १, पृ० ११८-११९; जि० २, पृ० ६८
१२. जा० अ० रो० जि० जि० ३, पृ० २२९; जि० ६, पृ० ३०७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८९; जि० ६, पृ० ३४६
१३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४४६, ४५१; जि० ५, पृ० २१९-२२०, ४९६; जि० ६, पृ० ३७९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४, ३९, ३०२-३०५, ५७४
१४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७६, ३१४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७९, ५१८
१५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५६, ४८६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६४; जि० ५, पृ० ७६
१६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५६, जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पृथिवीपति (धरणीमहेश्वर[१]) मानवेन्द्र[२] कहा गया है।

राजदोष (व्यसन) :

उपर्युक्त राजगुणों के साथ-साथ जातक साहित्य में राजदोषों का भी उल्लेख मिलता है। राजदोषों के कारण केवल राजा ही दुःखी नहीं होता था अपितु उसके राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रजा पर उसके दोषों का प्रभाव पड़ता था। राजा को भोगविलासी नहीं होना चाहिए।[३] गजकुम्भ जातक में यह बतलाया गया है कि जो राजा शनैः शनैः काम करने के समय जल्दबाजी करते हैं और शीघ्रता के समय वे आलस करते हैं, वे अपने अर्थ को उसी प्रकार चूर्ण-विचूर्ण कर नष्ट कर देते हैं जैसे कोई सूखे पत्ते को पैर के नीचे दबाकर।[४] राजा को क्रोध के वशीभूत होकर सहसा कोई भी कोर्य नहीं करना चाहिए।[५] महाबोधि जातक में कहा गया है कि शीघ्रता से जाने वाली गौवों में यदि बैल टेढ़ा जाता है तो वे सभी गायें टेढ़ी हो जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में राजा यदि सुमार्ग पर नहीं चलता तो उसकी प्रजा भी सुमार्ग त्यागकर कुमार्ग पर चलने लगती है। धर्मा-चारी राजा के राष्ट्र की प्रजा सुखी, अधर्माचारी राजा की प्रजा दुःखी रहती है।[६] राजा को अधार्मिक नहीं होना चाहिए क्योंकि अधार्मिक राजा के राज्य में वर्षा असमय होती है, समय पर नहीं होती, अकाल, भय तथा शस्त्र भय बना रहता है।[७] राजा को लोभी नहीं होना चाहिए।[८] जो राजा राज्य के लोगों व्यापारियों को कष्ट देता हुआ शासन करता है, उसे कर तथा बलि न मिलने से तथा उसका कोश खाली हो जाता है। इसी प्रकार जो राजा युद्धभूमि के ज्ञात, महान योद्धा तथा प्रसिद्ध मंत्रियों को कष्ट पहुँचाता हुआ शासन करता है वह 'सैन्य-

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४७७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५५४
२. ,, ,, ५, पृ० ३५१; ,, ,, पृ० ४३४
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २२९
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १४१; ज० अ० हि० जि० ३, पृ० ३०५
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४४१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १०१-१०२
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४१-२४३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३२८-३२९
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३०७-३०८
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १९८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बल' से क्षीण हो जाता है।[1] इस प्रकार इन राजव्यसनों से राजा को सदा ही बचना चाहिए।

अमात्य गण

अमात्यों का महत्व :

अमात्य या मन्त्री सप्तांग राज्य का एक महत्वपूर्ण अंग था। जातकों के अध्ययन से भी ज्ञात होता है कि राजतन्त्र में मन्त्री और मन्त्रिमण्डल का महत्वपूर्ण स्थान था। राज्य प्रशासन में राजा के बाद अमात्यों का स्थान था। जातक कथाओं में अमात्य के अतिरिक्त महामात्यों का भी उल्लेख मिलता है।[2] राजा अमात्यों से परामर्श लेते थे। अयोघर जातक में राजा अमात्यों से पूछते हैं—'मेरा पुत्र कब आयु प्राप्त (वयस्क) हो जायगा।'[3] राजा अमात्यों के मध्य राजसिंहासन पर बैठते थे।[4] संवर जातक से पता चलता है कि राजा ने एक-एक अमात्य को एक-एक कुमार को शिक्षा देने का कार्य सौंपा था। अमात्य पण्डित व मेधावी होते थे वे राजपुत्र के लिए पितावत होते थे।[5] वे राजा के प्रति स्वामिभक्त एवं आज्ञापालक होते थे।

अमात्य गुण :

जातक साहित्य में अमात्यों के अनेक गुणों का भी उल्लेख मिलता है। उनकी नियुक्ति उनके विशेष गुणों के आधार पर ही की जाती थी। अमात्यों के लिए धर्म-अर्थ सम्बन्धी विषयों में प्रवीण होना आवश्यक था।[6] अमात्य राजा के इतने विश्वास पात्र होते थे कि राजा कभी-कभी राज्य को अमात्यों को सौंप देते थे।[7]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५२९
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३७८-३८०; जि० ४, पृ० १३४-२०२;
जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९९-१०१; जि० ४, पृ० ३३५-४००
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ८१
४. ,, ,, ५, पृ० १४; ,, ,, ५, पृ० ८१
५. ,, ,, ४, पृ० १३१; ,, ,, ४, पृ० ३३२
६. ,, ,, ५, पृ० २२८; ,, ,, ५; पृ० ३१३
७. ,, ,, ४, पृ० २३२, ३७०; ,, ,, ४, पृ० ४३३, ५७८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमात्यों के प्रकार :

जातकों में कई प्रकार के अमात्यों का उल्लेख मिलता है--सर्वार्थसाधक अमात्य[१] अधिकारी अमात्य[२], महामात्य, राजमहामात्य[३] और राज्यामात्य।[४] रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ़ शिलाभिलेख में भी मतिसचिव और कर्मसचिव दो प्रकार के सचिवों का उल्लेख हुआ है।[५] जिससे पता चलता है कि कुछ अमात्य केवल परामर्श देने के लिए तथा कुछ आदेशों का कार्यान्वयन करने के लिए होते थे।

अमात्यों के कार्य :

जातकों से मन्त्रियों (अमात्यों) के कार्यों पर भी प्रकाश पड़ता है। गामणी-चण्ड जातक में उन्हें नीति निर्धारण करते हुए पाते हैं।[६] मात्र नीति निर्धारण ही नहीं उसे सफलतापूर्वक कार्यान्वित करना, इसमें आने वाले कठिनाइयों को दूर करना, राज्य के आय-व्यय के सम्बन्ध में नीति-निर्धारण करना उनका निरीक्षण करना राजकुमारों की शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध करना उनके राज्याभिषेक में भाग लेना और परराष्ट्र नीति का संचालन करके पड़ोसी स्वतन्त्र राजाओं के लिए अच्छे सम्बन्ध स्थापित करना तथा साम्राज्य के अन्तर्गत करद सामन्तों की नीति पर विचार करना आदि उनमें प्रमुख कार्य थे।[७]

अमात्यों की संख्या :

भिन्न-भिन्न जातकों से अलग-अलग अमात्यों की संख्या का पता चलता है। महाबोधि जातक के अनुसार राजा के पाँच अमात्य थे।[८] जातकों में साठ हजार तथा अस्सी हजार अमात्यों का भी उल्लेख हुआ है।[९] ऐसा प्रतीत होता

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३१६
२. ,, ,, ५, पृ० ४१३; ,, ,, ५, पृ० ४९८
३. ,, ,, ४, पृ० ९१; ,, ,, ४, पृ० २९२
४. ,, ,, १, पृ० ८; ,, ,, १, पृ० ६३
५. पाण्डेय, लिट० हिस्ट० इन्स०, पृ० ६५
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७९-२९९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६-२८
७. अल्टेकर, प्रा० भा० शा० प०, पृ० १२२
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २२८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३१३
९. ,, ,, ५, पृ० १७८; जि० ६, पृ० ५८८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २६१; जि० ६, पृ० ६४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है कि बड़े-बड़े साम्राज्यों में मन्त्रियों की संख्या अधिक होती थी और छोटे राज्यों में कम होती थी ।

अमात्य परिषद् (मन्त्रि परिषद्) :

शासन सूत्र संचालन में अमात्य परिषद् का जिसे परिषा कहा गया है, विशेष महत्व था। सभी अमात्यों से बार-बार आवश्यकतानुसार राजा को परामर्श कर सकना कठिन होता था। अतः कुछ चुने हुए अमात्यों की एक विशेष परिषद् गठित करता था। इसी विशेष परिषद् को मन्त्रिपरिषद् (परिषा) कहते थे। मन्त्रि परिषद् आधुनिक कैबिनेट के समान होती थी जबकि अमात्य मण्डल, मन्त्रि मण्डल के समान होता था। सम्राट् अशोक के तीसरे अभिलेखों में भी मन्त्रि परिषद् (परिषा) का उल्लेख मिलता है। जातक साहित्य से ज्ञात होता है कि मन्त्रि परिषद् में पाँच मंत्री होते थे।[1] इस मन्त्रि परिषद् का प्रधान महामन्त्री कहलाता था।[2] जो सम्भवतः वर्तमान भारत के प्रधान मन्त्री के समान होता था।

सर्वार्थसाधक अमात्य :

जातकों में एक ऐसे भी अमात्य का उल्लेख मिलता है जिसे सर्वार्थसाधक (सब्बाधक) अमात्य कहा गया है।[3] राजदरबार में उसका विशेष स्थान और सम्मान था उसका पद पुरोहित की भाँति ही होता था। यह योग्य, विद्वान् और त्यागी होता था। राजा उससे धर्म शिक्षा के साथ कर्म शिक्षा भी प्राप्त करते थे।[4] वे बाहर जाने पर राजा के साथ ही जाते थे।[5] अण्डभूत जातक में तो उसे एक प्रकार से राजा ही कहा गया है।[6] सम्भवतः यह ब्राह्मण साहित्य में उल्लिखित पुरोहित के समान था।

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २२८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३१३
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५२; जि० ४, पृ० १३४; जि० ५, पृ० २४३; जि० ६, पृ० ४१५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २२२; जि० ४, पृ० ३३५; जि० ५, पृ० ३२९; जि० ६, पृ० ४५९
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३१६
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८; जि० ४, पृ० २३२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १९८; जि० ४, पृ० ४३२
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४३४
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८९-२९०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२२-४२३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बल अथवा सैन्य व्यवस्था

महत्व :

यह भी सप्तांग राज्य का महत्वपूर्ण अंग था।[1] बल के अन्तर्गत सैन्य शक्ति (सेना)[2] का समावेश माना जाता था। जातक कथाओं से सेना के अंग अस्त्र-शस्त्र, सैन्य अधिकारी, ध्वज आदि पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र एवं अन्य ग्रन्थों में बल को दण्ड भी कहा गया है।[3] सैनिकों को "शस्त्रोपजीविनः" कहा गया है। व्यापारी गण अपनी सम्पत्ति सुरक्षा के लिए दक्ष सैनिकों का दल रखते थे।[4]

सेना :

जातकों में विशाल अक्षौहिणी सेना का उल्लेख हुआ है।[5] महाउम्मग्ग जातक में पंचाल नरेश ब्रह्मदत्त की सेना असीम बताई गयी है।[6]

सैन्य प्रकार

चतुरंगिणी सेना :

जातक कथाओं में चार प्रकार की सेना या चतुरंगिणी सेना का बहुधा उल्लेख हुआ है।[7] इसके साथ ही अट्ठारह सेनाओं को भी एकत्र करने का उल्लेख हुआ है।[8] ये चार अंग हस्ति, रथ, अश्व और पदाति बतलाये गये हैं।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५९; जि० ६, पृ० २७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०९; जि० ६, पृ० ३१
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०८, २१९-२२०; जि० ६, पृ० ४०५; जि० २, पृ० ४०९, ४१९-४२०; जि० ६, पृ० ४५०
३. धर्मशास्त्र का इतिहास, पृ० ६७७
४. वही, पृ० ६७८
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१८-२१९; जि० ६, पृ० ४०५, ४३५; जा० अ० हि० जि० २, ४१९-४२२; जि० ६, पृ० ४५०-४७५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४४३
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३८-२३९, २४८-२४९; जि० ४, पृ० १२५; जि० ५, पृ० ४८६; जि० ६, पृ० २७५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९८, ४२५, ४०७; जि० ४, पृ० ३२७; जि० ५, पृ० ५६३; जि० ६, पृ० ३१४
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हस्ति सेना :

प्राचीन भारत में हस्ति सेना का सबसे अधिक महत्व था। हस्ति सेना में साठ हजार तक हाथी सम्मिलित होते थे।[१] ये सभी अलंकारों से विभूषित किये जाते थे। विशेष हाथियों के नाम भी रखे जाते थे। मंगल हाथी का उल्लेख मिलता है जिसने सेना को भगा दिया था।[२] युद्ध के अलावा हाथी संदेश वाहक का भी कार्य करते थे।[३] हाथियों के लिए संग्राम-जित शूर और बलवान आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।[४] इसके अतिरिक्त बलवान और दाँतों वाले, कसे हुए हाथियों का भी उल्लेख मिलता है।[५] दलधम्म जातक में राज-हस्तिवाहिनी का वर्णन मिलता है, जो शक्तिशालिनी थी।[६]

हाथियों की देख-रेख के लिए हथवान नियुक्त होते थे।[७] भातिपोसक जातक में सर्वश्वेत शीलवान हस्ति-राज को पकड़ने के लिए राजा ने हथवानों को आज्ञा दी थी।[८] हाथियों के रहने के लिए राजकीय हस्तिशाला होती थी।[९] हस्ति-शिक्षा, हस्तिशिक्षक प्रदान करते थे।[१०] हाथियों का इतना महत्त्व था कि उनके विषय की शिक्षा एक पाठ्य विषय ही बन गई थी। राजाओं के लिए हस्तिशिक्षा विशेष रूप से ग्रहणकारी होती थी। हाथियों के पालन-पोषण और संचालन तथा नियन्त्रण का कार्य महावत या हथवान (हत्थिगोपक) करते थे।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २५८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४२
२. जा० अ० रो० जि २, पृ० २२, ९४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८४-१८७, २७३
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३८५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७४
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४४९, ५८१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४९१, ६४२
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३८५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९०; जि० ६, पृ० ४७-४८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३७१; जि० ६, पृ० ५९-६०
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ९१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २९२
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०-२२; जि० ५, पृ० २९०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८५-१८६; जि० ५, पृ० ३७१
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०-२२; जि० ५, पृ० २९०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८५-१८६; जि० ५, पृ० ३७१
११. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२१-२२२; जि० ४, पृ० ४७६; जि० ५, पृ० २९०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२४-४२५; जि० पृ० ६६, ३७१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रथसेना :

चतुरंगिणी सेना का द्वितीय प्रमुख अंग रथसेना था। फन्दक जातक में रथ के बनाने का वर्णन मिलता है।[१] रथों में घोड़े जोते जाते थे।[२] एक सेना में चौदह हजार रथों का उल्लेख मिलता है।[३] रथ संचालन का कार्य रथवान करते थे। इन्हें रथवान भी कहा गया है जो अत्यन्त निपुण होते थे। रथों में लकड़ी और लोहे के प्रयोग के अतिरिक्त चीते और व्याघ्र के चमड़े का भी प्रयोग किया जाता था।

अश्वसेना :

जातक युग में अश्व सेना पर भी विशेष बल दिया जाता था। यह चतुरंगिणी सेना का तृतीय अंग था। सिन्धु और कम्बोज देशों के अश्व श्रेष्ठ माने जाते थे। महाजनक जातक में सैन्धव अश्वों को द्रुतगामी बताया गया है।[४] इन पर खड्गधारी तथा धनुषधारी सैनिक बैठते थे।[५] एक सेना में साठ हजार अश्व बताये गये हैं।[६] विधुर जातक में अश्व गुणों का सुन्दर वर्णन किया गया है। श्रेष्ठ अश्वों के स्वर्णमय कान, स्फटिक रूप के खुर और स्वर्णिम लाल रंग की छाती होती थी।[७] सैन्धव बछड़े की कीमत छः सहस्त्र तक होती थी।[८] कम्बोज के सुशिक्षित अश्व प्रसिद्ध थे। उत्तरापथ के व्यापारी पाँच-पाँच सौ घोड़े लाकर वाराणसी में बेचते थे।[९] इसलिए व्यापार में भी इनका महत्त्वपूर्ण स्थान था।[१०] सारथी अश्वों का संचालन करते थे।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १०९-११०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४०८-४१०
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८१-१८२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८२-२८३
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५८२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४२
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४७, ४९; जा० अ० जि० ६, पृ० ५९, ६१
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५७९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४०
६. ,, ,, ५, पृ० २५९; ,, ,, ५, पृ० ३४२
७. ,, ,, ६, पृ० २६८; ,, ,, ६, पृ० ३०६
८. ,, ,, २, पृ० २८९; ,, ,, ३, पृ० १८
९. जा० अ० रो० जि० २ पृ० २८७; जि० ४, पृ० ४६४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १६; जि० ५, पृ० ५२
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१-१२२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४७-४९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५९-६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पदातिसेना :

चतुरंगिणी सेना का चौथा अंग 'पदाति' था।[1] इस सैन्य अंग में तरुण योद्धा नियुक्त किये जाते थे।[2] इन्हें महायोद्धा और मल्ल कहा जाता था।[3] महावेस्सन्तर जातक में नाना प्रकार के अलंकारों से विभूषित साठ हजार योद्धाओं के सदैव रहने का वर्णन प्राप्त होता है। नीलवस्त्रधारी, पीतवस्त्रधारी, श्वेत-वस्त्रधारी, लाल पगड़ी वाले तथा अन्य अनेक प्रकार के वस्त्रों से अलंकृत रहते थे।[4] ये योद्धा धनुषविद्या में निपुण होते थे तथा अक्षणवेध, बालवेध, शब्दवेध और शरविद्या के ज्ञाता होते थे। उन्हें बारह प्रकार की शिल्प (कला) में पारंगत होना आवश्यक था।[5]

युद्ध :

जातकों में नाना प्रकार के युद्धों का भी उल्लेख मिलता है। सीमान्त देश को शान्त करने के लिए राजा लोग दूसरे राजाओं को पत्र भेजते थे या सेना के साथ आक्रमण करते थे।[6] सीमान्त के बीच भी युद्ध होता था।[7] जातक कथाएँ युद्धों के वर्णन से परिपूर्ण हैं।

व्यूह :

युद्ध में व्यूह रचना का बहुत महत्व था, क्योंकि इसी पर विजय की अधि-

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३७३; जि० ६, पृ० ५७९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४५५; जि० ६, पृ० ६३९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५८; जि० ६, पृ० ४४८-४४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०८; जि० ६, पृ० ४९१
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५, १६०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७६, ३२३
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५७९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६३९-६४०
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८, ३५६-३५७; जि० ५, पृ० १२७-१३०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२७, ५०६ ५०७; जि० ५, पृ० २०९-२१३
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०४, ३१३, ४३७; जि० २, पृ० ७४, ९६, २०८, २७४, ३१५; जि० ३, पृ० ८, ४००, ४९७; जि० ४, पृ० १८९, ४४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४४०, ४५२; जि० २, पृ० ६५-६६ २४९, २७५-२७६, ४०८; जि० ३, पृ० ४, ४१, १७८, जि० ४ पृ० ६०, १५८, ३८९; जि० ५, पृ० ३३
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १७५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कांश भरोसा किया जाता था । वड्ढकीसूकर जातक में तीन प्रकार के 'व्यूह' का उल्लेख हुआ है । ये थे—पद्म-व्यूह, चक्र-व्यूह तथा शकट-व्यूह ।[1]

सैन्य संचालन :

युद्धभूमि में नायक का प्रमुख स्थान था ।[2] नायक ही सेना का संचालन करता था ।[3] कभी-कभी एक राजा दूसरे राजा की शक्ति से भयभीत होकर भाग भी जाते थे ।[4] ऐसी दशा में बिना युद्ध के भी नगर जीत लिया जाता था ।[5]

ध्वज :

जातकों में ध्वजों का उल्लेख मिलता है । ध्वजा शूरवीरों के हाथों में रहती थी, जिनकी संख्या पाँच सौ[6], एक हजार[7] एवं साठ सजार[8] तक बतलाई गई है ।

अस्त्र-शस्त्र :

सेना अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर ही युद्धभूमि में सफलता प्राप्त करती थी । जातक कथाओं में विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों (आयुधों) का उल्लेख प्राप्त होता है ।[9] उनमें से प्रमुख आयुध-अयोकूट (लोहे का हथौड़ा)[10], असि (तलवार)

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४०५-४०६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १२६
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१, १३१, ३४५-३४६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८६, ३१६; जि० ३, पृ० ७०
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४४६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४८७
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१८-२२१, जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२०-४२३
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०९; जि० ६, पृ० ४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६७; जि० ६, पृ० ४४५-५०
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १२१
७. ,, ,, १, पृ० २६३, ,, ,, १, पृ० ३८९
८. ,, ,, ६, पृ० ५७९; ,, ,, ३, पृ० ६३९
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५०; जि० २, पृ० ७७; जि० ३, पृ० ३४५, ४०३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २४३; जि० २, पृ० २५३; जि० ४, पृ० ९, ६३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०८, जि० २, पृ० २४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८७; जि० २, ४४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तलवारें एक धार तथा द्विधार वाली होती थीं।[1] कुठारी (कुल्हाड़ी)[2], कुद्दाल (कुदाली)[3], कटार[4], बर्छी[5], कुसिस (वज्र)[6], परसु (कुल्हाड़ा)[7], धनुष-तरकस (तूणीर)[8], ढाल[9], छूरी-चाकू[10], तच्छनी (बसूला)[11], फरसु (फरसा)[12], बल्लम[13], सण्डासी (संगसी)[14], शूल[15], खंती और कांटा (कांता[16]), तकवे[17],

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७३, १२९, १५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४४, २१३, २४३
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१३, ३३६, ४८८; जि० ४, पृ० ४६; जि० ५, पृ० ६८; जि० ६, पृ० १०-११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५१, ४८१; जि० २, पृ० १३०; जि० ४, पृ० २४५; जि० ५, पृ० १५५; जि० ६, पृ० १०
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५४
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४६; जि० १, पृ० ४०१-४०२; जि० ३, पृ० १५५
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ९७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २९८
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९; जि० ४, पृ० २१०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०७; जि० ४, पृ० ४०९
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० १, १७७
९. वही
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४०५; जि० ३, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १२५, ४३५, ४५१
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९, ३०३-३०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०७, ४३८-४४०
१२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १७८, २८१; जि० ६, पृ० ५००; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४०, २५५, ४३५; जि० ६, पृ० ५४२
१३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५
१४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३२; जि० ३, पृ० ४५१; जि० ५, पृ० ३३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३७; जि० ४, पृ० १११; जि० ५, पृ० ४२०
१५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८-२९; जि० २, पृ० १७८; जि० ३, पृ० ३५; जि० ५, पृ० ४९१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३७२; जि० ३, पृ० २०५; जि० ४, पृ० २२८-२२९; जि० ५, पृ० ५६८
१६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५२१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५६७
१७. ,, ,, ४, पृ० २९; ,, ,, ४, पृ० २२८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तोमर[1], हसिया, लोहे का डण्डा, आरा[2], फावड़ा[3], भाला[4], दरांती[5], अंकुश[6], शक्ति[7], बाण[8] आदि।

इस प्रकार जातकों में विभिन्न सैन्य अंगों के साथ ही साथ नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

विजयोत्सव :

जब राजा युद्धभूमि से लौटकर आते थे तो राजधानी को देवनगर की भाँति अलंकृत किया जाता था और राजधानी में विजय-पड़ाव डाला जाता था।[9] राजमहल की सम्पूर्ण तैयारी की जाती थी। इस प्रकार राजधानी में विजयोत्सव मनाया जाता था। इस प्रकार से जातकों में संग्राम विजयी शूर प्रसिद्ध थे।[10]

कोश

कोश का महत्व :

कोश की पूर्ति अत्यन्त आवश्यक थी। कोश ही राज्य की महत्वपूर्ण शक्ति थी।[11] इसीलिए कौटिल्य के अनुसार जिस राजा का कोश रिक्त हो जाता है वह नगरवासियों एवं ग्रामवासियों को चूसने लगता है। राज्य के सारे व्यापार कोश पर ही निर्भर रहते हैं। अतः राजा को सर्वप्रथम कोश पर ध्यान देना चाहिए।[12]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २०
२. ,, ,, ५, पृ० ४५; ,, ,, ५, पृ० १३४
३. ,, ,, ५, पृ० ६८; ,, ,, ५, पृ० १५५
४. ,, ,, १, पृ० ४१५; ,, ,, २, पृ० ३६
५. ,, ,, ३, पृ० १३०; ,, ,, ३, पृ० २९३
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७३
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९५
८. ,, ,, २, पृ० २१७; ,, ,, २, पृ० ४१९
९. ,, ,, १, पृ० ४३८; ,, ,, २, पृ० ६६
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३८; जि० ३, पृ० ५२२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६६; जि० ४, पृ० १८२
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३९; जि० ५, पृ० ३७९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६७; जि० ५, पृ० ३४७, ४६२
१२. धर्मशास्त्र का इतिहास, पृ० ६६७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कोश (भण्डार) मणि-मुक्ताओं से भरे होते थे।[१] जातकों में विपुल कोशों[२] का उल्लेख मिलता है, जिनकी देखरेख राजकर्मचारी करते थे।[३] महावस्तु में कोश वृद्धि ही सुराज का महान लक्षण माना गया था।[४] जातकों में राज्य-लक्ष्मी का भी वर्णन किया गया है जो कोश-सम्पत्ति का ही परिचायक है।[५]

कोश आपूर्ति और कर व्यवस्था :

कोश वृद्धि का प्रमुख साधन कर था और करों में भूमिकर मुख्य था।[६] कर तथा बलि के न मिलने से कोश खाली हो जाता है[७], इसीलिए विभिन्न करों के द्वारा धन प्राप्त किया जाता था।[८] व्यापारियों से चुंगी भी ली जाती थी।[९] अर्थ-दण्ड से भी आय होती थी।[१०] आवश्यकतानुसार राजा कर (मालगुजारी) बढ़ा सकता था।[११] कभी-कभी कर की अधिकता से पीड़ित होकर राष्ट्रवासी जंगल चले जाते थे।[१२] राजाज्ञा से कर लेने वाले राजकर्मचारी अकासी कहलाते थे।[१३] राज-कर (राज-बलि) भी लिया जाता था।[१४] राजा प्रसन्न होकर माफ भी कर देता था।[१५]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४०७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६८
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९१, २२५, ४२४, ४३९; जि० ३, पृ० २४, ११६; जि० ५, पृ० १८४, ३७९-३८०; जि० ६, पृ० २७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६७, ३४०; जि० २, पृ० ४६, ६७; जि० ३, पृ० १९४, २८१; जि० ५, पृ० २६७, ४६२; जि० ६, पृ० ३१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३९; जि० ३, पृ० ११६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६७; जि० ३, पृ० २८१
४. महावस्तु जि० २/२२६/१८
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४६
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३९, ४४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८४; जि० २, पृ० ७०
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३२९
८. ,, ,, १, पृ० १९९; ,, ,, १, पृ० ३०८
९. ,, ,, ४, पृ० ८४, १३२; ,, ,, ४, पृ० २८५, ३३२
१०. ,, ,, १, पृ० ४८३; ,, ,, २, पृ० १२४
११. ,, ,, ३, पृ० ९; ,, ,, ३, पृ० १८०
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३९; जि० ५, पृ० ९८-९९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८४-४८५; जि० ५, पृ० १८६
१३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २१२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २५१
१४. ,, ,, १, पृ० ३५४; ,, ,, १, पृ० ५०३
१५ ,, ,, ६, पृ० ३४६; ,, ,, ६, पृ० ३९२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दुर्ग अथवा पुर

दूर्ग (दुग्गं) भी जातक युग में सप्तांग राज्य का एक महत्वपूर्ण अंग था ।[१] शासन की सुरक्षा अधिकांशतः दुर्गों पर निर्भर रहती थी । कौटिल्य ने दुर्गों के निर्माण एवं उनमें से किसी एक में राजधानी बनाने के विषय में सविस्तार लिखा है । उन्होंने चार प्रकार के दुर्गों का उल्लेख किया है—औदिक, पार्वत, धान्वन तथा वन दुर्ग ।[२] महाउम्मग्ग जातक में विदेह नरेश के लिए दुर्ग का निर्माण करवाया गया था और गव्यूति-मात्र चलने योग्य सुरंग और आधे योजन की बड़ी सुरंग बनाई गई थी ।[३] बुद्ध चरित में भी मल्लों के दुर्ग का उल्लेख हुआ है ।[४] कोट्टराज को दुर्ग का अधिकारी बताया गया है ।[५] दुर्गपाल का भी उल्लेख मिलता है । सिन्धु घाटी की खुदाई से भी दुर्ग के अवशेष प्राप्त हुए हैं । इससे दुर्ग की प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है ।

राष्ट्र

राष्ट्र की सप्तांग राज्य का एक प्रमुख अंग था ।[६] जातक साहित्य में राष्ट्र समृद्धिशाली, सम्पन्न और सशक्त बतलाया गया है ।[७] कौटिल्य ने भी अर्थशास्त्र में राष्ट्र के बहुगुणों का उल्लेख किया है ।[८] कौटिल्य का कहना है कि राजा को ग्रामों का मण्डल प्राचीन ढूहों या नवीन स्थानों पर बनवाना चाहिए, जिनमें अन्य देशों के लोग बसने को प्रेरित किये जायं, जहाँ राष्ट्र के अधिक जनसंख्या वाले स्थानों से बुलाकर लोग बसाये जायें ।[९] कुणाल जातक में

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३७३; जि० ६, पृ० ५१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४५५; जि० ६, पृ० ६२
२. धर्मशास्त्र का इतिहास, जि० २, पृ० ६६३
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४२६, ४३१-४३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६७, ४७२-४७३
४. बु० च०, २८/४२
५. अवदान जि० १/१०८/७; सद्धर्म २७८/१०, २८६/२८
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८१; जि० ५, पृ० १७८; जि० ६, पृ० ४७६, ५९२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४२; जि० ५, पृ० २६१; जि० ६, पृ० ५१५, ६५५
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४३१
८. धर्मशास्त्र अध्याय २२, प्रकरण १९ (जनपदनिवेशः) पृ० ६३९
९. धर्मशास्त्र का इतिहास, जि० २, पृ० ६४०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सस्यसम्पत्ति से घनी राष्ट्र का उल्लेख मिलता है।[1] धोनसाख जातक में भी समृद्ध राष्ट्र का वर्णन हुआ है।[2] परवर्ती संस्कृत बौद्ध साहित्य से भी इसकी पुष्टि होती है।

मित्र

मित्र भी सप्तांग राज्य का शक्तिशाली अंग था। नीतिशास्त्र में मित्र-बल का विशेष महत्व बतलाया गया है।[3] महाउम्मग्ग जातक के अनुसार चूलनी राजा तथा विदेह राजा ने आपस में मैत्री स्थापित की थी।[4]। गन्धार जातक से भी इसकी पुष्टि होती है।[5] जातक अविदूरेनिदान में भी मैत्री भावना का उल्लेख हुआ है।[6] सुरुचि जातक में मिथिला के राजकुमार तथा वाराणसी के राजकुमार दोनों ही एक साथ तक्षशिला में विद्याध्ययन करते थे। दोनों ही घनिष्ट मित्र थे और मित्र धर्म की रक्षा का पालन किया था।[7] उनका परस्पर दृढ़ विश्वास था।[8] इस प्रकार से मित्र भी राज्य रक्षा का महत्वपूर्ण अंग थी।

डा० श्रीमती पी० के दीक्षित का मत है कि "कोई भी राज्य बिना राजनैतिक गठबन्धन के स्थिर नहीं रह सकता। देश में शक्ति सन्तुलन बनाये रखने के लिए अन्य राजाओं से मैत्री स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक था।....इसीलिए मित्र को इतना महत्व प्रदान किया गया है।"[9]

शासन-व्यवस्था

जातक कथाओं के अध्ययन से एक उच्चस्तरीय प्रशासनिक व्यवस्था का बोध होता है। राज्यों और गणराज्यों के साथ साम्राज्यों का भी उदय हो

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१६-४२१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०४-५०५
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२२
३. सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १०७
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४११; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४५५
५. ,, ,, ३, पृ० ३६५; ,, ,, ४, पृ० २७
६. ,, ,, १, पृ० ४८; जि० ४, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११४; जि० ४, पृ० ४९३
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१५-३१६; ज० आ० हि० जि० ४, पृ० ५२१
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७
९. महाभारत में राज्य व्यवस्था, पृ० १७९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चुका था। इन साम्राज्यों का प्रशासन की सुविधा की दृष्टि से प्रदेशों या प्रांतों, विषयों (जिलों) और ग्रामों से विभक्त कर दिया जाता था। जातक साहित्य के अध्ययन से विदित होता है कि राष्ट्र इतने विशाल होते थे कि उन्हें कई भागों में बांटा जाता था। एक राजा इतने समृद्धशाली राष्ट्र को चलाने में असमर्थ होते थे इसलिए एक स्थान से सम्पूर्ण राष्ट्र का शासन करना बहुत कठिन कार्य था। इसलिए वे छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त थे।[1] प्रत्येक क्षेत्र का प्रमुख अधिकारी नियुक्त होता था। इस प्रकार जातक युग में भी वर्तमान युग की भाँति ग्राम ही शासन की सबसे छोटी इकाई थी। बाह्य आक्रमण आदि तथा आन्तरिक अशान्ति आदि का पता राजा के पास दूतों और गुप्तचरों द्वारा पहुँचता रहता था। न्याय सभी को सुलभ था, परन्तु दण्ड कठोर थे, अंग-भंग का दण्ड ही नहीं मृत्यु दण्ड भी दिया जाता था। अपराधों की गुरुता और लघुता के अनुरूप ही दण्ड दिये जाते थे इसीलिए नाना प्रकार के दण्डों का उल्लेख जातकों में मिलता है। विशेष अवसरों पर राज्य दण्ड में न्यूनता और मुक्ति भी प्रदान करते थे। राजमुद्रा का भी महत्व था। यही प्रशासनिक मुहर थी। अनेक अधिकारियों (राजपुरुषों) का उल्लेख मिलता है। यहाँ इनका क्रमिक किन्तु संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रशासनिक ईकाइयाँ :

प्रशासन व्यवस्था को सुविधा के लिए राज्य को अनेक प्रशासनिक ईकाइयों में बाँट दिया जाता था। राष्ट्र कई प्रदेशों में विभक्त होता था। प्रदेश को भी अनेक विषयों (जिलों) में बाँटा जाता था, जहाँ का सर्वोच्च अधिकारी विषयपति कहलाता था। प्रशासन की न्यूनतम इकाई ग्राम थी जहाँ का प्रधान अधिकारी ग्रामभोजक या ग्रामणी[2] होता था जो निर्णय करता था, दण्ड देता था। इन्हीं के निर्देशन और निरीक्षण में ग्राम का शासन चलता था।[3]

गुप्तचर व्यवस्था

राज्य की प्रमुख बातों का भी पता पाने के लिए गुप्तचरों की व्यवस्था

१, जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २९४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३३३

२. ,, ,, १, पृ० १९९, ३५४, ४८३; जि० २, पृ० १३४, १३६, ३००; जि० ४, पृ० ११५, ३१०, ३२६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०८, ५०३; जि० २, पृ० १२४, ३२०-३२२; जि० ३, पृ० २८; जि० ४, पृ० ३१६, ५१४, ५३२

३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३००; जि० ४, पृ० ११५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २८; जि० ४, पृ० ३१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करना राजा का परम कर्तव्य था। महावस्तु के अनुसार चरों को राजा का नेत्र बताया गया है, और उनकी प्रत्येक राज्य-कार्य में नियुक्ति उपस्थिति तथा सहायता परमावश्यक थी।[१] चर-पुरुष (सी० आई० डी०) राजा से शिकायतें करते थे।[२] राजा उन्हें भेजकर गुप्त बातों का पता लगवाते थे।[३] इस प्रकार राजा और चर-पुरुष आपस में परामर्श करते थे।[४] इस प्रकार से चर-पुरुषों का शासन व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान था।

दूत व्यवस्था

दूसरे राज्यों से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने के लिए राजदूतों की नियुक्ति की जाती थी।[५] बुद्ध चरित के अनुसार तथागत की 'धातु' प्राप्ति के लिए पड़ोस के सात राजाओं ने अपने-अपने दूत मल्लों के पास कुसीनारा भेजे थे।[६] जातक निदान कथा के अनुसार अनाथपिण्डिक ने अट्ठारह करोड़ के खर्च से रमणीय स्थान में सुन्दर विहार बनवा कर भगवान् बुद्ध के लिवा लाने के लिए दूत भेजा था।[७] इस प्रकार जातक साहित्य में दूतों का महत्त्वपूर्ण स्थान था।[८]

न्याय और दण्ड व्यवस्था

न्यायाधिकारी :

जातक साहित्य से ज्ञात होता है कि राजा न्याय से राज्य करते थे और स्वयं निर्णय भी देते थे।[९] न्यायालय में सभी जा सकते थे।[१०] मुकदमों का धर्म से फैसला

१. महावस्तु जि० १/७९/१५-१६
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८८
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३४५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५४९
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५२
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३२, २२५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३२, ४२६
६. बु० च० २८/१
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६९
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९०; जि० ४, पृ० १३२, १४४-१४५, २२५; जि० ६, पृ० ४०२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६८, ३४५-३४६; जि० ४, पृ० ३३२, ३४५-३४६, ४२६; जि० ६, पृ० ४४७
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १६२
१०. ,, ,, १, पृ० १७६; जि० २, पृ० १८६, २९७; जि० ३, पृ० ५०५; जि० ४, पृ० १२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७५-२७६; जि० २, पृ० ३८३; जि० ३, पृ० २६-२७; जि० ४, पृ० १६६, ३२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होने के कारण झूठे मुकदमें नहीं के बराबर होते थे ।[१] जातकों में न्यायाधीश ही नहीं महान्यायाधीश का भी उल्लेख मिलता है ।[२] इ से यह ज्ञात होता है कि किसी-किसी अभियोग को कई न्यायाधीश मिलकर एक साथ सुनते थे जिनमें एक महान्यायाधीश या प्रधान न्यायाधीश होता था । इसे हम वर्तमान युग के न्यायाधीशों की "वेन्च" कह सकते हैं ।

अपराधानुकूल दण्ड :

अभियोग पर भलीभाँति विचार कर ही निर्णय दिया जाता था । राजा को सभी दोषों को देखकर ही दण्ड देना चाहिए ।[३] अपराध के अनुसार ही राजा दण्ड देता था ।[४] सुमङ्गल जातक के अनुसार राजा को चाहिए कि किसी भी मामले पर बिना पूर्णरूपेण विचार किये हुए दण्ड की आज्ञा न दे क्योंकि ऐसा करने से वह स्वयं अयोग्य तथा दूसरों के लिए दुःखदायी सिद्ध होता है ।[५] अमात्य भी निर्णय करते थे ।[६] राजा स्वयं अमात्यों से अभियोगों का निर्णय करने के लिए कहते थे ।[७] तेसकुण जातक से ज्ञात होता है कि राजा ने न्याय धर्म को सोने की पट्टी पर लिखवाया था ।[८] इसी प्रकार से तुण्डिल जातक में राजा ने निर्णयों को पुस्तक में लिखवाकर कहा, "इस पुस्तक को देखकर अभियोगों का निर्णय करो ।"[९]

दण्ड के प्रकार

जातक साहित्य में कई प्रकार के दण्ड दिये जाते थे जो निम्न प्रकार हैं— अंग-भंग, सर्वस्व-हरण, सिर-मुंडन, अर्थदण्ड, मृत्युदण्ड, वध, देश निष्कासन,

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १६३
२. ,, ,, ४, पृ० १५०; जि० ६, पृ० ४५, ३५९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५१; जि० ६, पृ० ५०, ४०६; धम्मपद, पृ० ३४१
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३०, ४५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २२९; जि० ५, पृ० ३९
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११
५. ,, ,, ३, पृ० ४४१; ,, ,, ४, पृ० १०१-१०२
६. ,, ,, २, पृ० १८१, ३८०; जि० ६, पृ० ४५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३७७; जि० ३, पृ० १०१; जि० ६, पृ० ५०
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २२९; जि० ६, पृ० १३१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३१४; जि० ६, पृ० १५०
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०६
९. ,, ,, ३, पृ० २९२; ,, ,, ३, पृ० ४४३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कोड़े लगाना, कारागार, खूटादण्ड, आँखें निकलवा लेना, हाथी के पैरों तले रौंदना, चण्डाल बना देना, दास बनाना आदि ।

अंगभंग :

कुणाल जातक में अपराधियों को बेड़ी डालने और अंगहीन कर देने का उल्लेख हुआ है ।[१]

सर्वस्व हरण :

महाहंस जातक से पता चलता है कि राजा द्वारा हाथ-पाँव कटवा देने का और घर की सारी सम्पत्ति छीन लेने का भी दण्ड दिया जाता था ।[२]

सिर-मुण्डन :

महाबोधि जातक से ज्ञात होता है कि सिर मुण्डन, तोवरा बन्धन तथा गोबर छिड़कन दण्ड भी दिये जाते थे ।[३]

अर्थदण्ड :

उस युग में शराब पीना निषिद्ध था । शराब पीने वालों को आर्थिक दण्ड दिया जाता था ।[४]

मृत्यु दण्ड :

जिसे भी मृत्यु दण्ड मिलता था, उसकी बाहों को पीछे बाँधकर, वध्य भेरी के बजाते हुए नगर के बाहर ले जाया जाता था ।[५] उसके गले में लाल कनेर की माला पहनाई जाती थी, सिर पर इंट का चूरा बिखेरा जाता था और उसे चौरस्ते-चौरस्ते चाबुक मारते हुए, ढोल बजाते हुए वध स्थान की ओर ले जाया जाता था ।[६] चोरों को भी मृत्यु दण्ड दिया जाता था । इस प्रकार से जब चोर पकड़ा जाता था, सारा नगर दहल जाता था ।[७]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४४४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५२२
२. ,, ,, ५, पृ० ३५६; ,, ,, ५, पृ० ४३९
३. ,, ,, ५, पृ० २४५-२४६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५३९
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९, ४८३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०८; जि० २, पृ० १२४
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४६
६. ,, ,, ३, पृ० ५९; जि० ४, पृ० १९१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २२७; जि० ४, पृ० ३९०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४३६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ९५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देश निष्कासन :

महाबोधि जातक में देश निष्कासन का उल्लेख मिलता है ।[१]

कोड़े लगाना :

मूगपक्ख जातक में काँटेदार कोड़े लगाने, बेड़ियाँ डालने, शक्ति प्रहार तथा सूली पर चढ़ाने जैसे दण्ड का भी उल्लेख हुआ है ।[२] चोर की बाँहें पीछे बाँधकर उसे हर चौराहे पर कोड़े से पीटते हुए ले जाया जाता था ।[३] काँटेदार कोड़े लगाने का भी उल्लेख मिलता है ।[४] फरसा, कुल्हाड़ा, कब्जेदार चाबुक से घायल करने[५] तथा हाथ-पाँव, कान-नाक काटने के अपराध में दो हजार कटीले चाबुक लगाये जाते थे ।[६]

कारागार :

चोरों के लिए कारागार होते थे ।[७] राजा चोरों को कारागार में डलवा देता था ।[८]

खूँटादण्ड :

चोरों को लकड़ी के खूंटों से त्रास दिया जाता था । कभी-कभी खूंटे में बाँधकर तथा काँटेदार कोड़े लगाये जाते थे ।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४५-२४६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३२९
२. ,, ,, ६, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३
३. ,, ,, ३, पृ० ४३६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ९५
४. ,, ,, ६, पृ० ३; ,, ,, ६, पृ० ३
५. ,, ,, २, पृ० १२४; जि० ३, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३०७; जि० ३, पृ० २१०
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २१०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८५; जि० ३, पृ० ३२६; जि० ५, पृ० ४५९; जि० ६, पृ० ३८७-३८८, ४२७, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४५; जि० ३, पृ० ४७४; जि० ४, पृ० ५३; जि० ५, पृ० ५३८; जि० ६, पृ० ४३३-३४
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३८७-३८८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३३-४३४
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३४; जि० ४, पृ० २९; जि० ६, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २०४; जि० ४, पृ० २२८; जि० ६, पृ० ३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आंखें निकलवा लेना :

चोरों की आँखें भी निकलवा दी जाती थीं।[1]

हाथी के पैरों तले रौंदना :

गम्भीर अपराध करने वालों को हाथों के पैरों से भी रौंदवाया जाता था[2]।

चण्डाल दण्ड :

कभी-कभी अपराधियों को चाण्डाल बनाकर चाण्डालों की बस्ती में भी भेज दिया जाता था।[3]

दास दण्ड :

अपराधियों को दास भी बना लिया जाता था।[4]

इन उपर्युक्त दण्डों के अतिरिक्त और भी दण्ड दिये जाते थे, जो निम्न हैं—बेड़ी[5], नजरबन्द[6], कुएँ में डालना[7], जंजीरों से पीटना[8], डण्डों से पीटना[9] दाग देना[10], मूसल से प्रहार करना[11], पैरों से पीटना[12], छींके में सिर नीचे और

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१९

२. ,, ,, १, पृ० २००; ,, ,, १, पृ० ३०८

३. ,, ,, ६, पृ० १५६; ,, ,, ६, पृ० १८८

४. ,, ,, ६, पृ० १३५; ,, ,, ६, पृ० ५५, १५९

५. ,, ,, १, पृ० ३९४; जि० २, पृ० १३९; जि० ५, पृ० ४४४; जि० ६, पृ० १३८-१४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५७, जि० २, पृ० ३२६; जि० ५, पृ० ५२२; जि० ६, पृ० १५९, १६२

६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४५८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४९९

७. ,, ५, पृ० २३१; ,, ५, पृ० ३१६

८. ,, २, पृ० १३९; जि० ६, पृ० १२२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३२६; जि० ६, पृ० १२६-२७

९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४४२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५२०

१०. ,, ,, १, पृ० ४५९; ,, ,, २, पृ० ९२

११. ,, ,, २, पृ० १२०; ,, ,, २, पृ० ३०४

१२. ,, ,, १, पृ० २००, ३७६; जि० ६, पृ० ३९५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०८, ५३३, जि० ६, पृ० ४४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पैर ऊपर कर लटकाना[१], विष बुझे तीर से विंधवाना[२], रस्सी से पीटना[३], चींटियों से कटवाना[४], बेतों से पीटना[५], मक्खियों से कटवाना[६] आदि।

घातक या जल्लाद

मृत्यु दण्ड या अंगभंग दण्ड देने के लिए घातक या जल्लाद नियुक्त होते थे। वे पूरी तैयारी के साथ आते थे और अपने हाथ में कुल्हाड़ा और कब्जेदार चाबुक, विशेष पीला वस्त्र तथा लाल माला धारण किये रहते थे।[७] कन्धों पर फरसा, सिर के नीचे रखने के बर्तन तथा हाँथ-पाँव जकड़ने के दण्डों के साथ आते थे।[८]

दण्ड मुक्ति तथा न्यूनता :

इस प्रकार से हम देखते हैं कि कड़ी सजाएँ दी जाती थीं, परन्तु राजा इन सजाओं को कम भी कर देते थे। राजा कैदियों के दण्ड में कमी या बढ़ोत्तरी भी कर सकते थे। राजा अभियुक्तों को निर्दोष जानकर उन्हें बन्धन मुक्त कर देता था।[९] दण्ड मुक्ति या न्यूनता विशेष अवसरों पर ही दी जाती थी। जनसन्ध जातक से ज्ञात होता है कि एक राजा ने अपने पुत्र के तक्षशिला से शिक्षा सम्पन्न कर वापस आने पर प्रसन्न हो सभी बन्दियों को मुक्त कर दिया था।[१०] कुस जातक में भी ओक्काक राजा ने कुसावती नगरी में पहुँचने पर नगर को अलंकृत कराकर सभी को बन्धन से मुक्त किया था।[११] अन्य जातकों में भी इसकी पुष्टि होती है।[१२]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १८३
२. „ „ ५, पृ० ३९-४०; „ „ ३, पृ० १८३
३. „ „ १, पृ० ४०२-४०३; „ „ १, पृ० ५६८
४. „ „ ४, पृ० ३७५; „ „ ४, पृ० ५८३
५. „ „ २, पृ० १२३; „ „ २, पृ० ३०६
६. „ „ ६, पृ० ८; „ „ ६, पृ० ७
७. „ „ ३, पृ० ४१; „ „ ३, पृ० २१०
८. „ „ ३, पृ० १७८-१७९; „ „ ३, पृ० ३४०
९. „ „ ६, पृ० १५६, ४२७; „ „ ६, पृ० १८८, ४६८
१०. „ „ ४, पृ० १७६; „ „ ४, पृ० ३७६
११. „ „ ५, पृ० २८५; „ „ ५, पृ० ३६७
१२. „ „ ६, पृ० १५६, ३२७, ५९२ जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १९०, ३६८, ६५५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस प्रकार जातक कथाओं से न्याय और दण्ड व्यवस्था पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है। दण्ड कठोर थे। अंगभंग और मृत्यु दण्ड भी दिये जाते थे। न्याय का सर्वोच्च अधिकारी स्वयं राजा होता था, जो किसी भी न्यायालय में अव्यवहारिकता की सूचना पाकर सीधे उस न्यायालय में पहुँचता था और सारी कार्यवाही को अपने हाथ में ले लेता था। विशेष अवसरों पर दण्ड मुक्ति और अपराधियों के दण्ड में न्यूनता भी की जाती थी। निस्सन्देह जातककालीन न्याय और दण्ड व्यवस्था उच्चस्तरीय थी जो इस समय भी उपयोगी और अनुकरणीय है।

राजमुद्रा

आधुनिक युग की भाँति जातक युग में प्रशासनिक व्यवस्था में राजमुद्रा का विशेष महत्त्व था। पुण्य नदी जातक से राजमुद्रा के महत्व और प्रयोग का ज्ञान प्राप्त होता है।[1] सम्राट् अशोक की रानी तिष्यरक्षिता द्वारा राजमुद्रा (मुहर) कर दुरुपयोग करके राजकुमार कुणाल के नेत्र निकलवा लिये थे। दशरथ जातक में भी राजमुद्रा का उल्लेख प्राप्त होता है।[2] महावस्तु से यह पता चलता है कि राजमुद्रा को गर्म करके मुद्रांकित किया जाता था।[3] पदुमावती जातक से ज्ञात होता है कि कम्पिल के राजा की राजमुद्रा का दुरुपयोग करके राजकुमार की विमाता ने उस नवजात शिशु को गंगा में फेंक दिया था।

अधिकारी वर्ग

जातक साहित्य में शासन की देख-रेख के लिए यत्र-तत्र नाना प्रकार के अधिकारियों का उल्लेख मिलता है, परन्तु उनके कार्यों का स्पष्ट विवरण नहीं मिलता है।

अस्तु यहाँ उनका उल्लेख तालिका रूप में हो किया गया है :—

अधिकारक[4]—मूल्य निश्चित करने वाले।

गणक[5]—अधिकारी।

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६७
२. ,, ,, ४, पृ० १२४; ,, ,, ४, पृ० ३२६
३. महावस्तु जि० ३/१६३/९-१०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०७
५. ,, ,, ४, पृ० २८९; ,, ,, ४, पृ० ४९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दण्डधारी[१]।

दिशाप्रदर्शक[२]।

द्रोणमापक[३]—कर रूप में प्राप्त अन्नों को तौलते थे।

दोवारिक[४]—नगर द्वार को बन्द करते थे। नगर द्वार की सुरक्षा के साथ-साथ राजा के पास सूचना भी भेजते थे।

धर्मघोषक[५]—घोषणा करते थे।

धनुर्धारी[६]--हिंस्र पशुओं के मारने के लिए नियुक्त होते थे।

नगरगुप्तिक[७]--रात्रि के समय नगर कोतवाल पहरा देते थे तथा चोरों और डाकुओं को पकड़कर राजा के पास ले जाते थे। मौर्य युग में 'यामचेरी' का उल्लेख मिलता है।

नियामक[८]—नावनिर्देशक (जहाज का कप्तान)

नैमित्तिक[९]—ज्योतिष विद्वान्

परिचारक[१०]

भण्डागारिक[११]—कोषाध्यक्ष होता था।

मूल्यनिर्धारक[१२]—राजा के हाथी, रथ, अश्व तथा मुक्तामणि आदि का मूल्य निर्धारण करते थे।

रज्जुग्रहण[१३]—भूमि की माप करते थे।

---

१. जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४८७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १४६
२. ,, ,, १, पृ० १०७; ,, ,, १, पृ० १८७
३. ,, ,, २, पृ० ३६६; ,, ,, ३, पृ० ९०
४. ,, ,, २, पृ० १५; ,, ,, २, पृ० १८०
५. ,, ,, ४, पृ० २६४; ,, ,, ४, पृ० ४६७
६. ,, ,, २, पृ० ९१; जि० ५, पृ० १२७-१३०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६९; जि० ५, पृ० २०९-२१३
७. ,, ,, ३, पृ० ५९; ,, ,, ३, पृ० ३२७
८. ,, ,, ४, पृ० १३८; ,, ,, ४, पृ० ३३९
९. ,, ,, ४, पृ० १२४; ,, ,, ४, पृ० ३२६
१०. ,, ,, ४, पृ० १३५; ,, ,, ४, पृ० ३३५
११. ,, ,, ५, पृ० १२०; ,, ,, ४, पृ० २३८-२४२, जि० ५, पृ० २०२
१२. ,, ,, ४, पृ० १३७; ,, ,, ४, पृ० ३३९
१३. ,, ,, २, पृ० ३६६; ,, ,, ३, पृ० ९०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रथिका[1]

राजपुरुष[2]

राज्याधिकारी[3]—देश की सत्ता का भार होता था।

विनिश्चय अमात्य[4]—मुकदमों का फैसला करने वाले, न्याय प्रबन्ध के लिए नियुक्त होते थे।

शस्त्रधारी[5]

इस प्रकार संक्षेप में यहाँ पर राज्य के विभिन्न अंगों—शासन पद्धति, सुरक्षा, न्याय, दण्ड व्यवस्था का पूर्ण रूप से सामयिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है जिसकी पुष्टि तत्कालीन अन्य ग्रन्थों और पुरातात्विक साक्ष्यों से सिद्ध होती है।

---

१. जा० आ० रो० जि० ५, पृ० ३१०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३९२
२. ,, ,, ३, पृ० ३४; ,, ,, १, पृ० ३०८, ५६१; जि० २, पृ० ३०६; जि० ३, पृ० २०४; जि० ४, पृ० २२८, ४२८; जि० ५, पृ० ५२०; जि० ६, पृ० १५४, ३३५, ४४१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७; जि० ३, पृ० ११६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६३, जि० ३, पृ० २८१
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३७७
५. ,, ,, ३, पृ० ४८७; ,, ,, ४, पृ० १४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पंचम अध्याय

सामाजिक दशा

जातकों के अध्ययन से तत्कालीन सामाजिक दशा पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। इससे पता चलता है कि उस समय का पारिवारिक जीवन सुखी और आदर्शपूर्ण था।[1]

जातकों में हम परम्परागत समाज को परिवर्तित रूप में पाते हैं। यहाँ क्षत्रिय वर्ण ब्राह्मण वर्ण से ऊँचा माना गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उच्चता के लिए काफी समय से वैचारिक संघर्ष चलता रहा। जातककालीन भारतीय समाज में वर्ण-व्यवस्था का पूर्ण प्राधान्य था। ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों एवं शूद्रों के पृथक्-पृथक् वर्ण भगवान् बुद्ध के आविर्भाव के पहले से ही विद्यमान थे। 'जाति', 'कुल' और 'पण्ण' का उल्लेख जातकों में मिलता है।[2]

यहाँ जातकों से प्राप्त सामग्री के आधार पर वर्णाश्रम, व्यवस्था, संस्कार, स्त्रियों की दशा, भोजन, वस्त्र, आभूषण, आमोद-प्रमोद के साधन आदि के विस्तृत वर्णन के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक दोषों पर भी प्रकाश डाला गया है।

वर्णव्यवस्था और बौद्ध दृष्टिकोण :

यद्यपि जातकों में भी कहीं-कहीं पूर्व प्रचलित चार वर्णों का उल्लेख मिलता है[3] परन्तु उनका अधिकांशतः उनके साथ चाण्डाल और पुक्कुस आदि भी उल्लिखित मिलते हैं।[4] इन वर्ण और जातियों के नाम पर अलग-अलग ग्राम यथा—

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०७-३०८

२. रिचर्ड फिक, द सोशल आर्गेनाइजेशन इन नार्थ ईस्ट इण्डिया, पृ० ३४; जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५५, ३६९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०५, ५२३

३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३३

४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १९४; जि० ४ पृ० २०५, ३०३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३५७; जि० ४; पृ० ४०४, ५०७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण ग्राम[1], निषाद-ग्राम[2], चाण्डाल-ग्राम[3] आदि भी बसने लगे थे।

जातकों से एक सामाजिक क्रान्ति का आभास मिलता है। प्राचीन काल के वर्ण व्यवस्था और जाति-पांति से उत्पन्न ऊँच-नीच आदि की भावना के विरोध में एक क्रान्ति का दर्शन होता है। सर जदुनाथ सरकार का यह मत है कि विदेह के राजा जनक का दरबार इस क्रान्ति का केन्द्र था। जहाँ से शिक्षित होकर क्षत्रिय राजकुमार बहुजनहित, बहुजन कल्याण के लिए घर-परिवार त्याग कर निकल पड़े थे।[4]

इस सामाजिक क्रान्ति का नेतृत्व याज्ञवल्क्य कर रहे थे। महामानव बुद्ध और महावीर स्वामी दोनों ने ही मानवीय समता का आदर्श लेकर अपना-अपना धर्म चलाया था। भगवान् बुद्ध का कथन था कि संसार में एक ही मानव जाति है उसमें किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं है। यद्यपि पूर्व जातक काल से प्रचलित चार वर्णों[5] की उत्पत्ति "पुरुषसूक्त" से बतलायी गई है जिसमें इन चतुर्थ वर्णों को विराट् पुरुष के चार भागों मुख, बाहु, उरु एवं पैरों से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र उत्पन्न बतलाये गये हैं।[6] और यह क्रम ही समाज में उच्चता का क्रम मान लिया गया। यह वर्ण-व्यवस्था इतनी जटिल हो गई कि दूसरे वर्ण के साथ निषिद्ध मान लिया गया था। जिससे समाज अनेक छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त हो गया था। एक वर्ण दूसरे को नीचा मानने में ही अपना गौरव समझता था। भगवान् बुद्ध ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि मानव की एक ही जाति है। पशु-पक्षियों के समान जातिगत लक्षणों का निर्मित मानव जातियों में सर्वथा अभाव है। "इसीलिए बौद्ध साहित्य एक ही जाति—मनुष्य जाति अथवा मनुष्य वर्ण का बार-बार उल्लेख करता है।"[7]

इसी मनुष्य जाति की अवतारणा उन्होंने अपने भिक्षु संघ में की—

चूँकि चारों वर्ण और जातियाँ भगवान् बुद्ध के आविर्भाव के बहुत पहले ही

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९३; जि० ४, पृ० २७६
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४१३; जि० ६, पृ० ७१
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २००, ३९०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९९, ५९८
४. इंडिया थ्रो दि एजेस, पृ० १९
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३३
६. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यःकृतः।
उरुतदस्य यद्वैश्यः पदभ्यांशूद्रोऽजायत्॥ ऋग्वेद १०/१०/९०
७. अवदान० जि० १/३८४/९; जि० २/१५/७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समाज में प्रवेश कर चुकी थी और वर्ण क्रम जटिल बन गया था परन्तु उपनिषद् कालीन ज्ञानक्रान्ति के कारण इसमें कुछ शिथिलता आ गई।

भगवान् बुद्ध के समय तक चार वर्णों[१] के साथ-साथ चण्डाल और पुक्कस वर्ण भी बन गये थे, जिनका उल्लेख पालि साहित्य में मिलता है।[२] यही नहीं वर्णों का पूर्व प्रचलित क्रम ब्राह्मण से न प्रारम्भ होकर क्षत्रिय से प्रारम्भ होता है। यथा—"खात्तिया ब्राह्मण वेस्सा सुद्धा चण्डाल पुक्कुसा।"[३]

यही नहीं उपर्युक्त वर्णों के गुण-दोषों आदि पर भी जातक प्रकाश डालते हैं। यहाँ संक्षेप में इन वर्णों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

क्षत्रिय :

जातक युग में क्षत्रियों का समाज में सर्वोच्च स्थान था। वर्ण क्रम में उन्हें ब्राह्मण से पहले रखा गया। क्षत्रियों का रंग सुवर्ण के समान, वक्ष स्थल सिंह के समान तथा भुजाएँ लम्बी होती थीं।[४] यही नहीं इस युग में ब्राह्मणों को क्षत्रिय हीन मानते थे। सोनक जातक में राजा अरिन्दम, पुरोहित के पुत्र सोनक को हीन जाति का और स्वयं अपने को श्रेष्ठ क्षत्रिय वंश उत्पन्न कहता है।[५] गंगमाल जातक में भी क्षत्रिय वंश के उच्च प्रतिष्ठा का उल्लेख हुआ है।[६] कुक्कुर जातक में क्षत्रिय के लिए माता और पिता दोनों पक्षों का क्षत्रिय होना अनिवार्य बतलाया गया है।[७] जातक निदान कथा में यह कहा गया है कि भगवान् बुद्ध ने भी उस समय सर्वोच्च क्षत्रिय वर्ण में ही जन्म लिया था।[८] जातक साहित्य से यह स्पष्ट है कि क्षत्रिय ब्राह्मण वर्ण से किसी तरह में भी हीन नहीं थे। ज्ञान के क्षेत्र में भी हम उन्हें अग्रसर पाते हैं। वे ब्राह्मण कुमारों के साथ बैठकर विद्या अध्ययन करते थे।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३३
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १९४; जि० ४, पृ० २०५, ३०३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३५७
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२६; जि० ३, पृ० १९४
४. सौ० १/१९
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २४७; जा० अ० हि० जि० ५; पृ० ३३१
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ११२
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७८
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११६
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२२, १५८ जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २८७, ३२१, जि० ६, पृ० ३३१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षत्रियों का प्रमुख कार्य राजकार्य था। वे प्रमुखत: युद्धजीवी थे और युद्ध करना उनका सहज कर्म था।[1] इस युद्ध कर्म के अलावा जातकों में और भी अनेक कर्मों को करते हुए क्षत्रियों को देखते हैं। सरभंग जातक में एक क्षत्रिय धनुर्धारी के रूप में वर्णित है।[2] इसी प्रकार दूसरे जातक में क्षत्रियों को वाणिज्य या व्यापार करते हुए पाते हैं। कुस जातक से ज्ञात होता है कि वे कुम्भकार वेणुकार रसोइया और मालाकार के कार्य भी करते थे।[3] वाणिज्य में भी क्षत्रिय की अभिरुचि दिखाई पड़ती है। असदि्दस जातक में राजा ने राजकीय कार्यों को त्यागकर वणिक् वृत्ति अपनायी थी।[4] सतधम्म जातक में इसी प्रकार एक राजकुमार एक वणिक् के साथ अपना जीवकोपार्जन करने लगा था।[5]

ब्राह्मण :

जातककालीन वर्ण क्रम में ब्राह्मण का दूसरा स्थान था। यद्यपि प्रचलित प्राचीन परम्परा के प्रभाव को कहीं-कहीं जातकों में देखते हैं जहाँ उन्हें महाब्रह्मा के पुत्र कहा गया है।[6] उन्हें यज्ञों और वेदों से श्रेष्ठ बतलाया गया है।[7] भूरिदत्त जातक में ब्राह्मणों के लिए अध्ययन, क्षत्रियों के लिए राजकर्म, वैश्यों के लिए कृषि तथा शूद्रों के लिए सेवा करना प्रमुख कार्य बतलाया गया है।[8]

अध्ययन के अतिरिक्त यज्ञ करना भी ब्राह्मणों का प्रमुख कार्य था।[9] यज्ञों में कुशल ब्राह्मणों को 'आचारिय' कहा गया है।[10] राजा ऐसे ब्राह्मणों को अपना शुभचिन्तक समझते थे।[11] प्राचीनकाल में ब्राह्मण आचरणशील होते थे जिन्हें

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९; जि० २, पृ० १२१; जि० ३, पृ० ९३, ४२२
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२७-१२८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०९-२१०
३. जा० अ० रो० जि० ५, २९०-२९३
४. ,, ,, २, पृ० ८७
५. ,, ,, २, पृ० ८४
६. ,, ,, ६, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३६
७. ,, ,, ६, पृ० २००; ,, ,, ६, पृ० २३७
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०१, २०७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३७, २४५
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४३; जि० २, पृ० २२१; जि० ३, पृ० ४५; जि० ४, पृ० ७९, ३३५
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३७६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९७
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८९; जि० २, पृ० २८२; जि० ३, पृ० ३१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

"धम्मिका" और धार्मिक कहा गया है।[१] उन्हें भोजन के पश्चात् दान भी दिया जाता था।[२] जातक साहित्य में ब्राह्मणों की यह प्रतिष्ठा का कारण पूर्व प्रचलित जन्म न मानकर कर्म ही माना गया है। भगवान् बुद्ध स्वयं भी ब्राह्मण या विशाल जन्म के आधार पर न मानकर कर्म के आधार पर मानते थे।

इस समय भी परम्परागत चतुर वर्ण व्यवस्था में विश्वास करने वाले कट्टर ब्राह्मणों का वर्णन मिलता है। जो केवल दूसरे वर्ण के साथ खाने-पीने से ही अपने को धर्मच्युत मान लेते थे। मातंग जातक से पता चलता है कि सोलह हजार ब्राह्मण केवल चाण्डाल का झूठा भात खाने के कारण जाति-च्युत होकर अब्राह्मण हो गये थे।[3] सतधम्म जातक से यह पता चलता है कि एक माणवक ने चाण्डाल का दिया हुआ भात खा लिया था जिसके प्रायश्चित करने के लिए उसने अपनी जान दे दी।[४]

जातकों के युग में ब्राह्मणों का यह पराभव उनके कर्मों के कारण ही हुआ था। वे कर्तव्य पद से च्युत हो गये थे। उन्होंने हीन कर्मों को करना प्रारम्भ कर दिया था। उन्हें गोघातक और लुब्धक भी कहा गया है।[५] दस ब्राह्मण जातक में ब्राह्मणों को चिकित्सक, परिचारक, ग्राहक (कर उगाहने वाले), भीख मांगने वाले, व्यापारी, अम्बष्ट (खेती करने वाले), पुरोहित आदि के रूप में पाते हैं।[६]

ब्राह्मणों के विभिन्न कर्मों के आधार पर अनेक कोटियाँ बन गयी थीं जिनका स्पष्ट उल्लेख अंगुत्तर निकाय में मिलता है। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि ब्राह्मण ब्रह्मसम, देवसम, समर्याद, सभिन्नमर्याद और ब्राह्मण-चाण्डाल पाँच प्रकार के ब्राह्मण उस समय विद्वान् थे।[७] ब्रह्म सम ब्राह्मण विद्वान् होते थे

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८७, १८८; चतुर्थ अशोक-शिलालेख
२. ,, ,, १, पृ० ३१८; जि० २, पृ० २३९; जि० ५, पृ० २४७
३. ,, ,, ४, पृ० ३०३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९५-५९६
४. ,, ,, २, पृ० ८३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६०
५. ,, ,, २, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९८
६. ,, ,, ४, पृ० ३६१-३६५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५७०-५७४
७. दृष्टव्य डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० सा० की सा० भू० पृ० ७५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और तपोमय जीवन बिताते थे। वे प्रायः आचार्य होते थे और जीवन भर अविवाहित रहते थे। देवसम ब्राह्मण ब्रह्मचर्याश्रम के पश्चात् विवाह करते थे। समपार्द ब्राह्मण गृहस्थाश्रम के पश्चाद् वानप्रस्थाश्रम नहीं अपनाते थे। वे जीवन भर गृहस्थ ही रह जाते थे। समित्रपार्द किसी वर्ण की कन्या से विवाह करके भोग-विलास का जीवन बिताते थे। ब्राह्मण-चाण्डाल से कोई काम बचता नहीं था वे सभी वर्णों के अच्छे-बुरे सभी काम कर लेते थे[1]। फिक महोदय ने ब्राह्मणों की दो कोटियाँ बतलाई हैं। प्रथम वे ब्राह्मण जो पुराने विचारों को समाज के चाल चलन में लाते थे। द्वितीय कोटि में वे ब्राह्मण आते थे जो साधारण रूप से अपना जीवन व्यतीत करते थे।[2] वेदों का अध्ययन करते थे। तत्पश्चात् वे अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करते थे।

जातकों के विभिन्न कथानकों में इन बहुकर्म ब्राह्मणों के अनेकानेक उल्लेख प्राप्त होते हैं। सरभंग जातक के अनुसार एक पुरोहित पुत्र को धनुर्विद्या में पारंगत होने के कारण काशी नरेश ने अपना सेनापति नियुक्त किया था।[3] महा-सुतसोम जातक में ब्राह्मण-वणिक् का वर्णन है जो अपने यहाँ क्रय-विक्रय के लिए प्रख्यात था।[4] -चुल्लनन्दिय जातक के अनुसार तक्षशिला में अध्ययन करने के पश्चात् एक ब्राह्मण मृगया से जीविका चलाता था।[5] उरग जातक में एक ब्राह्मण पुत्र को कृषि कार्य में संलग्न प्रदर्शित किया गया है।[6] सोमदत्त जातक में भी इसकी पुष्टि होती है।[7] फन्दक जातक में एक ब्राह्मण बड्ढकि (बढ़ई) की कथा वर्णित है।[8] अन्य जातकों में ब्राह्मणों को चिकित्सक के रूप में वर्णित पाते हैं।[9] कई जातकों में ब्राह्मण लुब्धक की भाँति प्रदर्शित किये गये हैं।[10]

---

१. दृष्टव्य डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० सा० की सा० भू० पृ० ७५-७६
२. मेहता, प्री० बु० इ० पृ० २४६-२४७; रिचर्ड फिक, द सोशल आर्गेनाइ-जेशन इन नार्थ ईस्ट इण्डिया, पृ० १९२
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२७-३०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०९-२१३
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४५६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५४८-५४९
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९८
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १६३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२५
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १६५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३५६
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २०७
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१३; जि० ६, पृ० १८१
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्य जातकों में ब्राह्मणों को मन्त्रों, जादू, नक्षत्र-योग और यक्षपूजा में दक्ष देखते हैं ।[१]

वैश्य :

इसे तृतीय वर्ण कहा गया है । इसके लिए वेस्स, वेश्यत, गहपति, सेट्ठि, कुटुम्बिक इत्यादि संज्ञाएँ प्रदान की गई हैं ।[२] वैश्यों का प्रमुख व्यवसाय वाणिज्य था और लोग वाणिज्य के साथ ही साथ कृषि कार्य भी करते थे ।[३] जातकों से विदित होता है कि खत्तिय ब्राह्मण, वैश्य, शुद्ध, चाण्डाल और पुक्कुस सब समान हैं और सदाचार से सभी मोक्षाधिकारी हो सकते हैं ।[४]

जातक साहित्य में कई स्थानों पर गहपति[५] शब्द का उल्लेख हुआ है तथा इसे सदैव इस शब्द का व्यवहार वैश्य गृहपति के लिए ही किया हैं । तित्तिर जातक के अनुसार महात्मा बुद्ध भिक्षुओं से प्रश्न करते हैं कि कौन व्यक्ति सबसे अधिक सामान्य है । इसके उत्तर में कोई खत्तिय और ब्राह्मण का कोई गृहपति का नाम लेता है ।[६] महापरिनिब्बान सुत्त में खत्तियपण्डिता, ब्राह्मणपण्डिता और गृहपति पण्डिता का उल्लेख मिलता है ।[७] संयुक्त-निकाय में खत्तिय महासाल, ब्राह्मण महासाल और गृहपति महासाल का उल्लेख है ।[८] इन उदाहरणों से यह विदित होता है कि गहपति तृतीय वर्ण वैश्य का समानार्थक है ।[९] जातक साहित्य में गहपति वर्ग धनाढ्य था । राजकीय कोष का अधिकांश भाग इसी के अन्तर्गत था । पंचगुरु जातक के अनुसार राज के आगमन पर राज सभा में अमात्यों, ब्राह्मणों और राजकुमारों के साथ-साथ गृहपति भी रहते थे । राज्याभिषेक के समय में अमात्यों, ब्राह्मणों, नागरिकों आदि के साथ उपस्थित होते थे ।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५७, ३७३, ४५५; जि० २, पृ० २४७, जि० ४, पृ० ६८, ३३१
२. डॉ० मदनसिंह बु० का० स० और ध० पृ० २२
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १६९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३६९
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३०३
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३४; जि० ५, पृ० ३८२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३१
७. महापरिनिब्बानसुत्त (हिन्दी-अनुवाद) पृ० ३०,१४५
८. स० नि० पा० जि० १, पृ० ७१
९. डॉ० विमल चन्द पाण्डेय, भा० का सा० इ० पृ० ७६
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४७०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातकों से विदित होता है कि गहपति का विवाह भी स्वजाति में ही सम्पन्न होता था।[1] कई स्थानों पर गृहपति के स्थान पर 'कुटुम्बिक' शब्द का प्रयोग हुआ है। सतपत जातक में एक कुटुम्बिक धन का लेन-देन करते हुए प्रदर्शित किया गया है।[2] सूद में रुपये लगाना इत्यादि व्यवसाय करते लेकिन जो कुटुम्बिक ग्रामवासी थे वे सम्पन्न किसान (कृषक) हुआ करते थे।[3]

जातक कथाओं में सेट्ठि शब्द का प्रयोग बहुलता से हुआ है। चित्तसम्भूत जातक में सेट्ठि की पुत्री को गहपति की पुत्री भी कहा गया है।[4] इससे यह सिद्ध होता है कि सेट्ठि धनिक गहपति का ही दूसरा नाम था।[5] जातक साहित्य से विदित होता है कि अनेक वर्गों के हितों की रक्षा तथा व्यापारिक एवं व्यावसायिक विषयों पर राजा को परामर्श देने के हेतु एक सेट्ठि राज-सभा में उपस्थित रहता था।[6] महाजनक जातक से भी यही सिद्ध होता है।[7]

जातक साहित्य में वैश्यों का प्रमुख व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन था—"वेस्सा कसिं।"[8] सुच्चज जातक के अनुसार कुटुम्बिक ऋणरूप में दिये गये अपने धन की प्राप्ति के हेतु श्रावस्ती से अन्य स्थानों को गया था।[9] सालक जातक में भी धान्य-विक्रय द्वारा अपना जीवकोपार्जन करते थे।[10] बावेरू जातक में अनेक व्यापारी सम्मिलित रूप से व्यापार करते थे।[11] चुल्लसेट्ठि जातक में भी काशी के १०० व्यापारियों का उल्लेख मिलता है।[12] कूटवाणिज जातक में

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२१; जा० अ० हि० जि० २, ३०५
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १०८
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९६
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४०८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०२
६. जा० अ० रो० ि० १, पृ० २६९, ३४९; जि० ३, पृ० ४१५; जि० ४, पृ० ६३
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ६४
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०७
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ६६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २३३, २३४
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २६७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४७७
११. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२६
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रावस्ती में दो वणिक साझे से व्यापार करते थे।[१] पुण्णपाति जातक में काशी निवासी एक सेट्ठि व्यापारी का उल्लेख मिलता है।[२] सुतनु जातक में एक गहपति अपने तथा अपनी माता के भरण-पोषण के हेतु श्रमजीवी 'मतुक अथवा कम्भकार' का कार्य करता था।[३] इसी प्रकार के उल्लेख अन्य जातकों में भी मिलता है।[४] कई स्थानों पर गहपति 'पण्णज' के रूप में प्रदर्शित किये गये हैं।[५]

समस्त जातक साहित्य में एक भी उदाहरण ऐसा नहीं मिलता जिसमें किसी वैश्य का वर्ण विरुद्ध व्यवसाय करने में जात्यपकर्ष हुआ है। सेट्ठि वर्ग शिक्षा प्राप्ति के लिए विशेष उत्सुक था। अट्ठान जातक में एक अध्यापक का उल्लेख है जो एक राजकुमार तथा एक सेट्ठि कुमार का अध्यापन एक साथ करता था।[६] निग्रोध जातक में तक्षशिला में दो सेट्ठि कुमारों का उल्लेख है जो अपने अध्यापक को दो हजार पारिश्रमिक देते थे।[७]

शूद्र :

जातक साहित्य में अनेक उपजातियों को शूद्र माना गया है। शूद्र विशेषकर सेवक और मजदूर के रूप में कार्य करते थे। इससे यह प्रतीत होता है कि अधिकांशतः शूद्रों को कृषि से सम्बद्ध कार्यों में नियुक्त किया जाता था। सुतनु जातक के अनुसार मजदूर की मजदूरी (कर्मकर) प्रतिदिन डेढ़ मासक थी।[८] मनुस्मृति के अनुसार शूद्रों का एक भाग कर्म निरालस भाव से द्विजवर्ग की सेवा करना बतलाया गया है।[९] अश्वघोष ने इस प्रवृत्ति का विरोध किया है।[१०] जातक साहित्य में इस वर्ग को शूद्र तथा "हीन-जाति" का बताया है। इनका कर्तव्य

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०४
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६९-२७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३९६
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३२५
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९९
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४११; जा० अ० हि० जि० पृ० ३०
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७५
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३८
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३२६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४७५
९. मनु० १/९१
१०. बु० च० २३/५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था तीनों वर्णों की सेवा करना ।[१] जूते बनाना तथा अन्य शिल्प आदि के बनाने का व्यवसाय शूद्रों के द्वारा ही होता था।

पुक्कस :

बासी (सड़े) फूलों के फेंकने वाले पुक्कस कहलाते थे ।[२] दिव्यावदान के अनुसार पुक्कसों का सम्बन्ध पुक्कस लोगों के साथ ही होता (पुक्कस सह पुक्कसैः) था ।[३] महावस्तु के अनुसार इन लोगों के लिए द्विजाति से बातचीत करने का निषेध था ।[४]

चाण्डाल :

शूद्रों के पश्चात् ही चाण्डाल लोगों का समाज में स्थान निर्धारित था ।[५] सिगाल जातक में चाण्डाल को सबसे निचले स्तर का निकृष्ट बताया गया है ।[६] ये लोग भीख माँगकर अपनी जीविका चलाते थे । इनका मुख्य कार्य अपराधियों को दण्ड देना[७] तथा मुर्दों को ढोना होता था, बदले में पारिश्रमिक लेना होता था ।[८] सेतुकेतु जातक के अनुसार शूद्र और चाण्डालों में से कुछ लोक दार्शनिक और महान विचारक वाले भी थे ।[९] मातंग जातक के अनुसार एक सेट्ठि कन्या का विवाह चाण्डाल के साथ हुआ था ।[१०] परन्तु इतना होते हुए भी उन्हें निम्न जाति का ही कहा गया है । चित्तसम्भूत जातक से पता चलता है कि भ्रमण के लिए जाती हुई दो दुष्ट मङ्गलिकायें मार्ग में चाण्डालों को देखती हैं तथा उनके दर्शन को अशुभ मानकर तत्काल ही सुगन्धित जल से नेत्र प्रक्षालन करती हैं

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३७
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १९४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३५७
३. दिव्या ३२१/६
४. महावस्तु जि० २/४८७।२-३
५. दिव्या० ३२८/४८७/२-३
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १६८
७. दिव्या० २६५/१३-१४
८. महावस्तु जि० २/१७४|३-४
९. सेतुकेतु जातक सं० ३७७
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८४-५८५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और घर वापस लौट जाती हैं।[1] इसी प्रकार के उदाहरण अन्य जातकों में भी मिलते हैं।[2]

आश्रम

जातक युग में आश्रम का महत्वपूर्ण स्थान था[3]। युवावस्था के पश्चात् बुद्धिमान मनुष्य विषय-भोग की सारहीनता का अनुभव करके गृहस्थाश्रम को त्यागकर जीवन के वास्तविक उद्देश्य की खोज में वन की ओर चले जाते थे[4]। तपस्वी लोग हिमालय में आश्रम बनाकर रहते थे।[5] हिमालय के इन आश्रमों में ५०० तपस्वी रहते थे[6]। सुमेध पण्डित के गृह त्यागने पर देवताओं के राजा शक्र (इन्द्र) ने विश्वकर्मा को सम्बोधित कर कहा था कि एक निवास स्थान का निर्माण करो। यह निर्मित आश्रम रमणीय, सुरक्षित, पर्णकुटी और मनोरम था, टहलने के चबूतरे आदि से पूर्ण था।[7] मानव जीवन को चार भागों में बाँटकर प्रत्येक भाग के लिए क्रमशः पच्चीस-पच्चीस वर्ष का समय निर्धारित था। चार आश्रम बनाए गए थे। (१) ब्रह्मचर्य (२) गृहस्थ (३) वानप्रस्थ और (४) संन्यास। जातकों में इन पूर्व प्रचलित चारों आश्रमों का उल्लेख तो प्राप्त होता ही है साथ ही इन आश्रमों के विषय में बौद्ध दृष्टिकोण का भी वर्णन मिलता है। बौद्ध धर्म इन आश्रमों के लिए क्रम और आयु के सीमा के बन्धन को स्वीकार नहीं करता। यहाँ पर आश्रमों का वर्णन करते हुए बौद्ध दृष्टिकोण को स्पष्ट किया गया है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९०-३९१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९८-५९९
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८४
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७-८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६२-६४
४. ,, ,, १, पृ० १४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३०
५. ,, ,, २, पृ० ४४७; जि० ३, पृ० ३७, ११९, २२८-२९, ३०१; जि० ५, पृ० ३१३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १६८, २०७, २८४, ३०६, ३८९, ४५१; जि० ५, पृ० ३९५
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१७, ४५०; जि० ३, पृ० ११५, १४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५८; जि० २, पृ० ८२; जि० ३, पृ० २८०, ३०६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्रह्मचर्याश्रम :

जीवन का यह पहला (२५ वर्ष तक) आश्रम था जिससे मानव जीवन का प्रारम्भ माना गया था इस आश्रम में मनुष्य इन्द्रिय संयम का अभ्यास करते हुए विद्या अध्ययन करता था[१]। विद्याध्ययन के लिए ब्रह्मचारी गुरुकुल में या गुरु आश्रमों में जाते थे। सांसारिक कोलाहल से दूर गुरु के पास रहकर वेदाध्ययन करता था और अक्षरशः उसकी आज्ञा का पालन करता था। आश्रमों में आचार्य एक साथ ५०० शिष्यों को शिक्षा देते थे[२]। 'धम्मान्तेवासी' अर्थात् शुल्क मुक्त विद्यार्थी आचार्य के घर के सभी कार्य करते थे। दूसरे विद्यार्थी शुल्क देकर आचार्य की सेवा करते थे। निःशुल्क ब्रह्मचारियों को रात में पढ़ाया जाता था[३]। ब्रह्मचारी की वेषभूषा भी भिन्न प्रकार होती थी। ब्रह्मचर्य के पालन से ही अर्हत्व पद का साक्षात्कार होता था[४] तथागत बुद्ध ने भी पहली बार गुरु विश्वामित्र से विद्याध्ययन करते हुए ब्रह्मचर्याश्रम का पालन किया था।[५] बालक अपनी योग्यता के कारण एक ही पाठ को सीखने में कम से कम या अधिक समय लेते थे, इसी कारण ब्रह्मचर्याश्रम की कोई अवधि निश्चित नहीं थी।[६]

गृहस्थाश्रम :

शिक्षा समाप्त होने पर तथा समावर्तन संस्कार के पश्चात् स्नातक नागरिक बनकर समाज का प्रतिष्ठित सदस्य बन जाता था। वह विवाह करने के साथ ही जीवन के दूसरे चरण में पदार्पण करता था, वही गृहस्थाश्रम कहलाता था। इसे समाज का आधार माना गया है[७]। समाज उसका स्वागत करता था। "मनुष्य को किसी वस्तु का अपहरण नहीं करना चाहिए और न कभी झूठ बोलना चाहिए। यश पाने पर प्रमाद नहीं करना चाहिए। धार्मिक विधि से धन प्राप्त करना चाहिए। मनुष्य का चित्त-स्थिर होना चाहिए। उसकी श्रद्धा दृढ़ होनी चाहिए। वह स्वादिष्ट वस्तुओं को कभी अकेले न खाये। प्रत्यक्ष या

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३०; अवदान जि० २/१०५/१५, १/११३/५
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५३७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १९७
३. ,, ,, २, पृ० २७७-२७८
४. अवदान जि० २/१८/४-५
५. लेफ्मैन, ललित० १२४/९-१०
६. जोहरी, मनोरमा, प्रा० भा० में वर्ण० व्य०, पृ० १४०
७. वही, पृ० १४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परोक्ष में कभी सज्जनों की निन्दा न करे। जैसा कहे वैसा ही करे।"[१] ऐसा गृहस्थ आश्रम का उच्च आदर्श था। जो अधर्माचरण से प्राप्त होता है।[२]

इसी आश्रम में सुद्धोदन ने महामाया तथा शाक्य राजकुमार सिद्धार्थ ने गोपा से विवाह कर क्रमशः सिद्धार्थ और राहुल को उत्पन्न कर गृहस्थ आश्रम का पालन किया था।[३] अश्वघोष के अनुसार जब तक सौन्दर्य को दबाकर वृद्धावस्था अपना प्रभुत्व स्थापित कर शरीर को जीर्ण न कर दे तब तक कामोपभोग कर गृहस्थाश्रम का पालन करना चाहिए।[४] सन्तानोत्पत्ति ही इसका मुख्य लक्ष्य था।[५] अर्थ संचय कर जीविका चलाने का कार्य करना इनका परम कर्तव्य था।[६]

वानप्रस्थाश्रम :

बौद्ध साहित्य में यद्यपि इस तीसरे आश्रम का उल्लेख तो मिलता है क्योंकि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है परन्तु बौद्धों में इस आश्रम का अलग से कोई महत्व प्रतीत नहीं होता। यहाँ पर तीसरे और चौथे आश्रम के स्थान में एक ही आश्रम है। जिसमें व्यक्ति गृह त्यागकर परिवृज्या ग्रहण करके ज्ञान लाभ करता और उपदेश करता था। श्रामणेर और भिक्षु इसी कोटि में आते थे।

ब्राह्मण धर्मावलम्बियों का यह तीसरा आश्रम था जिसमें मनुष्य गृहस्थ जीवन को त्यागकर वन के लिए प्रस्थान करता था और वह भोग-विलास से दूर सीमित आवश्यकताओं वाला जीवन व्यतीत करता था।[७] वन में आश्रम बनाकर अग्निहोम करता था।[८] जंगल में फलमूल खाते हुए जीवनयापन करता

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८८-८९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २५४-५५; डॉ० राम जी उपाध्याय, भा० की० सं० सा०, पृ० ४५०
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४२२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १४२-४३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५२-५३, ६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११९-२०, १३०
४. बु० च० १०/३३
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २११
६. ,, ,, १, पृ० २०८; जि० ३, पृ० ३००; बु० च० २/४७
७. ,, ,, १, पृ० १४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३०
८. ,, ,, १, पृ० २८५, २८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१६, ४२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था ।[१] इस आश्रम का पालन करके व्यक्ति सांसारिक इच्छाओं, कामनाओं तथा लोभ का परित्याग करके स्वर्ग प्राप्त करता था ।[२]

बन्धनागार जातक से विदित होता है कि कुछ लोग गृहस्थी से तंग आकर भी बन की शरण लेते थे ।[३] देवधम्म जातक में वाराणसी के राजा ने स्वयं अपने पुत्रों को जंगल में चले जाने की (वनवास) आज्ञा दी थी ।[४] राजगृह के राजा ब्रह्मदत्त ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य का कार्य सौंप कर वानप्रस्थ आश्रम के लिए स्वयं काम-भोगों का परित्याग कर हिमालय की ओर प्रस्थान किया था ।[५]

संन्यासाश्रम :

वानप्रस्थाश्रम के बाद संन्यासाश्रम का प्रारम्भ होता था ।[६] इसे चतुर्थ आश्रम भी कहा गया है ।[७] यह मनुष्य जीवन का अन्तिम आश्रम था । पूर्ण त्याग ही इस आश्रम की विशेषता थी । मखादेव जातक के अनुसार राजा ने कहा, "मेरे सिर में सफेद बाल उग आया है । मैं बूढ़ा हो गया हूँ । मैंने अभी तक मानसिक-भोगों का उपभोग किया हैं, अब मैं दिव्य भोगों की खोज करूँगा । अब मेरा गृहत्याग (निष्क्रमण) का समय है । अब तुम इस राज्य को सँभालो, मैं प्रव्रजित होकर योगाभ्यास (श्रमण-धर्म) का अभ्यास करूँगा ।"[८] जातकों के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि कुछ आलसी व्यक्ति परिश्रम से जी चुराकर इस सुविधा का अनुचित लाभ उठाकर पेट पालने मात्र के लिए संन्यासी-तपस्वी भी बन जाते थे ।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०; जा० अ० हि० जि० १; पृ० ६८
२. ,, ,, १, पृ० २८५, २८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१६, ४२१
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३९-४०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३२६-२७
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२८, १३२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २१२, २१८
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २४६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४०२
६. डॉ० जयशंकर मिश्र, प्रा० भा० का० सा० इ० पृ० १९६
७. वही, पृ० १९६
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२६
९. ,, ,, ३, पृ० २३५-३६; ,, ,, ३, पृ० ३९५-९६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रव्रज्या लेने वालों की संख्या बहुत अधिक थी। उनके संघ में ५०० भिक्षु रहते थे। इस प्रकार के उनके उपनिवेष ही हिमालय पर्वत पर बसे हुए थे।[1] महाभिनिष्क्रमण (गृह-त्याग) प्रसिद्ध ही है।[2]

जातकों में संन्यासियों और श्रमणों की तपश्चर्या और व्रतचर्या का अनेक बार उल्लेख हुआ है। संन्यासी वन, पर्वत अथवा समुद्र के किनारे रहकर फल-फूल और मूल श्यामक और नीवार तथा वृक्षों से गिरे फलों को ही खाते थे।[3] तपस्वियों के लिए फल मूल का भोजन श्रेष्ठ और अन्न-भोजन निन्दित माना गया है।[4] उच्छाचरिया द्वारा ही ये जीवनयापन करते थे।[5] वे छाल (वल्कल) का चीवर पहनते थे। अधोवस्त्र अजिन का और उत्तरीय वल्कल का होता था।[6] बौद्ध भिक्षुओं के यही शाही तीन प्रमुख वस्त्र थे।

जातकों के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि ब्राह्मण धर्म के कुछ संन्यासी शरीर को कष्ट देने के लिए चमगादड़ की भाँति उलटा लटक कर, काँटों की शय्या पर सोकर, पंचाग्नि से सन्तप्त होकर उकड़ू बैठकर अपनी साधना पूरी करते थे।[7]

ब्राह्मण और बौद्ध आश्रम व्यवस्था में अन्तर :

आश्रमों का जितना कठोर नियम ब्राह्मण साहित्य में मिलता है, बौद्ध साहित्य में आश्रमों के लिए उतना कठोर नियम नहीं है। प्रव्रजित होने के लिए कोई अवस्था निश्चित नहीं थी। किसी भी अवस्था में मनुष्य प्रव्रजित हो सकता था। निमि जातक के अनुसार राजा स्वयं कहता है—"मेरी आयु का हरण करने वाले ये मेरे सिर के सफेद बाल पैदा हो गये हैं। यह मेरी प्रव्रज्या का समय है।[8]" यहाँ आयु के स्थान पर बालों का सफेद होना ही आधार बताया गया है। स्वयं बुद्ध के जीवन से पता चलता है कि गृहस्थाश्रम के बाद सीधे उन्होंने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया था।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५७-५८
२. ,, ,, १, पृ० ६१-६२; ,, ,, १, पृ० १३१-३२
३. ,, ,, १, पृ० १०; ,, ,, १, पृ० ६८
४. ,, ,, १, पृ० ६-७; ,, ,, १, पृ० ६१-६२
५. ,, ,, २, पृ० २७२; ,, ,, ३, पृ० २
६. ,, ,, २, पृ० २७२; ,, ,, ३, पृ० २
७. ,, ,, ३, पृ० २३५; ,, , ३, पृ० ३९५
८. ,, ,, ६, पृ० ९५, १२८; ,, ,, ६, पृ० १०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस प्रकार यद्यपि जातकों में पूर्व प्रचलित ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है तथापि बौद्धों के वानप्रस्थ और संन्यास दोनों के स्थान पर एक ही आश्रम उल्लिखित है। वे आश्रम पालन में आयु सीमा बन्धन को स्वीकार नहीं करते थे।

संस्कार

जातक युग में संस्कारों[1] का विशेष महत्त्व था। जन्म से मृत्यु पर्यन्त मनुष्य का जीवन संस्कारों पर निर्भर था और इन्हें ऐसा रूप दिया गया था जिससे वे अधिक उपयोगी मालूम होते थे। संस्कार की अभिव्यक्ति की परिधि निःसीम है। आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक शुद्धि के साथ ही संस्कार मानव के आदर्श और भावी जीवन की श्रेष्ठता को प्रस्तुत करते हैं। मनुष्य जीवन को क्रमशः उन्नत बनाने के लिए किये जाने वाले परिवर्तनों को 'संस्कार कहते हैं।[2]

जातकों के अध्ययन से तत्कालीन ब्राह्मण और बौद्ध समाज में प्रचलित निम्नलिखित संस्कारों का बोध होता है।

गर्भाधान :

यह प्रथम संस्कार था। जातक निदान कथा के अनुसार सिद्धार्थ के पिता राजा शुद्धोदन और माता मायादेवी ने इस संस्कार की पूर्ति की थी।[3] बुद्ध चरित में भी राजा शुद्धोदन द्वारा इस संस्कार की पूर्ति हेतु महारानी महामाया के साथ समागम का उल्लेख है[4] जिसके द्वारा वंश की वृद्धि हुई थी।[5]

जातकर्म :

गर्भाधान के बाद आठ, नौ[6] अथवा दस-मास[7] में प्रसव होता था। सन्तानोत्पत्ति के सात दिन पहले महादेवी ने चार लाख का महादान दिया था।[8]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५२, ६१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११९-२०, १३०-३१
२. अवदान, २/२५/८
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११९-२०
४. बु० च० १/३; अवदान जि० १/२९/७-८
५. बु० च० १/५
६. दिव्या २/१-२, १५/२९-३०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११९; जि० ४, पृ० १४६, ३२३; जि० ५, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२; जि० ४, पृ० ३४६, ५२८; जि० ५, पृ० ३६३, महावस्तु जि० ३/४३२/१३-१४; लेफमैन, ललित० ७६/८, ८३/१०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राजा ने चौंसठ प्रधान ब्राह्मणों को घी, मधु, शक्कर तथा खीर का भोजन करवाया जिसे सोने-चाँदी की थालियों में परोसा गया था। नवीन वस्त्र तथा कपिला गौ आदि दान में समर्पित की गई थी। शिशु उत्पत्ति के उपलक्ष में जनता उत्सव मनाती थी।[१] इस अवसर पर नवजात शिशु को स्नान करवाकर काशी देश के बने हुए विशुद्ध वस्त्र में रखा जाता था तथा मणि रत्न से आच्छादित करके उसे नवनीत से आपूरित किया जाता था।[२] गन्ध-माला आदि से पूजा जाता था। विशेष आमोद-प्रमोद का प्रबन्ध भी किया जाता था।[३] दिव्यावदान के अनुसार चौराहे पर शिशु को रखकर किसी श्रमण या ब्राह्मण को उससे प्रणाम भी करवाने की प्रथा थी।[४] शिशु को ब्रह्मलोक परायण बनाने के लिए जन्म के दिन निरन्तर अग्नि प्रज्वलित रखी जाती थी।[५]

नामकरण :

शिशु-जन्म के दसवें या बारहवें दिन उसका नामकरण संस्कार किया जाता था।[६] शिशु को सिर से नहलाया जाता था तथा पुष्प बिखेरे जाते थे।[७] गुणों के अनुरूप ही नामकरण करने की विशेष परम्परा थी।[८] व्यक्तियों के विशिष्ट तथा निश्चित नामों के बिना संस्कृत समाज के व्यवहार का संचालन असम्भव था। इसीलिए नामकरण की आवश्यकता पड़ी।[९] हिन्दुओं ने अति प्राचीनकाल में ही व्यक्तिगत नामों के महत्त्व का अनुभव किया तथा नामकरण की प्रथा को धार्मिक संस्कार में परिणत कर दिया।[१०] नामकरण संस्कार का मंगल उत्सव सामूहिक

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७-१८
२. ,, ,, १, पृ० ५३; ,, ,, १, पृ० १२०; दिव्या० ४२७।१०-१२
३. महावस्तु जि० २/४२२/१५-१९
४. दिव्या० ४२७/१२-१४; डॉ० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १५७
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८५, ३१५, ४९४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१६-१७, ४५४; जि० २, पृ० १३८
६. डा० रामजी उपाध्याय, भा० की प्रा० सं०, पृ० १८
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२४
८. डा० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १५७
९. डा० राजबली पाण्डेय, हिन्दू संस्कार, पृ० ९९
१०. वही, पृ० ९९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रूप से मनाया जाता था। पहले देवताओं की तृप्ति के लिए होम-क्रिया सम्पन्न की जाती थी।[1] महाब्रह्मणों का सत्कार भी होता था।[2] तत्पश्चात् नामकरण किया जाता था।[3] भद्दसाल जातक में राजा ने अपने पुत्र का नाम पुराना कुलागत समझकर "विडूडभ" ही रखा था।[4] इसी प्रकार से गामणीचण्ड जातक में शिशु का मुख सुनहरी काँच के समान सुन्दर होने के कारण आदासमुख-कुमार नाम रखा गया था।[5]

अन्नप्रासन :

मूगपक्ख जातक में चार वर्ष की अवस्था में अन्नप्रासन संस्कार करने का उल्लेख हुआ है। बच्चों को पूए तथा खाजा मिठाई खिलाई जाती थी।[6]

चूड़ाकर्म :

बौद्ध समाज में यह संस्कार प्रव्रज्या के समय ही सम्पन्न होता था। बोधिसत्व ने स्वयं तलवार से मौर सहित जूड़े को काटकर इस संस्कार को पूर्ण किया था।[7] इसे मुण्डन भी कहा गया है।[8]

कर्णवेध :

इस समय भी कनछेदन नाम से यह संस्कार समाज में प्रचलित है। आभूषण पहनने के लिए कान को छेदा जाता था।[9]

उपनयन संस्कार :

बालक को गुरु के समीप ले जाकर उसे विद्यार्थी बनाना उपनयन संस्कार है।[10] उपनयन का शाब्दिक अर्थ है—"गुरु के समीप ले जाना।" इसका शिक्षा

---

१. डॉ० रामजी उपाध्याय, भा० की प्रा० सं०, पृ० १९; जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३१-३२, जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७२
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३
३. जा० अ०रो० जि० ४, पृ० ३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३७
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४६-४७
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २९७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५-६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५-६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६४-६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२३; दिव्या० २२/१८
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३८१
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५७-५८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से विशेष सम्बन्ध था। यहीं से उसका विद्यार्थी जीवन प्रारम्भ होता था। इसीलिए उपनयन संस्कार का विशेष महत्व था।[1]

विद्यारम्भ संस्कार :

उपनयन संस्कार के पश्चात् वेदारम्भ संस्कार[2] किया जाता था। वैदिक युग में वेद का अध्ययन करना शिक्षा का प्रधान अंग था।[3] जातकों में शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से बालक १६ वर्ष की आयु में तक्षशिला जाते थे।[4] वह गुरु की देखरेख में रहकर वेदों का अध्ययन करते थे। बालक को चारों वेदों का सस्वर अध्ययन कराया जाता था।[5] ललितविस्तर में इस संस्कार का विशेष रूप से उल्लेख हुआ है।[6] इस संस्कार में कुमार सिद्धार्थ को दारकाचार्य विश्वामित्र की लिपिशाला में ले जाया गया था।[7] विद्यारम्भ स्वर्णपट्टिका (तख्ती) पर किया जाता था।[8] ललितविस्तर से भी ज्ञात होता है कि लेखन प्रारम्भ चन्दन पट्टिका (लिपि फलक)[9] पर किया जाता था जिसकी पुष्टि गांधार कला से भी होती है।[10]

पाणिग्रहण संस्कार :

इसे "विवाह" धर्म भी कहा गया है।[11] सामान्य रूप से विवाह के लिए १६ वर्ष की आयु उपर्युक्त मानी गई थी।[12] मंगल कर्म के लिए वधू को डोली में ले जाया जाता था।[13] भूरिदत्त जातक के अनुसार समुद्र—जायी कन्या

---

१. डॉ० रामजी उपाध्याय, भा० की प्रा० सं०, पृ० २०
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८;
३. डॉ० जयशंकर मिश्र, भा० की प्रा० सं०, पृ० २०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८३
५. ,, ,, ५, पृ० ४५०, ,, ,, ५, पृ० ५२९
६. लेफमैन, ललित० १२३-१२४
७. लेफमैन, ललित० १२४/९-१०; डॉ० अँगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १५८
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८३-८४
९. लेफमैन, ललित० १२५/१७ ११
१०. दृष्टव्य, पुरी, इ० अ० कु० पृ० १२७; मार्शल, गान्धार आर्टचित्र ९५
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९६; जि० ५, पृ० २८५; जि० ६, पृ० ७१-७२; महावस्तु जि० २/४४४/२, ३
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८८-८९
१३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४३९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५१६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धृतराष्ट्र को देते समय सभी नागराज गव्यूति मात्र पीछे हट गये और एक देव-नगर का निर्माण किया तथा उपहार भिजवाए थे। लड़की को सिर से स्नान करवाकर सभी अलंकारों से अलंकृत कर परदेदार रथ पर चढ़ाकर अमात्यों के साथ लाया गया था। नागराजाओं ने अगवानी कर बहुत सत्कार किया था।"[१] लड़के की ओर से आगन्तुक लोग बारात रूप जाते थे।[२] दोनों का अभिषेक किया जाता था।[३]

प्रव्रज्या एवं उपसम्पदा :

यह बौद्धों का महत्त्वपूर्ण संस्कार था। प्रव्रज्या के लिए मूँछ, सिर और दाढ़ी मुड़ाई जाती थी।[४] गृहस्थ जीवन के वस्त्रों के स्थान पर काषाय वस्त्र धारण किये जाते थे। भोजन आदि के लिए मिट्टी का एक पात्र दिया जाता था। प्रव्रज्या ग्रहण करने वाला व्यक्ति भिक्षु संघ के सामने अंजलि बद्ध हो वन्दना करता था। एक जोड़ी काषाय को कन्धे पर रखता था। पात्र को झोली में रखकर कन्धे में लटकाता था।[५] श्रामणेर बनकर वह दस शील का पालन करता हुआ विचरण करता था। प्रव्रजितों के लिए बहुमूल्य वस्त्रों का प्रयोग वर्जित था।[६] सिद्धार्थ ने प्रव्रजित होने के उद्देश्य से ही अपने सभी आभूषणों और कीमती वस्त्रों को छन्दक को दे दिया था तथा अपने ही हाथों से खड्ग लेकर मौर सहित जूड़े को काट डाला था।[७] भिक्षुओं के लिए तीन चीवर, पात्र, उस्तरा सुई का बन्धन और पानी छानने का वस्त्र—यह आठ (चीजें) आवश्यक मानी गई थीं।[८] प्रव्रज्या बहुधा विहारों में होती थी। जातक युग में

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १६६-६७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २००
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९६-९७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०३-३०४; जि० २, पृ० ४२८
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८६; जि० ४, पृ० ३१६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३८; जि० ४, पृ० ५२२
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५५, ६४-६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२३, १३५
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२३-१२४
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६४-६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विशेष रूप से "जेतवन बिहार" का नाम आया है।[1] प्रव्रज्या को विशेष महत्त्व था यहाँ तक कि भिक्षुओं को सदाचार के नियमों का पालन करना होता था।[2] राजा लोग राजसिंहासन त्यागकर प्रव्रजित होते थे।[3] श्रामणेर जब दस शील के आचरण में अभ्यस्त हो जाता था तब उसे भिक्षु पद की दीक्षा दी जाती थी। भिक्षु बनाने के इस संस्कार को उपसम्पदा कहते थे।

मृत संस्कार :

इसे अग्नि संस्कार भी कहा गया है।[4] यह जीवन का समापन्न संस्कार था। मृत प्राणी का आदर सत्कार पूर्वक अन्तिम संस्कार पूरा किया जाता था।[5] शव को नये वस्त्र से लपेटकर धुनी हुई रुई से लपेटते थे।[6] इस अवसर पर स्वजन तथा सम्बन्धी लोग बहुत रोते और शोक व्यक्त करते थे।[7] शव को श्मशान भूमि में ले जाया जाता था।[8] शवदाह के लिए चन्दन की चिता बनाई जाती थी।[9] शव को चिता पर रखने के बाद धूप, दीप मालाओं से सम्मानित किया जाता था।[10] वन्दना और सूत्र-पाठ किया जाता था।[11] सैकड़ों घड़ों से चिता बुझाई जाती थी।[12] शेष अस्थियों पर मृतक की स्मृति में स्तूप व चैत्य

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२६
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २१७
५. ,, ,, १, पृ० १८२; जि० २, पृ० २९७;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८३; जि० ३, पृ० २६
६. महापरिनिब्बान सुत (हिन्दी-अनुवाद) पृ० १४७
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५०५, ५३७; जि० ४, पृ० ५१;
जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १६५, १९८, २५१
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २५१
९. ,, ,, ५, पृ० १२७, १३६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०८, २१७
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५५; जि० ५, पृ० १२६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७८, ४१९; जि० ५, पृ० २०८
११. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ५४; जि० ६, पृ० ८४;
जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १४२; जि० ६, पृ० ९५-९६
१२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बनाये जाते थे (ये स्मारक केवल बौद्ध भिक्षुओं की ही अस्थियों पर बनाये जाते थे)। ब्राह्मण धर्म के मानने वाले लोगों में श्राद्ध करने की परिपाटी थी।[१] महाकपि जातक से ज्ञात होता है कि "अमात्य स्त्रियाँ लाल वस्त्र पहनकर, खुले बाल, हाथों में मशाल लेकर कपिराज के पीछे-पीछे श्मशान भूमि तक गयी थीं।[२]

बुद्ध चरित के अनुसार दाहकर्म के पश्चात् समस्त लोग स्नान करते थे जिसे "मृतस्नान" कहा गया है।[३]

इस प्रकार जातकों में तत्कालीन समाज में प्रचलित संस्कारों का भी वर्णन मिलता है। संस्कारों के द्वारा समय-समय पर मानव जीवन में परिवर्तन होता था जो उसे उन्नतावस्था की ओर ले जाने वाला होता था।

आवाह विवाह

विवाहों का सामाजिक महत्त्व :

मानव जीवन में विवाह का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। विवाह के द्वारा पुरुष को अपने जीवन भर के लिए सच्चे मित्र, कुशल गृह प्रबन्धक और गृहस्थाश्रम के लिए सहचर के रूप में पत्नी मिलती है।[४] इसे विवाह धर्म भी कहा गया है।[५] डा० इन्दुमती मिश्र के अनुसार विवाह एक अत्यन्त पुनीत संस्कार माना गया है और बहुत ही पवित्र एवं दृढ़ बन्धन के रूप में स्वीकार किया गया है।[६] विवाह के दो स्वरूपों—आवाह-विवाह का भी उल्लेख मिलता है।[७] डा० लाल के अनुसार विवाह एक संस्कार है जहाँ मनुष्य को वैधानिक रीति से समाज वृद्धि का अवसर मिलता है।[८] जातक युग में साधारणतः विवाह की आयु सोलह

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६७-६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६३-२६४
२. ,, ,, ३, पृ० ३७४-७५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५
३. बु० च० २४।६३
४. डॉ० रामजी उपाध्याय, भा० की प्रा० सं०, पृ० २८
५. महावस्तु, जि० २।४४।२, ३
६. भा० सं० के भू०, पृ० ३४
७. दिव्या ३२३।१८, ३४९।१८, सम्राट् अशोक के धर्म अभिलेख (शिलाभिलेख ९) में भी आवाह-विवाह का वर्णन किया गया है।
८. सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वर्ष होती थी।[१] एक स्थान पर बीस-पच्चीस और उन्तीस वर्ष होने पर विवाह करने का उल्लेख हुआ है।[२] वर की ओर से लोग बारात लेकर जाते थे।[३] वेदी पर प्रतिष्ठित वर को लाजा, घृत और सर्पिष आदि दिया जाता था।[४] ब्राह्मण पुरोहित वधू को दान कराते थे।[५] पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के सहचर और सहयोगी होते थे।[६]

सगोत्र विवाह :

विवाह के लिए गोत्र का महत्त्व अधिक था।[७] कौशल नरेश प्रसेनजित की बहन का विवाह मगध सम्राट् बिम्बिसार से हुआ था तथा प्रसेनजित की पुत्री वाजिरा का विवाह बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु से हुआ था।[८] जातकों में काशी और शिवि राजकुमारों का विवाह उनके मामा की पुत्रियों के साथ वर्णित है।[९] इसी प्रकार से अन्य जातकों में भी भांजे के साथ विवाह करने का वर्णन मिलता है।[१०] अर्जुन और सुभद्रा का विवाह इसी प्रकार का विवाह था।[११] उदय जातक के अनुसार उदय ने अपनी वैमातृका भगिनी उदय भद्रा से विवाह किया था।[१२] मुदुपाणी जातक में एक राजा अपनी पुत्री का विवाह अपनी भगिनी के पुत्र के साथ करता है।[१३]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५६; जि० ३, पृ० ९३; जि० ५, पृ० २१०
२. ,, ,, ३, पृ० १३८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३०२
३. ,, ,, २, पृ० २२५; ,, ,, २, पृ० ४२८
४. अवदान जि० २।४९।४-५
५. महावस्तु जि० ३।१५०।१४-१५
६. दिव्या० १७१।३१-३२
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८४
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २३७, ४०३-४०४; जि० ४, पृ० ३४२-३४३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४३; जि० ३, पृ० १२३; जि० ४, पृ० ५४९
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३२६-२७; जि० ६, पृ० ४८६
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ११९, ३२७; जि० ४, पृ० ४९; जि० ६, पृ० ४८६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३०२; जि० ३, पृ० ५३; जि० ४, पृ० २४८; जि० ६, पृ० ५२५
११. कल्याण, पृ० १६५, वर्ष ४० धर्माङ्क संख्या १.
१२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १०५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३०७
१३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३२७, जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सजातीय विवाह :

अपनी ही वर्ण और जाति से विवाह करना सजातीय विवाह कहा गया है। स्वजाति में विवाह करना सामाजिक प्रतिष्ठा और कुलगत गौरव की बात मानी जाती थी।[१] जातकों ने अनेक स्थानों पर कन्या के लिए समानजाति कुल शब्द का प्रयोग किया गया है।[२] अननुसोचिय जातक में एक ब्राह्मण अपने पुत्र के लिए ब्राह्मण कन्या ढूँढ़ने का आदेश देता है।[३] जिससे स्पष्ट होता है कि विवाह के अवसर पर समाज इन बातों को ध्यान में रखता था।[४] कच्छप जातक से भी यही प्रमाणित होता है।[५] सिगाल जातक में पिता पुत्र से कहता है कि लिच्छवि कन्या उच्च जाति की है। अतः वह तुम्हारे वरण के योग्य नहीं है। मैं तुम्हारे लिए अन्य कन्या ढूंढ़ दूँगा जो तुम्हारी जाति एवं तुम्हारे वरण के योग्य होगी।[६] भद्दसाल जातक के अनुसार कोसल राज पसेनदि को जब यह ज्ञात होता है कि उसकी पत्नी शाक्य पिता द्वारा उत्पन्न दासी-पुत्री है तो वह तुरन्त उसका परित्याग करने के लिए तैयार हो जाता है।[७] इससे प्रतीत होता है कि विवाह कार्य में जाति का विशेष ध्यान रक्खा जाता था।

अन्तर्जातीय विवाह :

अनेक स्थानों पर अन्तर्जातीय विवाह के भी उल्लेख मिलते हैं। उम्मदन्ती जातक के अनुसार सेनापति अहिपारक ने एक वणिक् कन्या उम्मदन्ती के साथ विवाह किया था।[८] कट्ठहारि जातक में एक राजा तथा एक प्राकृत कन्या का विवाह उल्लिखित है।[९] जातक साहित्य में निसाद (ब्राह्मण-शूद्रा-सन्तान), सपाक अथवा श्वपाक (क्षत्रिय-शूद्रा-सन्तान) आदि अनेक वर्ण संस्कारों के नाम उपलब्ध होते हैं। जिनसे ज्ञात होता है कि समाज में अन्तर्जातीय विवाह भी प्रचलित थे परन्तु समाज में ऐसे विवाहों को हेय दृष्टि से देखा जाता था।[१०]

---

१. डॉ० मिश्र, प्रा० भा० का सा० इ०, पृ० २७९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४७५; जि० ३, पृ० १६२, ४२२; जि० ४, पृ० २२, ३०५
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६०
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५३४
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८४
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५-६; जा० अ० हि० जि० २ पृ० १६७-६८
७. जा०अ० रो० जि० ४, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४८
८. ,, ,, ५, पृ० २१६-१७ ,, ,, ५, पृ० २९९-३००
९. ,, ,, १, पृ० १३४
१०. डॉ० विमल चन्द्र पाण्डेय, भा० का० सा० इ०, पृ० १३९-४०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एक पत्नी और एक पतित्व :

बौद्ध समाज में प्रारम्भ से ही एक विवाह का महत्व रहा है। बौद्ध बनते समय ही जिन पंचशीलों की शिक्षा ग्रहण की जाती थी उनसे तीसरा शील था कि व्यभिचार न करना। एक ही पत्नी या एक ही पति के साथ जीवन पर्यन्त रहना 'एक-विवाह' का वास्तविक आधार कहा है। कण्हदीपायन जातक में एक स्थान पर एक पत्नी कहती है, "हमारे कुल में दूर तक कभी भी ऐसी परम्परा नहीं है कि कोई स्त्री अपने पति को छोड़कर चली गई हो। उस कुल परम्परा का अनुवर्तन करने के लिए और मैं कहीं अन्तिम निकृष्ठ न होऊँ मैं इस अपवाद से घृणा करने के कारण ही अनिच्छा होने पर तुझसे बँधी रही हूँ।"[१] महाधम्मपाल जातक के अनुसार, "हम अपनी भार्य्या के अतिरिक्त और कहीं मिथ्याचार नहीं करते।" उन्हें छोड़ अन्यत्र हम ब्रह्मचर्य पालन करते हैं।"[२] नक्खत्त जातक में कहा गया है कि कन्या का विवाह दो बार नहीं हो सकता।[३] जातक में एक स्थान पर पत्नीव्रत का महत्व प्रदर्शित किया गया है।[४]

पुनर्विवाह :

जातकों में अनेक उदाहरण स्त्री के पुनर्विवाह के उपलब्ध होते हैं। महानारद कश्यप जातक में प्रभावती अपने कुरूप पति के साथ रहने में अनिच्छा प्रकट करती है।[५] महावेस्सन्तर जातक में महाराज वेस्सन्तर अपनी पत्नी मद्दी को दूसरा पति ढूँढ़ लेने की सम्मति देता है।[६] पक्कगोध जातक के एक न्यायाधीश एक स्त्री को अपने विरक्त पति का त्याग कर देने की अनुमति देता है।[७] नन्द जातक में विधवा विवाह का उल्लेख किया गया है।[८] उच्छंग जातक में कथन है कि स्त्री सुगमतापूर्वक द्वितीय पति चुन सकती थी।[९] नन्द जातक में एक पति इस विचार से भयभीत है कि उसकी मृत्यु के पश्चात उसकी पत्नी पुनर्विवाह कर लेगी जिससे उसके पुत्र को कुछ भी सम्पत्ति प्राप्त न हो सकेगी।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३४
२. „ „ ४, पृ० ५३; „ „ ४, पृ० २५४
३. „ „ १, पृ० २५८; „ „ १, पृ० ३८१
४. „ „ ४, पृ० ५३; „ „ ४, पृ० २५४
५. „ „ ६, पृ० २८८; „ „ ६, पृ० ३६९
६. „ „ ६, पृ० ४९५; „ „ ६, पृ० ५३४
७. „ „ ३, पृ० १०८; „ „ ३, पृ० २७३
८. „ „ १, पृ० २२५; „ „ १, पृ० ३४०
९. „ „ १, पृ० ३०८; „ „ १, पृ० ४४५
१०. „ „ १, पृ० २२५; „ „ १, पृ० ३४०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तक्कल जातक में दूसरी भार्य्या लाने का उल्लेख हुआ है।[1] एक राजा के मरने के बाद विधवा रानी ने राजा पुरोहित से पुनर्विवाह कर लिया था।[2]

बहु विवाह :

चुल्लकालिङ्ग जातक में एक पिता का अपनी चार कन्याओं का एक ही व्यक्ति के साथ विवाह करते हुए प्रदर्शित किया गया है।[3] प्रसेनजित की पाँच पत्नियों का उल्लेख प्राप्त होता है।[4] बिम्बिसार की खेमा तथा छलना कौशल देवी आदि पत्नियाँ थीं।[5] उदयन ने तीन स्त्रियों के साथ विवाह किया था।[6]

उच्च एवं अभिजात वर्ग में भी सपत्ति (सपत्नी) का उल्लेख हुआ है।[7] जातक साहित्य में इन सपत्नियों के ईर्ष्या-द्वेष का भी वर्णन मिलता है। भूरिदत्त जातक में सपत्नी क्रोध का वर्णन है।[8] सुरुचि जातक में सपत्नी-कलह को स्त्री के लिए महत्तम क्लेश बताया गया है।[9] राजवंश की इस बहु-विवाह प्रणाली का विशेष कारण यह था कि वहाँ स्त्री विशेष रूप से उपभोग्या समझी जाती थी। परन्तु वहाँ भी सुरुचि राजा के समान अनेक राजा गण ऐसे होते थे जो एक स्त्री व्रतधारी ही रहना चाहते थे।[10] जुण्ह जातक में एक स्थान पर कहा गया है "मैं तुम्हारे जैसी दो भार्यायें देता हूँ।"[11] सुरुचि जातक में सोलह हजार स्त्रियों का उल्लेख हुआ है।[12]

असुर विवाह :

जातक में उल्लेख हुआ है कि मनुष्य अपार धन व्यय कर स्त्री प्राप्त कर

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २४८
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२५
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७८
४. म० नि० रो० जि० २, पृ० १२५
५. डा० विमल चन्द्र पाण्डेय, भा० क्रा० सा० इ०, पृ० १६१
६. वही, पृ० १६१
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२६
८. ,, ,, ६, पृ० १६०; ,, ,, ६, पृ० १९४
९. ,, ,, ४, पृ० ३१६; ,, ,, ४, पृ० ५२१-५२२
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२२
११. ,, ,, ४, पृ० ९९; ,, ,, ४, पृ० ३००
१२. ,, ,, ४, पृ० ३१६-३१७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सकता था ।[१] यही असुर विवाह था । ऐसी पत्नी के लिए 'कीलो धनेन बहुना' अथवा 'भरिया धनकीता' कहा गया है ।[२] सत्तुमस्त जातक में उल्लिखित है कि एक ब्राह्मण को एक सहस्र कार्षापण के बदले एक नवयुवती प्राप्त हुई ।[३]

गान्धर्व विवाह :

इस विवाह में वर-वधू अपनी इच्छानुसार एक दूसरे को चुनते थे । वे माता-पिता की आज्ञा नहीं लेते थे और न ही कोई उत्सव मनाते थे ।[४] कट्ठहारि जातक से ज्ञात होता है कि वाराणसी के राजा उद्यान में जाती हुई एक युवती को देखकर मोहित हो गया था और गान्धर्व विवाह करके उसे अँगूठी देकर कहा था यदि लड़की उत्पन्न हो तो इस अँगूठी के द्वारा उसका पालन करना । यदि लड़का हो तो अँगूठी के साथ उसे मेरे पास लाना ।[५] वीणथूण जातक के अनुसार एक लड़की अपने घर का सामान लेकर एक कुबड़े लड़के के साथ भाग गई थी ।[६] दुराजान जातक के अनुसार वाराणसी के एक शिष्य ने स्थानीय युवती से प्रेम हो जाने पर परिणय कर लिया था ।[७] भगवान बुद्ध के समकालीन उदयन और वासवदत्ता की प्रेमकथा अत्यन्त प्रसिद्ध ही है ।

राक्षस विवाह :

जातक साहित्य में राक्षस विवाह के भी कतिपय उदाहरण मिलते हैं । तक्क जातक में चोरों के एक नेता ने ग्रामीण कन्या का अपहरण करके विवाह किया था ।[८] एक राजा ने अपने शत्रु राजा को मारकर उसकी पत्नी से स्वयं विवाह कर लिया था ।[९] ये सभी इसी कोटि के विवाह थे ।

ब्राह्म विवाह :

ब्राह्म विवाह का भी उल्लेख मिलता है । अननुसोचिय जातक में माता-पिता

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १०८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३०९
२. ,, ,, २, पृ० १८५; जि० ५, पृ० २६९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३८२; जि० ५, पृ० ३५५
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३४२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६
४. इ० हि० क्वा० जि० २, पृ० १५६८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२१
६. ,, ,, २, पृ० २२५; ,, ,, २, पृ० ४२८
७. ,, ,, १, पृ० २९९; ,, ,, १, पृ० ४३४
८. ,, ,, १, पृ० २९७; ,, ,, १, पृ० ४३०
९. ,, ,, ५, पृ० ४२५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ही अपनी कन्या के लिए वर ढूँढ़ लाने के हेतु कतिपय ब्राह्मणों को भेजते हैं।[1] सूची जातक में पिता वर को सम्मानपूर्वक अपने घर बुलाता है और वर का अभिषेक कर कन्यादान करता है।[2] सुरूचि जातक से यह पता चलता है कि वाराणसी नरेश तथा मिथिला नरेश दोनों ने पुत्र-पुत्री उत्पन्न होने के पूर्व ही विवाह सम्बन्ध स्थापित करने का निश्चय कर लिया था।[3] दीघ निकाय में कन्या के पिता द्वारा विवाह हेतु अपने घर में वर के आमन्त्रित करने का उल्लेख है।[4] यह वैवाहिक पद्धति समाज में अधिक प्रचलित थी।

स्वयंवर :

स्वयंवर विवाह प्राचीनकाल से प्रचलित रहा है। इसमें वधू स्वयं अपना पति चुनती थी। कुलावक जातक में सुजाता के स्वयंवर का उल्लेख हुआ है।[5] इसी प्रकार कण्हा तथा इरन्दवति के विवाह भी स्वयंवर प्रथा के अनुसार ही हुए थे।[6] कुणाल जातक में पाँचों पाण्डवों के सन्दर्भ में यह कथा दी गयी है कि द्रौपदी ने पाँचों पाण्डवों को अपना पति चुना था।[7]

दहेज प्रथा :

जातक साहित्य में दहेज प्रथा के भी उदाहरण मिलते हैं। चुल्लकालिङ्ग जातक में नन्दिसेन ने कालिङ्गराज के पास चारों राजकन्याओं के लिए दहेज माँगा था। यही नहीं उसने यह भी धमकी दी थी कि यदि दहेज नहीं भेजोगे तो जो करना उचित है, करूँगा।[8] महावेस्सन्तर जातक में दासी, दास, वस्त्र, अलंकार, हिरण्य, स्वर्ण, अलंकृत हाथी, अश्व, रथ, ग्राम आदि दहेज देने का उल्लेख प्राप्त होता है।[9] कोशल राज के पिता महाकोशल ने राजा बिम्बिसार को अपनी लड़की के विवाह के समय काशी गाँव दहेज में दिया था[10], जिससे लाख की आमदनी होती थी।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६०
२. ,, ,, ३, पृ० २८६; ,, ,, ३, पृ० ४३८
३. ,, ,, ४, पृ० ३१६; ,, ,, ४, पृ० ४२१
४. दी० नि० रो० जि० १, पृ० ११
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१४
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२६-४२७; जि० ६, पृ० २६४
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२६-४२७
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७८
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४९२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५०३
१०. ,, ,, २, पृ० २३७; ,, ,, २, पृ० ५४३
११. ,, ,, २, पृ० ४०३; ,, ,, ३, पृ० १२३; इ० हि० क्वा० जि० २, पृ० ५७०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस प्रकार जातक साहित्य के अध्ययन से विभिन्न प्रकार के विवाहों का ज्ञान प्राप्त होता है। वधू की ओर से दहेज देने का भी उल्लेख मिलता है। दहेज के दोष से लोग परिचित थे। अजातशत्रु और प्रसेनजित के मध्य युद्ध का कारण भी दहेज ही था।

स्त्रियों की दशा

वैदिक साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि ऋग्वैदिक युग में निःसन्देह स्त्रियों की दशा बहुत ही अच्छी थी परन्तु उत्तर वैदिक काल और उसके बाद स्त्रियों की दशा खराब होती गई। जातकों में स्त्रियों को इसके पूर्व प्रचलित दशा का भी वर्णन मिलता है। यद्यपि जन जागरण के बौद्ध आन्दोलन ने प्राचीन रूढ़ियों और अन्धविश्वासों को झकझोर डाला और स्त्रियों को सम्माननीय स्थान समाज में मिला। ये भिक्षुणियाँ बनीं, उपदेश दिये, गाथाओं की रचना की जिनका वर्णन थेरी गाथा ग्रन्थ में उपलब्ध होता है। यहाँ पर केवल जातकों से ही प्राप्त सामग्री के आधार पर स्त्रियों की दशा का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

स्त्रियों विद्वान होती थीं[१], इसका ज्ञान हमें महाउम्मग्ग जातक से होता है। उदुम्बरा एक शिक्षित एवं बुद्धिमती स्त्री थी[२], इसका उल्लेख उक्त जातक में दर्शित है। चुल्लकालिङ्ग जातक के अनुसार एक जैन गृहस्थ को चार पुत्रियों ने देश का भ्रमण करते हुए लोगों को शास्त्रार्थ एवं वाद-विवाद करने के लिए चुनौती दी थी।[३] ये धर्म-ज्ञान प्राप्त करती थीं।[४] वे संगीत और नृत्य में कुशल होती थीं।[५] डा० राधाकृष्णन के अनुसार संगीत, नृत्य और चित्रकला आदि ललित कलाओं की शिक्षा लड़कियों को विशेष रूप से दी जाती थी।[६] जातकों में बहुत सी विदुषी स्त्रियों का वर्णन हुआ है जो पाँच सौ मतमतान्तरों को जानने वाली थीं।[७] अर्थ और पद की ज्ञाता होती थीं।[८] ये श्रद्धालु, सदा-

---

१, जा० अ० रो० जि० ६. पृ० ३६५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४१०-११, ४३८

२. जा० आ० रो० जि० ६, पृ० ३८५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३१

३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७३

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८१-८२

५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २८

६. धर्म और समाज, पृ० १६४

७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १-२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १७२

८. ,, ,, ५, पृ० १०४; ,, ,, ५, पृ० १९०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चारिणी, पण्डिता, दानी, पुण्य कर्मी, कर्तव्य परायणी होती थीं।[१] उन्हें एकमन, अनुवर्तिनी, धर्मकामी और कुलीन कहा गया है।[२] वे प्रियवादिनी सदाचारिणी छाया की भाँति सुखदायिनी, निष्क्रोधी, प्रज्ञावान, पण्डिता तथा अर्थदर्शी भी होती थीं।[३] जातकों के अध्ययन से पहले से चली आ रही स्त्रियों की हीन दशा पर भी प्रकाश पड़ता है।

स्त्रियों में पच्चीस प्रकार के दोषों का उल्लेख हुआ है।[४] कुणाल जातक के अनुसार स्त्रियाँ (सम्भवतः वेश्याएँ) चालीस प्रकार से पुरुषों को प्रेम पाश में बाँधती थीं।[५] वाराणसी के आचार्य ने तो स्त्री की नदी, पथ, मधुशाला, धर्मशाला, प्याऊ की भाँति सभी के उपयोग की वस्तु बता दिया।[३] कुछ स्त्रियाँ ठगिनी भी होती थीं। वे कामाग्नि से पुरुषों को जलाया करती थीं।[७] उन्हें अकृतज्ञ, मित्रद्रोही, कठोर हृदया बताया गया है।[८] वे कामुकता के वशीभूत हो पुरुष के साथ भाग भी जाती थीं।[९] वस्तुतः पुरुष ने स्त्री को सदा ही पराधीन रखने का प्रयत्न किया है। इसीलिए उसे कभी भी उन्होंने अपने समान अधिकार नहीं दिये। जातक से ऐसा ही देखने को मिलता है उन्हें गिरवी रखा जाता था।[१०] स्त्रियों को कामभोग की वस्तु माना जाता रहा है। इसीलिए उनकी वासना सम्बन्धी वर्णनों की भरमार है।[११] उन्हें नानाप्रकार से हीन बताया गया है। पर पुरुषों से यौन सम्बन्ध, सौतेली माँ का सौतेले पुत्र से यौन सम्बन्ध आदि इसी के प्रमाण हैं।[१२] जो पुरुष इनका विश्वास करे वह अधम नर के

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४५; जि० २, पृ० ३४१; जि० ३, पृ० १८२-८३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३७; जि० ३, पृ० ६६, ३४३-४४
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७९
३. ,, ,, ६, पृ० ४७३; ,, ,, ६, पृ० ५१२
४. ,, ,, ५, पृ० ४३४; ,, ,, ५, पृ० ५११
५. ,, ,, ५, पृ० ४३३; ,, ,, ५, पृ० ५११
६. ,, ,, १, पृ० ३०२; ,, ,, १, पृ० ४३६
७. ,, ,, २, पृ० ३३०; , ,, ३, पृ० ५५-५६
८. ,, ,, २, पृ० ११५; ,, ,, २, पृ० २९९
९. ,, ,, २, पृ० ३२६ ,, ,, ३, पृ० ५१
१०. ,, ,, ६, पृ० ५२१; ,, ,, ६, पृ० ५६७
११. ,, ,, १, पृ० ४३७-३८; जि० ३, पृ० ५२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६६; जि० ४, पृ० १८७
१२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १९०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३८९-९०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समान बताया गया है ।[1] स्त्रियों की भोग-विलास, अलंकरण तथा सन्तान की इच्छाएँ अनन्त होती हैं ।[2] वे एक व्यक्ति में अनुरक्त नहीं रह सकती हैं ।[3] वे आदरणीय होती हैं ।[4] इन्हें लोभी बिल्ली के समान बताया गया है ।[5] सुसन्धि जातक के अनुसार उन्हें बन्धन में रखना असम्भव है ।[6]

जातक साहित्य में सात प्रकार की भाषायें उल्लिखित हैं—वधक, चोर, आर्या, माता, भगिनी, सखी और दासी भार्य्या ।[7]

जातक साहित्य में चार प्रकार की दासियों का भी उल्लेख है । (१) आमाय दासी, (२) क्रीतदासी, (३) स्वतः दासत्व को प्राप्त दासी एवं (४) भयदासी ।[8]

समाज में चिरकाल से व्याप्त इन स्त्री-विरोधी धाराओं से ऊपर उठकर जातकों में ही नहीं सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य में स्त्रियों को सम्मानित स्थान दिया गया है । स्त्रियों में अनेक गुणों का वर्णन मिलता है, संसार उन्हीं की प्रथम उत्पत्ति हुई है । उन्हीं में क्रीड़ा प्रतिष्ठित है । वे ही रति का आधार है । उन्हीं में बीज अंकुरित होते हैं तथा उन्हीं से प्राणी उत्पन्न होते हैं ।[9] इसी प्रकार से बौद्ध साहित्य में गौतम के गुणों की प्रशंसा की गई है ।[10]

परिवार में वे पति तथा पुत्रों-पुत्रियों की ऐसी सेवा करती थीं जैसे विद्यार्थी अपने आचार्य की सेवा करते थे ।[11] जातकों से ज्ञात होता है कि श्रावस्ती के भूमिपति पर डाकुओं ने आक्रमण किया । डाकू सरदार उसकी पत्नी पर मोहित हो गया परन्तु स्त्री ने कहा यदि तुम मेरे पति को मारोगे तो मैं विष खाकर मर जाऊँगी ।[12] इस प्रकार उसने बुद्धिमानी से अपने पति की और मर्यादा की

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ५५
२. ,, ,, ३, पृ० ३४२; ,, ,, ४, पृ० ७
३. ,, ,, १, पृ० २९३; ,, ,, १, पृ० ४२६
४. ,, ,, ३, पृ० ९०; ,, ,, ३, पृ० २५७
५. ,, ,, ३, पृ० २६५; ,, ,, ३, पृ० ४२०
६. ,, ,, ३, पृ० १८७; ,, ,, २, पृ० ३४८
७. ,, ,, २, पृ० ३४७-४९; ,, ,, ३, पृ० ७२-७४
८. डॉ० कोमलचन्द्र जैन, बौ० और जै० आ० में ना० जी०, पृ० १३६
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३६८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४५०-५१
१०. हॉर्नर० आई० बो०, ओमेन अण्डर प्रिमेटिव बुद्धिष्म, पृ० ३५१
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५&३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६२०
१२. ,, ,, २, पृ० ३४१; ,, ,, ३, पृ० ६६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रक्षा की। साध्वी स्त्री अपने पति के अलावा अन्य का ध्यान नहीं करती थी। एक यक्ष जब एक साध्वी से यह कहता है कि या तो तुम मेरी इच्छा पूरी करो या मृत्यु स्वीकार करो, तो साध्वी पत्नी मृत्यु को ही स्वीकार करती है।[१] धन का लालच देने वाले कामियों से वधू कहती है कि तुम्हारा धन मेरे पति की चरणधूलि के बराबर भी नहीं है।[२] पति के संकट में केवल पत्नी हो उसका साथ देती है क्योंकि उसे पति के समान पृथ्वी के चारों कोनों पर कोई प्रिय नहीं मिल सकता था।[३] जातक साहित्य में स्त्रियों की प्रशंसा की गई है। वे पुरुष की परम सखा है।[४]

पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी प्रव्रजित होती थीं और उपसम्पदा भी ग्रहण करती थीं।[५] वे भिक्षुणी संघ ने रहती थी और उपदेश करती थी।[६] श्रोतापत्तिफल में प्रतिष्ठित होती थी। अर्हत्व को प्राप्त करती थी।[७] पाँच सौ स्त्रियों के साथ महाप्रजापति गौतमी ने प्रव्रज्या और उपसम्पदा की थी।[८]

इस प्रकार डॉ० वियोगी का यह कथन कि "जातक युग में स्त्रियों का स्थान वैदिक युग की स्त्रियों से बहुत ही निम्न था और समाज मे उनका न तो विश्वास था और न आदर"[९] बिल्कुल निराधार सिद्ध होता है। स्त्रियों का समाज में आदर और सम्मान था, ये शिक्षिकाएँ होती थीं। भिक्षुणियों के रूप में समाज के हित और कल्याण के लिए वे उपदेश देती थीं। बुद्ध धर्म और संघ की शरण ग्रहण करने के बाद अम्बपालि गणिका को वैशाली में जो सम्मान और गौरव प्राप्त हुआ वह वैशाली के राजकुमारों को नहीं मिला।

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ९५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १७८-७९
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३६७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४४४
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३४१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ६६
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ७०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २३६
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८२-८३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४४
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४७४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ११३
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३२-३३
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३९२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११३
९. वियोगी पं० मोहनलाल, जा० का० भा० सं०, पृ० १७७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भोजन और पेय

जातक युग में अठारह प्रकार के भोजन का उल्लेख मिलता है।[१] बौद्ध-भिक्षुओं के लिए मध्यान्तर भोजन करना निषिद्ध था।[२]

लोग भोजन में शुद्ध शाली (धान) एक प्रकार का भात "सालीनं ओदनं" और यवागु-भात प्रचुर मात्रा में प्रयोग करते थे।[३] चावल के तीन प्रकार के भोजन बनाये जाते थे—यवागु, पूए और मत्त।[४] तीन वर्ष के पुराने सुगन्धित चावल को पकाने का उल्लेख है।[५] मीठे चावल और शक्कर, दूध या शहद और घी मिलाया जाता था। साधारणतः पकाये हुए चावलों को 'ओदन' (भात) कहते थे।[६]

खाजा (खज्जक)[७] चावल को बारीक कूटकर, भिगोकर बनाया जाता था। पूआ[८] (केक) मीठे होते थे, जिसे घी, पिट्ठी डालकर बनाया जाता था। यह प्रिय मिष्ठान था।

कुल्माष[९] (कुलथी) भी खाया जाता था। इसे बिना नमक, तेल, शक्कर के

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११८, १८५-८६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २००, २८९
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९५
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९ जि० ६, पृ० ३६४, ५१०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १९९; जि० ६, पृ० ४१०, ५५४, ५६२
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३६६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४१०; महोदय ओमप्रकाश, फूड एण्ड ड्रिंक्स इन एन्सियन्ट इण्डिया, पृ० ५८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८५-८६; जि० ३, पृ० १४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८९; जि० ३, पृ० ३०५
६. दिव्या पृ० १८४/४; मंजुश्री जि० ३/७०८/२६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१०, ३३८, ४२२; जि० ४, पृ० ५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४४७, ४८३; जि० २, पृ० ४४, ४५; जि० ४, पृ० २५०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०, ३४६-४८, ४२२, ४७७, ५०२; जि० २, पृ० १६२; जि० ३, पृ० ४६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३, ४९३-९६; जि० २, पृ० ४५, ११६, १५०, ३५३; जि० ४, पृ० १२१
९. जा० अ० रो० हि० १, पृ० २२८, ३४५-४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४४, ४९२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बनाया जाता था, यह गरीबों का भोजन था। लड्डू[1] (मोदक) भी बनाये जाते थे। सत्तु[2] भी खाया जाता था जिसमें मधु मिलाया जाता था। 'तिलोदक'[3] खाद्य को बहुत चाव के साथ खाया जाता था। जौ[4] का भी भात (यव भत्तम)[5] एक साथ खाया जाता था।

गोपान[6] (गवपान) का भी उल्लेख मिलता है। बड़े-बड़े कड़ाहों में दूध से भरकर गाढ़े होने पर उसमें थोड़ा सा चावल, मधु, शक्कर, घी मिलाकर बनाये हुए भोजन को गोपान (गवपान) कहते थे। खीर[7] को घी से छौंक कर उसमें मधु मिलाते थे सुगन्धित के लिए केवड़े[8] (केतकानि) का भी प्रयोग करते थे। गुड़-दही को दूध में मिलाकर खाते थे।[9] गोरस (दूध-घी) का उल्लेख मिलता है।[10]

भोजन में मिष्ठान का विशेष महत्व था। राब[11] (फाणित), मधु[12], गुड़[13],

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२२; जि० ६, पृ० ३८५, ५२४, ५३१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२७; जि० ६, पृ० ४३१, ५७२, ५८२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०; जि० ३, पृ० ३४३, ३४६-४७; जि० ६, पृ० ३६५, ५३१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३; जि० ४, पृ० ७, ८, १०-१२; जि० ६, पृ० ४१२, ५८२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०७; जि० २, पृ० २७८, ३९९; जि० ३, पृ० ४२५, ५३७ ५३८
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३७२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४१५, ४१८
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३७२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६८, १८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४०, २८८
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६८, १८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४०, २८८
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३८४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४४-४५
९. ,, ,, १, पृ० ४०९; ,, ,, १, पृ० ५७७
१०. ,, ,, १, पृ० ३८८; ,, ,, १, पृ० ५४४-४९
११. ,, ,, १, पृ० ३५४; लेफमैन, ललित० ४०/१६-१७
१२. ,, ,, १, पृ० ६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४०
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और शक्कर[1] तथा खण्ड (खाँड़)[2] का प्रायः उल्लेख प्राप्त होता है। शक्कर के लड्डू (शर्करामोदक)[3] बनाये जाते थे। सर्पी का बहुधा प्रयोग करते थे।[4] मधु का शरबत बनाकर पीते थे।[5] तिल के भी लड्डू बनाये जाते थे।[6] मिठाई भी खायी जाती थी।[7]

दही और भात मिलाकर खाया जाता था।[8]

दालों में मूंग (मुग्द)[9] मासे की दाल उरद (मास)[10], मटर[11], कुल्थी (कुल्माष)[12] की दालों का प्रयोग करते थे। विभिन्न प्रकार की सब्जियों (शाकप्रकाराणि)[13] का भी प्रयोग किया जाता था। लहसुन (नादिय)[14], आलू (आलु)[15], लौकी-कद्दू (लालकुम्भण्डादीन)[16] का भी प्रयोग करते थे। प्याज का प्रयोग क्षत्रिय वर्ग में वर्जित था।[17]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६७
२. दिव्या० १८/३, १८४/६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९६
३. महावस्तु जि० ३/१४६/१४, १४७/८, १४८/१४, १५०/११; जि० ३/११३/९
४. डा० अँगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी० प० १७०; चरक संहिता, पृ० १४७
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३७
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७६
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३४९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३९५
८. दिव्या० २३३/२२, २३४/४, ४३५/४
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४२८; जि० ३, पृ० ५५; जि० ६, पृ० ३५५; जा अ० हि० जि० २, पृ० ५४; जि० ३, पृ० २२३; जि० ६, पृ० ४०१
१०. जा अ० रो० जि० २, पृ० ७५,२४४; जि० ६, ३५५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५१, ४५१; जि० ६, पृ० ४०१
११. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ७४-७५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५०, २५१
१२. जा० अ० रो० जि० १, ३४५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९२
१३. महावस्तु जि० २/४७८/११
१४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २२५; जि० ६, पृ० ५३७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८६; जि० ६, पृ० ५८९
१५. जा० अ० रो० जि ४, पृ० ३७१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८०
१६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४११; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३०
१७. दिव्या० २६४/९-१०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तेल नमक (तेलं लोणञ्च) और पिप्पल (पिफ्फली) को मिश्रित किया जाता था।[१]

कच्ची अदरख (सिङ्गिवेर), जीरा (जीरक), हींग, मिरच और हल्दी (हलिद्दी) का प्रयोग करते थे।[२]

कुषाण सम्राट् हुविष्क के राज्यकाल के मथुरा के एक अभिलेख में भी सत्तु (शवतु) लवण (लवृन) शाक तथा शब्जी (हरित कलापक) का उल्लेख हुआ है।[3]

भोजन में मांस का भी प्रयोग होता था जिसे अंगारों में भुनकर खाते थे।[४] कुछ लोग मांस को छौंक कर[५] तथा कच्चा भी खाते थे।[६] मृग मांस सामान्य था।[७] सालुक (सुअर)[८], गोह[९], भैंसों, बकरियों[१०] और बन्दर का मांस भी खाया जाता था।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २५२
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६३; जि० ३, पृ० ८८, १४८, ३०१; जि० ५, पृ० ८९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८७, ८८, ३१२, ४५२; जि० ५, पृ० १७६
३. एपी० इण्डि० जि० २१ पृ० ६०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २११; जि० २, पृ० ३९८; जि० ४, पृ० ३९; जि० ५, पृ० १२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२१; जि० ३, पृ० ११८; जि० ४, पृ० २३८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३६१
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८१
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५४, १६०; जि० ३, पृ० १८३-८४, २२०, ४६७; जि० ४, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २४८, २५४-५५; जि० ३, पृ० ३४५-३४६, ३७१; जि० ४, पृ० १२५, ४९४
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४१९-२०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १४०-४१
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८१; जि० ३, पृ० ८५, १०६; जि० ५, पृ० १६३; जा० अ० हि० जि० २; पृ० १२१; जि० ३, पृ० २५२, २७२; जि० ५, पृ० २४३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८३
११. ,, ,, ५, पृ० २३७; ,, ,, ५, पृ० ३२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोह का मांस रामायण काल में भी अच्छा मानकर खाया जाता था।[1] चरक ने गोह के मांस को आयुर्वेद की दृष्टि से सर्वोत्तम बताया है।[2]

गाय तथा बछड़े का मांस भी लोग खाते थे।[3] भेंड़-बकरी का मांस तो प्रचलित ही था।[4]

पशु मांस के अतिरिक्त पक्षियों का मांस भी भोजन के लिए प्रयोग किया जाता था। कबूतर का मांस तपस्वी लोग भी खाते थे।[5] मुर्गा[6], मयूर[7], तोता[8], तीतर[9], किन्नर[10] आदि पक्षियों का मांस खाया जाता था।

ताजी रोहित मछली का सूप बनाया जाता था।[11] मत्स्य-मांस[12] जातक युग में प्रिय भोजन था। चरक संहिता में भी इसकी पुष्टि होती है।[13]

---

१. अरण्डकाण्ड, पृ० ५९९/२३
२. चरकसंहिता, पृ० १५४
३. जा० अ० रो० जि० १; पृ० ४९४; जि० ३, पृ० ५३८, ५४०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १३८; जि० ४, पृ० १९८, २००
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २५१-५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५३-५४
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३८२-८३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १०३
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९; जि० ५, पृ० ११; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३८; जि० ५, पृ० ९९
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६८
८. ,, ,, २, पृ० ३९८; ,, ,, ३, पृ० ११८
९. ,, ,, ५, पृ० ११; ,, ,, ५, पृ० ९९
१०. ,, ,, ४, पृ० २५१; ,, ,, ४, पृ० ४५४-५५
११. जा०अ०रो० जि० २, पृ० ४३३; जि० ३, पृ० ५२-५३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १५३, २२१-२२२
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४२-४३, ४१७, ४२५; जि० २, पृ० २११, २६२; जि० ३, पृ० २२५, ४२९, ४३५; जि० ६, पृ० ३९४, ४०६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३६२-६३; जि० २, पृ० ३८, ४९, ४१२, ४७१; जि० ३, पृ० ३८५; जि० ४ पृ० ८८, ९४; जि० ६, पृ० ४४०, ४५०
१३. चरक संहिता, पृ० १५२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मांस को सुखाकर (वल्लूट) रखा भी जाता था।[1] श्लाका भोजन[2] को सिलाई में पकाया जाता था। कवाब बनाये जाते थे।[3] मांसोदन[4] (पुलाव) खाया जाता था। मांस से सालन[5] बनाया जाता था, जो आज भी मुसलिम समाज में प्रचलित है। महासुतसोम जातक में मनुष्य-मांस खाने का भी उल्लेख मिलता है ऐसे लोगों को नरभक्षी कहा जाता था।[6]

ऋषिमुनियों का मुख्य भोजन कन्दमूल[7] और फल था। सेपण्णि वृक्ष के फल[8], तिंदुक[9] पियाल तथा कार के पत्ते, मधुर कासुमारिय फल[10], भिस की जड़ें[11], ताली-तगर, आलू तथा ताल के कन्दों एवं विलासी, तक्कल फलों[12] और मूली[13] का खाने में प्रयोग किया जाता था।

अनेक प्रकार के आमों से अमरस, अमधुर (अमचुर) पनस (पना) बनाया

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५२
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०९, २१०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४११-१२
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५२, २२०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २२१-२२, ३८१
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १०९
५. ,, ,, १, पृ० १९६; ,, ,, १, पृ० ३०३
६. ,, ,, ५, पृ० ४५८-६० ,, ,, ५, पृ० ५३७-४०; जि० २, पृ० ३००
७. ,, ,, १, पृ० ९९; जि० ४, पृ० ७४; बु० च० ११/१७; महावस्तु जि० ३/११३/९; सद्धर्म १६९/९; मित्रा, ललित, ३१२/७
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७२
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ७६; जि० ६, पृ० ५३२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५३; जि० ६, पृ० ५८४
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५८४
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९९, १०२, १२९; जि० ४, पृ० ३०६, ३१३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७७, १७९, २१३; जि० ४, पृ० ५११, ५१८
१२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३७१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८०-८१
१३. ,, ,, ४, पृ० ८८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जाता था।[१] अमरस में शक्कर और दूध मिलाकर पिया जाता था।[२] जामुन (जम्बूफल)[३], गूलर (उदुम्बर या फल्गु)[४], जंबीर-नींबू[५], पीपल का फल (पिप्पली)[६], कैथा, नारियल (नालिकेरा), कटहल[७] (पनसा), केला[८] बैर (बदरा)[९], अँवला (आमलका), बेल, राजायतन, शाल, विभीतक (विभीतका) हर्रे (हरीतिका), महुआ (मधु मधुका), अंगूर, ताड़, खजूर, सिंघाड़े (सिंघाटिका), मृणाल[१०], केवड़ा[११] आदि का प्रयोग होता था।

पेय पदार्थ भोजन के अभिन्न अंग थे। गन्ने का रस (इक्षुरस)[१२] चावल का माड़ (तण्डुलोदकं)[१३] तथा शर्करासव[१४] का प्रयोग किया जाता था। मादक पेयों में सुरा[१५], कबूतरी शराब[१६], अंगूरी शराब[१७] और ताड़ी (मैरेय)[१८] प्रमुख थे। धान की भी शराब बनायी जाती थी।[१९]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४०८; जि० ३, पृ० २१, ११४
२. जा० अ० रो० जि० २ पृ० ३९३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११३-१४
३. ,, ,, १, पृ० ४०; ,, ,, १, पृ० १०३
४. ,, ,, ६, पृ० ५२९; ,, ,, ६, पृ० ५८१
५. ,, ,, ३, पृ० ३१९; ,, ,, ३, पृ० ४६७
६. ,, ,, ३, पृ० ३०१; ,, ,, ३, पृ० ४५२
७. ,, ,, ६, पृ० ५२९; ,, ,, ६, पृ० ५८१-८२
८. ,, ,, १, पृ० ५२; ,, ,, १, पृ० १२०
९. ,, ,, ४, पृ० ३७१; ,, ,, ४, पृ० ५८०-८१
१०. ,, ,, ६, पृ० ५२९; ,, ,, ६, पृ० ५८१-८२
११. ,, ,, ३, पृ० ३८४; ,, ,, ४, पृ० ४४-४५
१२. ,, ,, १, पृ० ४४८; ,, ,, २, पृ० ७९
१३. मित्रा, ललित० ३१०/२०, ३२०/१२, १३
१४. दिव्या० ३८७/२५
१५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५१, २६८-६९; जि० ५, पृ० १२-१३, १७-१८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७४, ३९५; जि० ५, पृ० ९९, १०७
१६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५११
१७. ,, ,, २, पृ० ९६; ,, ,, २, पृ० २७६
१८. ,, ,, १, पृ० ३६१; जि० ४, पृ० ११६; जि० ६, पृ० ५८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५११; जि० ४, पृ० ३१७; जि० ६, पृ० ६४१
१९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भोजन और पेय के प्रयुक्त होने वाले पात्रों में घड़े (मटके)[१], सोने, लोहे, नीलमणि, तांबे तथा कांसे, मिट्टी की थाली[२], सोने की झारी[३], सोने की तश्तरी[४], सुराही[५], कलश, कसोरा[६], प्याला[७], कटोरा, नाद[८], कड़ाही[९], कड़छी[१०], देगची[११], हाँडी[१२] आदि प्रमुख थे।

भोजन चूल्हा[१३] और अंगीठी[१४] पर पकाया जाता था।

इस प्रकार जातकों के अध्ययन से तत्कालीन समाज में प्रचलित भोजन और पेयों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६-८९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०; ११२, १४७; जि० ३, पृ० २२४, २८५, ३२७; जि० ४, पृ० १०८, २१४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३, १९२, ३६८; जि० ३, पृ० ३८४, ४३७, ४७६; जि० ४, पृ० ३०९, ४१५
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९३, जि० ३, पृ० १०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७०; जि० ३, पृ० १८१
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४२०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६५, ३५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३९१, ४९८
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६५; ३५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३९१, ४९८
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३८६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९४
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४०
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९३-९४; जि० ४, पृ० ४३०
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २७७, ४६१; जि० ५, पृ० ३८९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३१; जि० ४, पृ० १२१; जि० ५, पृ० ४७२
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४०, ५०३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८५; जि० २, पृ० १५०
१२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २२१-२२
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९३
१४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७६, २१८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ८६, २५४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वस्त्राभूषण और शृंगार

वस्त्रों का महत्त्व :

इस युग में वैदिक युग की अपेक्षा सभ्यता आगे बढ़ चुकी थी। तन्तुवाय (जुलाहे)[१] कपड़ा बुनना जानते थे। दर्जी (तुण्ण-वाय)[२] लोग कपड़ा सीते थे। चीवर बनाने के लिए कपड़ा काटना, रफू करना, ठीक से सीना, सुन्दर रंगना, कफ देना, शंख से रगड़ कर चिकना रखना, मैले कपड़ों को गरम पानी से धोना, उसमें सैकड़ों, हजारों चुनन देकर रखना आदि वे भली-भाँति जानते थे।[३]

वस्त्र और आभूषण (वस्त्राभूषण)[४] मानव-सभ्यता के अपरिहार्य अंग थे, जिनसे व्यक्ति और समाज की अभिरुचि और कलात्मकता का ज्ञान होता है।[५]

जातक साहित्य में बहुमूल्य वस्त्रों, राजवर्ग के वस्त्रों, सामान्य व्यक्ति के वस्त्रों और भिक्षु-संन्यासियों के वस्त्रों का उल्लेख हुआ है।

कपास के वस्त्र, कौसेय्य वस्त्र, कौटुम्बर वस्त्र, खोमक तथा उदुम्बर वस्त्र और ऊनी वस्त्रों का प्रचलन था।[६] वस्त्रों पर कसीदे का काम भी होता था।[७] काशी के बने शुद्ध, उत्तम, कोमल और रेशमी वस्त्र (काशिक-वस्त्राणि)[८], वीर-बहूटी के वस्त्र[९] अधिक प्रसिद्ध थे।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३.३४; कौसल्यायन भदन्त आनन्द, पालि हिन्दी कोष, पृ० १३६
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३६६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४१२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४५
४. डॉ० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १७४
५. वही, पृ० १७४
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४७, ४९, ५००, ५९०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५३, ५५, ५४१, ६५२
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५७, ६२, ३९५; जि० ६, पृ० २४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२६, १३१, ५५९; जि० ६, पृ० २८०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५३, ६५, ३५५; जि० ३, पृ० ११; जि० ५, पृ० ७८, ३७७; जि० ६, पृ० ४९, ५०, १४४, १५१, १५४, ४०३, ४५०. ५००
९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १८७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३८७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वस्त्र उद्योग के लिए काशी प्रसिद्ध ही था।[१] स्त्रियाँ कपास के खेतों की रखवाली करती थीं।[२] इन्हें "कप्पासरक्खिका" नाम से सम्बोधित किया गया है। रूई धुनी (कप्पास-पोथन-धनुक) जाती थी।[३] स्त्रियाँ बारीक सूत कातती (समुख सुत्तानि कन्तिवा) थी। गुडी (गुल) बनायी जाती थी। बनारस के जुलाहे प्रसिद्ध थे।[४]

महापरिनिब्बानसुत्त में कहा गया है कि कुसीनारा के मल्लों ने भगवान् के शरीर को कोरे वस्त्र में लपेट कर धुनी हुई रूई से लपेटा, उसके बाद पुनः कोरे वस्त्र में लपेटा। इस प्रकार से पाँच सौ जोड़े कपड़ों में लपेट कर लोहे की तेल-वाली द्रोणी में रक्खा गया था।[५]

कौशेय वस्त्र (कौशेयप्रावार)[६], रेशमी चादर होती थी जिसे बौद्ध भिक्षु धारण करते थे। शाटक के बने कपड़ों का मूल्य लाख तक होता था।[७] क्षौम वस्त्रों का भी प्रयोग होता था।[८] महावग्ग में बुद्ध ने भिक्षुओं को क्षौम के बने चीवर धारण की आज्ञा दी है।[९] कंबल[१०]—गांधार देश के श्वेत-कम्बल (गंधारा पटुकबंला)[११] बहुत ही प्रसिद्ध थे। उड्डीयान के कंबल का उल्लेख भी हुआ

१. जा० अ० गे० जि० ३, पृ० २८६-८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३९
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७७
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५०; जि० ६, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९८; जि० ६, पृ० ४६
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ६५
५. महापरिनिब्बानसुत्त, पृ० १२४/१४-२०
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३०१; जि० ६, पृ० ४५६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३८२; जि० ६, पृ० ४९८
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९६
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४७; जा अ० हि० जि० ६, पृ० ५९; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० १७०/१३, ३४३/२५, ३३५/१९
९. महावग्ग, पृ० ५५/२३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११९, १७८, ३१९, ५०२; जि० २, पृ० २५४; जि० ३, पृ० १८४, ३३२; जि० ४, पृ० १८९, २३०, २३२, २५६, २६५, ३५२, ४०८; जि० ५, पृ० १३६, २४१, ३५८; जि० ६, पृ० ३६८, ४५०, ४८८, ५१५
१. खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० ३३५/९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है।[१] शिवि देश के बने शाल प्रसिद्ध थे।[२] जिन्हें "सीवेय्यक दस्सयुंग"[३] कहा जाता था। कौशल राजा ने दशबल नाम के व्यक्ति को शिवि देश के बने वस्त्र (सीवेय्यक वत्थ) का दाम एक लाख कार्षापण था, दिया था।[४] नाना रंग के दुशाले अधिक प्रचलित थे।[५]

काशी के बने वस्त्र प्रसिद्ध थे। जिन्हें काशीकुत्तम[६] कहते थे। ये पीले, लाल और सफेद रंग के होते थे। बनारसी कपड़े (वाराणसेय्यक) के बारीक कपड़ों का उल्लेख दीघ निकाय में भी हुआ है।[७] जीवक कुमार भृत्य को काशी-राज से उपहार में एक कंबल मिला था।[८] बनारस में कसीदे का काम होता था इसे "कासिक सूचीवत्थधरा"[९] कहते थे। यह वस्त्र लाख के मूल्य के तथा हजार के मूल्य के होते थे।[१०] ऐसे वस्त्र बौद्ध-भिक्षुओं के लिए निषिद्ध थे। औदुम्बर वस्त्रों[११] का भी उल्लेख मिलता है ये उदुम्बर देश में बने हुए कपड़े थे। दुकूल चुघंट[१२]—एक राजा ने इसे पहना था।

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५२; जा० अ० हि० जि० ४; पृ० ५६०
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६०९
३. महावग्ग, पृ० २९५/२३
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६०९
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४, ५९-६०, १४९; जि० २, पृ० २०, २४, ३१४; जि० ६, पृ० १२, ३७४, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९७, १२९, २४३; जि० २, पृ० १८५, १८९; जि० ३, पृ० ४१; जि० ६, पृ० १२, ४२०
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४९-५०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६०
७. दी० नि० पा० जि० २, पृ० ८७
८. महावग्ग, पृ० २९८/११-१२
९. खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० २५९/७, २६५/२१, २६६/१
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३; जि० ३, पृ० ११; जि० ६, पृ० ४५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९६; जि० ३, पृ० १८१; जि० ६, पृ० ४९१-९२
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५००, ५१०, ५९०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५४२, ५५४, ६५२
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्रों के अतिरिक्त कुश-चीर[1], पाशुकूल चीवर[2], वल्कल वस्त्र[3], फलक चीर[4] का उल्लेख जातकों में हुआ है।

ये तीनों प्रकार के वस्त्र बौद्ध भिक्षुओं के लिए वर्जित थे इनका प्रयोग ब्राह्मण धर्मी साधु संन्यासी करते थे। वे अजिन चर्म[5] (स्याह मृग का चर्म) भी धारण करते थे।

वस्त्रों की धुलाई और रंगाई :

कपड़ों की रंगाई भी की जाती थी। रंगने के पहले वस्त्रों को अच्छी प्रकार से धो लिया जाता था। नाना रंगों के वस्त्र प्रयोग किये जाते थे।[6] फिर भी छः रंगों का विशेष रूप से उल्लेख हुआ है—नीला, पीला, सफेद, मजीठा, लाल तथा प्रभास्वर।[7]

मोटे कपड़े का जोड़ अच्छी प्रकार से धुलवाकर, स्त्री कराके रखा जाता था।[8] उन्हें धूप में सुखाया जाता था।[9] भिक्षुओं के वस्त्र काषाय रंग से रंगे जाते थे। निम्न प्रकार के वस्त्र-वेषों का उल्लेख जातकों में प्राप्त होता है।

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५००; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५४२; महावग्ग, पृ० ३२०/१०
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४४१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६, ८, ११-१३; जि० २, पृ० १३, ५७, ६८, २७२; जि० ३, पृ० ४९८; जि० ५, पृ० ८९, १३२, २०१, २०२; जि० ४, पृ० ४७६; जि० ६, पृ० २१, ७३, २४२; महावग्ग, पृ० ३२०
४. महावग्ग, पृ० ३२०/११
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९, १२-१३, ५३; जि० २, पृ० २७२; जि० ३, पृ० २३६; जि० ४, पृ० २९९, ४२०; जि० ६, पृ० २१, ४८, ७३, २४२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६९
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२; जि० ६, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७०; जि० ६, पृ २२०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४५
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुरुष-वेष :

गृहस्थों के पहनावे में तीन वस्त्र प्रमुख थे। धोती (अंतरवासक)[१] दुपट्टा (उत्तरासंग)[२] और पगड़ी (उण्णीश)[३] प्रमुख थे। ढीला कुर्त्ता (शाटक)[४] भी पहना जाता था। शिर पर पगड़ी बाँधी जाती थी।[५]

उत्सव में जाने के लिए लोग नीले, पीले, लाल, सफेद वस्त्र पहनते थे और नाना प्रकार के अलंकरण धारण करते थे। बुद्धचरित के अनुसार सभी वस्त्रों में साम्य रखा जाता था।[६] वस्त्रों में संगति तथा साम्य का भी ध्यान रखा जाता था, पीत वस्त्र के साथ सम्पूर्ण वस्त्र पीले पहने जाते थे।[७] इन वस्त्रों की पुष्टि प्राप्त प्राचीन अभिलेखों से भी होती है। मथुरा संग्रहालय में एक मूर्ति धोती पहने हुए और कमर के चारों ओर दुपट्टा लपेटे हुए है। इसी प्रकार से ब्रिटिश संग्रहालय में आसन (तिपाई) पर बैठी हुई एक स्त्री के सम्मुख खड़ा हुआ व्यक्ति घुटनों के नीचे तक धोती पहने है। साँची के एक मूर्ति में दानी स्त्री-पुरुष तथा बच्चे पश्चिमोत्तर भारत की वेश-भूषा पहने हुए है। पुरुष बूट पहने है तथा पेटी से कसा हुआ एक लम्बा वस्त्र धारण किये हुए है।[८]

State Museum Library Lucknow 7127

स्त्री-वेष :

स्त्रियाँ भी पुरुषों की भाँति नाना प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करती थीं।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९, १२७; जि० २, पृ० २४; जि० ४, पृ० २१९, २६८; जि० ६, पृ० ४०९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६४-६५, २११; जि० २; पृ० १९०; जि० ६, पृ० ४५३
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०७, ३१८, ३५४; जि० २, पृ० २४, ४२४; जि० ४, पृ० ११४; जि० ६, पृ० २२४, ५८३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७७, ४४३, ४५८; जि० २, पृ० १९०, जि० ३, पृ० १४३; जि० ४, पृ० ३१५; जि० ६, पृ० २६२, ६४४
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ८८; जि० ४, पृ० ४३२; जि० ५, पृ० १२९, २६४; जि० ६, पृ० २६५, ४४४, ५७९
४. अवदान, जि० १/१८४/१०
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९७
६. बु० च०, पृ० २३/३-७
७. डॉ० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में० भा० जी०, पृ० १७५
८. डॉ० अँगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १७५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

साड़ी और चोली[1] उनके सामान्य वस्त्र थे। लाल चादर (उत्तरीय), ओढ़नी[2] ओढ़ती थी। रेशमी वस्त्रों (अंशुकस्य) तथा बारीक वस्त्रों को भी पहनती थी।[3] केसरी वस्त्र[4], गहरे, कुसुम्ब रंग, रक्त वर्ण वस्त्र[5], घने रंगीन लाल वस्त्र[6], पीतवर्ण-चादरें[7], नीलोत्पल जैसे चमक वाले वस्त्र, धूम्र वर्ण वस्त्र[8], मजीठे रंग के वस्त्र[9] नारी समाज में प्रायः प्रचलित थे। स्त्रियाँ वस्त्रों के जोड़े को धारण करके कार्तिक रात्रि के उत्सव को भी मनाती थी।[10] विरूपक्ष की पुत्री कालकण्णी ने नीले रंग का वस्त्र, नीले विलेपन और नील मणियों से अपना श्रृंगार किया था।[11]

"मथुरा कला केन्द्र में स्त्री-वस्त्रों के अनेक प्रकार प्रदर्शित किये गये हैं। एक स्त्री-समूह लम्बी बाँहों वाला एक वस्त्र तथा पैरों तक लम्बा लंहगा पहने हुए है। उनके पैरों में जूते भी हैं। लखनऊ संग्रहालय में एक स्त्री प्रतिमा लम्बी धोती तथा अधोवस्त्र लँहगा पहने है। ब्रिटिश संग्रहालय में कुषाणकालीन राजाओं के लेखयुक्त पट्ट पर तिपाई पर आसीन एक स्त्री कोपीन तथा कटिसूत्र पहने है। हुविष्क के लेख युक्त मथुरा संग्रहालय में एक स्त्री मूर्ति छोटा लँहगा पहने है तथा बायें क़न्धे पर से नीचे की ओर लटकता हुआ कोई

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५७
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८३; जि० २, पृ० १९७; जि० ३, पृ० ६१, ४९८, ५११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४३; जि० २, पृ० ३९४; जि० ३, पृ० २२९; जि० ४, पृ० १५८, १७२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०४; जि० २, पृ० २७४; महावस्तु जि० २/४३१/3
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४५
५. ,, ,, ५, पृ० २११; ,, ,, ५, पृ० २९४
६. ,, ,, १, पृ० ५००; ,, ,, २, पृ० १४७
७. ,, ,, ६, पृ० ४४९; ,, ,, ६, पृ० ४९१
८. ,, ,, ६, पृ० २६१; ,, ,, ६, पृ० २९९
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२; जि० ६, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ११७, जि० ६, पृ० २२०
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४७
११. ,, ,, ३, पृ० २५८; ,, ,, ३, पृ० ४१५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्य वस्त्र है ।[१] शुंग काल की मिट्टी की मूर्तियाँ कंचुक पहने हुए प्राप्त होती हैं ।[२]

ब्राह्मण-तपस्वियों के वस्त्र :

प्राय: एक से होते थे । लंगोटी (कोपीन)[३] बाँधकर तप करते थे, श्याम मृग चर्म (अजिन) तथा वल्कल ही उनके पवित्र वस्त्र थे । इसीलिए उन्हें अजिन वल्कलधारी[४] तथा दारवचीरधारी[५] कहा गया है ।

बौद्ध भिक्षुओं के वस्त्र :

श्रमण और भिक्षु काषाय[६] रंग के वस्त्र पहनते थे । उनके लिए काशी के बने बहुमूल्य वस्त्र वर्जित थे ।[७] भिक्षुओं के सम्पूर्ण काषाय वस्त्रों को चीवर कहते थे ।[८] जिसमें तीन वस्त्र अन्तरवासक, उत्तरासग और संघाटी होते थे । तीन वस्त्र होने के कारण ही त्रिचीवर कहा गया है ।[९] नहाने के वस्त्र[१०] और वर्षा-वस्त्र[११] अलग होते थे । स्थविर वर्षाकाल में दो स्थूल वस्त्र और एक बारीक कम्बल रखते थे ।[१२] इनके सिवाय बैठने के लिए आसन होता था ।[१३] वर्षाकाल में पहनने के लिए एक वस्त्र (वार्षिक साटिक)[१४] जो छः बित्ता लम्बा

---

१. दृष्टव्य, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १७६-१७७
२. डॉ० मोतीचन्द्र, प्राचीन भारतीय वेशभूषा, पृ० ३६
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३७; मित्रा ललित, ३३२/१०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६५
५. बु० च० ७/५१; दिव्या० २८९/२५
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५५, ८९, ९१, १३९, जि० २, पृ० १२१; जि० ३, पृ० ८४, ११४; जि० ६, पृ० १५६; म० नि० पा० जि० १, पृ० ३२९/१
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५
८. ,, ,, १, पृ० १२६; ,, ,, १, पृ० २१०
९. ,, ,, २, पृ० २४; ,, ,, २, पृ० १८९
१०. ,, ,, २, पृ० १३; ,, ,, २, पृ० १७७
११. ,, ,, ४, पृ० ३१५; ,, ,, ४, पृ० ५२०
१२. ,, ,, ३, पृ० ३३२; ,, ,, ३, पृ० ४८१
१३. महावग्ग, पृ० ३१२ (पच्चत्थरणं)
१४. वही, पृ० ३१२ (वस्सिकसाटिकं)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और ढाई बित्ता चौड़ा होता था। अंगोछा[1] तथा कच्छ[2] का भी प्रयोग होता था।

धनुर्धारी के वेश-भूषा :

धनुर्धारी सफेद वस्त्र उतारकर बदन से सटा हुआ एक लाल वस्त्र पहनते तथा काछ कसकर और लाल फेंटे में तलवार खोंसकर सबसे ऊपर एक सुनहला कंचुक पहनते, उसके ऊपर चापनाली धारण करके, मेढ़े या हिरन के सींग से बना बाजा और धनुष धारण करते थे।[3]

उपानह :

पैरों की रक्षा और आराम के लिए पावों में जूते पहने जाते थे।[4] जूते आकार और रंग में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते थे। जूते एक तल्ले से लेकर चौतल्ले तक होते थे।[5]

पैरों में पादुकाएँ भी पहनी जाती थीं। खड़ाऊँ (पादुकाएँ)[6] प्रायः लकड़ी की बनती थी। सोने की भी सुकृत चित्रित होती थी।[7]

वस्त्रों की सिलाई :

जातक साहित्य से ज्ञात होता है कि लोग सीना-पीरोना जानते थे। सूचिकार[8] अपने व्यवसाय में काफी निपुण थे। एक स्थल पर आकर्षक-गोल अच्छे सुन्दर पत्थर से खड़ी हुई चिकनी तथा तीखी नोक वाली सुई की प्रशंसा

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २४८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५१
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ८८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६७
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ८८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६७
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३०, १३१, २२३, २७७, ४४१; जि० ३, पृ० ७९-८०, ३३१; जि० ४, पृ० १५-१६, ५२, १७२; जि० ५; पृ० ४५; जि० ६, पृ० ५२५, ५५२, खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० ६४/१०, ५१/१८, १७६/२२; जि० ३, खण्ड १, पृ० २३९/१
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १७२; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड १, पृ० २३९/१
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३७९; जि० ५, पृ० २९८; जि० ६, पृ० २१८, २५१, ४५०
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २१८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २५४
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को गई है ।[१] सुई रखने की नालियाँ (सुई घर)[२] भी बनाते थे । दर्जी[3] काफी निपुण थे । कैंची (कत्तरिका)[४] का भी प्रयोग करते थे । वे लोग गृहस्थ स्त्री-पुरुषों, भिक्षु-भिक्षुणियों के पहनने के लिए नाना प्रकार के वस्त्र तैयार करते थे ।

इस प्रकार तत्कालीन समाज में विविध रंगों के और नाना प्रकार के वस्त्र पहने जाते थे । स्त्री पुरुषों के वस्त्र अलग-अलग थे । ब्राह्मण संन्यासियों और बौद्ध भिक्षुओं के वस्त्र सर्वत्र भिन्न थे । इन वस्त्रों के आधार पर सिद्ध होता है कि जातककालीन समाज पर्याप्त उन्नति पर था ।

आभूषण

जातक युग में हस्तकला का विकास हो चुका था । स्त्रियाँ स्वभावतः आभूषण प्रिय होती थीं । आभूषण सोने, चाँदी, हीरे, मोती, सीप, स्फटिक, बिल्लौर, काँच के, मणि-रत्न, शङ्ख आदि के बनते थे ।[५] नाना प्रकार के आभूषणों का उल्लेख जातकों में हुआ है ।[६]

शरीर के विभिन्न अंगों में पहने जाने वाले आभूषणों का वर्णन भी जातक कथाओं में प्राप्त होता है ।

चूड़ालंकार

आभूषणों में 'मुकुट' मुख्य था ।[७] मुकुट मणि-जटित (मणि-मुकुट) मुक्ता और सोने के बने होते थे । चूड़ालंकार से शिर को सुशोभित किया जाता था ।[८]

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३५
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६८
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३६६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४८२
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४७
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११२; जि० ५, पृ० ३७९-८०; जि० ६, पृ० ५४, १५३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९१; जि० ५, पृ० ४६२; जि० ६, पृ० ६४, १८३-८४
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६०; जि० ३, पृ० ५११; जि० ४, पृ० ४१, ५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२९, जि० ४, पृ० १७२, २४०, २६१; जि० ६; पृ० ३४४
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६०, ७४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२९, १४६
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५; जि० ६, पृ० ४८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५; जि० ६, पृ० ५२७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्त्रियाँ मुक्ता-मालाओं से भी सिर को सजाती थीं।[1] पद्म पत्र नामक अलंकार से जूड़े को सजाया जाता था।[2]

कर्णाभूषण

कानों के आभूषणों में कुण्डल[3], बालियाँ[4] मुख्य थे। कुण्डल मणियों के भी बनते थे जिन्हें मणिकुण्डल कहते थे। इनमें मोती भी लगाये जाते थे। ये सिंह के आकार[5] के भी बनाये जाते थे। रत्न की बनी बालों को 'रत्न-कर्णिका[6] कहा जाता था। कानों में आभूषण पहनने के लिए कानों को छेदा जाता था।[7] ये आभूषण सोने चाँदी के भी बनते थे। ताड़ के पत्ते[8] कमल के फूल[9] के आकार के भी आभूषण तथा लाल मालाएँ[10] भी कानों में पहनी जाती थीं।

गले के आभूषणों में माला[11] महामुक्ताहार[12] और अर्द्धहार[13] विशेष थे। ये अधिकतर मुक्ताओं से बनाये जाते थे। स्वर्ण निर्मित एवं रत्न निर्मित ग्रीवाभरण भी प्रचलित थे।[14] लाखों के मूल्य की चन्दनसार स्वर्णमाला और हजारों के मूल्यों की सोने की माला होती थी।[15] हिरण्य, बिल्लौर, मोती, मूंगा, माणिक्य, निष्क

---

१. करुणा ६७।२०
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १८०
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ६०, ३५२, ४६०-६१; जि० ५, पृ० १३६, १५६, २०५, २१६, २६०; जि० ६, पृ० १४४, १५४, २३९, २८३, ३६१, ५७८
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १९६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २७८
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४३८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५१५
६. दिव्या० १६/१३, २४
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३८१
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १२४
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५७४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६३२
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५४०; जा० अ० हि जि० ६, पृ० ५९४
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४१
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४३
१३. अवदान जि० १/२५९/११, २८२/५, २९६/१०; जि० २/११२/८; दिव्या० १०४/८, १९६/२८; महावस्तु जि० २/४७२/२
१४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५९०; जि० ६, पृ० ६५२
१५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३७३; जि० ६, पृ० ४८०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ९५; जि० ६, पृ० ५१८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और रजत (चाँदी) की मालाएँ उच्च वर्ग के लोग पहनते थे। सोने की हमेल[१] का भी प्रयोग किया जाता था। सोने और मणि के बने कण्ठे[२] पहने जाते थे। स्वर्ण मालाओं में कवल, केसर और हजार रत्न जड़े होते थे।[३] सिद्धार्थ ने एक लाख का मोती का हार उतारकर गौतमी को दिया था।[४] राजा भी गले में मोतियों की माला पहनते थे।[५]

लाल रंग की बनी कण्ठी तथा नाना रंगों के भागों को गठियाकर सूत की बनी कण्ठी पहनी जाती थी[६]। कौड़ी में छेदकर माला बनाकर गले में पहनी जाती थी।[७] ये सम्भवतः निर्धन समाज के आभूषण थे। फूलों की माला भी गले में पहनी जाती थी।[८]

हाथों के आभूषण :

विशेषकर स्त्रियाँ अपने हाथों में आभूषण धारण करती थीं जिन्हें हस्ताभूषण कहा जाता था।[९] इन आभषणों में कङ्कन[१०], कड़ा, चूड़ी[११] होती थी। उंगलियों में बहुमूल्य अँगूठी (मुद्रिका)[१२] पहनी जाती थी। इसे अंगुलिमुद्रा[१३] भी

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११२, ३८४-८५, ३८६; जि० ३, पृ० २९२ जि० ५, पृ० १८३, २९७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९१, ५४४-४६; जि० ३, पृ० ४४२; जि० ५, पृ० २६६, ३७९
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २९९
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३०
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३४५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३९१
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८६; जि० ६, पृ० ३३५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४६; जि० ६, पृ० ३७६
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३१४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४६४
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५३०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १८९
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४३
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ६४-६५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ७३-७४
११. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९५
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१, १३४; जि० ५, पृ० ४३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४, २२१; जि० ५, पृ० ५१६, ५४५
१३. अवदान जि० १/३१४/६; दिव्या० २९६/१९, २९०/१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कहा गया है। बाहुभूषणों में अंगद[1] मुख्य थे। जो सोने, चाँदी के बने होते थे। जो तप्त सोने के तारों से मढ़ा जाता था।[2] हाथों में बाजूबन्द[3] भी पहने जाते थे।

अन्य आभूषण :

उक्त अंगों के आभूषणों के अतिरिक्त मणि-मेखला पहनी जाती थी। उन्नत आभरण, माथे के आभरण ये नाना प्रकार के मणिमय आभरण उग्गस्थन (आभरण), गिङ्गमक (आभरण), पैरों में पहने जाने वाले पादाभरण (आभरण) कहलाते थे।[4]

शृंगार

वस्त्र और आभूषण के प्रचलन के साथ ही शृंगार-सज्जा भी सभ्यता का मापदंड माना जाता था।

स्त्री-पुरुष दोनों ही लम्बे केश रखते थे।[5] स्त्रियाँ लम्बे केशों के जूड़े को बनाती थीं, कई रूपों से बाँधती थीं।[6] सिद्धार्थ ने "स्वयं तलवार से मौर सहित लम्बे-लम्बे बालों को काट डाला था।"[7] केशों को सजाने के लिए मणि और रत्नों का प्रयोग किया जाता था, फूलों के गजरे[8] भी लगाये जाते थे। चूड़ामणि[9] तथा कुंकुम[10] का भी प्रयोग होता था। चोटिया (वेणी)[11] भी गूँथी जाती थीं। बालों में सोने की बनी सुइयाँ लगाई जाती थीं।[12] बाल घुंघराले भी बनाये जाते

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५९०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६५२
२. सौ० १०/९
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४५०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४९१
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५९०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६५२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२; जि० ५, पृ० १५६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७१; जि०, ५, पृ० २३७
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १८०
७. ,, ,, १, पृ० ६५; ,, ,, १, पृ० १३५
८. ,, ,, ५, पृ० २९२; ,, ,, ५, पृ० ३७३
९. ,, ,, ६, पृ० ४८९; ,, ,, ६, पृ० ५२७
१०. अवदान जि० १/२८२/५, २९२/७, २९३/११, ३०४/१०
११. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३८२
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९; जि० ५, पृ० १५६; जि० ६, पृ० ४०, २४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६६; जि० ५, पृ० २३७; जि० ६, पृ० ४६, २८०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

थे।[१] धनी स्त्रियाँ अपने जूड़े को पदुम-पत्र नाम के अलंकार से तथा सुगन्धित पुष्प मालाओं से सजाती थीं।[२] सुगन्धित जल से स्नान किया जाता था।[३] केशों को सुगन्धित चूर्ण से साफ किया जाता था। सुगन्धित तेल गन्ध-माला, विलेपन, कपूर[४], कटुकप्फल आदि का प्रयोग किया जाता था।[५] राई, सुगन्धित फूल तथा काशी के बने अगरु-चन्दन[६] शृंगार सज्जा में महत्त्वपूर्ण थे। सुगन्धियों का प्रयोग किया जाता था।[७]

दर्पण (आदास)[८] शृंगार सज्जा में बहुत सहायक थे। मुख पर पाउडर लगाया जाता था।[९] नाखूनों को लम्बा तथा लाल रंगते थे।[१०] आँखों में सिलाई से अंजन और सुरमा भी लगाते थे।[११] एक स्थान पर आँखों में "हाँडी का काजल" लगाने का उल्लेख हुआ है।[१२] स्त्रियाँ लाल चंदन (लोहित चंदन) से अपने पैर रंगती थीं।[१३] सिन्दूर का भी प्रयोग होता था।[१४]

पुरुष भी लम्बे नाखून और बाल रखते थे।[१५] हजामत[१६] बनवाते थे, तेल की

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २०३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २८८; जि० ६, पृ० ४९८
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १५१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १८०
३. ,, ,, ३; पृ० २९२; ,, ,, ३, पृ० ४४२
४. ,, ,, १, पृ० २९०; ,, ,, १, पृ० ४२३
५. ,, ,, १, पृ० ४८४; जि० ३, पृ० ४९७; जि० ४, पृ० १४१
६. ,, ,, ६, पृ० १४४, १५४, ३३६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १७०, १८५, ३७७
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७३
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २७०; जि० ५, पृ० ३०३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४७४; जि० ५, पृ० ३८३
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३०३; जि० ६, पृ० ५०९; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० ७४/१-१३, ३४२/१६
१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २०४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २८९; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० ७४/१९
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३८; जि० ४, पृ० १२४
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १२४
१३. अवदान जि १/१५४/३-४
१४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ५७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १५४
१५. ,, ,, १, पृ० ३०३, ,, ,, १, पृ० ४३८
१६. ,, ,, ४, पृ० ४४९; जि० ५, पृ० ४७७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मालिश करवाते थे।[१] सफेद मिट्टी[२] (साबुन) से नहाते थे। शिर पर पगड़ी भी बाँधते थे।[३]

"लखनऊ के प्रादेशिक संग्रहालय तथा मथुरा संग्रहालय में दो चौखटे हैं, जिनमें अनेक कटे हुए शिलापट हैं प्रथम चौखटे में स्नान करने तथा बालों को साफ करने का दृश्य है, दूसरे चौखटे के दृश्य में पति और पत्नी का चित्रोत्कीर्णन है। पति, पत्नी के बालों को चोटी के रूप में गूँथ रहा है। अन्य दृश्य में स्त्री अपने पति के हाथ में दर्पण दे रही है क्योंकि वह केश-विन्यास तथा अंगराज करना चाहती है।"[४]

इस प्रकार वस्त्र और आभूषणों के साथ-साथ समाज में और विशेष कर नारी समाज में शृंगार और केश विन्यास का प्रचलन था। जिसका सुन्दर वर्णन जातक कथाओं में प्राप्त होता है।

आमोद-प्रमोद

आमोद-प्रमोद मानव की स्वाभाविक आवश्यकता है। जातक युग में मनोरंजन के नाना प्रकार के साधन प्रचलित थे।

शिकार (आखेट) :

प्रारम्भ में मानव की जीवन यात्रा बहुधा शिकार पर आश्रित थी।[५] पशु-पक्षियों को धोखा देने के निमित्त शिकारी स्वयं अपने शरीर पर शाखा तथा पत्तों को लगाकर वृक्ष की भाँति बन जाते थे।[६] शिकारी बटेरों का सा शब्द करके बटेरों को फँसाकर पकड़ लेते थे।[७] मृगों का शिकार छिपकर करते थे।[८] मृगों को मधु का प्रलोभन दिया जाता था।[९] शिकारी मंच बाँधकर शक्ति फेंककर

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १६-१७, ४४६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१६; जि० ५, पृ० ३३
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२१
३. ,, ,, २, पृ० ८८; ,, ,, २, पृ० २६७
४. दृष्टव्य, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १८१
५. राय मन्मथ; प्राचीन भारतीय मनोरंजन, पृ० ४९
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ७६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५२; डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० की सा० सं०, पृ० २८१
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१८
८. ,, ,, १, पृ० १५४; ,, ,, १, पृ० २४८
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५७-५८; जा० अ० हि० जि० १ पृ० २५२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिकार करते थे।[१] काशीराज ब्रह्मदत्त हिरण के शिकार का बड़ा ही प्रेमी था।[२] राजवर्ग में मृगया मनोरंजन का प्रिय साधन था वे मृगया के लिए सेना सहित जाते थे।[३] शिकारी प्रायः अपने साथ शिकारी कुत्ते भी ले जाते थे।[४] कौशल राजा के लिए प्रजा ने कृत्रिम वन बनवाया था।[५] पक्षियों[६] और मछलियों[७] के शिकार के लिए जाल का प्रयोग किया जाता था।

मल्ल युद्ध :

कुश्ती भी होती थी इसके लिए रंगभूमि की सजावट, कुश्ती मण्डप, अखाड़ा, जय पताका, मचान दर्शकों के बैठने का स्थान आवश्यक होते थे। बीच में अखाड़ा होता था उसके चारों ओर गोलाकार दीर्घाएँ होती थीं जिनमें दर्शक बैठते थे।[८] पहलवान भुजाओं को थापी देते हुए लड़ते थे।[९] दीघ निकाय के ब्रह्मजाल सुत्त में कुश्ती के अतिरिक्त दण्ड युद्ध, मुष्टि-युद्ध निब्बुद्ध और उय्यौधिक का उल्लेख हुआ है।[१०]

पशु युद्ध में बैलों और मेंड़ों की लड़ाई होती थी।[११]

उद्यान-यात्रा :

जातक युग में उद्यान यात्रा का जो उल्लेख मिलता है उससे ज्ञात होता है कि नागरिक नगर के क्रियाशील जीवन की चिन्ता-भावना पीछे छोड़कर थोड़ी देर के लिए शान्ति प्राप्त करने के लिए उद्यानों में चले जाते थे अथवा वनों की

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७२-७३
२. ,, ,, १, पृ० १४९; ,, ,, १; पृ० २४३
३. महावस्तु, जि० २/२२६/१३; अशोक का आठवाँ शिलाभिलेख; दिव्या० ८/३, ५, २४/११
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २४
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २७०; जा० अ० हि० जि० ३; पृ० ४२५
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३३०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४७८
७. जा० अ० रो० जि० १ पृ० २१०-११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२१
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८१-८२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८३; जि० २, पृ० २७५
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१६
१०. दी० नि० पा० जि० १, पृ० ५७
११. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८२. जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सघन छाया की शरण में पहुँचते थे।[१] इन उद्यान यात्राओं के अभाव में पिंजरे में बन्द जंगली मुर्गे की तरह उद्विग्नता तथा सन्दूक में बन्द रहने के समान अनुभव होता था।[२]

काशी-राज ब्रह्मदत्त दिन भर उद्यान में बिताकर संध्या समय नगर को लौटते थे।[३] कौशलराज ने भी उद्यान-यात्रा करने के लिए उद्यान-पालक को बगीचे की सफाई करने के लिए कहा था।[४] बनारस के नगर-श्रेष्ठी और राज-पुरोहित की पुत्रियाँ पान-भोजन की सामग्री-द्रव्य और फूल-माला लेकर उद्यान-क्रीड़ा करने के लिए जा रही थीं, मार्ग में चण्डाल को देखकर वे लौट आयी थीं।[५] उद्यान के लिए पुष्करिणी विशेष आरोचक होती थी। उसी के तट पर राजा के मनोरंजन के लिए नृत्य और संगीत आदि का आयोजन होता था।[६] कभी-कभी भोजन सामग्री आदि लेकर उद्यान यात्रा पर जाया जाता और वहीं विलासमयी लीलाओं में दिन बिताया जाता था।[७]

जल विहार :

जल विहार के लिए "गंगायां किलिस्साम"[८], "नदी कीलम् कीलितुम"[९] आदि का उल्लेख हुआ है। राजा अनुयायियों के साथ उद्यान में वन विहार करने के पश्चात् अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ जल विहार करते थे।[१०] नवदम्पति जल केलि करने के लिए प्रसाधन तथा खाने-पाने की सामग्री लेकर नदी के तट

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३०
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८१; जि० ३, पृ० ६१, जि० ५, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४०; जि० ३, पृ० २२८; जि० ५, पृ० २६८
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७५; जि० ४, पृ० ३८
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४०
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २९०-२९१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९८-९९
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४३०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ६१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २२९
८. ,, ,, १, पृ० २९५; ,, ,, १, पृ० ४२९
९. ,, ,, १, पृ० ३२३; ,, ,, १, पृ० ४६४-६५
१०. ,, ,, १, पृ० ३८३; ,, ,, १, पृ० ५४३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पर जाते थे और नौका में बैठकर तथा पानी में तैरते हुए मनोरंजन करते थे [१]। राजा भी जल क्रीड़ा करते थे।[२]

मायाकार या जादूगर :

मायाकार वा जादूगर के द्वारा भी लोगों का मनोरंजन होता था।[३] एक जादूगर समूची तलवार निगल गया था।[४] भण्डकण्ण और पण्डुकण्ण प्रसिद्ध थे, जिन्होंने अपनी कला का सात वर्ष तक निरन्तर प्रदर्शन किया था[५] ब्रह्मदत्त भी बाजीगरी की कला में प्रवीण थे।[६]

जादूगरों के अतिरिक्त लघंक (लघंन)[७] होते थे जो बाजीगर कहलाते थे। कूदने-फांदने और बांस बाजी दिखाने में बड़े कुशल होते थे।[८]

सपेरा :

सपेरे साँप और बन्दर नचाते फिरते थे। मेले और और उत्सवों के अवसर पर उनकी बड़ी मांग रहती थी।[९] सपेरे जीवित साँप हाथ में लेकर गले के चारों ओर लपेटते और छाती पर रखते थे।[१०] सपेरे का सिखाया हुआ एक बन्दर साँप का खेल दिखाता था।[११] वे साँप को सिखाते थे जिससे वे अपने शरीर को फुलाते-दुबला पतला करते, फनों की संख्या बढ़ाते, सीधे उठ खड़े होते, फिर झुक जाते, अदृश्य हो जाते थे इत्यादि।[१२]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९१
२. ,, ,, २, पृ० १०४; ,, ,, २, पृ० २८५
३. ,, ,, ६, पृ० २७७; ,, ,, ६, पृ० ३१५
४. ,, ,, ३, पृ० ३३७; ,, ,, ४, पृ० २
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२४-२५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२९
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १४२-४३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३३०
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५
८. ,, ,, १, पृ० ४३०; ,, ,, २, पृ० ५६
९. ,, ,, २, पृ० २६७; ,, ,, २, पृ० ४७७
राय मन्मथ, प्राचीन भारतीय मनोरंजन, पृ० ५७
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२५
११. ,, ,, २, पृ० २६७; ,, ,, २, पृ० ४७७
१२. ,, ,, ६, पृ० १८५; ,, ,, ६, पृ० २१९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिकारी मोरों को भी नचाते थे। ताली बजाने पर वे नाचते थे और चुटकी बजाने पर वे आवाज लगाते थे।[१]

द्यूत क्रीडा :

इस खेल को खेलने के लिए समृद्धशाली लोग चाँदी की फलक तथा सोने के पासे का उपयोग करते थे।[२] राजा और पुरोहित को द्यूत क्रीडा में संगति होती थी।[3] एक जुआरी पासे को ही निगल गया था।[४] चौबीस प्रकार के दांव होते थे।[५] जुआरी पासा फेंकते समय गीत भी गाते थे। शतरंज का खेल होता था (दोनों ओर आठ-आठ मोहरे होने से शतरंज का पुराना नाम अट्ठपद है)।[६] महाभारत में भी द्यूतक्रीड़ा का उल्लेख हुआ है।[७]

नृत्य संगीत और वाद्य :

संगीत और नृत्य का प्रचलन प्राचीनकाल से ही रहा है। नाटक खेले जाते थे। नाटक के लिए 'नट-समज्ज'[८] शब्द का उपयोग हुआ है। अभिनय 'रंगमण्डल' में होता था। नृत्यगान से प्रमुदित होकर लोग हर्षध्वनि करते थे।[९] राजाओं के मनोरंजन के लिए गन्धर्व नियुक्त होते थे।[१०] साधारण लोग स्वयं गाते थे और दूसरों के द्वारा प्रस्तुत संगीत सुनते थे।[११] राजा अपने घर में कवि गोष्ठियों के भी आयोजन करते थे।[१२] कुछ राजा स्वयं भी गीतकार होते

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २०३
२. ,, ,, १, पृ० २८९; ,, ,, १, पृ० ४२२
३. ,, ,, १, पृ० २८९-९३; ,, ,, १, पृ० ४२२-४२६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५३८
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३२०
६. जा० अ० हि० जि० २, पृ० १६७
७. महाभारत, वनपर्व, अध्याय ५९, ७, १८
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३; जि० ६, पृ० ७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १७६-७७
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५३; जि० ४, पृ० ११६
१०. डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० की सा० सं०, पृ० २५४
११. वही, पृ० २५४
१२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४११; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४५४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

थे ।[१] गवैये (गन्धर्व) बांसुरी (वेणु) बजाते हुए मधुर स्वर से गाते और नाचते थे ।[२]

सार्वजनिक मनोरंजन के लिए राजा की ओर से मेलों (समज्ज) के आयोजन किये जाते थे । जिनके उल्लेख सम्राट अशोक[३] के तथा खारवेल[४] के अभिलेखों में प्राप्त होते हैं । संगीत और वाद्य का घनिष्ट सम्बन्ध है । उस समय वाद्य यंत्रों में प्रमुख वाद्य वीणा थी ।[५] इसे नृत्य और संगीत के संगति में तथा स्वतंत्र रूप से भी बजाया जाता था । साधारणतः वीणा सात तारों की होती थी ।[६] वीणा गोद में रखकर नखों से बजाई जाती थी । वीणा के अतिरिक्त अन्य प्रचलित वाद्य, तुरीय[७] पाणीस्वर, मृदंग, मुरज, आलम्बर[८], भेरी, दुन्दुभि, नगाड़ा, शङ्ख[९], ढोल,[१०] पणव, गोथ, कुम्भथून, दण्डिम[११], मंजीरा[१२] आदि नाना प्रकार के वाद्य प्रचलित थे ।[१३]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४०९, जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६९
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८७
३. डा० राजबली पाण्डेय, हिस्टारिकल एण्ड लिटरैरी, इन्सक्रिप्शन्स, पृ० ५ (सम्राट अशोक का प्रथम शिलालेख)
४. वही पृ० ४० (खारवेल का हाथी गुम्फाभिलेख)
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३, २९२-९३ जि० २, पृ० २५२
जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५७, ४२५-२६; जि० २, पृ० ४६०; जि० ६, पृ० २९३, ३००
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ०१३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७१, ११८
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९०, ५०६, जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ७४, ५८४
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८४, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१४
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १०२-१०४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २८३-८४
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४१
१२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९६; जि० ४, पृ० ४६४; जि० ५, पृ० ३२२; जि० ६, पृ० १६९, २१७, २५५, २६२, २७७, ४२३, ५८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६०; जि० ५, पृ० ५३, ४०४; जि० ६, पृ० २०२, २५४, २९३, ३००, ३१५, ४६४, ६४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राजाओं के मनोरंजन के लिए वीणावादन रंगमंच पर होता था।[१] अजंता की पहली गुफा में नृत्य का जो दृश्य दिखलाया गया है उसमें नृत्य की संगति, वंशी, वीणा, मृदंग, ढोल आदि के वाद्य से हो रही है।[२] सत्रहवीं गुफा में वंशीवादन का दृश्य चित्रित है। "मथुरा के एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि वाद्य, नृत्य और गान जैसे अभिनय कार्य चान्दक बन्धुओं जैसे परिवारों का उद्यम सा बन गया था।....[३]व्यथित हृदय को संगीत से सान्त्वना मिलती थी।[४]

कवियों के द्वारा गाथायें सुनकर राजा का मनोरंजन किया जाता था। राजा की ओर से उन्हें उचित पुरस्कार प्राप्त होता था।[५]

कौमुदी महोत्सव मनाया जाता था जिसमें सारे नगर को देवनगर की तरह अलंकृत किया जाता था। धनी और निर्धन सभी समान रूप से इसमें भाग लेते थे। सप्ताह तक उत्सव मनाया जाता था।[६] विशाल मेला लगता था।[७] अलंकृत रंग बिरगें वस्त्रों को पहन कर तथा विविध प्रकार के आभूषणों से अलंकृत होकर लोग इस मेले में जाते थे।[८] हाथी-मङ्गलोत्सव[९] तथा खेत बोने का भी उत्सव मनाने के भी उल्लेख मिलते हैं।

सुरापान :

समाज में पेय सुरानक्खत (उत्सव) के आने पर काशीराज ने अपने बगीचे में ठहरे हुए ५०० लोगों के लिए घड़ा भर-भर कर सुरा भेजी थी।[१०] वत्सराज उदेन, हफ्ते भर निरन्तर सुरापान करते थे।[११] ब्रह्मदत्त कुमार सप्ताह भर

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४८-५२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५६-६०
२. डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० की सा० सं० पृ० २६३
३. आ० स० इ० रि० १९०६-७ पृ० १५३; दृष्टव्य, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १८४
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ६१-६२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २२९-२३०
५. डा० रामजी उपाध्याय, प्रा० भा० की सा० सं० पृ० २६९
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३३, ४४४, ४९९-५००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५९, ७४-७५, १४५-४६
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १७६-७७
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३३, ४९९-५००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५९, १४५-४६
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २१५
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१२
११. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३७५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पानोत्सव मनाते थे। महाराज वेस्सन्तर ने मुक्तहस्त होकर सुरा का वितरण किया था।[1] लड़ाई में जीत होने पर "जय-पान" उत्सव मनाया जाता था। ऐसे अवसर पर शासक की ओर से विजयी सैनिकों को सुरा का समायोग किया जाता था।[2] सुरा साधारणतः घड़ों में रखी जाती थी।[3]

बाल क्रीडा :

बालक धूलि के पर्वत बनाते थे। कन्यायें चालन में बालू चालती थीं।[4] गेंद (भेण्डुक) खेला जाता था।[5] बालक सोने, चाँदी और मिट्टी से बने खिलौने भी खेलते थे। मिट्टी के खिलौने बनाकर पकाये जाते थे।[6] इन खिलौनों में हाथी, घोड़े मुख्य थे।[7] गुलेल[8] और लट्टू (धमरिका)[9] का भी उल्लेख हुआ है।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जातक युग में लोगों को मनोरंजन की आवश्यकता और महत्त्व का ज्ञान था और वे स्वास्थ्य लाभ के लिए मनोरंजन के अनेक साधन अपनाते थे।

सामाजिक दोष

समाज में नाना आचार-विचार के लोग रहते हैं इसीलिए सबके व्यवहार एक समान नहीं होते। प्राचीन काल से चली आ रही अनेक कुरीतियों के उल्लेख भी जातकों में प्राप्त होते हैं। व्यभिचार, चोरी, जुआ, प्राणी हत्या, झूठ बोलना, चुगली करना आदि के उल्लेख मिलते हैं जिनसे मनुष्य को रोककर

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५०२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५४५
२. ,, ,, ६, पृ० ३९४; ,, ,, ६, पृ० ४४०
३. ,, ,, १, पृ० २५१; ,, ,, १, पृ० ३७४
४. मेहता, प्री० पु० इ० पृ० २६६
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१३; जि० ४, पृ० ३०; जि० ५, पृ० १९५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२४; जि० ४, पृ० २३०; जि० ५, पृ० २७८
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७; जि० ५, पृ० २९१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २०७; जि० ५, पृ० ३७२
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४६; जि० ६, पृ० ६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४७; जि० ६, पृ० ५-६
८. जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३४
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४७८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५५५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुमार्ग पर चलाने के लिए ही बुद्ध ने 'पंचशील' का उपदेश दिया था जिसमें प्राणी हत्या से विरत रहना, चोरी से विरत रहना, व्यभिचार से विरत रहना, झूठ कठोर बोलने चुगली करने से विरत रहना और शराब तथा अन्य मादक पदार्थों के सेवन से विरत रहना बतलाया गया था। निश्चित रूप से बुद्ध के इन नैतिक उपदेशों का समाज पर सुधारात्मक प्रभाव पड़ा परन्तु पूर्वप्रचलित दोष पूर्णरूपेण दूर न हो पाये। यहाँ पर जातक कथाओं में उल्लिखित सामाजिक दोषों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

विवाह के अवसर पर दहेज प्रथा प्रचलित थी। इसी दहेज के कारण मगध-राज अजातशत्रु और कौशल राज प्रसेनजित में भयंकर युद्ध हुआ था।

दास-दासियों की प्रथा प्रचलित थी जिनके साथ इतना कठोर और बर्बर व्यवहार किया जाता था जिसे पढ़कर मानसिक ठेस पहुँचती है। नन्द जातक में एक स्थान पर कहा गया है, मैं सौ मुद्रा के खरीदे हुए गुलाम की तरह रहता हूँ।[१] महावेस्सन्तर जातक में चार सौ दासियाँ[२] तथा जुण्ह जातक में सौ दासियाँ देने का उल्लेख हुआ है।[३] सत्तुभस्त जातक में एक ब्राह्मण ने भिक्षा माँगकर सात सौ कार्षापण एकत्रित किये थे जिससे वह दास-दासियाँ क्रय करना चाहता था।[४] नामसिद्धि जातक में एक दासी प्रतिदिन मजदूरी करने जाती थी, किन्तु दुर्भाग्यवश एक दिन की मजदूरी घर नहीं ले आई तो वह अपने स्वामी द्वारा गृह के द्वार पर बिठाकर रस्सी के द्वारा पीटी गई।[५] तक्क जातक में वाराणसी की एक श्रेष्ठी कन्या अपनी दासी को अत्यधिक क्रूरतापूर्वक पीटा करती थी।[६] महावेस्सन्तर जातक से ज्ञात होता है कि एक ब्राह्मण को दान में पुत्र और पुत्री प्राप्त हुए थे जिन्हें वह रस्सी से उन दोनों के हाथों को लता से बाँध करके खींचता हुआ ले गया था।[७]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३९
२. ,, ,, ६, पृ० ४६२; ,, ,, ६, पृ० ५०३
३. ,, ,, ४, पृ० ९९; ,, ,, ४, पृ० ३००
४. ,, ,, ३, पृ० ३४३; ,, ,, ४, पृ० ७
५. ,, ,, १, पृ० ४०२-४०३; ,, ,, १, पृ० ५६७-६८
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २९५-९६; ,, ,, १, पृ० ४२९
७. ,, ,, ६, पृ० ४५७; ,, ,, ६, पृ० ६०२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डाकू लोग प्रायः सौदागरों की गाड़ियों पर लदे माल को लूटकर भाग जाते थे और उन्हें रक्षकों के साथ लड़ना भी पड़ जाता था।[1] पंचाल नरेश के राज्य में दिन के समय राजपुरुष लूटते थे तथा रात को चोर।[2] घूस लेने की भी प्रथा थी जिससे जनता को हानि उठानी पड़ती थी। कणवेर जातक में नगर-कोतवाल ने घूस ली थी।[3] शकुन-विचार करने वाले ब्राह्मण भी रिश्वत लिया करते थे।[4] खण्डहाल जातक में न्यायाधीश ने घूस ली थी।[5] मरु जातक में राजा स्वयं तपस्वियों से घूस लेकर उनके झगड़े बढ़ा देता था।[6]

राजा पुरोहित के साथ जुआ खेलते थे।[7] विधुर पण्डित जातक के अनुसार द्यूतकृत को सामाजिक दोष ही कहा गया है।[8]

वेश्या-प्रसंग की लत, सेठ-पुत्रों, कर्मचारियों तथा पुरोहितों तक में भी देखने को मिलती है। बनारस के राज पुरोहित की रखनी एक गणिका थी।[9] विवाह के अवसर पर भी दहेज के रूप में वण्ण-दासियाँ देने की प्रथा थी[10], भेंट के रूप में ऐसी स्त्रियाँ राजाओं के हाथ लगती थीं।[11] श्यामा नामक वेश्या नगर कोतवाल पर प्रभाव डालकर डाकू को अपना स्वामी बना लेती है।[12] वाराणसी एक वेश्या नगर शोभा थी। प्रतिदिन हजार लेती थी। एक राजकुमार एक दिन

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३५-३६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ६०-६१
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १०२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १८९
३. ,, ,, ३, पृ० ५९; ,, ,, ३, पृ० २२७
४. ,, ,, १, पृ० ४५५; ,, ,, २, पृ० ८७-८८
५. ,, ,, ६, पृ० १३१; ,, ,, ६, पृ० १५०
६. ,, ,, १, पृ० ४५५; ,, ,, २, पृ० ८७-८८
७. ,, ,, १, पृ० २८९-९०; ,, ,, १, पृ० ४२२-४२३
८. ,, ,, ६, पृ० २५५-५६; ,, ,, ६, पृ० २९३-९४
९. ,, ,, ४, पृ० २९८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५०२
१०. राय मन्मथ, प्राचीन भारतीय मनोरंजन, पृ० ७०
११. राय मन्मथ, प्राचीन भारतीय मनोरंजन, पृ० ७१
१२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५९-६०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २२७-२८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रुपये नहीं लाया तो उसे भगा दिया गया था।[1] एक वेश्या ने चुल्ल-चिण्डपातिक तिस्सथेर को रस तृष्णा में बाँधकर साथ ले गयी थी।[2] सुलसा नाम की गणिका की ५०० दासियाँ थीं वह रात भर के लिए हजार लेती थी।[3] एक गणिका कमाई में कमी आ गई थी, उसने राजा से शिकायत की थी, राजा ने उससे कहा धर्म का पालन करती जाओ, आय को कमी नहीं होगी।[4]

जातकों में व्यभिचार के अतिरिक्त सुरापान[5] भी करते थे। सुरापान जातक में राजा ने स्वयं तपस्वियों को उत्तम पेय समझकर पिलाया था।[6]

जातकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उन दिनों के लोगों में अंधविश्वासों की कमी नहीं थी। एक बार देहात वाले कुछ व्यक्तियों ने नगर में जाकर विवाह के लिए कोई लड़की पक्की की थी परन्तु जब उन्हें किसी आजीवक या ज्योतिषी से ज्ञात हुआ कि वह लड़की दूसरे को दे दी गई।[7] एक अंधविश्वासी ब्राह्मण ने अपने वस्त्र इसलिए फेंक दिये कि उसमें उसे अशुभ लक्षण बतलाये गये थे।[8] छींक आने को भी अपशकुन माना जाता था।[9] ब्राह्मण चांडाल की ओर से आती हुई हवा को ही अपने को दूषित मान लेते थे।[10]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३३-३४
२. ,, ,, १, पृ० १५७; ,, ,, १, पृ० २५१
३. ,, ,, ३, पृ० ४३५; ,, ,, ४, पृ० ९५
४. ,, ,, २, पृ० ३०९; ,, ,, ३, पृ० ३६
५. ,, ,, १, पृ० २६८-७०; जि० २, पृ० ४३१; जि० ४, पृ० ३७६, ३९१; जि० ६, पृ० ३९४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५११-१३ ३९५-९७; जि० ३, पृ० १५१; जि० ४, पृ० ५८४, ५९९; जि० ६, पृ० ४४०
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६०-३६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५११-१२
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२६-२७
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १७९
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातकों से ज्ञात होता है कि मनुष्य क्रोध के कारण स्वयं अपने को मार डालते थे, विष खा लेते थे, रस्सी से फाँसी लगा लेते थे या प्रपात से गिर पड़ते थे।[१]

इस प्रकार जातकों के अध्ययन से तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वासों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

●

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०४, जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

षष्ठ अध्याय

धर्म और दर्शन

धर्म की परिभाषा :

धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका तात्पर्य है धारण करना, आलम्बन देना, पालन करना।[1] इस 'धृ' धातु से ही धर्म शब्द की उत्पत्ति हुई है।[2]

"ध्रियते येन सधर्म"। जिसने इस विश्व ब्राह्माण्ड को धारण किया है, वह धर्म है।[3] ज्ञानियों ने धर्म की विविध परिभाषाएँ की हैं—वैशेषिक-दर्शन में कणाद मुनि ने कहा है—"यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः।"

धर्म वह हैं, जिससे इस लोक में अभ्युदय और परलोक में श्रेष्ठ गति प्राप्त होती है। मनु के अनुसार—

अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥

अर्थ काम में अनासक्त मनुष्य के लिये धर्म का उपदेश किया जाता है, धर्म जिज्ञासुओं के लिये वेद ही मुख्य प्रमाण हैं।[4] ये सभी परिभाषाएँ ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राप्त होती हैं।

बौद्ध साहित्य में भी धर्म की परिभाषा प्राप्त होती है। स्वयं भगवान् बुद्ध ने धर्म अथवा अपने उपदेशों का सार बताते हुए कहा था कि पाप कार्यों को न करना, कल्याणकारी कार्यों का सम्पादन करना तथा मन को पवित्र रखना बुद्ध धर्म का सार है। इसी परिभाषा को हम सम्राट् अशोक के अभिलेखों में भी पाते हैं।[5] अपने द्वितीय स्तंभ अभिलेख में वह धर्म को कल्याणकारी बताता है

---

१. काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग १, पृ० ३; दुबे सत्यमित्र, मनु की समाज व्यवस्था, पृ० १५७
२. धर्माङ्क संख्या १, वर्ष ४०, पृ० १०१
३. वही, पृ० २१
४. मनु, पृ० ३९/१३
५. सब्बं पापस्स अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्त परियोदपनं एतं बुद्धानुसासनं॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(धर्म्म साधू) वह धर्म की परिभाषा करते हुए कहता है कि पाप कर्मों से बचना, कल्याणकारी कार्यों को करना, दया करना, दान देना, सत्य बोलना और पवित्र जीवन बिताना—

"अपासिनवे बहुकयाने दया दाने सचे सोचये"

सातवें स्तंभ लेख में वह पुनः दया, दान, सत्य, सुचित्त, मृदुता और साधुता को धर्म के उपादान बताता है।

"एस हि धंमापदाने धंमपटी पति च या इयं
दया दाने सचे सोचये मदवे साधवे च....।"

यही नहीं वह तीसरे स्तंभ लेख में कलुषित कर्मों को बताते हुए कहता है कि प्रचण्डता, निष्ठुरता, क्रोध, मिथ्याभिमान और ईर्ष्या मनुष्य को पाप कर्मों की ओर ले जाते हैं।

"इमानि असिनवगामीनि नाम अथ चंडिये
निठूलिये कोधे माने इस्सा।"

धर्म की इतनी स्पष्ट और व्यावहारिक परिभाषा अन्यत्र मिलना दुलर्भ है।

धर्म का मनुष्य के लिये महत्त्व :

धर्म का मानव जीवन के लिये अत्यधिक महत्त्व है। संकिच्च जातक में धर्म को पथ (मार्ग) बताया है और अधर्म को कुपथ या कुमार्ग। अधर्म नरक में ले जाता है। धर्म सुगति लाभ कराता है।[१] धर्म अपनी रक्षा करने वालों की सदैव रक्षा करता है। इसी से भगवान बुद्ध ने कहा है—"धर्मानुकूल आचरण करने वाले की, धर्म निश्चय ही रक्षा करता है। ठीक से आचरण किया हुआ धर्म सुख की ओर ले जाता है। धर्म के ठीक आचरण करने का यह फल है कि धर्मचारी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता।"[२] धर्म चारों दिशाओं में फैला हुआ महाबलवान, अनन्त, यशस्वी, अतुलनीय, सभी गुणों से युक्त है।[३] धर्म का आदर किया जाता है।[४] संवर जातक में धर्म में रत लोगों का वर्णन मीलता है।[५] श्रेष्ठ धर्म

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २६६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३५५
२. ,, ,, १, पृ० ३१, ,, ,, १, पृ० ९३
३. ,, ,, ४, पृ० १०२; ,, ,, ४, पृ० ३०४
४. ,, ,, ५, पृ० २२३; ,, ,, ५, पृ० ३११
५. ,, ,, ४, पृ० १३४; ,, ,, ४, पृ० ३३५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कभी भी नहीं मरता ।[१] जो धर्म को नष्ट करने की कोशिश करता है। वह स्वयं अपने को नष्ट करवा लेता है ।[२] धर्माचरण को दान से भी श्रेष्ठ बताया गया है ।[३] देवधम्म जातक में तीन प्रकार के देव धर्म और नौ प्रकार के लोकोत्तर धर्म उल्लिखित हैं ।[४]

वस्तुतः धर्म मनुष्य की प्रगति और विकास के लिये है । इसीलिये जिन कर्मों से मानव की प्रगति होती है वह धर्म है और जिन कर्मों से मानव प्रगति होती है वह धर्म है और जिन कर्मों से मानव प्रगति में बाधा उत्पन्न होती है वह अधर्म है ।

प्रमुख भारतीय धर्म :

जातकों के अध्ययन से भारत के प्रमुख धर्मों—ब्राह्मण धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म पर प्रकाश पड़ता है । इन तीनों धर्मों के अतिरिक्त समाज में ऐसे लोगों की संख्या भी कम नहीं थी जो सभी धर्मों की बातों को मानते थे । ऐसे धर्म को ही लोक धर्म कहा गया है । इसमें धार्मिक विश्वासों की प्रधानता थी । यहाँ पर जातकों के आधार पर उक्त तीनों धर्मों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है ।

ब्राह्मण धर्म

"ब्राह्मण धर्म की सामान्य व्यवस्था में लगभग आधे से अधिक समाज के लिये संसार से विरत होकर सत्य की जिज्ञासा में ज्ञानियों के पथ-प्रदर्शन में भिक्षु या तपस्वी का जीवन व्यतीत् करना विधिवत् था । अनिकेत विचरने वाले यह समुदाय विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों में संगठित था, जो अपने-अपने आचार्यों द्वारा अनुशिष्ट मत और तप के विभिन्न मार्गों का अनुसरण करते थे ।"[५]

डा० जी० सी० पाण्डेय बौद्ध धर्म के विकास पर ब्राह्मण धर्म विशेष कर औपनिषदिक विचारधारा का प्रभाव मानते हैं ।[६] जातक साहित्य के अध्ययन से

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४२६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ८४
२. ,, ,, ३, पृ० ४५६, ४६०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ११६, १२०
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३२
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३२; जि० २, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २१८, जि० २, पृ० ३३५
५. मुखर्जी, हिन्दू सभ्यता, पृ० २२५
६. पाण्डेय, स्टडीज इन द ओरिजिन्स आफ बुद्धिज्म; दृष्टव्य, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० ११७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण धर्म के अन्तर्गत आने वाले यज्ञ, होम, हवन, तप, देवी-देवता, शैव, वैष्णव सम्प्रदाय और अनेक विश्वासों का परिचय मिलता है।

यज्ञ :

जातक साहित्य में यज्ञों का उल्लेख हुआ है। इन यज्ञों का सम्पादन ब्राह्मण[१] वेदोक्त विधि[२] से करते थे। लोमकस्सप जातक में एक व्यक्ति कहता है कि "यदि यज्ञ करूँगा तो मैं इन्द्र के समान हो जाऊँगा।"[३] खण्डहाल जातक में कहा गया है, "यज्ञ करके लोग देव-लोक जाते थे।[४] होम और उसमें दी जाने वाली आहूतियों का भी विवरण प्राप्त होता है। सन्थव जातक के अनुसार पुराने पण्डितों ने अग्नि-हवन करने से उन्नति होगी, यह समझकर चिरकाल तक अग्नि-हवन किया था।[५] यज्ञों के लिये यज्ञ-कुण्ड बनाये जाते थे, पशुओं को यज्ञयूप से बँधवाया जाता था।[६] पालि जातकों में हमें निम्नलिखित यज्ञों का उल्लेख मिलता है—

नौमी का यज्ञ (नवमियं), अग्निहोत्र (अग्गिहुत्तकं)[७], सर्वचतुष्क यज्ञ[८], चतुष्पदों का यज्ञ[९], पथ शकुन यज्ञ (पन्थ सकुणं यजिस्सामि)[१०], पशु-घात यज्ञ (पसुघातयञ्जयजपेहि)[११], वाजपेय्य यज्ञ (वाचपेय्यं अयाजयि)[१२] नलनिका जातक में अग्नि-होत्र और यज्ञ के मन्त्रों का उल्लेख मिलता है।[१३]

जातकों से ब्राह्मण धर्म ही नहीं अपितु उससे सम्प्रदायों—शैव, वैष्णव, शाक्त आदि पर भी प्रकाश पड़ता है। यहाँ पर इन सम्प्रदायों का जातक साहित्य के आधार पर संक्षिप्त वर्णन किया जा रहा है।

---

१. दिव्या०, ३३०/२४-२६
२. अवदान०, जि० १/८४/१
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५१८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १७८
४. ,, ,, ६, पृ० १३३; ,, ,, ६, पृ० १५३
५. ,, ,, २, पृ० ४१; ,, ,, २, पृ० २११
६. ,, ,, १, पृ० ३३५; ,, ,, १, पृ० ४७९-४८०
७. ,, ,, ६, पृ० ५२२; ,, ,, ६, पृ० ५६९
८. ,, ,, ३, पृ० ४४; ,, ,, ३, पृ० २१३
९. ,, ,, ३, पृ० ४२८; ,, ,, ४, पृ० ८७-८८
१०. ,, ,, ६, पृ० ५२७; ,, ,, ६, पृ० ५७७
११. ,, ,, ३, पृ० ५१५; ,, ,, ४, पृ० १७६
१२. ,, ,, ३, पृ० ५१८; ,, ,, ४, पृ० १७८
१३. ,, ,, ४, पृ० २०५, ,, ,, ५, पृ० २८९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शैव सम्प्रदाय :

जातक युग में शिव भक्ति भी प्रचलित थी। शिव अपने कल्याणकारी स्वरूप के कारण पूज्य थे।[1] इनके अनुयायी शैव कहलाते थे। अश्वघोष के अनुसार शिव कठोर व्रत के लिये पूजे जाते थे।[2] त्रिदण्ड (त्रिशूल) धारण करने के कारण शिव को त्रिदण्डा भी कहा गया।[3] शिव का एक नाम महेश भी था, जिनके अनुयायी माहेश्वर कहलाते थे। ये महेश्वर शिव को सम्पूर्ण जगत में श्रेष्ठ मानते थे। दिव्यावदान के अनुसार ये लोग "शिवलिंग" की उपासना करते थे।[4]

साहित्यिक प्रमाणों के अतिरिक्त मुद्रा सम्बन्धी प्रमाण भी इसकी पुष्टि करते हैं। कुषाण सम्राट बिम कदफिसस और कनिष्क तथा वासुदेव के सिक्कों पर भी शिव की मूर्ति मिलती है।[5] कनिष्क के स्वर्ण सिक्कों के पृष्ठ भाग की ओर वज्र लिए हुए शिव की मूर्ति है और ओइशो (शिव) लिखा है।[6] हुविष्क के स्वर्ण सिक्कों पर "नन्दी" सहित खड़े शिव की मूर्ति है, जिसके हाथों में माला तथा त्रिशूल है।[7] कुमार, विशाख और स्कन्द भी इसी सम्प्रदाय के देव थे।

वैष्णव सम्प्रदाय :

वैष्णव सम्प्रदाय को "भागवत" सम्प्रदाय भी कहा गया है, जिसके अन्तर्गत भागवत सम्प्रदाय, वासुदेव सम्प्रदाय और कालान्तर में अनन्य विष्णुपूजक सम्प्रदाय सम्मिलित हो गये थे। महोदय आर० जी० भण्डारकर के अनुसार वैष्णव धर्मानुयायी कठोर धार्मिक विचारों पर जोर देते थे। यह भारत के पूर्वी क्षेत्र में प्रचलित था। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत विष्णु, वासुदेव (बलराम) और

---

१. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में० भा० जी०, पृ० १२२
२. बु० च० १०/३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८; जि० २, पृ० ३१६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६४; जि० ३, पृ० ४३
४. दिव्या०, ३७७/९
५. सी० जे० ब्राउन, क्वायन्स आफ इण्डिया, पृ० ३५-३६; डॉ० वासुदेव उपाध्याय, भारतीय सिक्के, पृ० १३३-३४,१३६
६. वासुदेव उपाध्याय, भारतीय सिक्के, पृ० १३५; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ० १४८
७. वासुदेव उपाध्याय, भारतीय सिक्के, पृ० १३६; प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, पृ० १४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कृष्ण के स्वरूपों का दिग्दर्शन कराया गया है।[१] विष्णु भक्त वैष्णव कहलाते थे। विष्णु के अनेक रूपों में राम[२] का भी उल्लेख मिलता है।

हेलियोदोरस के बेसनगर के गरुड़ स्तम्भ अभिलेख से भी वासुदेव भक्ति का परिचय मिलता है।[३]

इस सम्प्रदाय में लक्ष्मी[४], श्री[५] ह्री[६] आदि देवियों तथा चार दिक्पालों—विरुढक, विरुपक्ष, धृतराष्ट्र[७] तथा कुबेर की भी पूजा होती थी। कण्हदीपायन जातक के अनुसार दीपायन तपस्वी का उल्लेख मिलता है, जिसे कण्हदीपायन (कृष्ण द्वैपायन) कहा गया है।[८]

इससे यह प्रतीत होता है कि वैष्णव सम्प्रदाय भी शैव सम्प्रदाय की भाँति जातक युग में पूर्ण रूप से विकसित था। शैव और वैष्णव सम्प्रदायों के अतिरिक्त और सम्प्रदाय भी प्रचलित थे इनमें सूर्य शाक्त आदि सम्प्रदाय आते थे।[९]

देवी-देवता

जातक साहित्य में विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं की उपासना और आराधना प्रचलित थी। इन देवी-देवताओं की विशद तालिका जातक साहित्य में प्राप्त होती है जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं :—

१. डा० लाल, अश्वघोषकालीन भारत, पृ० ८२
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १२४; जि० ५, पृ० २९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३२५; जि० ५, पृ० ११८
३. डा० पाण्डे, हिस्ट० लि० इन्स०, पृ० ४३
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३५७-६२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४०३-४०८
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४८३
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४०५; जा० अ० हि० ५, पृ० ४८८
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २५८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४१४-४१५
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८-२९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २२७-२२९
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६०; जि० २, पृ० ३३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९४, २००, २४८; जि० ५, पृ० २३०, ४८०; जि० ६, पृ० ११८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अरति—ये मार कन्याएँ थीं जो प्रकाश फैलाती हुई सम्यक् सम्बुद्ध के पास सैकड़ों प्रकार के दिव्य रूप बनाकर लुभाने के लिए आयी थीं, परन्तु वे असफल रही थीं [1]

अलम्बुस[2]—इसे पश्चिमी दिशा की देवी माना गया है ।[3]

आशावती—आसङ्क जातक के अनुसार एक पुण्यवान प्राणी त्र्यस्त्रिंश-भवन से च्युत होकर उस जगह कमल सरोवर में एक कमल में लड़की होकर पैदा हुई, जिसका नाम आशावती था ।[4] इसे शक्र की पुत्री बताया गया है ।[5] यह दक्षिण की देवी थी ।[6]

इरन्दति[7]—इसके विषय में कोई विवरण प्राप्त नहीं होता है ।

काकाती—समुद्र में रहने वाली देवी थी और वेनतेय्य की भार्य्या थी ।[8]

कुरुङ्ग—कुंगवी लोम-सुन्दरी थी ।[9]

कालकण्णी—सिरिकालकण्णि जातक में इसे चातुर्महाराजिक देव लोक की देवी बताया गया है ।[10]

चित्रा—देवेन्द्र शक्र की भार्य्या थी । चित्र-लता-वन नाम का उद्यान चित्रा का ही था ।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६९; जा० अ० हि०जि० २, पृ० १०५
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १५३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २३३
३. डॉ० अँगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १२०
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २४९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४०६
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४७६
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४८२-८३; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० १११/१३-१६
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३२३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३६४
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२४-२५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० १२५/३
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २५७-२५८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४१४
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दा—देवेन्द्र शक्र की भार्य्या थी। नन्दा नाम की पुष्करिणी नन्दा की ही थी।[1]

नदी—किछन्द जातक में नदी देवी का उल्लेख मिलता है।[2]

मणिमेखला—चारों लोकपालों ने मणिमेखला नाम की देवी को (लोगों की) रक्षा के लिए समुद्र पर नियुक्त किया था।[3] महान् प्रताप वाली देवी तथा सबकी स्वामिनी थी।[4]

लक्ष्मी—जातकों में लक्ष्मी का उल्लेख कई बार हुआ है। लक्ष्मीपति (विष्णु) को ही श्रेष्ठ बताया गया है।[5] लक्ष्मी कभी भी प्रज्ञा से नहीं बढ़ सकती है।[6] जल्दबाज को लक्ष्मी नहीं मिलती है[7], जो आदमी निन्दा, प्रशंसा गरहा अथवा पूजा की ओर ध्यान नहीं देता उस आदमी से लक्ष्मी उसी प्रकार दूर चली जाती है जैसे सुविधा का पानी (ऊँचे) स्थल से।[8] यह अति प्रज्ञावान है।[9] उत्तर-पश्चिम भारत के विविध प्रदेशों से अनेक ऐसी मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं, जिन पर लक्ष्मी की प्रतिमा अंकित है। इनमें लक्ष्मी को कमल पर पालथी मारकर बैठे हुए दिखाया गया है और उसके दोनों ओर कमलों पर खड़े हुए हाथी अपनी सूड़ों से लक्ष्मी का अभिषेक कर रहे हैं। ईस्वी सन् से पहले की कुछ शताब्दियों में अन्य देवी-देवताओं के समान लक्ष्मी की भी मूर्तियाँ बनने लग गयीं थीं और नये परिवर्तित आर्य धर्म में लक्ष्मी की पूजा को भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया था।[10]

डॉ० शिवनन्दन कपूर के शब्दों में "लक्ष्मी श्री-रूप में सौन्दर्य, शोभा, सम्पन्नता और शुचिता की प्रतीक है। मातृदेवी के रूप में वे स्नेहमयी हैं। वैष्णव देवी के रूप में वे सतोगुणी हैं। एक प्रकार से समन्वित रूप में वे भारतीय नारी की प्रतीक हैं।"[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१३
२. ,, ,, ५, पृ० ३, ,, ,, ५, पृ० ९१
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १७; जि० ६, पृ० ३४-३५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१६; जि० ६, पृ० ३९
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१८
५. ,, ,, ६, पृ० ३५७-३६२, ,, ,, ६ पृ० ४०३-४०८
६. ,, ,, ६, पृ० ३५९, ३६३, ,, ,, ६, पृ० ४०५, ४०९
७. ,, ,, ६, पृ० ४२३; ,, ,, ६, पृ० ४६४
८. ,, ,, ५, पृ० २२१; ,, ,, ५, पृ० ३०६
९. ,, ,, ३, पृ० २६२; ,, ,, ३, पृ० ४१७
१०. सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रा० भा० का० धा० सां० और आ० जी०, पृ० ९९
११. साहित्य और शिल्प में लक्ष्मी, आज, १-११-१९७८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विमला—विधुर पण्डित जातक में इसे नागराज की भार्य्या बताया गया है।[१]

श्रद्धा—यह शक्र की पुत्री थी।[२] मनुष्यों द्वारा पूजित देवी है। यह सदा निष्पाप पुरुषों की संगति में रहती है।[३] इसे पश्चिम दिशा की देवी बताया गया है।[४]

सिरि या सिरिमा—मनुष्यों द्वारा पूजित देवी है तथा सदा निष्पाप पुरुषों की संगति में रहती है।[५] इसे पूर्व दिशा की देवी माना गया है।[६] भरहुत के भग्नावशेषों में श्री की चार प्रतिमाएँ मिली हैं, जिनमें एक को बैठी हुई दशा में और तीन को खड़ी हुई दशा में बताया गया है।[७] इसे ऐश्वर्य प्रदायिनी देवी माना गया है।[८] प्राचीन मूर्तियों में एक ऐसी मूर्ति है जिसमें "सिरी मा देवता" लिखा हुआ है; एफेसियनों की डायना की भाँति ही उनके स्तनों पर प्रजनन के चिन्ह परिलक्षित हैं। एक अन्य चित्र में देवी बैठी हुई है और दो हाथी जल से उनका अभिषेक कर रहे हैं। यह इस लोकप्रिय देवी के अंकन का प्राचीनतम उदाहरण है। बुद्ध के समय में भी सिरिमा एक लोकप्रिय देवी थी।[९]

ह्री—शक्र की पुत्री बतायी गयी है। स्वयं शक्र तथा सभी देवताओं ने ह्री की पूजा की थी।[१०] इसे उत्तर दिशा की देवी माना गया है।[११]

देवता

देवियों की भाँति ही देवताओं की भी विस्तृत तालिका जातक साहित्य

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३००
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४७६
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४०२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४८७
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४८२
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४८३
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३९८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४८२
७. सत्यकेतु विद्यालंकार प्रा० भा० का धा० सां० और आ० जी०, पृ० ९९
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २५७-२५८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४१४
९. ध्रुवनाथ चतुर्वेदी, बौद्ध भारत, पृ० १५७
१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४०७, ४१०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४९२, ४९५
११. डा० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १२२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में प्राप्त होती है। भूमि के देवों से आरम्भ करके आकाश तक के देवों[१] तक का उल्लेख हुआ है।[२] इन पर उन देवताओं का संक्षेप में वर्णन किया गया है :—

अग्नि[३]--जातकों में अग्नि देवता को नमस्कार करने के कई उल्लेख प्राप्त होते हैं।[४] ब्रह्मा को भी अग्नि की पूजा करते हुए पाते हैं।[५]

अभास्वर--(आभास्सरा) महाजनक जातक में इस देवता का उल्लेख हुआ है।[६]

अरूपी--जातक निदान कथा में आकार रहित (अरूपी) देवताओं का भी उल्लेख है।[७]

इन्द्र—जातकों में इन्द्र का उल्लेख कई बार हुआ है। इन्होंने असुरों पर विजय प्राप्त की थी।[८] ये देवताओं के राजा थे।[९] सब प्राणियों के ईश्वर कहे गये हैं।[१०] इन्हें भूपति तथा चारों दिशाओं का महाराजा बताया गया है।[११] इन्द्र को देवेन्द्र (सहस्राक्ष) देवराज भी कहा गया है।[१२] देवेन्द्र को देवलोक में 'सुजम्पति' और मनुष्य लोक में 'मघवा' कहते थे।[१३]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४०; जि० ३, पृ० ४८६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८५; जि० ४, पृ० १४६
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २१८
३. ,, ,, १, पृ० २८५; ,, ,, ,, १, पृ० ४१७
४. ,, ,, १, पृ० २८५, ४९४-९५; जि० २, पृ० ४३; जि० ४, पृ० ४४८, जि० ६, पृ० २०२, २०४, २०७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१६, ४१७; जि० २, पृ० १३८-३९, २११; जि० ५, पृ० ३५; जि० ६, पृ० २३८, २४०, २४५
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०७; जा० अ० हि० जि० २४५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६५
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७८
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३५, ३४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३५, ५५४; जि० ३, पृ० ३३५
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३५७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१
१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १६१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २४१
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५
१३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १३७; जा० अ०हि० जि० ५, पृ० २१९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्यान—महाजनक जातक में उद्यान-देवता का उल्लेख हुआ है।[1]

कुसनालि—कुशा ग्रास के देवता बताये गये हैं।[2]

काल देवल—महावेस्सन्तर जातक में काल देवल को नमस्कार करने का उल्लेख मिलता है।[3]

कुबेर—जातकों में कुबेर का उल्लेख कई बार हुआ है। कुबेर को वैष्णव महाराज[4] भी कहा गया है। कुबेर ने यज्ञ करके देवगति प्राप्त की थी।[5]

काम-धातु के लोक-व्यूह नामक देवता—जातक अविदूरे निदान कथा में इस देवता का उल्लेख हुआ है।[6]

गंगा देवता—मच्छुद्दान जातक में गंगा देवता का उल्लेख हुआ है।[7]

गरुण—कक्कारु जातक में गरुण देवता द्वारा उत्सव देखने का उल्लेख मिलता है।[8]

चक्रवाल के देवता—जातक अविदूरे निदान कथा में चक्रवालों के देवताओं का भी उल्लेख हुआ है।[9]

चन्द्रमा—जयद्दिस जातक में चन्द्रमा देवता का उल्लेख मिलता है।[10] मृगपक्ख जातक में चन्द्रादि की सेवा करने का भी उल्लेख हुआ है।[11]

चार महाराज (दिक्पाल)—जातक कथा में चार-महाराज (दिक्पाल) का उल्लेख हुआ है।[12] इन्हें चातुर्महाराजिक देवता भी कहा गया है।[13]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४२
२. ,, ,, १, पृ० ४४३; ,, ,, २, पृ० ७२-७३
३ ,, ,, ६, पृ० ४७९; ,, ,, ६, पृ० ५१७
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३९७; जि० ६, पृ० २६५, २७०, ३०७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११८; जि० ६, पृ० ३०३, ३०६, ३४६
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३८
६. ,, ,, १, पृ० ४७; ,, ,, १, पृ० ११४
७. ,, ,, २, पृ० ४२५; ,, ,, ३, पृ० १४५
८. ,, ,, ३, पृ० ८७; ,, ,, ३, पृ० २५४
९. ,, ,, १, पृ० ४८; ,, ,, १, पृ० ११४
१०. ,, ,, ५, पृ० २८; ,, ,, ५, पृ० ११८
११. ,, ,, ६, पृ० १; ,, ,, ६, पृ० १
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०; जि० ३, पृ० २५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११७, १२०, ३४६; जि० ३, पृ० ४१४
१३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४७३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५५१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जल-देवता—भूरिदत्त जातक में जल देवता का उल्लेख हुआ है।[1]

तिन्दुक देवता—गण्डतिन्दु जातक में तिन्दुक देवता ने महाराज को उपदेश दिये थे।[2]

तावतिंस देवता—जातकों में तावतिंस देवताओं का उल्लेख कई बार हुआ है।[3]

धाता-विधाता—धाता-विधाता ने बहुत से यज्ञ करके देवगति प्राप्त की थी।[4]

धृतराष्ट्र—धृत महाराज की सिरी नाम की लड़की थी।[5]

नरसिंह—जातक निदान कथा में नरसिंह का उल्लेख मिलता है।[6]

नलकार देव—सुरुचि जातक में नलकार देवों का उल्लेख हुआ है। इन्होंने देव लोक से जन्म ग्रहण किया था।[7]

नगर देवता—मातङ्ग जातक में नगर देवताओं का उल्लेख हुआ है।[8]

नारद—सुधाभोजन जातक से ज्ञात होता है कि नारद त्रयोत्रिंश भवन में दिन बिताने के लिये गये थे।[9] नारद-पतंत (वासी देवताओं) का भी उल्लेख मिलता है।[10]

नाग देवता—कक्कारु जातक में नाग देवता का उत्सव मनाते हुए पाते हैं।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४५
२. ,, ,, ५, पृ० ९९; ,, ,, ५, पृ० १८६
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५६-५७; जि० ५, १५३, १६०; जि० ६, पृ० १२७, ५६८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६४, ५६५, ५६७; जि० ५, पृ० २३३, २४०; जि० ६, पृ० १४५, ६२५
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३८
५. ,, ,, ३, पृ० २५७; ,, ,, ३, पृ० ४१४
६. ,, ,, १, पृ० ८९; ,, ,, १, पृ० १६५
७. ,, ,, ४, पृ० ३२३; ,, ,, ४, पृ० ५२८
८. ,, ,, ४, पृ० ३८२; ,, ,, ४, पृ० ५९०-९१
९. ,, ,, ५, पृ० ३९२; ,, ,, ५, पृ० ४७६-७७
१०. ,, ,, ६, पृ० ५६८; ,, ,, ६, पृ० ६२५
११. ,, ,, ३, पृ० ८७; ,, ,, ३, पृ० २५४; जि० ५, पृ० ५३६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नदी देवता—मच्छुद्दान जातक में नदी देवता का उल्लेख मिलता है।[१]

प्रजुण्ह देवता—मच्छ जातक में प्रजुण्ह (वर्षा के बादलों के देवता) का उल्लेख मिलता है।[२]

पूर्व-देवता—जातक साहित्य में माता-पिता को पूर्व दिशा का देवता बताया गया है।[३] सिगालोवाद सुत्त में भी इसका विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।

पण्डित देवता—कुसनाळि जातक में पण्डित देवता का उल्लेख हुआ है।[४]

प्रभास्वर—सोननन्द जातक में प्रभास्वर वासुदेव सूर्य देवता का उल्लेख हुआ है।[५]

पंचशिख—सुधाभोजन जातक में मातली के पुत्र बताये गये हैं।[६]

ब्रह्मा—जातकों में ब्रह्मा का उल्लेख अनेक बार हुआ है। इन्हें सारे लोकों का निर्माता बताया गया है।[७] इन्हें महाब्रह्मा, घटिकार, सहम्पति भी कहा गया है।[८] सन्धव जातक में एक ब्राह्मण ने खीर से महाब्रह्मा का यज्ञ किया था।[९] ब्रह्मलोक के स्वामी बक ब्रह्मा थे, जिन्होंने छत्र धारण किया था।[१०]

बलि-प्रतिग्राहक देवता—पंचाबुध जातक में बलि-प्रतिग्राहक देवता का उल्लेख हुआ है।[११]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४२३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १४३
२. ,, ,, १, पृ० ३३०; ,, ,, १, पृ० ४७३
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४११
४. ,, ,, १, पृ० ४४३; ,, ,, २, पृ० ७३
५. ,, ,, ५, पृ० ३२६; ,, ,, ५, पृ० ४०८
६. ,, ,, ५, पृ० ३८३, ३८६; ,, ,, ५, पृ० ४६६, ४६९
७. ,, ,, ६, पृ० २०७-०८; ,, ,, ६, पृ० २४५-४६
८. ,, ,, १, पृ० ६९, ८१, ४९४
९. ,, ,, २, पृ० ४३; ,, ,, २, पृ० २१२
१०. ,, ,, ४, पृ० २६५; ,, ,, ४, पृ० ४६९
११. ,, ,, १, पृ० २७५; ,, ,, १, पृ० ४०२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भुम्मा देवता (भुम्म देवता)—महासुतसोम जातक में भुम्मा देवता का भी उल्लेख मिलता है।[१]

भुम्मट्ठक देवता—कक्कारु जातक में भुम्मट्ठक देवता को उत्सव मनाते हुए देखते हैं।[२]

मन्दार देवता—आकाश मण्डल के देवता थे।[३]

मार (कामदेव)—जातक निदान-कथा तथा खदिरंगार जातक में मार देवता का उल्लेख हुआ है।[४]

यम—दान का अनुमोदन यम देवता करते थे।[५] वैतरणी नदी को यम की नदी कहा गया है।[६] इन्हें यमराज भी कहा गया है।[७]

राम—जयद्दिस जातक में राम का उल्लेख मिलता है।[८]

रक्षक देवता—कौसम्बी जातक में रक्षक देवता का उल्लेख हुआ है।[९]

रुच देवता—कुसनाळि जातक में रुच देवता का उल्लेख हुआ है।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ५०२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५७९, जि० ४, पृ० २७६
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २५४
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७१
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६३, २३२-३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३३, ३४९-५०
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २४९, ५६८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६२५; जि० ५, पृ० ५०९
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७२; जि० ४, पृ० २७३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३१, ४७७
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४२; जि० ५, पृ० ३४०; जि० ६, पृ० २४९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४४८; जि० ३, पृ० ४४; जि० ५, पृ० ४२३, जि० ६, पृ० २८७
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ११७; जि० ४, पृ० ३२५
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४८६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १४६
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लोकपाल देवता—चारों लोकों के लोकपाल देवता को जातक निदान कथा में पहरा देते हुए दिखाया गया है।[1] इन्हें लोक संरक्षक देवता भी कहा गया है।[2]

वरुण—जयद्दिस तथा भूरिदत्त जातकों में वरुण देवता का उल्लेख हुआ है।[3]

वरदेव—कुणाल जातक में वरदेव का उल्लेख हुआ है।[4]

वेनतेय्य—वेनतेय्य की भार्य्या का नाम काकाती देवी था।[5]

वायु देवता—भूरिदत्त जातक में वायु देवता का उल्लेख हुआ है।[6]

वासुदेव—सोननन्द जातक में सभी प्राणियों को अच्छे-बुरे रूपों का दर्शन कराता है।[7]

वासव—साधीन जातक में भी वासव का उल्लेख मिलता है।[8]

वच्छ-किच्छ—सरभङ्ग जातक में वच्छ-किच्छ की पूजा का उल्लेख है।[9]

वनदेवता—कुणाल जातक में वन के देवताओं का उल्लेख मिलता है।[10]

विरुपाक्ष—चातुर्महाराजिक देवलोक के विरुपाक्ष महाराजा थे।[12]

विरुढ़क—सिरिकालकण्णि जातक में विरुढक के लोकपाल कहा गया है।[12]

सूर्य—सूर्य की पूजा और उपासना होती थी।[13]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८, ६८; जि० २, पृ० १२३; जि० ४, पृ० २८७; जि० ६, पृ० २४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११४, १४०; जि० २, पृ० ३०७; जि० ४, पृ० २१६, ४९१; जि० ६, पृ० २७९
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २४१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २८०
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २८; जि० ६, पृ० २०१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ११८, जि० ६, पृ० २३८
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०५
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८
६. ,, ,, ६, पृ० २०१; ,, ,, ६, पृ० २३८
७. ,, ,, ५, पृ० ३२६; ,, ,, ५, पृ० ४०८
८. ,, ,, ४, पृ० ३५६; ,, ,, ४, पृ० ५६४
९. ,, ,, ५, पृ० १५०; ,, ,, ५, पृ० २३०
१०. ,, ,, ५, पृ० ४२३; ,, ,, ५, पृ० ५०७
११. ,, ,, ३, पृ० २५७; ,, ,, ३ पृ० ४१४, ४१५
१२. ,, ,, ३, पृ० २५८; ,, ,, ३, पृ० ४१४
१३. ,, ,, १, पृ० ४६०; ,, ,, २, पृ० ९४, २००, २४८; जि० ५, पृ० २३०, ४८०; जि० ६, पृ० ११८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सोम—महावेस्सन्तर जातक में सोम ने दान का अनुमोदन किया था।[१]

समुद्र देवता—समुद्द जातक में समुद्र देवता का उल्लेख हुआ है।[२]

सब्रह्म देवतागण—तेसकुण जातक में सब्रह्म देवतागण दिव्यलोक को प्राप्त हुए थे।[3]

इस प्रकार जातक साहित्य से बहुसंख्यक देवी-देवताओं का पता चलता है जिनमें भूमि, अन्तरिक्ष और आकाश के देवता सम्मिलित थे।

तपश्चर्या

जातक साहित्य में तपस्या के महत्त्व पर भी प्रकाश पड़ता है। तपस्या को सुकर्म माना जाता था जिससे ब्रह्मलोक प्राप्त होता था। निमि जातक में सात ऋषियों यामहनु, सोमयाग, मनोजव, समुद्र, माघ, भरत और इसिकालिक रक्खिय तथा अङ्गीरस, काश्यप, किसवच्छ और अकीर्ति को तपस्या करके ब्रह्मलोक को प्राप्त करते हुए देखते हैं।[४]

तपस्या प्रायः एकान्त वनों या पर्वतों में रहकर की जाती थी। प्रव्रजित लोग साधारणतया एकान्तवास के लिए हिमालय की शरण लेते थे।[५] जहाँ पर्ण-शाला बनाकर रहते थे।[६] पगडण्डियों के रास्ते पर्णशाला तक जाते थे।[७] ये लोग नित्य चक्रमण करके चिन्तन करते थे।[८] तपस्वियों की निम्नलिखित

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५६८, ५७१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६२५, ६२९

२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४४१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १६२

३. ,, ,, ५, पृ० १२३; ,, ,, ५, पृ० २०५

४. जा अ० रो० जि० ६, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ११३

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४०; जि० २, पृ० १०३, २६९; जि० ३, पृ० ५१५; जि० ४, पृ० २२१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३०; जि० २, पृ० २८४; जि० ४, पृ० १७५

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७५; जि० ६, पृ० ७५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५३२; जि० ६, पृ० ८४, ८६

७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४८९; जि० ५, पृ० १३२; जि० ६, पृ० ७४, ५३२

८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विशेषताओं का उल्लेख मिलता है।[१] वे लाल रंग के वल्कल के वस्त्र पहनते, कन्धे पर अजिन चर्म रखते जटामण्डल बाँधते, झोली लेकर भिक्षा माँगते थे।[२] वे अपने शरीर पर कुश घास के बने वस्त्र भी लपेटते थे।[३] अपने पास लकड़ी का तख्त काष्ठासन काठ की चौकी भी रखते थे।[४]

जातकों में इनकी दिनचर्या का भी उल्लेख मिलता है। सर्वप्रथम वे लोग अपनी कुटी को साफ करते थे, दातुन और मुँह धोने का जल लाते थे, जंगली फल और कन्द-मूल एकत्रित करते थे। लकड़ियाँ एकत्रित करके भोजन बनाते थे, तदुपरांत अपराह्ण में विश्राम करते थे। सायंकाल अध्यापन और वार्तालाप करते थे। इसके बाद भोजन करने के पश्चात् रात्रि में विश्राम करते थे।[५] वे अग्नि पूजा करते थे।[६] जब कोई अजनबी आता था तब वे उससे कल्याण भी पूछते थे।

वर्षाकाल में तपस्वी लोग पर्वतों से उतर कर ग्रामों में आ जाते थे।[७] आदिच्युपट्ठान जातक के अनुसार वर्षाकाल के बाद पुनः पर्वतों पर चले जाते थे क्योंकि फल-फूल बहुत रमणीय हो जाते थे।[८] इस प्रकार से वे शान्ति और एकान्त में वास करते हुए भी सैकड़ों मनुष्यों के पास बैठकर सांसारिक समस्याओं पर गहन विचार करते थे।

तपश्चर्या की विधि में अन्तर था। कुछ तपस्वी जल (वर्षा के जल) से

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०४; जि० ३, पृ० ८२; जि० ४, पृ० २५, १२९, ४७६; जि० ५, पृ० ३१२, ३३२; जि० ६, पृ० २१, ७३, ५२८
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०४, जि० ५, पृ० १३२; जि० ४, पृ० २९९; जि० ६, पृ० २१, ७३, २४२, ५२८
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६१
४. ,, ,, २, पृ० ४१; जि० ६, पृ० ४१, १५८
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २२१; जि० ५, पृ० ३१३; जि० ६, पृ० ७५
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८५, ४९४; जि० २, पृ० ४३-४४; जि० ५, पृ० ४७६; जि० ६, पृ० २०१
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ८५; जि० ३, पृ० ३७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६२-२६३; जि० ३, पृ० २०६
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ७२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २४७-२४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्पन्न जंगली अन्न, पत्र-पुष्प, फल और मूल, मांस खाकर अपना तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे।[1]

तपस्वियों को किसी भी प्रकार का कष्ट पहुँचाना बहुत बड़ा पाप माना गया है।[2] मनुष्य इन साधुओं (ऋषियों) के पास अपनी सांसारिक समस्याओं को लेकर समाधान करने जाते थे और सुख की अनुभूति करते थे।[3]

आदर्श तपस्वी :

जातक साहित्य में आदर्श तपस्वी के गुणों का भी वर्णन मिलता है। ये तपस्वी मनुष्यों द्वारा कष्ट देने पर भी उससे क्रोधित नहीं होते थे। विधुर जातक में श्रमण तपस्वी की महिमा का वर्णन मिलता है। ये सब गुण उनमें इस प्रकार पिरोये होते थे जिस प्रकार चक्र की नाभि में उसके डण्डे प्रतिष्ठित रहते हैं।[4] सत्तिगुम्ब जातक में कहा गया है कि सत्यपुरुष स्वर्ग प्राप्त करा देते हैं।[5] धजविहेठ जातक में इन्हें आदर के पात्र कहा गया है।[6] विधुर जातक में कहा गया है कि जो अपनी उन्नति चाहता हो वह शीलवान, बहुश्रुत श्रमण-ब्राह्मणों के पास जाकर प्रज्ञावानों की संगति करे।[7] श्रमण लोग तर्क सिद्ध धर्मोपदेश करते थे।[8] महामोर जातक में श्रमण ब्राह्मणों का उल्लेख हुआ है जो काषाय वस्त्रधारी अनागारिक श्रमण थे, वे समय से प्रातःकाल ही भिक्षाटन के लिए निकलते थे।[9]

सम तपस्वी :

जातकों में सम तपस्वियों का भी उल्लेख मिलता है। इनमें ढोंग, आडम्बरों

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५०; जि० ४, पृ० २२१, ३०६, ३७१; जि० २, पृ० २६२, ३८२; जि० ५, पृ० २३५; जि० ६, पृ० ६३
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७२; जि० ४, पृ० ३८३; जि० ५, पृ० १४३-१४४
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३३-३३४
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २९८
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४३६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २३
६. ,, ,, ३, पृ० ३०५; ,, ,, ३, पृ० ४५५
७. ,, ,, ६, पृ० २९६; ,, ,, ६, पृ० ३३५
८. ,, ,, १, पृ० ३८९; ,, ,, १, पृ० ५५०
९. ,, ,, ४, पृ० ३४०; ,, ,, ४, पृ० ५४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विश्वासों के प्रति कोई भी द्वेष भावना नहीं होती थी।[१] कासव जातक से पता चलता है कि एक तपस्वी काषाय वस्त्र पहनकर, भिक्षु वेष बनाकर रहता था उसका सिर टोपी से ढँका था।[२] धजविहेठ जातक में एक सम तपस्वी के एक अभद्र आचरण का उल्लेख मिलता है। वह छद्म वेष में साही दरबार में रात्रि के समय और दिन में साधु वेष में रहता था।[३] बिळारवत जातक में कहा गया है, जो धर्म की ध्वजा बनाकर प्राणियों में विश्वास पैदा कर छिप कर पाप करता है, उसका व्रत विल्ला मात्र है।[४] अग्गिक जातक से भी इसकी पुष्टि होती है।[५] एक व्यक्ति तपस्वी के वल्कल वस्त्र ओढ़ पहनकर, एक कन्धे पर अजिन-चर्म रखकर बेहंगी तथा कमण्डल लेकर ऋषिवेष में तप, करते हुए तपस्वी सदाचारी की भाँति तपस्वियों से कुछ ही दूर पर सूर्य को नमस्कार करता हुआ खड़ा था।[६]

राइज डेविड्स के अनुसार ऐसे छिपे वेषधारी लोग यद्यपि बुरे आचरण करते थे परन्तु फिर भी लोगों में उनके प्रति आदर भाव था।[७] सोमनस्स जातक में महारक्षित नामक तपस्वी पाँच सौ तपस्वियों को साथ लेकर हिमालय में रहता था। वहाँ पर राजा के उद्यान में रहते हुए अनुयायियों सहित भिक्षाटन के लिये राज-द्वार में गया। राजा ने ऋषियों की मण्डली को देखकर उनकी चर्या से प्रसन्न होकर उन्हें ऊँचे तल्ले पर बिठाया और उद्यान में रहने के लिये कहा।[८]

श्रमण :

जातकों के अध्ययन से विदित होता है कि नये श्रमण लोग अन्य तपस्वियों से भिन्न होते थे उसका मुख्य कारण यह था कि वह अपना सिर मुड़ाये रहते

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५२
२. ,, ,, २, पृ० १९७; ,, ,, २, पृ० ३९५
३. ,, ,, ३, पृ० ३०३; ,, ,, ३, पृ० ४५३-४५४
४. ,, ,, १, पृ० ४६१; ,, ,, २, पृ० ९४
५. ,, ,, १, पृ० ४६१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९४-९६
६. ,, ,, २, पृ० ६८-६९, ७२-७३, २६९-२७०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २४३-४४, २४७-४८, ४७९
७. बुद्धिष्ट इण्डिया, पृ० २४९-५०
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४४४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

थे।[१] वे अपना भोजन भिक्षा के द्वारा करते थे।[२] ब्राह्मण संन्यासियों का बाह्य स्वरूप भी भिन्न था। वे बाल-दाढ़ी नहीं रखते थे। वे तीन काषाय वस्त्र, चीवर या त्रिचीवर (तीचीवर) पहनते थे। एक पात्र एक छुरा एक सुई, उस्तरा, एक काय-बन्धन और पानी छानने का कपड़ा साथ में रखते थे। मिट्टी का इनका पात्र भी होता था जिसे कन्धे पर लटकाये रहते थे।[३] उनको अपने वस्त्र स्वयं सिलने पड़ते थे।[४]

श्रमण चाहे जन्म से किसी भी जाति या वर्ण में जन्मे उनका साधारणतः सभी मनुष्यों द्वारा आदर सम्मान किया जाता था। राजाओं द्वारा भी उनका सम्मान किया जाता था। उनका उद्देश्य देशाटन द्वारा बहुजन हित और बहुजन सुख करना था। वे लोगों में धर्म का प्रचार करते थे। धार्मिक वार्तालाप करते थे। वे लोग आपस में एक परिवार की भाँति रहते थे। वे शहरों के कोलाहल से दूर बाहर उद्यानों में या विहारों में रुकते थे। कहीं-कहीं ये विश्राम गृहों में भी रुकते थे। ये विश्रामालय ग्रामीणों द्वारा सड़क के किनारे आम यात्रियों के लिये बनाये जाते थे।[५] ये लोग भिक्षा (पिण्डपात्र) के लिये शहर में जाते थे जहाँ राजाओं द्वारा इनका सम्मान होता था और बधाइयाँ दी जाती थीं।[६] साधारण मनुष्यों द्वारा इन तपस्वियों का सम्मान करना, भोजन कराना, रहने का स्थान देना और उनके जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करना कर्तव्य

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १८७; जि० ६, पृ० ५२

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३३, ३६१, ३७३, ४०६, ५०५; जि० ३, पृ० ३९, ७९, १४३, २३८; जि० ४, पृ० २९९

३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७७, जि० ५, पृ० १८७; जि० ६, पृ० ५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३८; जि० ५, पृ० २७०; जि० ६, पृ० ६२

४. ,, ,, ४, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २२३-२२४

५. मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० ३४४

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४०, ३३३, ३६१, ३७३, ४०६, ५०५; जि० ३, ३९, ७९, ११९, १४३, २३८, ३५२, ४४०; जि० ५, पृ० ४८२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३०, ४७७, ५११, ५२८, ५७३; जि० ३, पृ० २०९, २४६, २८४, ३०७, ३९८; जि० ४, पृ० १६, १००; जि० ५, पृ० ५५९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माना जाता था।[१] सोननन्द जातक में श्रमण-महिमा का उल्लेख हुआ है।[२] वे मनुष्यों को सही जीवनयापन करने का मार्ग दिखलाते थे। इस प्रकार से वे वास्तव में सुधारक थे जिनके प्रवचन साधारण बोलचाल की भाषा में होते थे।

बौद्ध-धर्म

जातक साहित्य का विशेष सम्बन्ध भगवान् बुद्ध के पूर्व जन्मों बोधिसत्व रूपों से है, जहाँ ये बहुजन हित और बहुजन सुख के लिये अपने शरीर अंगों को भी सहर्ष अर्पित कर देने के लिये तत्पर रहते थे। यही कारण है कि इन कथाओं में बुद्ध के जीवन वृत्त पर विस्तृत प्रकाश नहीं पड़ता। हाँ उनके जीवन से सम्बन्धित छुट-पुट घटनाचक्रों का उल्लेख अवश्य ही मिलता है। इसके साथ बौद्ध धर्म के प्राथमिक सिद्धान्तों यथा द्वे अन्त, चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग तथा पारमिताओं का उल्लेख मिलता है। यहाँ पर बुद्ध तथा उनके धर्म के प्रमुख तत्त्वों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

भगवान् बुद्ध

भगवान् बुद्ध का जीवन बौद्ध धर्म के इतिहास का एक सारभूत अंग है।[३] जातक निदान कथा में राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म शाक्यों की राजधानी कपिल-वस्तु नामक नगर में हुआ था।[४] माता का नाम माया देवी तथा पिता का नाम शुद्धोदन था।[५] गौतम के विषय में क्षत्रियों ने यह भविष्यवाणी की थी यदि यह बुद्ध होगा तो खत्तिय साधुओं से पुरस्कृत तथा परिव्रजित होकर विचरेगा और यदि राजा होगा तो खत्तिया कुमारों से पुरस्कृत तथा राज्य को पुनः देखेगा।[६]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८७, २९२, ४८०; जि० ४, पृ० २८-३०, २९९, ३२०; जि० ६, पृ० २८७, २९६, ३७८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २९१-९२, ४३२; जि० २, पृ० १२१; जि० ४, पृ० २२८-२३०, ५०३, ५२६; जि० ६, पृ० ३२५-२६, ३३५, ४२४

२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३१५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३९७

३. डॉ० नलिनाक्ष दत्त, उत्तर-प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, पृ० २४

४. कपिलवस्तु की पहचान कुछ विद्वानों ने नेपाल की तराई में तौलीहवा से दो मील उत्तर तिलौराकोट से करते थे परन्तु कुछ वर्ष पूर्व उत्तर-प्रदेश के बस्ती जिले के पिपराहवां नामक स्थान में हुए पुरातात्विक खुदाइयों से उपलब्ध मुद्राभिलेखों से यह सिद्ध हो गया है कि यह पिपराहवाँ ही प्राचीन कपिलवस्तु नगर है।

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४-१५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७४, ११७, ११९, जि० २, पृ० ३२९

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राजा शुद्धोदन यह नहीं चाहते थे कि सिद्धार्थ त्यागी बने। उन्होंने सिद्धार्थ गौतम को अत्यन्त भोग-विलास में रखा, ताकि वह संसार के मोह और आकर्षण से अलग न हो सके। बड़े होने पर गौतम संसार की क्षणभंगुरता पर सर्वदा चिन्तित रहने लगे, एकान्त में रहना उन्हें अच्छा लगता था। यह देखकर उनके पिता शुद्धोदन बड़े चिन्तित हुए और उन्होंने गौतम को सांसारिकता से आबद्ध करने के लिए सोलह वर्ष की ही अवस्था में राहुल माता देवी (यशोधरा) नामक रूपवती कन्या से उनका विवाह कर दिया।[1]

एक दिन सिद्धार्थ गौतम उद्यान देखने की इच्छा से सारथी को बुलाकर रथ ले चलने के लिए कहा। राह में एक देव पुत्र को जरा से जर्जरित टूटे दाँत, पके केश, टेढ़े झुके शरीर, हाथ में लकुटी लिए काँपता हुआ देखा। गौतम ने सारथी से पूछा, "यह कौन पुरुष है।" सारथी ने बताया, "यह वृद्ध हो गया है और प्रायः सभी की ऐसी दशा होती है।" सिद्धार्थ गौतम चिन्तित हो उठे और उन्होंने कहा, "धिक्कार है जन्म को, जहाँ जन्म लेने वाले को (ऐसा) बुढ़ापा हो।" उदास होकर वहाँ से लौटकर महल में चले गये। इसी प्रकार से दूसरे दिन एक रोगी पुरुष को देखकर पहले की भाँति पूछकर, शोकाकुल हृदय से महल में लौट गये। तीसरे दिन एक मृत-पुरुष को देखकर पहले की भाँति पूछकर उदास हो, फिर महल में लौट आये। इसी प्रकार चौथे दिन प्रव्रजित (संन्यासी) को देखकर सारथी से पूछा, "यह कौन है?" सारथी ने बताया, "यह प्रव्रजित है" कहकर प्रव्रजितों के गुण वर्णन किये।[2] सिद्धार्थ गौतम को यह जीवन रुचिकर लगा।

एक दिन अपनी पत्नी और पुत्र राहुल को सोते हुए छोड़कर गृह त्याग कर दिया।[3] इस प्रकार गौतम ने महाभिनिष्क्रमण किया। प्रायः यह कहा जाता है कि सिद्धार्थ ने अपनी पत्नी और नवजात शिशु को सोता हुआ रात में छोड़कर गृह त्याग किया, यह उनके प्रति अन्याय था। क्या सिद्धार्थ ने वास्तव में पत्नी-पुत्र को सोता हुआ छोड़कर गृह त्याग किया? सिद्धार्थ ने २९ वर्ष की अवस्था में गृह त्याग किया था। क्या इतनी आयु तक उन्होंने नित्य प्रति घटने वाली इन उपर्युक्त चारों घटनाओं को नहीं देखा होगा? किसी भी विचारशील व्यक्ति के गले

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२७
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८-५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२७-२९
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह बात नहीं उतर सकती।[१] सबसे पहले डा० धर्मानन्द कौशाम्बी ने अपनी पुस्तक भगवान् बुद्ध में इस विषय में प्रश्नसूचक लगाया था। परन्तु उन्होंने कोई कारण नहीं दिया।[२] कालान्तर में डा० बी० आर० अम्बेडकर ने अपने ग्रन्थ "बुद्ध एण्ड हिज़ धम्म", इस प्रश्न पर गहराई और विस्तार से विचार किया। उन्होंने सिद्ध किया कि वे अपनी पत्नी से आज्ञा प्राप्त कर ही प्रव्रजित हुए थे। इस गृह-त्याग का कारण बहुजन हित और बहुजन सुख था। शाक्य और कौलिय गणों की सीमा बनाती हुई रोहिणी नदी का जल-विवाद उनके गृह-त्याग का कारण बना।[3]

भ्रमण करते हुए आलार-कालाम और उद्रक रामपुत्र नामक सिद्ध तपस्वियों के आश्रमों में गये, जो अपनी साधना और वैराग्य के लिये विख्यात थे।[४]

गया में सम्बोधि प्राप्त पर वे बुद्ध कहे गये। तभी गया को बुद्ध गया कहा गया। अब उन्होंने विभिन्न कष्टों और दुःखों से पीड़ित मनुष्यों को ज्ञान और सत्य की शिक्षा देने के लिए भ्रमण करना प्रारम्भ किया। बुद्ध गया से वे काशी के ऋषिपत्तन मृगदाय (वर्तमान सारनाथ)[५] नामक स्थान में पहुँचे, जहाँ उन्होंने सर्वप्रथम उन पाँच तपस्वियों को दीक्षा दी थी जो उनके साथ उरुवेला में तपस्या कर रहे थे। उत्तराषाढ़ नक्षत्र (आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन) अठारह करोड़ ब्राह्मणों से घिरे हुए पंचवर्गीय स्थविरों को सम्बोधित कर धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र का उपदेश दिया था।[६] इस महत्त्वपूर्ण घटना की स्मृति में उस स्थान पर सम्राट् अशोक ने एक प्रस्तर स्तम्भ और स्तूप निर्माण करवाया था।[७] जो इस समय भी भग्नावस्था में विद्यमान है।

इसके बाद जीवन पर्यन्त गौतम बुद्ध घूम-घूमकर अपने उपदेशों का प्रचार करते रहे। उन्होंने बनारस, उरुवेला, राजगृह, कपिलवस्तु, श्रावस्ती, वैशाली आदि विभिन्न स्थानों का भ्रमण करके अनेकानेक लोगों को अपना शिष्य बनाया

---

१. दृष्टव्य भगवान बुद्ध और उनका धर्म—भूमिका
२. कोशाम्बी धर्मानन्द, भगवान बुद्ध, पृ० १०७
३. द्रष्टव्य बुद्ध एण्ड हिज़ धम्म, प्रथम संस्करण, बम्बई, पृ० २४-२५
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६६-६७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३७-३८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५४
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५५
७. डा० मिश्र, प्रा० भा० का सा० इ०, पृ० ६७७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

था।[1] राजगृह में उन्होंने सम्राट् बिम्बिसार और अजातशत्रु के अतिरिक्त सारिपुत्र, महामौदगल्यायन जैसे अनेक लोगों को अपना अनुयायी बनाया। कपिलवस्तु में पुत्र राहुल तथा मौसी गौतमी के पुत्र नन्द ने उनकी दीक्षा से अभिभूत होकर प्रव्रज्या ग्रहण की।[2] श्रावस्ती के सेठ अनाथपिण्डिक गृहपति ने पाँच सौ गाड़ियों में माल भरकर राजगृह गया जहाँ उसने भगवान बुद्ध के धर्मोपदेश सुनकर स्त्रोतापत्ति-फल में प्रतिष्ठित होकर दूसरे दिन भिक्षु संघ सहित बुद्ध को महादान देकर श्रावस्ती आने के लिए आमन्त्रित किया। अनाथपिण्डिक ने श्रावस्ती में अट्ठारह करोड़ कार्षापण खर्च करके जेतवन मोल लिया था और वहाँ विशाल जेतवन बिहार बनवाकर भिक्षु-संघ को दान दिया था।[3] महाकण्ह जातक में कहा गया है कि बुद्ध का जीवन ही लोगों के कल्याण के लिए होता है। गयाशीर्ष पर "आदित्यपरियाय" सूत्र का उपदेश देकर सहस्र जटिलों को अरहत्व का मार्ग दिखाया, महाकाश्यप का स्वागत करके उन्हें तीन उपदेशों से सम्पन्न किया था। पुक्कुसाति कुलपुत्र को अनागामिकफल में प्रतिष्ठित किया था। महाकप्पिन को अरहत्व दिया था, चण्ड, कठोर अंगुलिमाल को अरहत्व दिया था, आलवक को स्त्रोतापति फल में प्रतिष्ठित किया था। अस्सी करोड़ देवताओं को धर्मज्ञान कराया। ब्रह्मलोक में बकब्रह्मा की मिथ्यादृष्टि दूरकर दस हजार ब्राह्मणों को अरहत्व का मार्ग दिखाया था।[4]

सरभमिग जातक से पता चलता है कि भगवान बुद्ध ने तैर्थिकों का मान मर्दन करने वाली यमक ऋद्धि दिखलायी थी।[5] कच्छप जातक के अनुसार बुद्ध के उपदेश सारे जम्बूद्वीप में फैलकर सात सौ वर्षों तक फलते-फूलते रहे।[6]

बुद्ध का नाम आज भी संसार के सम्मुख आदरणीय है और उनके धर्म को भारत में ही नहीं बाहर सुदूर पूर्व एशिया[7]; मध्य एशिया, चीन, जापान, रूस आदि देशों के निवासी भी अपनाते हैं।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८१-९२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३-१६८
२. डॉ० मिश्र, प्रा० भा० का सा० इ०, पृ० ६७७; जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८९-९०
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९२-९४; जा०अ०हि० जि० १, पृ०१६८-१७१
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १८०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७९
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २६३-२६४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४६६-४६८
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ८१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५८
७. डॉ० बी० एन० पुरी, भारतीय संस्कृति, पृ० १९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बुद्ध ने मानव-कल्याणार्थ जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था, उनका विस्तृत विवेचन "बुद्ध के प्रमुख सिद्धान्त" नामक शीर्षक में आद्योपान्त किया गया है।

बुद्ध के प्रमुख सिद्धान्त

बुद्ध गया में ज्ञान प्राप्त बुद्ध ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया वे ही बौद्ध धर्म नाम से प्रसिद्ध हो गए हैं। यह अवश्य है कि उन सिद्धान्तों के आधार पर या समय और वातावरण के प्रभाव से उनमें अनेक अन्य विचार भी जुड़ते गये। आज प्रचलित बौद्ध धर्म में बुद्ध के मूल उपदेशों और सिद्धान्तों को खोजना कठिन हो गया है। यहाँ पर बुद्ध के केवल उन मूल सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है जिनके द्वारा वे तत्कालीन भारत में जन-जागरण की क्रान्ति ला सके।

प्रतीत्य समुत्पाद

प्रतीत्य समुत्पाद (कार्य कारण का सिद्धान्त) मानवी दुःख के कई कारण होते हैं जिनसे प्राणी मात्र दुःखी रहता है। जन्म, जरा, मरण, तृष्णा, ईर्ष्या, मिथ्याभिमान आदि ऐसे ही अनेक कारण हैं।

भगवान् बुद्ध ने गया में ज्ञान प्राप्त किया और वे बुद्ध हो गये। यह स्वाभाविक इच्छा हो सकती है कि वह ज्ञान क्या था? बौद्ध साहित्य में उसे कार्य कारण का सिद्धान्त (प्रतीत्य समुत्पाद) कहा गया है। जिसका तात्पर्य है कि कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं हो सकता है। तथागत ने दुःख के कारणों की एक शृंखला का ज्ञान प्राप्त किया, जिसमें बारह कड़ियाँ थीं। दुःख के कारणों का बोध कराने वाली इस शृंखला को प्रतीत्य समुत्पाद कहा गया है।[1] प्रतीत्य समुत्पाद शृंखला की बारह कड़ियाँ निम्नलिखित हैं[2] :—

१. अविद्या	२. संस्कार	३. विज्ञान	४. नामरूप
५. षडायतन	६. स्पर्श	७. वेदना	८. तृष्णा
९. उपादान	१०. भव	११. जाति	१२. जरामरण

---

१ सद्धर्म० १३/५, १४/३, २५१/१८; अवदान० जि० २/२३/१; मित्रा, ललित० ४४/३-९

२. महावस्तु जि० २/२८५/८-१२; मित्रा, ललित० ४४४/३-९; वैद्य, ललित० २५२/७-१०, २५२/२७ से २५३/११ तक; सद्धर्म० १२३/९-१४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उक्त १२ कड़ियों में प्रत्येक कड़ी अगली कड़ी का कारण है और प्रत्येक कड़ी अपनी पूर्व की कड़ी का फल है।

दो अन्त और मध्यम मार्ग

भगवान् बुद्ध ने काय सुख और काय क्लेश की चरम सीमाओं को अहितकर बताते हुए कहा कि कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को इन दोनों अतियों का सेवन नहीं करना चाहिए। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है और वह बिना कष्ट उठाये नहीं मिलता। अतः दोनों अतियों को न छूते हुए माध्यम मार्ग (मज्झिमा पटिपदा) पर चले।[1]

चार आर्य सत्य

जातक वस्तु-कथा के अनुसार मनुष्य का अच्छा-बुरा कर्म ही उसका सब कुछ है। भगवान का उपदेश है, "भिक्षुओं, सभी को इस बात पर सदा मनन करना चाहिए कि मेरा जो कुछ भी है, कर्म ही है, कर्म ही दायाद है, कर्म ही से उत्पत्ति है, कर्म ही बन्धु है, कर्म ही शरण स्थान है, जो मैं अच्छा बुरा-कर्म करूँगा, उसका मैं उत्तराधिकारी होऊँगा।"[2]

भगवान बुद्ध ने देखा था कि संसार में सभी दुःखी हैं—रोगी रोग से दुःखी है, वृद्ध वृद्धावस्था से, मृतक-मृतक से, धनी धन रक्षा की चिन्ता से और प्रेमी प्रेम को अविच्छिन्न बनाये रखने के प्रयत्न से। तथागत ने दुःख के मूल को समझा था। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि दुःख सभी के मूल में है। दुःख का कारण है दुःख का निरोध है उसके दूर करने का उपाय भी है।[3] जिन्हें बौद्ध धर्म की शब्दावली में दुःख आर्य सत्य, दुःख समुदाय आर्य सत्य, दुःख निरोध आर्य सत्य और दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य कहा गया है।[4]

उपसालहक जातक में कहा गया है कि जिस व्यक्ति में चार आर्य सत्य का पालन, मनुष्य के लिये अत्यन्त हितकारी बताया गया है।[5]

मतकभत्त जातक में दुःखों का कारण बताया गया है।[6]

---

१. डॉ० अंगने लाल, अ० का० भा०, पृ० ८९-९०
२. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८-५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२८; डॉ० अंगने लाल, अ० का० भा०, पृ० ९०
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९७, १५३, १९०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७४, २४६; जि० २, पृ० १३४,२४६
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २२६-२७
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आर्य अष्टांगिक मार्ग

जातक साहित्य के अनुसार अष्टांगिक वह मार्ग है जिस पर चलकर प्राणी (निर्वाण) प्राप्त करता है। इस मार्ग के बिना लोग अन्य मार्गों में व्यर्थ भटकते रहते हैं। दुःख से मुक्ति पाने वाले प्राणी को सबसे पहले दुःख की पहचान करनी चाहिए, तत्पश्चात् दुःख उदय के कारणों (दुःख समुदाय) का त्याग करना चाहिए, इसके पश्चात् दुःख दूर करने (निरोध) का अनुभव करके दुःख से छुटकारा पाने के उपायों (मार्ग) की भावना और आचरण करना चाहिए।[1] सम्यक् सम्बुद्ध द्वारा उपदिष्ट अष्टांगिक मार्ग का जीवन में विशेष महत्व बताया गया है।[2] इस अष्टांगिक मार्ग में आठ अग निम्नलिखित हैं :—

१. सम्यक् दृष्टि (सम्मादिट्ठि)
२. सम्यक् संकल्प (सम्मासकप्पो)
३. सम्यक् वचन (सम्मावाचा)
४. सम्यक् कर्मान्ति (सम्माकम्मन्तो)
५. सम्यक् आजीविका (सम्माआजीवो)
६. सम्यक् व्यायाम (सम्मावायामो)
७. सम्यक् स्मृति (सम्मासति)
८. सम्यक् समाधि (सम्मासमाधि)[3]

उपर्युक्त आठों अंगों को प्रज्ञा, शील और समाधि नामक तीन वर्गों में विभाजित किया गया है।

प्रज्ञा सम्बन्धी मार्ग—सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प (दृढ़ निश्चय) और सम्यक् व्यायाम का सम्बन्ध प्रज्ञा से है। प्रज्ञा का अर्थ विमल ज्ञान है।

शील सम्बन्धी मार्ग—जातक साहित्य में शील पर अत्यधिक बल दिया गया है। इस वर्ग में सम्यक् वचन, सम्यक कर्मान्ति और सम्यक् आजीविका आते हैं। जातक निदान कथा में चारों भूमियों को प्राप्त करने में शील का महत्व बतलाया गया है।[4]

---

१. बु० च० १५/४७-४८; डॉ० अंगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी, पृ० १२६
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०४; जि० ४, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६७; जि० १, पृ० १८२
३. लेफमैन, ललित० पृ० ४१६-१७; जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४०३
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समाधि सम्बन्धी मार्ग—सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि इन दोनों का सम्बन्ध समाधि से है। सम्यक् स्मृति का तात्पर्य है, अपने अच्छे बुरे कर्मों को स्मरण करना और सम्यक् समाधि का तात्पर्य उस समाधि से है जिसका आशय शान्ति है। मैत्रीपूर्ण चित्त अपर्णा समाधि तथा ब्रह्मलोक तक को प्राप्त करता है।[1] चित्त का इन मार्गों द्वारा निग्रह होता है।[2]

महत्व—शील, समाधि और प्रज्ञा रूपी तीन स्कन्धों वाले अष्टांगिक उत्तम मार्ग का अनुसरण करके मनुष्य दुःख के कारण दोषों से मुक्त हो जाता है और अत्यन्त मंगलमय निर्वाण पद को प्राप्त करता है।[3]

शील-महत्व—जातकों में शील-अच्छा आचरण का विशेष महत्व दर्शाया गया है। शील समाचरण मनुष्य का जितना कल्याण हो सकता है उतना अन्य किसी साधन से सम्भव नहीं। संसार में शील उत्तम है, शील ही श्रेष्ठ है। शील ही कल्याणकर है, लोक में शील से बढ़कर कुछ नहीं। "सीलं किरेव कल्याणं सीलं लोके अनुत्तर।"[4]

शील समाचरण पर बुद्ध ने विशेष बल दिया है। ज्यों-ज्यों बौद्ध धर्म में प्रवेश बढ़ता जाता है, शीलों में वृद्धि होती जाती है। महामानव व्यावहारिक पुरुष थे। इसीलिए उन्होंने सामान्य बौद्धों (उपासकों) के लिये जो पांच शील सिद्धान्त बताये वही अनागारिक, श्रामणेर भिक्षु के आचरण के आठ शील (अष्ठशील) बतलाये। यहाँ संक्षेप में इन शीलों का परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

पंचशील

पंचशील[5] का पालन सभी बौद्ध जनों के लिये अनिवार्य था। ये पंचशील (व्यवहार सिद्धान्त) इस प्रकार हैं :—

१. पाणातिपाता वे रमणी (प्राणी हिंसा से विरत रहना)।

२. अदिन्नादाना वे रमणी (बिना दी हुई वस्तु से विरत रहना अर्थात् चोरी न करना।

---

१. जा अ० रो० जि० २, पृ० ६१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २३४
२. सौ० १६/३३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८२; सौ० १६/३७
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७१; जा० आ हि० जि० १, पृ० ५२५-२६
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

३. कामेसुमिच्छाचारा वे रमणी (काम वासना में मिथ्याचार से विरत रहना)।

४. मुसावादा वे रमणी (मृषा अर्थात् झूठ, कठोर, बोलने और चुगली करने से विरत रहना)।

५. सुरामेरेय मज्जप्पमादट्ठाना वे रमणी (शराब, ताड़ी तथा अन्य मादक वस्तुओं एवं मादक स्थानों जैसे जुआ खेलने के स्थानों आदि से विरत रहना)।[1]

इन्हीं पंचशीलों का समाचरण लोगों की उन्नति और विकास का आधार है।

अष्टशील

जहाँ गृहस्थों के लिए पंचशील का आचरण आवश्यक था वहीं भिक्षुओं के लिए अष्टशील का पालन आवश्यक था ये अष्टशील इस प्रकार हैं :—

१. पाणातिपाता वे रमणी।

२. अदिन्दानाना वे रमणी।

३. अब्रह्मचरिया वे रमणी।[2]

४. मुसावादा वे रमणी।

५. सुरामेरेय मजप्पमादट्ठाना वे रमणी।

६. विकाल भोजना वे रमणी।

७. नच्च गीत वादित विसूक दस्सन माला गन्ध-विलेपन धारण मण्डन विभूसनट्ठाना वे रमणी।[3]

८. उच्चासयन महा सयना वे रमणी।[4]

इन अष्टशीलों में चार शील पंचशील के ही हैं। पंचशील के तीसरे शील में परिवर्तन किया गया है। उपासकों के लिए जहाँ कामवासना में मिथ्याचरण से विरत रहने का आदेश दिया गया है वही अनागारिकों और भिक्षुओं के लिए अब्रह्मचर्य से दूर रहना अर्थात् ब्रह्मचर्य के पालन पर जोर दिया गया है। ब्रह्मचर्य का पालन गृहस्थ के लिए कठिन था परन्तु भिक्षु के लिए आवश्यक था। इसीलिए यह परिवर्तन किया गया। तीन नवीन शील सिद्धान्त जोड़े गये हैं। इनमें छठवें शील का अर्थ है विकाल भोजन से विरत रहना।[5]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८९-९०
२. अब्रह्मचर्य से विरत अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करना।
३. नाच, गाना, बाजा, मेला, तमाशा, माला, सुगन्धित लेपन, शरीर शृंगार, आभूषण आदि से विरत रहना।
४. ऊँचे आसन और विलासिता पूर्ण राजसी शय्याओं से विरत रहना।
५. दोपहर के १२ बजे से प्रातः ४ बजे तक का समय विकाल माना गया है। सबेरे ४ बजे से दोपहर के १२ बजे तक का समय सुकाल है। इस बीच भिक्षुओं को भोजन कर लेना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस प्रकार भगवान बुद्ध ने उपासकों अर्थात् गृहस्थों और भिक्षुओं के लिए उनकी आवश्यकताओं और व्यवहारों के अनुरूप अलग-अलग शील पालन का आदेश दिया। वस्तुतः पंचशील व्यावहारिक क्रान्ति थी। जिसके द्वारा वह अपने कार्यों पर स्वयं नियंत्रण रखता था।

चार फल—शील समाचरण से चार फलों की प्राप्ति होती है ये चार फल इस प्रकार हैं :—

श्रोतापत्ति—(निर्वाण पथ गमन)
सकृदागामि—(संसार में सुकर्मों के फल से एक ही बार लौटने वाला)
अनागामि—(न लौटना)
अर्हत—(निर्वाण को प्राप्त करना)

त्रिरत्न

जातक साहित्य में बुद्ध, धर्म और संघ इन तीनों को तीन रत्न (त्रिरत्न)[1] माना गया है। आज भी बौद्ध जगत में बौद्ध धर्म ग्रहण करने वाले उपासक त्रिरत्न और पंचशील ग्रहण करते हैं। पंचशील का वर्णन पहले ही किया जा चुका है। यहाँ पर त्रिरत्न को त्रिशरण ग्रहण भी कहा गया है। ये तीन त्रिरत्न इस प्रकार हैं—

"बुद्धं सरणं गच्छामि
धम्मं शरणं गच्छामि
संघं सरणं गच्छामि।"[2]

इनका अर्थ है कि मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ, धम्म की शरण जाता हूँ और संघ की शरण जाता हूँ।

त्रिरत्न वैचारिक क्रान्ति थी।

पारमिताएँ

पारमिता का अर्थ है परमता। डा० लाल के अनुसार "चित्त में बुद्धांकुर प्रस्फुटित होने के पश्चात् बोधिसत्त्व बुद्धत्व प्राप्ति हेतु जिन विशेष शिक्षाओं की

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७३-७४; जि० २, पृ० ६३, २३६
२. इ० हि० क्वा० भाग २१, पृ० २४६, कलकत्ता, १९४५; जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७३-७४; जि० २, पृ० ६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और प्रयत्नशील होता है, उन्हें पारमिताएँ कहते हैं।"[1] जातक कथाएँ इन्हीं परोपकारी कार्यों से परिपूर्ण हैं। इन कथाओं में निम्नलिखित दस पारमिताओं का वर्णन मिलता है।

१. दान पारमिता—दान का साधारण अर्थ है त्याग, इसका तात्पर्य यह है कि सब दान दे देना। परन्तु बदले में कुछ न चाहना। यही दान पारमिता कहलाती है।[2]

२. शील पारमिता—कुशल कार्यों का सम्पादन करना।[3]

३. नैष्क्रम्य पारमिता—राज्य को भी त्याग देना नैष्क्रम्य पारमिता कहलाती है।[4]

४. प्रज्ञा पारमिता—मन में कोई भी विकार न उत्पन्न होना प्रज्ञा पारमिता कहलाती है।[5]

५. वीर्य पारमिता—वीर्य का तात्पर्य है उत्साह। प्राणियों की रक्षा करना।[6]

६. क्षान्ति पारमिता—क्रोध को न उत्पन्न होने देना क्षान्ति पारमिता है।[7]

७. सत्य पारमिता—सत्य की रक्षा करते हुए अपने जीवन का परित्याग कर देना सत्य पारमिता है।[8]

८. अधिष्ठान पारमिता—जीवन परित्याग करके दृढ़ निश्चय ही अधिष्ठान पारमिता है।[9]

९. मैत्री पारमिता—मैत्री बल पर निर्भर रहना ही मैत्री पारमिता है।[10]

१०. उपेक्षा पारमिता—समभाव का उल्लंघन न करना उपेक्षा पारमिता है।[11]

---

१. सं० बौ० सा० में० भा० जी०, पृ० १३५
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १११
३. ,, ,, १, पृ० ४५; ,, ,, १, पृ० १११, १५०
४. ,, ,, १, पृ० ४६; ,, ,, १, पृ० १११
५. ,, ,, १, पृ० ४६; ,, ,, १, पृ० १११-११२
६. ,, ,, १, पृ० ४६; ,, ,, १, पृ० ११२
७. ,, ,, १, पृ० ४६; ,, ,, १, पृ० ११२
८. ,, ,, १, पृ० ४६; ,, ,, १, पृ० ११२
९. ,, ,, १, पृ० ४६-४७; ,, ,, १, पृ० ११२-१३
१०. ,, ,, १, पृ० ४७; ,, ,, १, पृ० ११३
११. ,, ,, १, पृ० ४७; ,, ,, १, पृ० ११३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बुद्धत्व प्राप्ति के लिए असंख्य काल तक दस पारमिताओं का आचरण करना पड़ता है।[१] सम्यक् रूप से इन सभी पारमिताओं के पूर्ण हो जाने पर बोधिसत्त्व (बुद्धत्व) के समीप पहुँच सकते हैं।

इस प्रकार जातक ग्रन्थों में भगवान बुद्ध के संक्षिप्त जीवन महाभिनिष्क्रमण, बोधि लाभ, प्रतीत्य समुत्पाद, धम्म चक्र प्रवर्तन, चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, त्रिशरण, पंचशील एवं अष्टशील और पारमिताओं का वर्णन मिलता है। यही बुद्ध के धर्म के मूल सिद्धान्त हैं।

जैनधर्म

बौद्ध धर्म की भाँति जैन धर्म का भी उदय हिन्दू धर्म के प्रतिरोध के रूप में हुआ। जिन (इन्द्रिय विजेता) द्वारा चलाया गया धर्म ही जैन धर्म कहलाया। जैन धर्मावलम्बियों के अनुसार जैन धर्म की प्राचीनता प्रागैतिहासिक है। उनके अनुसार मोहनजोदड़ों से प्राप्त योगी की मूर्ति इसके आदि प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की है।[२]

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकरों में सर्व प्रसिद्ध वर्धमान महावीर थे।[३] इन्होंने समस्त रागद्वेषों पर विजय प्राप्त कर 'जिन' की पदवी प्राप्त की।

बावेरु जातक में चौबीसवें तीर्थंकर (निग्रन्थज्ञाति-पुत्र) का उल्लेख मिलता है।[४] ऐसा ज्ञात होता है कि ईसा की प्रथम शताब्दी में जैन धर्म समाज में अत्यधिक प्रचलित न था। उनकी नग्नावस्था की तीव्र आलोचना की गई है।[५] आजीवक लोग नाना प्रकार की मिथ्या तपस्याएँ करते थे।[६]

प्राचीन शिलालेखों से भी यह बात प्रमाणित है कि ऋषभदेव की मूर्तियों की पूजा जैन लोग करते थे। मथुरा के कङ्काली टीले की खुदाई में डॉ० फुहरर को जो जैन शिलालेख प्राप्त हुए वे करीब दो हजार वर्ष प्राचीन हैं, और उन पर इन्डेसिथियन राजा कनिष्क, हुविस्क और वासुदेव का सम्वत है। उसमें

---

१. महावस्तु जि० ३/२२६/५-६
२. डॉ० मिश्र, प्रा० भा० का सा० इ०, पृ० ६६६
३. जैन-सिद्धान्त-भास्कर, भाग १७, नं० २, पृ० १०७
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २९१
५. ,, ,, १, पृ० ८१, २०६, २५७, ४९३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५४, ३१५, ३८०; जि० २, पृ० १३७
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १३७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भगवान् ऋषभदेव की पूजा के लिये दान देने का उल्लेख है।[१] ये अभिलेख मथुरा संग्रहालय में आज भी सुरक्षित हैं।[२]

इस धर्म में कुल २४ तीर्थंकर[३] हुए जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया। जैन धर्म के मुख्य सिद्धान्तों में जीवन तथा अमर होने के साधनों पर विचार किया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार इस धर्म में तप के मार्ग को अपनाया गया है।[४]

महावीर[५] का जन्म वैशाली के ज्ञातृक नामक गणराज्य में हुआ था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था। माता का नाम त्रिशला था जो लिच्छवी शासक चेटक की बहन थी। पिता की मृत्यु के पश्चात् इन्होंने ससार से वैराग्य ले लिया था और तेरह वर्ष तक कठिन तप करके मुक्ति प्राप्त की थी।[६] तभी उन्हें ज़िन (इन्द्रियों के विजेता) कहा गया है।

महावीर स्वामी के अनुसार जैन धर्म सम्पूर्ण भारत में फैला। यही नहीं लंका के शासक ने निर्ग्रन्थों के लिये अनुराधपुर में एक निर्ग्रन्थ संघ (आश्रम) का निर्माण करवाया था और जब अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ सिंघल (लंका) गयी तो उन्होंने वहाँ निर्ग्रन्थ संघ को देखा, जहाँ निर्ग्रन्थ लोग निवास करते थे।[७]

लौकिक धार्मिक विश्वास

जातक साहित्य में विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा-उपासना के अनेकानेक

---

१. डॉ० राधाकृष्णन, धर्म और समाज, पृ० ६५
२. डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला, पृ० २७९, २८३-२८५
३. उपाध्याय विद्यानन्द मुनि, तीर्थंकर वर्द्धमान, पृ० १३; डॉ० मिश्र, प्रा० भा० का सा० इ०, पृ० ६६६
४. डॉ० बी० एन० पुरी, भा० सं० और इ०, पृ० १८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८८
६. शिवशेखर मिश्र, भा० का सा० वि०, पृ० ८०; डॉ० आर० मुकर्जी, हिन्दू सभ्यता, पृ० २३७
७. डॉ० मिश्र, प्रा० भा० का सा० इ०, पृ० ६६८; डॉ० बेनीमाधव बरुआ, इण्डिया एण्ड सीलोन, पृ० २३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उल्लेख प्राप्त होते हैं। लोगों के हृदय में स्वर्ग[१] और नर्क[२] की भावना व्याप्त थी। स्वर्ग प्राप्त करने के हेतु तथा नर्क[३] से बचने के लिए लोग विभिन्न धार्मिक क्रियाओं को करते थे यथा—दान देना[४], श्राद्ध करना[५] और देवालय, कूप, आश्रम तथा जलाशयों का निर्माण करवाना।[६] तन्त्र-मन्त्रों तथा नाम-किन्नर, गंधर्व यक्ष आदि देवों पर भी विश्वास किया जाता था।[७] उस समय में निम्नलिखित धार्मिक विश्वास प्रचलित थे।

नाग पूजा :

नाग शब्द का अर्थ है—सर्प, हाथी, पर्वत तथा बादल। नाग एक विशेष जाति के लोग ही थे, जिनका ऊपरी शरीर मनुष्याकृत तथा नीचे का शरीर सर्प के आकार का होता था। प्राचीन प्रस्तर फलकों पर इन नागों का अंकन नर-नारी के रूप में ही किया गया है जिनके सिर के पीछे नाग फन बना रहता था तथा कटि से नीचे सर्पवत् अंकित है।[८] पुराणों में नागों को कद्रु द्वारा उत्पन्न कश्यप की सन्तान बताया है। मनुस्मृति और महाभारत में उनको सात ऋद्धियों की सृष्टि का एक अंग बताया गया है।[९] जातकों में नागों की पूजा का अनेकानेक स्थानों पर उल्लेख है। नाग पूजा का महत्व भारतवर्ष में प्रारम्भिक

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ६५; जि० ५, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २६७; जि० ५, पृ० ४८६
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २६७; जि० ५, पृ० ३५५
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २६६-७०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३५५-५९
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २००, २२६; जि० ४, पृ० ६३, ४०१; जि० ६, पृ० ५४७
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४२५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ८३
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७, २००; जा० अ० हि० जि०, पृ० ६४, ३०८; बु० च० २/१२
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४१६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०३; सद्धर्म० १२१/९; सुकावती० ३०/३
लेफमैन, ललित० ८/११-१२; मिश्रा, ललित० १८३/५-६; अवदान० जि० १/२७८/५, महावस्तु जि० ३/७१; करुणा० ७७/३०; १००/२९
८. चतुर्वेदी, शर्मा तथा झा, संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ, पृ० ५७४
९. कनिंघम भरहुत स्तूप, पृ० २२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

काल से लेकर आज तक प्रचलन है।[१] जातक साहित्य में नागों के प्रमुखों में विरुपाक्ष की पश्चिमी दिशा का संरक्षक बताया गया है। नाग लोग नागलोक में निवास करते थे।[२] विधुर पण्डित जातक के अनुसार नागों की राजधानी का नाम "भोगवती" अर्थात् "भोग" की नगरी थी जो जल के नीचे स्थित थी। नागराज की भार्या का नाम विमला देवी था।[३] नागों का जल से घनिष्ठ सम्बन्ध था।[४] मुचलिन्द नामक नाग सरोवर प्रसिद्ध है।[५] भूरिदत्त जातक में नागों को जल प्रकृति वाला कहा गया है। उनका सम्बन्ध सरिताओं, द्वीपों और समुद्रों से स्थापित किया गया है।[६]

लोगों का विश्वास है कि नाग अपने भौतिक रूप में मत्स्याङ्गनाओं और मत्स्यपुरुषों की भाँति जल के भीतर बड़े सुख और वैभव के साथ रहते हैं।[७] नागों का उल्लेख अर्धपशु एवं अर्धमानव के रूप में हुआ है। ये पशु होते हुए भी स्वेच्छा से मनुष्य रूप धारण कर सकते थे।[८] नाग भूगर्भ में रहते थे जहाँ उपवन, धन-धान्यादि से समन्वित उनके सुन्दर प्रासाद थे।[९] साहित्य में वे कुशल भवन निर्माताओं के रूप में प्रसिद्ध हैं।[१०] वे यद्यपि दयालु प्रवृत्ति के भी होते थे परन्तु क्रोधित होने पर अत्यधिक डरावने हो जाते थे। काक जातक के अनुसार दूध, चावल, मांस, मदिरा आदि से उनको प्रसन्न करने के लिए यज्ञ किये जाते थे।[११]

---

१. चतुर्वेदी, ध्रुवनाथ, बौद्ध भारत, पृ० १५९
२. कनिंघम, भरहुत स्तूप, पृ० २२
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६२, २६९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३००, ३०८
४. कनिंघम, भरहुत स्तूप, पृ० २२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४७२; जि० ३, पृ० ८७-८८; जि० ५, पृ० ४५४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १०९, २९४; जि० ३, पृ० २५४; जि० ५, पृ० ५३३
७. संयुक्त भाग ५वाँ ४७, ६३
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १७७
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १६७, २६९-७७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २०१, ३०८-३१६
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४६४; जि० ६, पृ० १७२-७४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५३-५४; जि० ६, पृ० २०५-२०६
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४९८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १४३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महोदय एस० सी० काला के अनुसार भरहुत वेदिका के २ उष्णीषों पर मुचलिन्द जातक की कथा के चित्रण हैं (नं० २१)।[1] चम्पेय्य जातक तथा भूरिदत्त जातक से ज्ञात होता है कि सपेरे इन नागों को पकड़ कर और उनका प्रदर्शन करके धनोपार्जन करते थे। इसी प्रकार का नाग प्रदर्शन बनारस के राजा के समक्ष हुआ था।[2]

मथुरा संग्रहालय के कनिष्क के आठवें वर्ष के एक प्रतिमा के लेख से प्रतीत होता है कि नाग देवता को उपवन और जलाशय भी समर्पित किया गया था।[3] लखनऊ के प्रादेशिक संग्रहालय के एक चौकोर शिला-पट्ट पर उत्कीर्णित कुषाण-कालीन अभिलेख में "नागदेवता" अधिकर्ण का उल्लेख है।[4] भूरिदत्त जातक में धृतराष्ट्र को नागों का राजा बतलाया गया है।[5]

सुरापान जातक के अनुसार बुद्ध उपस्थायक सागत नामक स्थविर ने जो लौकिक ऋद्धि से युक्त थे, नागराज का दमन कर, उसे त्रिशरण तथा पञ्चशील में प्रतिष्ठित किया था।[6] सीलानिसंस जातक के अनुसार काश्यप सम्यक् सम्बुद्ध के लिए नागराज ने अपने शरीर की महान नौका बनाई थी।[7] नाग भी बुद्ध भक्त थे।[8] निदान कथा में महाकाल नागराज को सौ श्लोकों से बुद्ध का गुणगान करते पाते हैं।[9]

यक्ष पूजा :

बौद्ध साहित्य के चारों दिशाओं के देवों में यक्षराज वैश्रवण प्रसिद्ध देवता हैं जिनके स्वामी का नाम वेस्सवन था[10], जिनको उत्तर दिशा का देवता बताया

---

१. काला, एस० सी०, भरहुत वेदिका, पृ० १५
२. वोगेल, इण्डियन सरपेण्ट, पृ० १३४; अजन्ता पार्ट १, पृ० ३८
३. एपी० इण्डि० जि० १७, पृ० ११
४. वही जि० १, पृ० ३९०
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १६४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १९८
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१०
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १११; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २९४
८. बु० च० पृ० २६/९९-१००
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२८; जि० २, पृ० १६; जि० ३, पृ० ५०२; जि० ६, पृ० २६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गया है। वैश्रवण के पिता का नाम विश्रवस था।[१]

जातक साहित्य में अनेकानेक यक्ष कथानक मिलते हैं। यक्ष विशालकाय, निर्निमेष विशालनेत्र, मांसाहारी एवं क्रूरकर्मी होते थे।[२] पानीय जातक में काशी-ग्राम के लोगों को एकत्रित होकर यक्षों के लिए मृग, सूअर आदि को बलि देते हुए पाते हैं।[३] सिगाल जातक में भी मनुष्यों ने यक्षों को बलि देने की इच्छा से चौराहों और दूसरे रास्तों पर मत्स्य-मांस आदि बिखेर कर खप्परों में शराब रक्खी थी।[४] गग्ग जातक के अनुसार यक्ष के बारह वर्ष कुबेर की सेवा करके उससे वरदान प्राप्त किया था।[५] महासुतसोम जातक में एक यक्ष को अर्ध पद लक्षण मन्त्र देते हुए पाते हैं।[६] सुतनु जातक में वट वृक्ष पर रहने वाले मरवा-देव यक्ष को कुबेर से यह वरदान मिला था कि वहाँ जो आये वह उन्हें खा सकता है।[७] विधुर पण्डित जातक में कुबेर के मन्त्री का नाम पुण्णक यक्ष बताया गया है।[८] महोदव कनिंघम के अनुसार यक्ष "पृथिवी के उपदेवता हैं" जैसे कि नाग "जल के उप-देवता हैं।"[९] यक्ष आज्ञाकारी होते थे।[१०] लोग वरदान पाने के लिए उनकी पूजा उपासना करते थे।[११]

---

१. कनिंघम, भरहुत स्तूप पृ० १८

बौद्ध सृष्टिवाद के सिद्धांत के अनुसार धृतराष्ट्र एवं गन्धर्वों का प्रासाद युगन्धर चट्टानों की पूर्वी दिशा में स्थित है, विरुपाक्ष एवं कुभादो का प्रासाद दक्षिण में विरुपाक्ष एवं नागों का प्रासाद पश्चिम में वैश्रवण एवं उसके यक्षों का प्रासाद उत्तरी दिशा में स्थित है।

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०२, २७३, जि० ४, पृ० ४९१; जि० ६, पृ० ३०७

३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ११५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३१६

४. ,, ,, १, पृ० ४२५; ,, ,, २, पृ० ४९

५. ,, ,, २, पृ० १६; ,, ,, २, पृ० १८०

६. ,, ,, ५, पृ० ४७३; ,, ,, ५, पृ० ५५०

७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३२५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४७३-४७४

८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३०७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३४६

९. भरहुत स्तूप पृ० २१

१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ९८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २९९

११. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५०२; जि० ५, पृ० २१, ४१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १६३; जि० ५, पृ० ११०, ५०३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यक्षिणियाँ बहुत ही खतरनाक होती थीं। वे अपने सौन्दर्य, नाच, गाना आदि हाव-भावों को आकर्षित करके अपना गुलाम बना लेती थीं और बहाने बनाकर उन्हें धोखा देकर खा भी जाती थीं।[१] भरहुत और सांची की कला में यक्ष और यक्षिणी की भी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इससे भी यक्ष उपासना का प्रमाण मिलता है।[२] डॉ० आनन्द कुमार स्वामी के अनुसार यक्ष पूजा भक्ति पूजा ही थी। मूर्ति मन्दिर और वेदी आदि साधनों से उनकी पूजा की जाती थी।[३]

गरुड पूजा :

नागों के साथ-साथ जातक युग में गरुड़-पूजा का भी वर्णन मिलता है। उरग जातक के अनुसार बहुत मनुष्य, देव, नाग तथा गरुड़ आदि मेला देखने हेतु एकत्रित हुए थे।[४] काकाती जातक के अनुसार नागों की भाँति ये भी मनुष्य-रूप धारण कर सकते थे। काशी नरेश की महिषी (काकाती) सुपण्ण-राज की सुन्दर मानवी आकृति को देखकर मुग्ध हो गई और उसके साथ उसके गरुड़ भवन चली गई।[५] ये नागों के वंशगत शत्रु हैं और नाग ही उनके आहार हैं।[६] औपपातिक सूत्र में नागों के साथ सुपण्ण भी देवताओं की कोटि में रक्खे गये हैं।[७]

वृक्ष पूजा :

वृक्ष पूजा प्राचीन काल से ही भारत में प्रचलित रही है[८] और इसका प्रथम स्थान था।[९] भद्दसाल जातक के अनुसार शाल वृक्ष, ग्राम-निगम द्वारा

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४०, ३९५-७; जि० २, पृ० १२८; जि० ३, पृ० ५०२
२. मार्शल० भा० आ० सां० पृ० २९९
३. डॉ० आनन्द कुमार स्वामी, यक्षाज पृ० ३७; डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी० पृ० १४०
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३; जि० ६, पृ० १९१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १७७; जि० ६, पृ० २२६-२२७
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २५७
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३; जि० ६, पृ० १९१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १७७; जि० ६, पृ० २२७
७. डॉ० विमल चन्द्र पाण्डेय, भा० का सा० इ० पृ० २७६
८. ज० रा० ए० सो० १९३०, पृ० ३३५
९. फरगुशन (Fergusson) जेम्स, ट्री एण्ड सरपेन्ट वरशिप इन इण्डिया, पृ० ६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूजित, राजकुल तक से बलि-प्राप्त मङ्गल कार्य था।[१] मनुष्यों का विश्वास था कि वृक्षों में अनेक देवता रहते हैं। यह भावना बौद्ध धर्म के उदय के समय भी प्रचलित थी ऐसा उपनिषदों से ज्ञात होता है।[२] भगवान् बुद्ध ने इन्हीं अन्ध-विश्वासों को रोका था। वृक्षों को हानि पहुँचाने से ये देवता कुपित होते थे।[३] इसलिए उन्हें प्रसन्न करने के लिए उन पर बलि तथा पुष्प-मालाएँ चढ़ाते थे।[४] निदान कथा के अनुसार सुजाता ने बरगद वृक्ष से मिन्नत मानी थी "यदि पुत्र लाभ करूँगी, तो प्रति वर्ष एक लाख के खर्च से तेरी पूजा करूँगी।"[५] इसी प्रकार से हत्थिपाल जातक के अनुसार निग्रोध-वृक्ष को राजा की ओर से प्रति वर्ष हजार (मुद्राओं) को अर्पित कर बलि दी जाती थी।[६] कभी-कभी उन्हें नर-बलि और पशु-बलि भी दी जाती थी। धोनसाख जातक के अनुसार पुरोहित ने राजा से कहा "हजार नरेशों की आँखें निकालकर उन्हें मारकर, मधुर मांस द्वारा वट वृक्ष पर रहने वाले देवता की बलि दें तो अवश्य ही हमारी जीत होगी।[७] दुम्मेध जातक से भी ज्ञात होता है कि वाराणसी-निवासी वृक्ष देवताओं के भक्त थे। वे वृक्ष देवताओं को नमस्कार करते थे और बहुत सी भेंड़-बकरी, मुर्गे, सुअर आदि को मारकर नाना प्रकार के पुष्प गन्धों तथा रक्त मांस के साथ बलि चढ़ाते थे।[८] महासुतसोम जातक के अनुसार एक मनुष्य भक्षक ने वृक्ष देवता से प्रार्थना की "यदि सप्ताह के भीतर मेरा जख्म ठीक हो जायेगा तो सारे जम्बूद्वीप के एक सौ क्षत्रियों की गरदन के खून से तेरा तना धोकर,

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५४
२. राइज डेविडस बुद्धिष्ट इण्डिया पृ० २२६-२२७; जा० अ० रो० जि० ३; पृ० २३; जि० ४, पृ० १५४
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५३, २१०, ३५३; जि० ३, पृ० २३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५४, ४०८-४०९, ५६०; जि० ३, पृ० १९३
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १६९, २५९-२६१; जि० ३, पृ० २३; जि० ४, पृ० १५३
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३९
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४७४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ६४-६५
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५९-१६०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२२-३२३
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उनकी आँतें चारों ओर लपेटकर पांच प्रकार के मधुर मांस से बलि-कर्म करूँगा।"[१]

इन समस्त सेवाओं के बदले में वे उनसे पुत्र, धन-धान्य एवं कीर्ति की कामना करते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि वृक्षों की आत्मा, मनुष्य और जानवरों के रक्त और मांस से सींची जाती थी।[२] इस समय भी पीपल, बरगद, नीम आदि वृक्ष विभिन्न देवों और देवियों से सम्बद्ध माने जाते हैं।

नदी पूजा :

जातक साहित्य से नदी पूजा पर भी प्रकाश पड़ता है। विशेष रूप से गंगा नदी का उल्लेख हुआ है। मच्छुद्दान जातक के अनुसार बोधि सत्त्व ने बचा हुआ भात गंगा में मछलियों को देकर, नदी देवता को (पुण्य का) हिस्सा दिया था।[३] तथा नदी देवता ने स्वयं बोधिसत्व से कहा मैं गंगा देवता हूँ।[४] किच्छन्द जातक के अनुसार नदी देवी ने तपस्वी को पका आम दिया था।[५] भूरिदत्त जातक में "पानी देवता" का उल्लेख हुआ है।[६] सुधा भोजन जातक में नदियों में बहुका तथा गया तिम्बरु तीर्थ के लिए प्रसिद्ध थी।[७] महावेस्सन्तर जातक में सुतीर्थ वाली नदी को नमस्कार करने का उल्लेख हुआ है।[८]

पर्वत पूजा :

पर्वत पूजा का भी प्रचलन था, जिस प्रकार वर्तमान युग में लोग गोवर्धन पूजा को मानते हैं। महावेस्सत्तर जातक के अनुसार एक राजा ने अपने पुत्रों को ब्राह्मण के लिए दान दिये जाने पर हिमवन्तवासी देवताओं का हृदय पिघल गया था।[९] नारद पर्वतों (वासी देवताओं) के अधिवासी देवता ने भी उसके दान का

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४७२, ४७४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५४९, ५५०, ५५१
२. मेहता, रतीलाल, प्री० बु० इ०, पृ० ३२६
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४२३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १४३
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४२५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १४५
५. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ९१
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४५
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४७२
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५५५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६११
९. वही

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनुमोदन किया था।[1] महापदुम जातक के अनुसार राजा ने पद्म कुमार को प्रपात से गिरवा दिया था जिसकी रक्षा पर्वत पर रहने वाली देवी ने की थी और उसे अपने साथ पर्वत स्थित नाग भवन में नागराजा के पास ले गयी थी।[2]

दिशा पूजा :

जातकों में दस-दिशाओं का उल्लेख है। जिनकी पूजा की जाती थी। तेल-पत्त जातक में दिशा की प्रार्थना का वर्णन मिलता है।[3] निदान कथा में भी दस-दिशाओं का महत्व बतलाया गया है।[4] सेतुकेतु जातक में बताया गया है कि गृहस्थ को चाहिए कि प्रमाद रहित होकर इन दिशाओं को नमस्कार करे।" सिगालोवाद सुत्त में श्रेष्ठि पुत्र सिगाल को प्रातःकाल ही स्नान कर गीले वस्त्र पहने हुए पाते हैं।[5] जिसे भगवान बुद्ध ने ज्ञान का उपदेश देकर उसका अन्धविश्वास दूर किया था। भगवान ने कहा था "हे गृहपति इन छः दिशाओं को इस प्रकार जानना चाहिए। माता और पिता को पूर्व दिशा, आचार्य को दक्षिण दिशा, स्त्री पुत्री को पश्चिम दिशा, मित्रों को उत्तर दिशा, दास और सेवकों को अधो दिशा और श्रमण-ब्राह्मणों को ऊपर दिशा जाननी चाहिए।[6]

इस प्रकार जातक युग में भी पहले से समाज में व्याप्त अनेक धार्मिक अन्ध-विश्वास और क्रियायें प्रचलित थीं। लोग वरदान पाने के लिए तथा कल्याण चाहने के लिए वृक्ष, पर्वत, नदी, यक्ष, नाग, किन्नर आदि की पूजा-अर्चना करते और बलि देते थे। महामानव बुद्ध ने इन अन्ध विश्वासों के प्रति शिक्षा देकर कहा कि ये क्रियाएँ कल्याण की ओर ले जाने वाली नहीं हैं इसलिए इनको करना व्यर्थ ही है। सम्राट अशोक ने भी अपने नवें शिलालेख में इन कर्मों को

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५६८, ५७१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६२५, ६२९

२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १९३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९२

३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६५; जि० ३, पृ० ३९४

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९-२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७९

५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९४

६. दी० नि० पा० जि ३, पृ० १३९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षुद्र फल देने वाले बताया है। दास सेवकों के प्रति अच्छा व्यवहार, गुरुजनों का आदर सत्कार श्रमण बौद्ध तथा जैन भिक्षुओं तथा ब्राह्मण सजातियों को दान देना, माता-पिता, पुत्र भाई आदि स्वजनों का समुचित पालन-पोषण उत्तम मंगलकारी है। इस प्रकार बौद्ध धर्म ने मनुष्यों को अन्ध विश्वासों को करके उसे करुणा और मैत्री और बन्धु भाव से मानव मात्र के सन्निकट ला दिया।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सप्तम अध्याय

आर्थिक जीवन

अर्थ और उसका महत्त्व :

पृथिवी सम्पूर्ण संसार का जीवनाधार है (इयं मही सर्व जगत्प्रतिष्ठा) और समान रूप से पूर्ण चराचर जगत पर अपनी सम्पदाओं और शक्तियों से अनुग्रह करती रहती है (अपक्षपाता सचराचरे समा)।[1] महापृथिवी[2], वृक्षों[3] और पर्वतों[4] से सुशोभित है। महासागरों[5], बहुक्षेत्र[6] तथा रत्नकोशों[7] से यह प्रभूत धन-धान्य कोष कोष्ठागार[8] (कोट्ठागारानि) ही बनी रही जिसमें प्रभूत हिरण्य, सुवर्ण[9], मणि, मुक्ता, वैदूर्य, शंख[10], शिला, प्रवाल-रजत, जातरूप, लौह, जस्ता, शीशा, विल्लौर[11], रत्न, मूँगा, ताँबा, काँसा, हरित वर्ण चन्दन, अजिन-चर्म,

---

१. लेफमैन ललित, ३१८/८; डॉ० अँगने लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १९३
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६, ४७-४८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६, ११३-१४, १३३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८, ३०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७८, ९२
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८-१९, ३०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ७८, ९२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११९
६. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० १९३
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २२३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३१०-११
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २६७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २९; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड १, पृ० १५६/६
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४१
१०. ,, ,, १, पृ० २८४, ,, ,, १, पृ० ४१४-४१५
११. ,, ,, २, पृ० २९४-९५; ,, ,, ३, पृ० २४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हाथी दाँत[१], गन्ध, धूप, चूर्ण, कपूर, पुष्प[२] तथा हस्ति[३], अश्व[४], ऊँट[५], गाय[६] आदि से परिपूर्ण है। इसीलिए इसे मही[७], पृथ्वी[८] तथा महापृथिवी[९] भी इसी के नाम हैं। इसे वसुन्धरा[१०] भी कहा गया है।

गरुड़ पुराण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में अर्थ के स्वरूप और महत्व तथा अर्थशास्त्र और धन विद्या का अध्ययन होता था। लौकिक जीवन में धर्म, अर्थ और काम (त्रिवर्ग) ही को मुख्य लक्ष्य माना गया था। त्रिवर्ग प्राप्ति का मुख्य साधन अर्थ ही है।[११]

अतः स्पष्ट है कि अर्थ की प्रयोजनता और उपयोगिता के कारण ही इसका यह नाम पड़ा। जीवन में अर्थ का महत्त्व होने से ही अर्थ का शास्त्रीय विवेचन हुआ तथा अर्थशास्त्र की प्रतिष्ठा हुई।[१२]

भारतीय आर्थिक जीवन कृषि[१३], पशुपालन[१४] और व्यापार[१५] (वाणिज्य) शिल्प और उद्योगों पर ही आधारित था। यद्यपि कौटिल्य ने कृषि, पशुपालन एवं वाणिज्य को ही प्रधानता दी है (कृषि पशुपाल्यै वाणिज्यं च वार्त्ता)।[१६] पशु-

---

१. जा० अ०रो० जि० १, पृ० ३२०-२१; जा०अ०हि० जि० १, पृ० ४६१-६२
२. ,, ,, १, पृ० २९०-९१; ,, ,, १, पृ० ४२३
३. ,, ,, १, पृ० ३१९-३२०; ,, ,, १, पृ० ४६०-६२
४. ,, ,, २, पृ० २८७-२९०; ,, ,, ३, पृ० १६-२०
५. ,, ,, ६, पृ० ४८; ,, ,, ६, पृ० ६०-६१
६. ,, ,, १, पृ० ३८८; ,, ,, १ पृ० ५४८
७. ,, ,, ५, पृ० ४२५; ,, ,, ५, पृ० ५०८
८. ,, ,, १, पृ० १९; ,, ,, १, पृ० ७९
९. ,, ,, १, पृ० २६, ६३; ,, ,, १, पृ० ८६, १३३
१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२५; जि० ६, पृ० ३७२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०८; जि० ६, पृ० ४१८
११. डॉ० ए० बी० एल० अवस्थी, गरुड़ पुराण (एक अध्ययन) पृ० १५३
१२. वही, पृ० १५४
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२६
१४. ,, ,, १, पृ० ३८८; ,, ,, १, पृ० ५४८
१५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७, २९५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२; जि० ३, पृ० १९०
१६. कौटिल्य अर्थशास्त्र, जि० १, अध्याय ४, प्रकरण पृ० ३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पालकों को ग्वाला (गोपालक)[१] कहा जाता था। जातक साहित्य के अध्ययन से कृषि-कर्म, पशुधन और व्यापारिक जीवन का ज्ञान तो होता ही है साथ ही उद्योग-धन्धों, यातायात तथा शिल्प श्रेणियों का भी विस्तार से वर्णन मिलता है। भूमि और द्रव्य के मान-मापों का भी उल्लेख मिलता है। जातक युग में देश धन-धान्य पूर्ण था। प्रजा सुखी थी। आर्थिक स्थिति समृद्ध थी।

उस युग में अस्सी करोड़ सम्पत्ति वाले सेठों का भी उल्लेख मिलता है।[२] श्रावस्ती के प्रसिद्ध व्यापारी अनाथपिण्डिक ने जेतवन विहार के निर्माण के लिए अट्ठारह करोड़ अशर्फी (सुवर्ण) व्यय की थी।[3] बब्बु जातक में कहा गया है कि काशी के एक सेठ का गाड़ा हुआ धन चालीस करोड़ के स्वर्ण मूल्य का था।[४] असम्पदान जातक में मगध के संख नामक सेठ के पास अट्ठारह करोड़ धन था और इतनी ही सम्पत्ति उसके मित्र वाराणसी के सेठ के पास थी[५]। इल्लीस जातक के अनुसार कोसिय नाम का एक कंजूस सेठ अस्सी करोड़ की सम्पत्ति का स्वामी था।[६]

इस प्रकार हम देखते हैं कि जातकों में अस्सी करोड़ सम्पत्ति वाले सेठों का बहुधा उल्लेख हुआ है "असीति-कोटि विभवो सेट्ठि।"[७] बड़े-बड़े सेठ (सेट्ठि)[८] और वणिक्[९] (वाणिज्य) ही नहीं, अन्य लोगों की भी प्रभूत सम्पत्ति का वर्णन मिलता है। निदान कथा में उरुवेला के सेनानी निगम की तरुणी सुजाता ने

---

१ जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४८

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५०; जि० ३, पृ० ४२८, ४४४, ४९७; जि० ४, पृ० १, ७, २३, २३७, २५५, ३०५-३७०, ४८४; जि० ५, पृ० ३८२; जा० अ०हि० जि० १, पृ० ४९९; जि० ४, पृ० ८७, १०४, १५७, २०३, २०८, २२२, ४३८, ४५८, ५०९, ५७८; जि० ५, पृ० ७३, ४६६

३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६९

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४७८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ११८

५. ,, ,, १, पृ० ४६६; ,, ,, २, पृ० १०१

६. ,, ,, १, पृ० ३४५; ,, ,, १, पृ० ४९२

७. ,, ,, ४, पृ० १; ,, ,, ४, पृ० २०३

८. ,, ,, १, पृ० १२०, २६९-७०; जि० ४, पृ० १; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०२, ३९५-९६; जि० ४, पृ० २०३

९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३५; जि० ५, पृ० १५६, ४२५; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० १६/१५, १२६/१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बरगद के पेड़ के देवता से यह मिन्नत मानी थी कि यदि प्रथम गर्भ में वह पुत्र प्रसव करेगी तो प्रति वर्ष एक लाख के व्यय से उसकी पूजा करेगी।[1]

धनी ब्राह्मणों के उल्लेख हैं जिन्हें 'असीति-कोटि-धन-विभवा' अर्थात् अस्सी करोड़ धन-वैभव वाले कहा गया है।[2]

खेती विशेष रूप से होती थी।[3] धनधान्यपूर्ण, समृद्ध और स्फीत नगरों के वर्णन भी मिलते हैं।[4] श्रावस्ती में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं थी जो मिल न सकती हो।[5] वाराणसी कला-कौशल और धन-वैभव अनुपम था।[6] मिथिला के चार महाद्वारों के बाहर प्राचीन यवमज्झक, दक्षिण यवमज्झक और उत्तर यवमज्झक आदि चार निगम थे।[7]

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जातक युग में लोग अर्थ के महत्व को जानते थे और उसे जीवन प्रगति का साधन मानते थे।

कृषि-कार्य

भारतवर्ष प्रारम्भ से ही कृषि प्रधान देश रहा है। वन-भूमि को साफ कर खेत तैयार किये जाते थे।[8] अधिकांश लोग खेती करते थे। साधारणतः ग्रामों की जनसंख्या में कृषि-कर्म करने वाले लोग अधिक थे। कृषि-भूमि को क्षेत्र अथवा खेत कहते थे। इस भूमि पर लोगों का व्यक्तिगत अधिकार होता था।[9] खेती करने वाले लोगों को "कृषक"[10] कहा जाता था। ये प्रायः स्वतंत्र व्यक्ति होते थे और उनकी सहायता के लिए दास होते थे।[11] खेतों की रखवाली

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४९, ४६६; जि० २, पृ० २७२; जि० ४, पृ० १५, २२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९६; जि० २, पृ० १०१, जि० ३, पृ० २; जि० ४, पृ० २१५, २२१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५४, जा० अ० हि० जि० १, पृ० २४८
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५-६७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७-२९
५. बु० का० भा० भू०, पृ० ५२२
६. वही, पृ० ५२२
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३०-३१; ६०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७१
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १६७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३६७
९. ,, ,, २, पृ० १६२; ,, ,, ३, पृ० ३२५
१०. ,, ,, १, पृ० २७७; ,, ,, १, पृ० ४०६
११. ,, ,, १, पृ० २७७; जि० ३, पृ० १६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करने के लिए जो आदमी नियुक्त किये जाते थे उन्हें 'खेत्तरक्खका'[1] या 'खेत्तगोपका'[2] कहा जाता था। उन्हें मजदूरी प्रायः अनाज के रूप में दी जाती थी।[3] इस युग में ब्राह्मण कृषि-कर्म करने लगे थे।[4] उन्हें कस्सक ब्राह्मण कहा गया है।[5] कस्सक ब्राह्मण के पास लगभग १००० 'करीस'[6] भूमि तक होती थी और वे अपने दासों की सहायता से उसका प्रबन्ध किया करते थे।[7]

खेती की भूमि प्रायः कृषकों के बीच बटी रहती थी और खेतों की सीमा प्रकट करते के हेतु पत्थर लगे रहते थे।[8] कृषि-भूमि की सीमा से ही वन-भूमि मिली रहती थी जिसे साफ करके खेत बनाये जाते थे और खेती की जाती थी। "सव्वं वनं छिन्दित्वा खेत्ताणि कारित्वा कसिकम्मं करन्तु।"[9]

यद्यपि सिंचाई की व्यवस्था थी, परन्तु अधिकांश किसान वर्षा पर ही निर्भर रहते थे। सींचने के लिए चरसा और लकड़ी के बर्तन प्रयोग किये जाते थे।[10] तालाब और पुष्करिणियों से भी सिंचाई होती थी।[11] कुओं का भी प्रयोग होता था।[12] शाक्य और कौलिय एक बाँध-बाँध कर नहरें निकाल कर सिंचाई करते थे।[13] वर्षा के अभाव में सूखा पड़ जाता था जिससे फसल सूख जाती थी।[14]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ११०; जि० ३, पृ० १६३; जि० ६, पृ० ३३६
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५२; जि० ४, पृ० २७७
३. ,, ,, ३, पृ० ४४६; जि० ५, पृ० २१२
४. ,, ,, २, पृ० १६५; जि० ३, पृ० १६२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३५६-५७; जि० ३, पृ० ३२५
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९३; जि० ४, पृ० २७६
६. एक नाप लगभग चार अम्मण (चाइल्डस—पाली डिक्सनरी)
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९३, जि० ४, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४४; जि० ४, पृ० ४७९-८०
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४८४
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३५८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७२
११. ,, ,, १, पृ० ३२९; ,, ,, १, पृ० ४७२
१२. ,, ,, १, पृ० ९९; ,, ,, १, पृ० १७६
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२७; जि० ५, पृ० ४१२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६९; जि० ५, पृ० ४९७
१४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातकों में दुर्भिक्ष उद्धरणों का उल्लेख कई बार हुआ है।[१] अनावृष्टि अथवा अतिवृष्टि के कारण दुर्भिक्ष की संभावना रहती थी। सिंचाई के साधनों के होते हुए भी दुर्भिक्षों की भयंकरता दूर नहीं हो पाती थी। दुर्भिक्ष के कारण अन्न के अभाव में जीवनयापन में असमर्थ लोग डाका डालने लगते थे।[२]

कृषि हल और बैलों की सहायता से की जाती थी।[3] शाक्य लोग तो बोने का उत्सव (वप्पमंगल) भी मनाते थे, जिसमें एक हजार हल साथ-साथ चलाये जाते थे और अमात्यों के सहित राजा भी स्वयं हल चलाता था।[४] यह हल रत्न-स्वर्ण जटित सुनहले, रूपहले भी होते थे।[५] यह महापर्व इस बात का द्योतक है कि कृषि-कर्म उस समय अत्यन्त गौरवमय कार्य समझा जाता था और जनता के समान राजा भी उसमें भाग लेना अपना कर्त्तव्य समझता था।[६]

कृषि कार्यों में कुदाली तथा फावड़े आदि का प्रयोग किया जाता था[७] तथा समय पर बीज बो दिया जाता था (वपन्ति बीजानि)।[८] हल से जोतकर मिट्टी को मुलायम करके उचित गोड़ाई की जाती थी।[९] मेढ़ बाँधी जाती थी।[१०]

जातकों में पूर्व अन्न और अपरअन्न का उल्लेख मिलता है। पूर्व अन्न (आषाणी, श्रावणी) बोया जाता था तथा उसमें निराई करते, काटते, दलाई

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२९, ४५०; जि० २, पृ० १३५, १४९, ३०७; जि० ५, पृ० १८३, ४०१; जि० ६, पृ० ४८७
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५२५
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०२; जि० २, पृ० ५९, १६५, ३००; जि० ५, पृ० ६८
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५७-५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२६
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२६
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५७-५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१२-१३; जि० ५, पृ० ६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५१; जि० ५, पृ० १५५
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३५; जि० ४, पृ० १६७; जि० ५, पृ० ४०१
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१५, २७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२८, ४०६
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१५; जि० ४, पृ० १६७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२८; जि० ४, पृ० ३६७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करते एवं बुबाई करते थे।[१] जातकों में तीन प्रकार की खेती का उल्लेख हुआ है।[२]

खड़ी फसल को हिरन आदि नष्ट न करें, इसके लिए किसान फसल की सुरक्षा का भी प्रबन्ध करते थे।[३] खेतों में बाड बाँधने के अलावा खेत में पत्तों की झण्डी (धोखा) बांधते थे।[४] इस समय भी यह प्रथा प्रचलित है।

फसल पकने पर, काटकर, खलिहान (खलमण्डल) में रख दिया जाता था।[५] अन्न और भूसा अलग कर लिया जाता था। तत्पश्चात् अनाज को घर लाकर कोठों (कोट्ठा) या धान्यागार (धञ्ञागारा) में भर लिया जाता था।[६]

उपज :

ईख—मगध में ईख[७] की खेती काफी बड़े पैमाने पर होती थी। ईख से गुड़ और शक्कर बनायी जाती थी। जिसके लिए यन्त्रों का (उच्छयन्ते) प्रयोग होता था।[८]

कपास :

कपास की भी खेती की जाती थी। कपास के लिए वाराणसी के आस-पास का भू-भाग प्रसिद्ध था। कपास की रखवाली करने वाली (कप्पासरक्खिका) स्त्रियाँ भी होती थीं।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८४
२. ,, ,, १, पृ० ३४०; ,, ,, १, पृ० ४८५
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३४-३५
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २४६
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१५; जि० २, पृ० ३४१; जि० ६, पृ० ५३०, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२८
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३५; जि० ६, पृ० २९७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३२१, जि० ६, पृ० ३३६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४८; जि० २, पृ० २४०; जि० ४, पृ० १६०-६१; जि० ६, पृ० ५३९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७९, ४४६; जि० ४, पृ० ३६१; जि० ६, पृ० ५९३
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८४
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८६-८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्न :

कृषि में उत्पन्न होने वाले अन्नों में धान उल्लेखनीय है। जिसके लिए भी मगध देश का विशेष रूप से उल्लेख हुआ है।[१] उसके विभिन्न प्रकार जैसे शालि[२], वोहि[३] (व्रीहि) नीवार[४] आदि विशेष रूप से उगाये जाते थे। धान के अतिरिक्त यव (जौ)[५], कंगु (बाजरा)[६], गोधूम, गेहूँ, चना, मटर,[७] मूँग (मुदग), उरद[८] (मास) आदि अनाजों की भी खेती होती थी।

उक्त अन्नों के साथ-साथ मसाले भी उत्पन्न किये जाते थे, जिनमें मिर्च (मरिच), गीली और सूखी अदरख (अद्धसिनिवेर), राई (सिद्धट्ठक), लहसुन (नादिय) उगाया जाता था।[९] पान (तम्बुल) और सुपारी (पूग) का भी प्रचार था। एरण्ड, सरसों (संर्षय) तिल[१०], मूँग[११], सन[१२] उत्पन्न किये जाते थे।

शाक-तरकारियों का भी उत्पादन होता था।[१३] लौकी-कद्दू (लालुकुम्मण्डादीन) कन्दमूल (कलम्बानि), आलू (आलु), विलाली (विलालि)[१४] तथा

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४३, १५४; जि० ४, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३४, २४८; जि० ४, पृ० ४७९

२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २७६; जि० ६, पृ० ५३९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४७९; जि० ६, पृ० ५९३

३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३५

४. ,, ,, ६, पृ० ५३९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५९३

५. ,, ,, २, पृ० १०९-१०, १७४; जि० ३, पृ० ११६; जि० ६, पृ० ३६८, ३७२

६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४१

७. ,, ,, २, पृ० ७४-७५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५०-५१

८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४२९, ४८४; जि० २, पृ० ७४; जि० ५, पृ० ३७; जि० ६, पृ० ३५५, ५८०

९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४४; जि० २, पृ० ३६३; जि० ३, पृ० २२५; जि० ५, पृ० १२; जि० ६, पृ० ५३६

१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७८; जि० ३, पृ० ५२, ५३८; जि० ६, पृ० ५३९

११. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१३

१२. ,, ,, ३, पृ० ३९४; ,, ,, ४, पृ० ५५

१३. ,, ,, १, पृ० ३१२; जि० ४, पृ० ४४५; जि० ५, पृ० ३७

१४. ,, ,, ४, पृ० ३७१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५८०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तक्कल (तक्कलानि) विशेष थे।

फल :

फलों की भी जानकारी लोगों को थी। बहुत से फल वन्य थे जो स्वतः उगते थे और बहुतों की खेती की जाती थी। ये फल औषधियों के उपयोग में भी आते थे।

वाराणसी का एक माली मधुर आमों को कड़ुवा करने की कला जानता था।[१] फलों में आम (अम्बा), कैथा (कपित्थ) कटहल (पनसा), शाल (साला), जामुन (अम्बु), बहेड़ा (विभीतका), हरें (हरीतिका) आँवला[२] (आमलका) पीपल (अस्सत्था), खैर (खदरानि), बरगद के फल (निग्रोधा), महुआ (मधु-मधुका), गूलर (उदुम्बरा), नारियल (नालिकेरा)[३], खजूर (खज्जुरीन), सिघाड़े (सिंघाटिका)[४] चिरौंजी (पियालानि)[५] बेर (बदरा)[६], केला (कदली)[७], अंगूर[८] आदि फलों का उल्लेख जातकों में हुआ है।[९] इसके अतिरिक्त स्वर्ण वर्ण हल्दी (सुवण्णहालिदिं)[१०] पाण्डुवर्ण वेल (पण्डुबेलुव)[११] का भी वर्णन जातकों में मिलता है।

फूल :

फूल के भी पौधे लगाये जाते थे। कुटजी, कुट्ठ (कुटठ), तगरी, पाटलि, पुन्नाग (पुन्नागा), गिरि-पुन्नाग (गिरिपुन्नागा), कोविलार (कोविलारा),

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १०५-१०६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २८५-८६
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ९९
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३५४, ४१७; जि० ६, पृ० ५२९, जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०३-५०४; जि० ६, पृ० ५८१
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५२९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५८१
५. ,, ,, ६, पृ० ५३२; ,, ,, ६, पृ० ५८४
६. ,, ,, ३, पृ० २१; ,, ,, ३, पृ० १९१
७. ,, ,, ५, पृ० ६८; ,, ,, ५, पृ० १५५
८. ,, ,, ६, पृ० ५२९; ,, ,, ६, पृ० ५८१
९. ,, ,, ६, पृ० ५२८, ५३६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५७९-८९
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २४४; जि० ६, पृ० ५६३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४४७; जि० ६, पृ० ६२०
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५६३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६२०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्दालक (उद्दालका), सोम-वृक्ष (सोमरुक्खा), अगरु, भल्लिय (भल्लियो) पुत्रजीव (पुत्तजीवा), ककुध (ककुधा), असन (असनाचेत्थ), कुटज (कुटजा), सलल (सलला), नीय (नीया), कोसम्ब, लबुज (लबुजा), धव (धवा), शाल (साला)[1], अंकोश (अकोला), कच्चिकार (कच्चिकारा), पारिजन्घ (पारिजन्घा), वारणसायक (वारणसायना), सिरीस (सिरीसा), श्वेत-पारिस (संतपारीसा), पह्लक (पह्लका), निग्गुण्डी सिरिनिग्गुण्डो, असन (असनाचेत्थ), पङ्गर (पंगुरा), वकुल (वकुला), सोमञ्जन (सोम जना), केतक (केतका), कणिकार (कणिकारा), कणवेर (कणवेरा) अर्जुन (अञ्जुना), अर्जुन-कर्ण (अञ्जुकण्णा), महानाम (महानामा), किंसुक (किंसुका), श्वेतपर्णी (सेतपर्ण्णी), सप्तपर्णी (सत्तपण्णा), कदली (कदलीपो), कुसुम्भर (कुसुम्भरा), धनुतक्कारी, सरसों, अच्छिव (अच्छिवा), सबल (सबला), सल्लकी (सल्लकियो), श्वेतगेरू (सेतगेरूच), तगर (तगरा), मांसि, कुट्ठ (कुट्ठा), कुलावर (कुलावरा), मूंग, मांस, शैवाल, लाल चन्दन, हिङ्गुजालक (हिंगुजालका), एलम्बक लताएँ, इन्दीवर (इन्दीवरेहि), नीलपुष्पी, (नीलपुप्फि) श्वेतवारी (सेतवारी), गिरिकर्णिका (गिरिकण्णिका), कटेरुक (कटेरुनेहि), तुलसी (तुलसीहि) आदि विशेष थे। इन्दीवर (इन्दीवरा), अप्फोट (अप्फोटा) सुरियवल्ली (सुरियवल्लीय), कालिपा मधुगन्धिया, अशोक (असोका), मुदयन्ती, वल्लिमो, खुदपुप्फियो (खुद्दपुप्फियो), कोरण्डक (कोरण्डका), अनोज लतायें, किंसुक (किंसुकवल्लियो), कटेरुह (कटेरुहा), वासन्ती (वायन्ती), जूही (यूथिका), नीलिया सुमना लता, मण्डी, पदमुत्तर पदुमत्तरो, पाटली, समुद्र कप्पासी (समुद्दकप्पासी), कर्णिकार (कणिकारा)[2] आदि।

इस प्रकार जातक युग में कृषि-कार्य भी उन्नत दशा में था। खेतों का सीमांकन किया जाता था। खेत जोतकर मिट्टी को भुरभुरी करके सुखमय पर बीज बोया जाता था। नाना प्रकार के अन्न ही नहीं अपितु सब्जियाँ फल-फूल भी पैदा किये जाते थे।

पशु-पालन

जातक युग में पशुओं का विशेष महत्त्व था। पशुपालन आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना जाता था। गाँवों में निश्चित भूमि गोचर-भूमि के रूप में

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५२९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५८१
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५३५-३६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५८७-८८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अलग छोड़ दी जाती थी जिस पर उस गाँव के सब पशु चरते थे।[1] प्रतिदिन गोप या गोपालक[2] (ग्वाला) आकर प्रत्येक घर के पशुओं को ले जाता था और चारागाह में दिन भर उन्हें चराने के बाद फिर वापस घरों में पहुँचा जाता था।[3] गोपालक गौओं को लेकर घने जंगलों में चराने के लिए जाते थे। वहाँ वे गोपाल्लिक[4] (मचान) बनाकर गौओं की रखवाली करते थे और समय-समय पर सेठ के लिए दूध-घी आदि पहुँचा देते थे।[5]

गोपालों के समान अजपाल[6] भी होते थे जो बकरियों[7] और भेड़ों को चराते थे और उनकी ऊन को इकट्ठा करते थे जिससे ऊन सम्बन्धी शिल्पगृह चलाये जाते थे और बहुमूल्य कम्बल[8] आदि बनाये जाते थे। गायों के अतिरिक्त दूध के लिए भैंस भी पाली जाती थी।[9]

बैलों को बैलगाड़ी (शकट) के काम में लाते थे। सैन्धव घोड़े (अश्व) युद्ध में काम आते थे।[10]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३००
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८८, ३६०, ३८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२१, ५१०, ५४८
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८८; जि० ३, पृ० १४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४८-५४९; जि० ३, पृ० ३१३
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९४, ३८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३००, ५४८
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २५०, ४७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५२; जि० ५, पृ० ६६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४०; जि० ३, पृ० ४०१, जि० ४, पृ० ३६४, ४५२, ४७६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५९; जि० ४, पृ० ६१, ५७३; जि० ५, पृ० ६६
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३८
९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५७३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७८-७९, १८१; जा० अ० हि० जि० १ पृ० २७९-८०, २८२-८३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हाथी दाँतों के लिए प्रसिद्ध थे, उनका बाजार भी होता था।[१] राजपुरुष हाथियों पर बैठकर नगर निरीक्षण करते थे।[२] ये सवारी के काम में तथा नदी पार करने के काम में लाये जाते थे। संग्राम भूमि में सेना के काम आते थे[३], इनके द्वारा चोरों को रौंदवाया भी जाता था।[४]

पशु-चर्म भी आर्थिक और औद्योगिक दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी था। इसके लिए सिंह तथा चीते को भी मार दिया जाता था। विस्सास-भोजन जातक में सेठ ने गोपालक को, सिंह का चमड़ा, नाखून, दाढ़े और चर्बी लाने के लिए कहा था।[५] भीमसेन जातक में भी राजा ने व्याघ्र और भैंसे को पकड़ने के लिए कहा था।[६]

औषधियों के लिए बन्दर, कौआ आदि पक्षी मारे भी जाते थे।[७] मांस के प्रयोग के लिए मृग मारे जाते थे[८] कुत्ते (कुक्कुर) पाले जाते थे।[९] शिकार के लिए भी उन्हें प्रयोग किया जाता था। भेड़ें युद्ध के लिए पाले जाते थे इनकी युद्ध प्रतियोगिता बड़ी मनोरंजक होती थी।[१०] ऊँट[११], गधे[१२] और खच्चर[१३] एक

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६१-६२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५८-५९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०८-५०९
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०८
५. ,, ,, १, पृ० ३८८; ,, ,, १, पृ० ५४९
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५७-५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०७-५०८
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १२७
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४३-४४, १५०, १५४, १५८, १६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३४-३५, २४३, २४८, २५२, २५५
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७५
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ८२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २४९
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६०-६१
१२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७७; जि० ४, पृ० ८२; जि० ६, पृ० ३४३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३६, २८४; जि० ६, पृ० ३८८
१३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६६, ३४३, ५७५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३०४, ३८८, ६३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थान से दूसरे स्थान सामान ले जाने के लिए पाले जाते थे। तुलिये (बिल्लें), बन्दर, खरगोश आदि भी पाले जाते थे।[१] मुर्गा (कुक्कुट) भी पाला जाता था जो लोगों का प्रतिदिन प्रातःकाल बाग देकर जगाता था।[२] ये युद्ध प्रदर्शन के लिए भी पाले जाते थे। सुग्गा[3], पालतू सफेद मुर्गा[४], बन्दर[५], तीतर[६], कबूतर[७], सुअर[८], पाले जाते थे। संदेश से जाने के लिए कोशल राज ने एक क्रौंच (कूंज) पाला था।[९] गीधों को फँसाने के लिए निषाद जाल फैलाते थे।[१०] शिकारी बटेरों के लिए जाल फेंकते थे और उसे बेचकर जीविका चलाते थे।[११] मधुर बोली वाले पक्षी, ककुत्थक, मुर्गे, कोठ, पोक्खर, सातक, काळामेय्य, बलीयक्ष, तोते, मैना, कोयल, कुररी, कुररा, चम्मच-चोचे, परिवदन्तिका, पाकहंस, अति-वल (पक्षी), मज्जुहा, जीव-जीवक, कबूतर, रवि-हंस, नदीचर, चक्रवाक, सुन्दर स्वर वाले वारण (पक्षी)[१२] चकवे-चकवी, चक्रवाक[१३], कुलङ्क-पक्षी[१४]; कठफोड़ पक्षी[१५], कुभीलक[१६] आदि पक्षी आवाज सुनने के लिए पालते थे।

वेलुक जातक में एक तपस्वी ने एक विषैले सर्प को भी पाला था।[१७]

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५७३-७४
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ६४
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६३
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४१०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १३०
५. ,, ,, २, पृ० १८४; ,, ,, २, पृ० ३८०
६. ,, ,, ३, पृ० ६४; ,, ,, ३, पृ० २३२
७. ,, ,, १, पृ० २४२; ,, ,, १, पृ० ३६१
८. ,, ,, १, पृ० १९७-९८: जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०४-३०५
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १३४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २९९
१०. ,, ,, ३, पृ० ३३०; ,, ,, ३, पृ० ४७८
११. ,, ,, १, पृ० २०८; ,, ,, १, पृ० ३१८
१२. ,, ,, ६, पृ० ५३९-५४०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५९२-५९३
१३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७१-७२
१४. ,, ,, ३, पृ० ४८८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १३६
१५. ,, ,, २, पृ० ३८८; ,, ,, ३, पृ० १०८
१६. ,, ,, ४, पृ० ३४७; ,, ,, ४, पृ० ५५४
१७. ,, ,, १, पृ० २४५; ,, ,, १, पृ० ३६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अतः पशुपालन आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य था, जिससे लोगों की जीविकाएँ चलती थीं। उपर्युक्त लिखे हुए पशु समाज और राष्ट्र जीवन की समृद्धि के परिचायक हैं।

पशु-पाल, गोपाल[१] (ग्वाला), तिणहारका, अश्वपाल[२], हथवानों[३] (हत्थिगोपकों) को श्रेणियों से पशु-पालन की उन्नत दशा का उल्लेख मिलता है।

ललितविस्तर से भी पता चलता है कि अश्वलक्षण, हस्थिलक्षण, गोलक्षण, अजलक्षण, मिश्रलक्षण[४] आदि का अध्ययन-अध्यापन भी होता था। इससे सिद्ध होता है कि पशु-पालन जातक युग में उन्नत दशा में था।

शिल्पी एवं उनके संघ

जातक युग में विभिन्न उद्योग-धन्धों के अनुसरण करने वाले व्यक्ति विभिन्न श्रेणियों में संगठित थे। भिन्न-भिन्न शिल्पों को करने वाले लोगों के संघ जातक युग में बने हुए थे जो 'सेणियो' (श्रेणियः) या 'पूग' कहलाते थे।[५] जातकों में बढ़ई, लोहार, चमार, चित्रकार आदि १८ प्रकार के शिल्पकारों के संघ (अट्ठारस सेणियों) विद्यमान थे।[६] राईस डेविड्स ने बुद्धकालीन शिल्पों का १८ भागों में वर्गीकरण किया है और कहा है कि इनमें से प्रायः प्रत्येक के संघ या 'सेणियो' थे, जिसे अनुमानाश्रित ही कहा जा सकता है।[७]

'श्रेणी' वह विशिष्ट शब्द है जो शिल्पियों के संगठन का परिचायक है।[८] प्राचीन साहित्य-बौद्ध तथा ब्राह्मण और प्राचीन अभिलेखों में श्रेणियों के प्रायः उल्लेख मिलते हैं और उनसे गौतम की उस विचारधारा की पुष्टि होती है कि

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८६, ३६०, ३८८, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२१, ५१०, ५४८
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१, १३५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२२, २०३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३५, २८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२२, ४२१
४. लेफमैन, ललित, १५६/१७
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१४; जि० २, पृ० १२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५३; जि० २, पृ० १७५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४२७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६८
७. बुद्धिष्ट इण्डिया, पृ० ९०; चतुर्वेदी, ध्रुवनाथ, बौद्ध भारत, पृ० ६३-६४
८. आर० सी० मजूमदार, प्राचीन भारत में संघटित जीवन, पृ० १८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लगभग सभी महत्वपूर्ण व्यावसायिक शाखाएँ श्रेणियों के रूप में संगठित थीं ।[१] साहित्य और अभिलेखों में उपलब्ध उल्लेखों को एकत्रित करने पर हमें श्रेणियों की बहुत बड़ी संख्या मिलती है ।[२] डॉ० वसाक का मत है कि इन श्रेणी-सूचियों से भारतीय इतिहास के प्रारम्भिक युग की आर्थिक अवस्था का विशद स्वरूप परिलक्षित होता है ।[3] श्रेणियों का एक प्रधान (श्रेष्ठि प्रमुख) भी होता था ।[४] बढ़ई, सुवर्णकार, जुलाहे, चर्मकार, कुम्भकार, दन्तकार, रंगरेज, जौहरी, मल्लाह, सूपकार, नाई, मालाकार, चित्रकार, तेली, कसेरा (कसकर), ग्वाले, टोकरी बनाने वाले तथा गन्धकार आदि तक व्यवसाय सिद्ध करते हैं कि जातक कालीन औद्योगिक जीवन अधिक विकसित था ।

जातक युग में प्रमुख व्यवसायी वर्ग विशेष कर पितृक्रमागत ढंग से चलते थे । कुम्भकार या चम्मकार का पुत्र प्रायः उसी काम को करता था जो उसके परिवार में होता था । जातकों में 'कुम्भकारकुले'[५] 'सत्यवाह-कुले'[६] 'वण्णिज-कुले'[७] जैसे प्रयोग जिनमें विशिष्ट शिल्पों का सम्बन्ध विशिष्ट परिवारों के साथ था । विशेष शिल्प को करने वाले लोग विशिष्ट ग्रामों और नगरों की वीथियों में रहते थे, जिनके नाम उनके नाम पर ही पड़ते थे ।

भगवान् बुद्ध ने भी शिल्प को उत्तम मंगल का साधन बताया है ।[८]

जातक साहित्य में अनेक प्रकार की शिल्पकारियाँ (सिप्पायतनानि) प्रचलित थी । समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार के उद्यम और व्यवसाय प्रचलित थे जिनका शिल्प से घनिष्ट सम्बन्ध था । शिल्पकारों को इन्हीं भिन्न-भिन्न उद्यम-व्यवसायों से जीविकाएँ चलती थीं । जातक साहित्य में ऐसे निम्नलिखित विभिन्न शिल्पों और व्यवसायों के नाम प्राप्त होते हैं—

---

१. आर० सी० मजूमदार, प्राचीन भारत में संघटित जीवन, पृ० १८
२. वही, पृ० १९
३. डॉ० आर० जी० बसाक, ए स्टडी आफ महावस्तु, पृ० ४१
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२०, २४८; जा० अ० हिं० जि० १, पृ० २०२, ३७०
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७६; जा० अ० हिं० जि० ४, पृ० ३७
६. ,, ,, १, पृ० १०७; ,, ,, १, पृ० १८६
७. ;, ,, १, पृ० ४०४; ,, ,, १, पृ० ५७०
८. महामंगल सुत्त, चतुर्थगाथा, दिव्या० ३५९।२०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अंगारिका[१] : ये कोयले बनाने वाले होते थे।

आरामिक[२] : ये माली होते थे, आरामों (उद्यानों) में काम करते थे तथा उद्यान को रमणीय बनाते थे। बागों की रखवाली और देखभाल करते थे।

अजपाल[३] : बकरी पालने वाले होते थे।

अश्वगोपको[४] : घुड़चरवाहे (साईस)।

अस्सारोहा[५] : अश्वारोही।

अहिगुण्डिको[६] : ये लोग सपेरे होते थे। साँप का खेल करते थे। ये लोग बन्दरों तथा सर्पों को सिखाकर तमाशा दिखाते थे और अपनी जीविका चलाते थे।

आचारियस[७] : ये आचार्य होते थे।

आलारिका[८] : रसोइया।

उद्यानपाल[९] : माली होते थे।

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४५, (भदन्त आनन्द कौसल्यायन के अनुसार)

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २४९, २५०; जि० २, पृ० १०५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३७१, ३७२; जि० २, पृ० २८६; जि० ४, पृ० ४६८, ५६६

३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४५२

४. ,, ,, १, पृ० १८४; जि० २, पृ० ३३८-३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८७; जि० २, पृ० ३३८-३९

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७९; जि० ६, पृ० ४८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८०, जि० ६, पृ० ६०

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७१; जि० २, पृ० २६७; जि० ३, पृ० १९८, जि० ६, पृ० १९१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२५; जि० २, पृ० ४७७; जि० ३, पृ० ३६०; जि० ६, पृ० २२६

७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २९८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५०३

८. ,, ,, ६, पृ० २७६; ,, ,, ६, पृ० ३१५

९. ,, ,, १, पृ० ८३, २४९, २७०; जि० २, पृ० १०५, १९०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५६, ३७१, ३९७; जि० २, पृ० २८५, २८६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उसुकारो[1] : ये बाण बनाते थे।

एलकपाल[2] : ये भेड़ चराने वाले थे।

कम्मार[3] : (कर्मार) ये लोहार होते थे।

कप्पको[4] : ये नाई होते थे। हजामत और बाल बनाते थे।

कट्टहारक[5] : लकड़हारे।

कस्सक[6] : कृषक खेती करते थे।

कुम्भकार[7] : ये कुम्हार होते थे जो बर्तन आदि बनाते थे। राजकीय कुम्हार राज-परिवार के बर्तन बनाते थे।

कुम्भथूनियो[8] : घड़े बजाने वाले थे।

केवट[9] : ये मछुवारे होते थे, नदियों, तालाबों आदि में जाल फेंककर मछली पकड़ने का कार्य करते थे।

खग्गहत्था[10] : खड्गधारी।

खेत्तपाल[11] : खेत की रखवाली करते थे।

गायका[12] : गायक होते थे।

गोपालक[13] : ये गोप या ग्वाले होते थे।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४००; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५६४
२. ,, ,, ३, पृ० ४७९; ,, ,, ४, पृ० १३८
३. ,, ,, ३, पृ० ४३५; ,, ,, ३, पृ० २८१
४. ,, ,, ५, पृ० ३०९; ,, ,, ५, पृ० ३९१
५. ,, ,, ५, पृ० ४२०; ,, ,, ५, पृ० ५०५
६. ,, ,, १, पृ० ५७, २७७, ३६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२६, ४०६, ५१०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०३; जि० २, पृ० ७९; जि० ४, पृ० ३७, ४६-४७
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५
९. ,, ,, १, पृ० २१०-११; ,, ,, १, पृ० ३२१
१०. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १०६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३०८
११. ,, ,, ३, पृ० ५४; ,, ,, ३, पृ० २२२
१२. ,, ,, ६, पृ० ५८०; ,, ,, ६, पृ० ६४१
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९४, २८८, ३८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९४, ४२१, ५४८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गणिका[१] : वेश्याएँ।
गन्धब्ब[२] : गन्धर्व।
गान्धिक[३] : ये लोग सुगन्धित द्रव्यों-इत्र, तेल आदि का व्यापार करते थे। आजकल इन्हें गन्धी कहते हैं।[४]
घटिकार[५] : ये घड़े बनाते थे।
घातक[६] : जल्लाद।
चित्तकार[७] : ये चित्रकार होते थे। नाना प्रकार के चित्रों को बनाते थे।
चर्मकार[८] : चर्मकार चमड़े का कार्य करने वाले लोग थे। छद्दन्त जातक के अनुसार चर्मकार चमड़े की धौंकनी, चमड़े के पट्टे, हस्तिपाद, जूते और चमड़े के छाते बनाते थे।[९]
तृणहारका[१०] : घसियारे थे, जो घास बेचते थे।
तेलय[११] : तेली होते थे, जो तेल बनाते थे।
तक्किकाति[१२] : तर्क-ग्राही (दलील-बाज)।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५६-५७; जि० ३, पृ० ४३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५१; जि० ४, पृ० ९७; जि० ६, पृ० ३१५
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८४, ३८६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४३, ५४५
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५
४. डॉ० लाल०, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २०७
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६, ६९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६, १४१
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २१०
७. ,, ,, १, पृ० ७१; ,, ,, १, पृ० १४३
८. ,, ,, ४, पृ० १७२; ,, ,, ४, पृ० ३७३
९. ,, ,, ५, पृ० ४५; ,, ,, ५, पृ० १३४
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१; जि० ३, पृ० १२९; जि० ५, पृ० ४२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०३-२०४; जि० ३, पृ० २९३; जि० ५, पृ० ५०५
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तिकिच्छक[1] : चिकित्सक-चीर-फाड़ करने वाले डाक्टर होते थे।

तन्तवाय[2] : जुलाहे कपड़ा बुनते थे।

दन्तकार[3] : हाथी दाँत का काम करने वाले दन्तकारवीथी में ये हाथी दाँत की चीजें बनाते थे। विशेषकर चूड़ियाँ उल्लेखनोय थीं।

दुस्सिके[4] : ये वस्त्र बेचने वाले होते थे।

दंतकत्थंक[5] : मुखोदक और दातून आदि लाने वाले।

धाती[6] : धाईयां थी जो बच्चों की देखभाल करती थीं।

धनुग्गह[7] : धनुषधारी थे। अपनी कला-कौशल का प्रदर्शन भी करते थे।

निसाद[8] : निषाद पक्षियों आदि को पकड़ते थे।

नेमित्तक[9] : ज्योतिषी।

नाविक[10] : ये मल्लाह थे जो नाव चलाते थे।

नट्टक[11] : नर्तक।

नट[12] : नट कला करते थे। आजकल भी विद्यमान हैं।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५९

२. ,, ,, १, पृ० ३५६; ,, ,, १, पृ० ५०६

३. ,, ,, १, पृ० ३२०-२१; जि० २, पृ० १९७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६१-६२; जि० २, पृ० ३९५

४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५

५. ,, ,, ६, पृ० ४५; ,, ,, ६, पृ० ५०

६. ,, ,, १, पृ० ५७; ,, ,, १, पृ० १२६; जि० २, पृ० ४२७

७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८, ३५६, जि० ३, पृ० ३५६; जि० ४, पृ० ३५३

८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५७३

९. ,, ,, ५, पृ० २९६; ,, ,, ५, पृ० ३७७

१०. ,, ,, १, पृ० ११३; जि० २, पृ० १०३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९२; जि० २, पृ० २८४

११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५

१२. ,, ,, ६, पृ० २७६; ,, ,, २, पृ० ३६१; जि० ४, पृ० २०१; जि० ६, पृ० ३१५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाटकित्थियो[१] : नाटक करने वाले।
नाटकेत्थि[२] : नटी।
नटकिनियों[३] : नृत्यकार।
निय्यामको[४] : नियामक (नाव-निर्देशन)।
नलकार[५] : वेंत और बाँस का काम करते थे। टोकरी आदि बनाते थे।
परिचारिका[६] : सेवा करती थीं।
पशुपालक[७] : पशु पालते थे।
पोत्थकारो[८] : पोत्थकार।
पब्बतकूट[९] : पत्थर तराशने वाले जौहरी।
पण्णियहारक[१०] : कहार।
पण्णिक[११] : तरकारी बेचने वाले।
पाथेय भत्तहारकं[१२] : भोजन लाने वाले।
पाणिस्सर[१३] : ताली बजाकर गाने वाले।
बहु भण्डो[१४] : बहु-भाण्डिक।
भेरी वादक[१५] : भेरी बजाने वाले होते थे।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२७
२. ,, ,, २, पृ० ३२८; ,, ,, ३, पृ० ५४
३. ,, ,, ३, पृ० ४०९; ,, ,, ४, पृ० ६९
४. ,, ,, ४, पृ० १३८; ,, ,, ४, पृ० ३३९
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२३
६. जा० अ० रो० जि० ३; पृ० १; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२३, ४२७; जि० ३, पृ० १७२; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० १२०/१३
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६०; जि० ५, पृ० ४१७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१०; जि० ५, पृ० ५०३
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४३
९. ,, ,, १, पृ० ४८०; ,, ,, २, पृ० १२०
१०. ,, ,, २, पृ० २४६; ,, ,, २, पृ० ४५३-५४
११. ,, ,, २, पृ० १७९, ,, ,, २, पृ० ३७४
१२. ,, ,, ६, पृ० ४५; ,, ,, ६, पृ० ५०
१३. ,, ,, ६, पृ० २७६; ,, ,, ६, पृ० ३१५
१४. ,, ,, १, पृ० १२७; ,, ,, १, पृ० २११
१५. ,, ,, १, पृ० २८३; ,, ,, १, पृ० ४१३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भत्तिको[1] : भिस्ती होते थे जो पानी भरते थे और अपनी जीविका निर्वाह करते थे।

भत्तकारको[2] : रसोइया होते थे।

मणिकार[3] : मणियों से आभूषण बनाते थे।

मल्ल[4] : पहलवान तमाशों में अपनी भुजाओं को थापी देते हुए प्रदर्शित होते थे और कुश्ती करते थे।

मालाकार[5] : माली ही थे जो पुष्पों से विभिन्न आभूषण, गजरे आदि बनाते थे।

मुट्ठिका[6] : पहलवान मुष्ठि से लड़ने वाले।

मायाकार[7] : जादूगर।

मणिक[8] : कुजड़े-तरकारी बेचने वाले।

मागदेसकं[9] : मार्गदर्शक।

महाचोरो[10] : डाकू नगरों और ग्रामों में डाका डालते थे और लूटते थे।

रजक[11] : धोबी।

रथकार[12] : रथों का निर्माण करते थे।

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४४६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १०६
२. ,, ,, १, पृ० २१०; ,, ,, १, पृ० ३२१
३. ,, ,, ६, पृ० २७६; ,, ,, ६, पृ० ३१५
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८१; जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८३; जि० ६, पृ० ३१६
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८३; जि० ५, पृ० ३७३; जि० ६, पृ० ३१५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५
७. ,, ,, ४, पृ० ३८२; जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५०३; जि० ६, पृ० ३१५
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५१
९. ,, ,, ४, पृ० २५७; ,, ,, ४, पृ० ४६१
१०. ,, ,, ३, पृ० ५९; ,, ,, ३, पृ० २२७
११. ,, ,, ४, पृ० २८१; जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८३; जि० ६, पृ० ३१५; जि० ५, पृ० २९९
१२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १७२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लुब्द्धक[१] : शिकारी होते थे, पशु-पक्षियों का शिकार करते थे ।

लङ्घटन[२] : बाजीगर नट की कला दिखाते थे ।

लंघिका[३] : कूदने वाले ।

लोणकार[४] : नमक बनाने वाले ।

वम्मिनो[५] : ढाल-तलवारधारी ।

वेतालिक[६] : वैतालिक द्वारपाल, दरवान थे ।

वेज्ज[७] : वैद्य ।

वणिज[८] : व्यापारी ।

वण्णदासिया[९] : वेश्या ।

वनकम्मिका[१०] : जंगल में काम करने वाले ।

विज्जधरो[११] : जादूगर ।

वेसीय[१२] : वेश्यायें ।

वड्ढकि[१३] : बढ़ई, लकड़ी का काम करते थे ।

वनचर :[१४] वनचर थे ।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०८, ३७२; जि० ४, पृ० २५२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१८, ५२७; जि० ४, पृ० ४५४

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३०; जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५६; जि० ६, पृ० ३३०

३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१५

४. ,, ,, ६, पृ० २०९; ,, ,, ६, पृ० २४५

५. ,, ,, ४, पृ० ३५३; ,, ,, ४, पृ० ५६०

६. ,, ,, ६, पृ० २७७; ,, ,, ६, पृ० ३१५

७. ,, ,, ३, पृ० ३३७; जि० ४, पृ० १७१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २, पृ० ३७१

८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०; जि० ४, पृ० १३८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५३; जि० ४, पृ० ३३९

९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४४

१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४२०; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५०५

११. ,, ,, ४, पृ० ३८२; ,, ,, ४, पृ० ५९०

१२. ,, ,, ६, पृ० २७६; ,, ,, ६, पृ० ३१५

१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२, २००-२०१, २४७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९४, ३०९, ३६८

१४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८५; जि० ३, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १०४; जि० ३, पृ० ३७०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सूद[1] : भोजन लाने वाले ।

सरीरदाहापि[2] : श्मशान में मृत शरीर को जलाने वाले ।

साकुणिक[3] : चिड़ीमार ।

सोट्ठि[4] : श्रेष्ठी महाधनवान सेठ थे ।

संघटिक[5] : गाड़ीवान गाड़ियाँ चलाते थे ।

सङ्खधमक[6] : शङ्ख बजाने वाले थे ।

सारथी[7] : रथ चलाते थे ।

सत्थवाह[8] : पाँच सौ गाड़ियों को साथ लेकर व्यापार करते थे ।

सोकज्झायिका[9] : विदूषिका-नाटकों में हास्य पात्र का कार्य करते थे ।

सुवण्णकार[10] : सुनार, सोने के आभूषण बनाते थे ।

हेरिञ्ञकस्स[11] : सराफ आभूषणों को बनाते थे ।

हत्थिक[12] : हत्थवान ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि जातकों तथा अन्य बौद्ध साहित्य में अनेकानेक श्रेणियों का वर्णन है जिनसे जीवकोपार्जन करने के लिए भिन्न-भिन्न उद्यम करते थे ।

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २०९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २४५
२. „ „ ६, पृ० २०९; „ „ ६, पृ० २४५
३. „ „ १, पृ० २०८; „ „ १, पृ० ३१८
४. „ „ १, पृ० २०२, ५४८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२०, ३८८
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १०४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २७०
६. „ „ १, पृ० २८४; „ „ १, पृ० ४१४
७. „ „ १, पृ० १८०; „ „ १, पृ० २८१
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९८, १०७; जि० २, पृ० ३३५; जि० ४,१ पृ० ३५३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७६, १८६; जि० ३, पृ० ६१; जि० ४, पृ० ५६०
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५८०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६४१
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८२; जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २८४; जि० ६, पृ० ३१५
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२३
१२. „ „ १, पृ० २८८; „ „ १, पृ० ४२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्योग-धन्धे

जातक साहित्य के अध्ययन से उद्योग-धन्धों पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। मिट्टी के बर्तन बनाने का उद्यम उन्नति पर था। चमड़े से नाना प्रकार की घरेलू तथा सामाजिक उपयोग की वस्तुएँ तैयार की जाती थीं। इसी प्रकार काष्ठ उद्योग से हजारों लोगों की जीविका चलती थी। काशी वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध ही थी जहाँ के निर्मित वस्त्रों को काशी के वस्त्र (काशिकानि वस्त्राणि) कहते थे। ईख के रस से गुड़ और शक्कर बनाने का उद्योग भी किया जाता था। यहाँ प्रत्येक उद्योग-धन्धों के विषय में जातकों से प्राप्त सामग्री का संक्षेप में वर्णन किया गया है। प्रमुख व्यवसायी वर्ग निम्न थे :—

मृणपात्र उद्योग :

कुम्भकार का उल्लेख अनेक जातकों में मिलता है।[1] ये भाँति-भाँति के मिट्टी के बर्तन बनाते थे।[2] कुम्भकार जातक से पता चलता है कि वाराणसी के समीप 'कुम्भकार ग्राम' भी बसा हुआ था।[3] यह एक मात्र व्यवसायी वर्ग था।[4] कुम्हार बर्तन बनाने के लिए सबसे पहले कुदाल से मिट्टी खोदकर लाते थे तत्पश्चात् मिट्टी गूंथकर तैयार करते और चाक के द्वारा नाना प्रकार के बर्तन बनाते थे।[5] चुल्लसेट्ठि जातक के अनुसार राजकीय कुम्हार भी होते थे जो राज-परिवार के लिए बर्तनों (भाजनानं) को बनाते थे।[6]

काष्ठ-उद्योग (लकड़ी का काम) :

लकड़ी से नाना प्रकार के उपयोगी वस्तुएँ बनाई जाती थीं। काष्ठ कार्य करने वाले वड्ढकी कहलाते थे। अलीनचित जातक के अनुसार वाराणसी के

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६३, १२१, २०५; जि० २, पृ० ७९-८०; जि० ३, पृ० ३७६, ३८५-८६, ५०८; जि० ५, पृ० २९०; जि० ६, पृ० ३६९, ३७२-७३
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७
४. डा० विमल चन्द्र पाण्डेय, भा० व० का० सा० इ०, पृ० ८१
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ८०; जि० ५, पृ० २९०-९१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५६; जि० ५, पृ० ३७२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समीप बढ़इयों का गाँव (वडठ्किगाम) भी बसा हुआ था ।[१] समुद्दवाणिज जातक में भी (वड्ठकिगाम) का उल्लेख हुआ है ।[२] वड्ढकि जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाते थे तथा नावों और जलयानों का निर्माण करते थे तथा लकड़ियों के मकान भी बनाते थे ।[३] कुसनालि जातक से भी ऐसी ही सूचना प्राप्त होती है ।[४] कुलावक जातक के अनुसार राजा ने एक विशाल शाला बनवाने की इच्छा से बढ़ई को बुलाकर, शाला की नींव रखवाई थी ।[५] आने जाने तथा सामान लाने ले जाने के वे सभी प्रकार की गाड़ियाँ (शकट) भी बनाते थे ।[६] मकस जातक में एक वड्ढकि को वृक्ष को छीलता हुआ पाते हैं ।[७] जातक निदान कथा से पता चलता है कि बढ़ई वसूलो और कुल्हाड़ो को सहायता से उपकरण तैयार करते थे ।[८]

वस्त्र उद्योग :

मनुष्य के लिए जिस प्रकार आहार आवश्यक था उसी प्रकार आच्छादन के लिए वस्त्र भी । सभ्यता के विकास के साथ-साथ वस्त्र उद्योग की उन्नति शनैः शनैः हुई । कपड़ा बनाने वाले लोग बुनकर (तुन्नवाये[९], वर्तमान जुलाहे) कहलाते थे । कपड़ा कपास से बनता था । बनारस के आस-पास कपास की बहुतायत थी ।[१०] स्त्रियाँ कपास के खेतों की रखवाली करती थीं ।[११] जिन्हें "कप्पास रक्खिका" कहा गया है । कपास धुनो जाती थी ।[१२] तत्पश्चात् बारीक सूत काता जाता था और उससे कपड़ा बुना जाता था । बनारस के जुलाहे प्रसिद्ध थे ।[१३]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८३
२. ,, ,, ४, पृ० १५९; ,, ,, ४, पृ० ३५९
३. ,, ,, २, पृ० १८; ,, ,, २, पृ० १८३
४. ,, ,, १, पृ० ४४१-४२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७२
५. ,, ,, १, पृ० २००-२०१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०९
६. ,, ,, १, पृ० ९८; ,, ,, १, पृ० १७६
७. ,, ,, १, पृ० २४७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३६८
८. ,, ,, १, पृ० ३२; ,, ,, १, पृ० ९४
९. ,, ,, १, पृ० २२०, ३५६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३४, ५०६
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८६-८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३९
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७७
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५०; जि०६, पृ० ४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९८; जि०६, पृ० ४६
१३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कपास का क्रय-विक्रय भी होता था। महावस्तु के अनुसार सूती कपड़े बुनने वालों को अपनी श्रेणी (कार्पासिक) भी थी।[१] इससे प्रतीत होता है कि वस्त्र उद्योग बहुत ही उन्नत दशा में था।

कपास के अतिरिक्त कुश से भी वस्त्र बनाये जाते थे जिन्हें कुशचीर कहते थे।[२] वल्कल वस्त्रों का उद्योग भी प्रचलित था।[३] इसी प्रकार कौशेय[४], क्षौम[५] के अस्तित्व से रेशमी और ऊनी कपड़ों के उद्योग का भी परिचय मिलता है। अतः स्पष्ट है कि कपास के साथ ही ऊनी और रेशमी वस्त्रों का भी निर्माण किया जाता था। उड्डीयान के कम्बल[६] तथा शिवि देश के धुस्सा (सोवेय्यकं दुस्सयुंग)[७] प्रसद्धि ही थे।

काशी, वस्त्रों के उद्योग का मुख्य केन्द्र था। काशी के वस्त्रों को काशीकुत्तम[८], कासीय 'कासायानि वत्थानि'[९] तथा काशिकांशु कहते थे।[१०] काशी में कसीदे का भी काम होता था। इन कसीदे युक्त वस्त्रों को कासिक सूचीवस्त्र कहते थे।[११]. ये वस्त्र हजार तथा लाख के मूल्य के होते थे।[१२]

इक्षु उद्योग :

ईख[१३] की खेती काफी बड़े पैमाने में होती थी। इसके लिए मगध सर्वाधिक

---

१. महावस्तु, जि० ३/४४२/१४
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५००; महावग्ग पृ० ३२०/१०
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६; महावग्ग पृ० ३२०
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३०१; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० ७४/९
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४७; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० १७०/१३, ३४३/२५, ३३५/१९
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५६०
७. महावग्ग पृ० २९५/२३
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४९-५०
९. म० नि० पा० जि० १, पृ० ३२९/१
१०. दिव्या० १९६/१३
११. खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड २, पृ० २५९/७, २५६/२१, २६६/१ (कासिकसुचिवत्थधरा)
१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३; जि० ३ पृ० ११; जि० ६, पृ० ४०१ ४५०
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४८; जि० २, पृ० २४०; जि ४, पृ० १६०-६१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७९, ४४६; जि० ४, पृ० ३६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रसिद्ध था। ईख के रस से गुड़ और शक्कर (सक्कर) बनायी जाती थी।[१] ईख से रस निकालने के लिए यन्त्रों का (उच्छुयन्ते) प्रयोग होता था।[२] इक्षु रस से राब (फाणित)[३] भी बनायी जाती थी।

धातु-उद्योग :

जातक युग में धातु उद्योग भी उन्नत अवस्था में था। धातुओं से अत्यन्त सुन्दर, सुडौल और आकर्षक वस्तुएँ निर्मित की जाती थीं।[४]

लोहे का उद्योग-धन्धा लोहार (कम्मकार) करते थे। वे उत्तम किस्म के लोहे (अयस) से बारीक सुई तैयार करते थे जिसके एक सिरे पर छेद बनाते थे। सुई रखने के लिए नलिका (सूचिधर) भी बनाते थे।[५] लोहारों के पूरे गाँव के गाँव भी होते थे जिन्हें कम्भकार ग्राम कहते थे। लोहे के उद्योग में लगे हुए शिल्पियों ने अपना एक अलग संघ भी बना लिया था जिसका प्रधान जेट्ठक कहलाता था। लोहार घरेलू उपयोग की वस्तुएँ, कृषि कार्य के उपकरण और यंत्र तथा युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। जातकों के अध्ययन से पता चलता है कि लोहार (कम्मार)[६] निम्न प्रकार के यन्त्रों को बनाते थे। बसूली, कुल्हाणा[७], शूलशक्ति[८], एक धारी, द्विधारी तलवारें (असि) तीर, प्रज्ज्वलित आयुध[९], धनुष-तरकस-ढाल[१०], कुदाल[११], कैंची (कत्तारिकाय)[१२], नाना प्रकार के हथियार

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १०२

२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ८६, ४८४

३. महावस्तु, २/२०४/१९; वैद्य, ललित० २९/७;
जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १६१; जि० ५, पृ० १५

४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २८१-८५;
जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४३४—३८

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २६८

६. ,, ,, ३, पृ० २८१-८२ ,, ,, ३, पृ० ४२५

७. ,, ,, १, पृ० ३२; ,, ,, १, पृ० ९४

८. ,, ,, १, पृ० ४५; ,, ,, १, पृ० १११

९. ,, ,, १, पृ० ७३; ,, ,, १, पृ० १४४

१०. ,, ,, १, पृ० ९९; ,, ,, १, पृ० १७७

११. ,, ,, १, पृ० ३१२-१३; जि० ५, पृ० ६८;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५१; जि० ५, पृ० १५५

१२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२३; जा० अ० हि० हि० १, पृ० ३३८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(नानायुध हत्था)[१], फरसूहि[२], कड़ाही (कटाह)[३], छुरी (छुरिका)[४], कड़छी (उलङ्क)[५], उस्तरे (खुर)[६], कुण्डी (कुण्डिक)[७], चाबी (आवापुरण)[८], हथौड़ी (अयोकूट)[९], सन्दूक (मन्जूसा)[१०], हसिया, खुरपा, लोहे का डंडा, आरा, खूँटे तथा लोहे के चक्कर आदि बनाते थे।[११]

स्वर्ण उद्योग :

सोने के आभूषण बनाने का भी उद्योग होता था। स्वर्णकार सोने से विभिन्न प्रकार के आभूषणों का निर्माण करते थे।[१२] तत्कालीन समाज के अधिकांश लोग स्वर्णाभूषणों के प्रति रुचि रखते थे तथा शरीर सज्जा में उनका उपयोग करते थे। कुरु जातक में स्वर्णकार द्वारा निर्मित सोने की एक अद्वितीय और आकर्षक नारी मूर्ति का उल्लेख मिलता है। सोने के सिक्के भी बनते थे जिन्हें कार्षापण और निष्क कहते थे।[१३] तित्थ जातक के अनुसार सुनार स्वर्ण शुद्धि की परख तथा परिशुद्ध सोने को देखते रहने का अभ्यास करते थे।[१४] इससे यही सिद्ध होता है कि जातक युग में स्वर्ण उद्योग विकसित अवस्था में था। समाज में प्रचलित विभिन्न स्वर्ण आभूषणों से भी इसी की पुष्टि होती है।

चर्म उद्योग :

जातक युग में जिस प्रकार पशु-पालन आर्थिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग था, चर्म का उद्योग विकसित होना स्वाभाविक ही था। चमड़े से रस्सियाँ, जूते

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २४३
२. ,, ,, १, पृ० ३९९; ,, ,, १, पृ० ५६२
३. ,, ,, ४, पृ० २२९; ,, ,, ४, पृ० ४३०
४. ,, ,, २, पृ० १०२-१०४; जि० ३, पृ० ३७०;
जा० अ० हि० जि० २, पृ० २८३-८४, २८५; जि० ४, पृ० ३२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५७; २३५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५१, ३५३
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४५१; जा०अ०हि० जि० ४, पृ० ११०
७. ,, ,, १, पृ० ९; ,, ,, १, पृ० ६६
८. ,, ,, १, पृ० ५०१; ,, ,, २, पृ० १४८
९. ,, ,, २, पृ० २४१; ,, ,, २, पृ० ४४८
१०. ,, ,, १, पृ० ३८१; ,, ,, १, पृ० ५४०
११. ,, ,, ५, पृ० ४५; ,, ,, ५, पृ० १३४
१२. ,, ,, ५, पृ० ४३८; ,, ,, ५, पृ० ५१५
१३. ,, ,, १, पृ० ३६९; ,, ,, १, पृ० ५२३
१४. ,, ,, १, पृ० १८२; ,, ,, १, पृ० २८४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(उपानह), छाते आदि बनाये जाते थे।[1] चर्मोद्योग में संलग्न लोगों को चर्मकार कहते थे। दिव्यावदान में चर्मकारों की एक श्रेणी का भी उल्लेख है[2], इससे प्रतीत होता है चर्म-उद्योग काफी विकसित अवस्था में था।

हाथी दाँत का उद्योग :

हाथी दाँत से भी नाना प्रकार के आभूषण बनाये जाते थे। इस उद्योग में लगे लोग दन्तकार कहलाते थे, वे चूड़ी आदि बनाते थे।[3] सीलवनागराज जातक में दन्तकारवीथी (हाथी दाँत का काम करने वाले कारीगरों की गली) का उल्लेख हुआ है।[4] हस्ति दन्त उद्योग के लिए वाराणसी प्रसिद्ध केन्द्र था। जहाँ हाथी दाँत की वस्तुओं का बाजार था।[5]

जातकों के अध्ययन से तत्कालीन इस प्रकार के उद्योग-धन्धों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। विशेष उद्योग में लगे हुए लोग एक ही साथ रहते थे इसीलिए लोहारों की गली (कम्मकार वीथि), बढ़इयों की गली (वडकीवीथि), मालियों की गली (मालाकर वीथि) आदि का उल्लेख जातकों में प्राप्त होता है। उन्होंने अपने को अलग-अलग संघों में संगठित भी कर लिया था। निश्चय ही यह उस समय की उन्नतिशील औद्योगिक दशा का ही परिचायक है।

व्यापार

जातक युग में वैश्यों की प्रमुख जीविका वाणिज्य ही थी (वाणिज्य जीविनो वैश्यान)[6]। आर्थिक जीवन सुखी और समृद्ध था। वे व्यापार के लिए पण्य सामग्री को लेकर देश देशान्तरों में भ्रमण करते थे (वयं पण्यमादाय देशान्तरं गच्छाम)[7]। विशेषकर आन्तरिक और बाह्य व्यापार स्थल मार्गों और समुद्रों द्वारा होता था।

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १७२; जि० ५, पृ० ४५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३७३; जि० ५, पृ० १३४; खु० नि० पा० जि० ३, खण्ड १, पृ० २३९/१
२. दिव्या० १२/६
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६५; जि० ६, पृ० २९८
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४६१
५. ,, ,, १, पृ० ३२०-२१; ,, ,, १, पृ० ४६१-६२
६. दिव्या० ३६१/१७
७. वही, १७/११

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थलीय व्यापार :

व्यापारियों की बैलगाड़ियों की संख्या ५०० तक[१] होती थी उनको कभी-कभी ६० योजन मरुभूमि से जाना पड़ता था। अपने साथ लकड़ी, पानी, तिल, चावल आदि सामग्री लेकर साथ चलते थे। रात्रि के समय यात्रा करते थे। प्रातःकाल के समय विमान मण्डप में गाड़ियाँ खड़ी कर देते थे। स्थल नियामिक मार्ग का प्रदर्शन करते थे, दिशाओं का ज्ञान वह तारों को देखकर करते थे। कभी-कभी सार्थ के लोगों को (निर्जल-प्रदेश) कुएँ तक खोदने पड़ते थे।[२] क्रय-विक्रय का कार्य फेरीवालों के माध्यम से भी होता था। वे वीथियों में अपना सामान लेकर फिरते थे। ऐसे व्यापारी हीरे-मोती आदि बेचते थे।[३] व्यापारी विक्रय की वस्तुएँ गधों अथवा गाड़ियों पर लेकर चलते थे।[४] तपस्सु और भल्लिक नामक दो व्यापारी पाँच सौ गाड़ियों के साथ उत्कल (उड़ीसा) देश से पश्चिम देश को गये थे।[५] व्यापारी पूर्वान्त से अपरान्त तक जाते थे।[६] सेरिव राष्ट्र के व्यापारी तेलवाह नामक नदी को पार कर अन्धपुर नामक नगर को गये थे।[७] सरहद्धी (उत्तरापथक) से घोड़े के सौदागर ५०० घोड़ों के सहित आते थे।[८] मोलभाव भी होता था जिससे व्यापारी अनुचित लाभ भी प्राप्त करते थे।[९] क्रय-विक्रय करने में दोनों पक्षों को पूर्ण स्वतन्त्रता रहती थी, वस्तुओं का मूल्य निश्चित न था।[१०]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९२, १०७, १९४, २७०, ४०४
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०७-१०८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८६-१८७
३. जा० अ० हि० जि० १, पृ० १११-११२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९०-१९१
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १०९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २९१
५. ,, ,, १, पृ० ८०; ,, ,, १, पृ० १५३
६. ,, ,, १, पृ० ९८, ३६८; ,, ,, १, पृ० १७६, ५२१
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१, १२४-२५; जि० २, पृ० २८७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४, २०८; जि० ३, पृ० १६
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१-२२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०३-२०४
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सघन जंगल भी थे जहाँ वन में ठग और लुटेरों का भय बराबर बना रहता था। व्यापारी ऐसे जंगलों को पार करने के लिए वन-रक्षकों की सहायता लेते थे।[1] उनकी अध्यक्षता में कभी-कभी ५०० पुरुष काम करते थे। व्यापार के मार्गों को देखभाल के लिए राजा की ओर से स्थल-पथ कर्मिक नामक कर्मचारी नियुक्त होते थे। उनको पहले से ही ज्ञात रहता था कि किस दिशा से व्यापारिक वस्तुएँ आ रही हैं।[2]

कठिनाइयाँ :

जातक युग में सामान्यतया स्थल मार्ग से व्यापार बैलगाड़ियों पर सामान लादकर होता था। मार्ग में कई कठिनाइयाँ पड़ती थीं, लुटेरे प्रायः इन व्यापारिक दलों को लूट लेते थे। वाराणसी के समीप ही एक चोर ग्राम था जहाँ ५०० लुटेरे रहते थे[3], जिनका नेता 'चोर जेट्ठक'[4] कहलाता था। व्यापारी अपनी रक्षा के लिए सशस्त्र रक्षक[5] नियुक्त करते थे। जो सुरक्षित स्थानों से होकर उन्हें ले जाते थे। मार्ग में अक्सर भुखमरी, जंगली जानवर, डाकू, भूत-प्रेत और जहरीले पौदे मिलते थे।[6] कभी-कभी हथियारबन्द डाकू यात्रियों के सभी सामान लूट लेते थे।[7] जंगली (अटवीमुखवासी) लोग बहुधा सार्थों को कठिन मार्गों पर रास्ता दिखलाते थे और उसके लिए उन्हें पर्याप्त पुरस्कार मिलता था।[8] जंगलों में यक्षिणियाँ (यक्खिणियो) लगती थीं जो यात्रियों को मारकर खा जाती थीं।[9] जंगलों को पार करने के लिए सार्थवाह (कारवान) नियुक्त होते थे जो अपने आदमियों को मनाही कर देते थे कि उसकी आज्ञा के

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३३; जा० अ० हि०जि ३, पृ० ६०-६१
२. ,, ,, १, पृ० १२१; ,, ,, १, पृ० २०३-२०४
३. ,, ,, ४, पृ० ४३०; ,, ,, ५, पृ० १८
४. ,, ,, २, पृ० ३८८, ,, ,, ३, पृ० १०८
५. ,, ,, २, पृ० ३३५; ,, ,, ३, पृ० ६१
६. ,; ,, १, पृ० ९९, पृ० ३३२-३३, ३६८; जि० ४, पृ० १८५; जि० ५, पृ० १२
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८३; जि० २, पृ० ३३५; जि० ४, पृ० १८४
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २२, ४७१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ११०, ५४८-४९
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९५-९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५५९-६०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बिना अनजानी पत्तियाँ फूल या फल न खाये। एक बार अनजाने फल-फूल खाकर लोग अस्वस्थ पड़ गये, पर सार्थवाह ने वमन कराकर मधुर औषधि मिलाकर उनके प्राण बचाये थे।[1] कभी-कभी मार्ग में गाड़ियों के चलाने में अड़चन पड जाती थी।[2] काफलों को कान्तार (मरुभूमि) में पहुँचने पर कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।[3]

मार्ग :

जातक युग में आज की भाँति अच्छे मार्ग नहीं थे। सड़कें कच्ची ऊबड़-खाबड़ होती थीं वे साफ-सुथरी भी नहीं होती थी।[4] अनेक असुविधाओं का सामना करते हुए भी जातक युग में साहसिक वाणिज अपने जीवन पथ पर अडिग रहते हुए राष्ट्र वृद्धि में बहुमूल्य योगदान देते थे।

इस प्रकार से चम्पा, मिथिला[5], बनारस[6] तथा कौशाम्बी[7] मार्गों के लिए प्रसिद्ध थे। बनारस का व्यापार उज्जैन से भी होता था।[8] इसके बीच चेदि देश[9] भी पड़ता था। विदेह से काश्मीर और गान्धार तक व्यापार होता था।[10] पश्चिम में स्थित सिन्ध देश के अश्व देश के अन्य भागों को भेजे जाते थे।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२१-२२
२. ,, ,, १, पृ० १९६; ,, ,, १, पृ० ३०२
३. ,, ,, १, पृ० ९९; ,, ,, १, पृ० १७७
(कान्तार पाँच प्रकार के होते थे—चोरों का कान्तार, व्याल (हिंसक जन्तुओं) कान्तार, भूतों का कान्तार, निर्जल (निरूदक और अल्पभक्ष कान्तार))।
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०२
(यतो यतो गरुधरं यतो गम्भीर वत्तनी)
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५; जि० ६, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७; जि० ६, पृ० ३६-३७
६. जा० अ० रो० जि १, पृ० १२४, ४०४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०७, ५७०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ६४, ३८४; जि० ४, पृ० ३९२
८. ,, ,, २, पृ० २४८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५६
९. ,, ,, ६, पृ० ५१४; ,, ,, ६, पृ० ५५९
१०. ,, ,, ३, पृ० ३६५, ३७८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३९
११. ,, ,, १, पृ० १२४-२५; जि० २, पृ० ३१, २८७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०८; जि० २, पृ० १९६; जि० ३; पृ० १६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मगध से सौवीर तक भी व्यापार होता था।[१] असम्पदान जातक के अनुसार एक हजार गाड़ियों के साथ-साथ चलने का उल्लेख हुआ है।[२]

समुद्री व्यापार :

जातक युग में जलीय व्यापार के लिए बहुधा जलपोतों का प्रयोग होता था। सामुद्रिक व्यापार भारतीय विचारों के प्रचार-प्रसार का एक मुख्य साधन था। जिनके माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विस्तार श्री लंका और पूर्वी द्वीप समूह के अलावा चीन आदि देशों में हुआ था। ऐसी व्यापारिक यात्राएँ कभी-कभी ६ मास की दीर्घ अवधि तक की भी होती थी। नौकाओं का संचालन नाविक[३] (मल्लाह) स्थल की दिशा जानने के लिए दिशाकाक रखते थे।[४] बावेरू जातक के अनुसार एक दिशाकाक सौ कार्षापण पर बिका था तथा मयूर की कीमत एक हजार कार्षापण लगायी गयी थी।[५] यह यात्रा अरब सागर और फारस की खाड़ी के रास्ते होती थी।[६]

यह समुद्री व्यापार विशाल नावों (जलयानों) द्वारा होता था।[७] गहरी नदियों में ही चल सकती थी संख जातक में आठ उषभ लम्बी नाव का उल्लेख मिलता है।[८] गंगा नदी जलीय मार्ग के रूप में सबसे महत्त्वपूर्ण थी। जलयानों में तीन कूपक (तयो कूपका) मस्तूल लगाये जाते थे।[९] आवश्यकतानुसार जलयान को रोकने के लिए नाविक अपने साथ लंगर रखते थे। प्राचीन युग में प्राय. सभी बड़े-बड़े व्यापारिक नगर इन नदी मार्गों से एक दूसरे से सम्बद्ध थे। जलयानों के ठहरने के लिए बन्दरगाह (पत्तन) होते थे। नदी के बन्दरगाह को नदी पत्तन और समुद्र के बन्दरगाह को समुद्र पत्तन कहते थे। बन्दरगाहों की ओर से

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १०२
३. ,, ,, १, पृ० ११३; ,, ,, १, पृ० १९२
४. ,, ,, ३, पृ० १२६; ,, ,, ३, पृ० २९०-९१
५. ,, ,, ३, पृ० १२७; ,, ,, ३, पृ० २९०-९१
६. डा० मोतीचन्द्र, प्रा० भा० की प० प०, ७९
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३७०-७२; जि० ६, पृ० ३२-३३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३१-३३; जि० ६, पृ० ३८
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१९
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ११२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २९३-९४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लिए राजा की ओर से जल पथ कर्मिक नियुक्त होते थे जिन्हें जलयानों के आने-जाने की समय सारणी ज्ञात रहती थी।[१]

इन नदियों का अन्तर्देशीय व्यापार में विशेष योगदान था। वाराणसी, प्रयाग प्रतिष्ठान, कौशाम्बी, चम्पा आदि प्रसिद्ध नदी-व्यापार के केन्द्र थे। एक बार वाराणसी के एक हजार बढ़ई अपने समान सहित एक ही जलयान में बैठकर यात्रा के लिए गये थे।[२]

पाटलिपुत्र से गंगा नदी के द्वारा ताम्रलिप्ति तक आवागमन होता था और वस्तुओं का परिवहन होता था। जलयानों से ही पाटलिपुत्र से अशोक की पुत्री संघमित्रा ताम्रलिप्ति गई थी। जहाँ से समुद्री मार्ग द्वारा श्री लंका पार गई थी। लंका के राजा देवान पिय तिस्स के दूत भी ताम्रलिप्ति से पाटलिपुत्र तक गंगा के मार्ग से नावों में बैठ कर पाटलिपुत्र तक आये थे और उसी मार्ग से लौटे थे।[३]

कठिनाइयाँ :

पंडर जातक के अनुसार एक बार ५०० यात्री लम्बी समुद्री यात्रा कर रहे थे। सात दिनों की यात्रा के पश्चात् वे समुद्र के बीच दुर्घटना हो जाने से वे समस्त यात्री जलमग्न हो गये थे।[४] लोसक जातक के अनुसार समुद्र में चलते-चलते कभी-कभी नाव रुक जाती थी तो शलाका के द्वारा पापी व्यक्ति का पता लगाया जाता था और उस पापी को नाव से बाहर फेंक दिया जाता था।[५] सुप्पारक जातक से प्राचीन बहादुर नाविकों का पता चलता है। ये कुशल नाविक फारस की खाड़ी और लाल सागर (अग्निमाल सागर) होकर बेबीलोन (बावेरू) तक जाते थे। व्यापारी बलभामुख या बड़वामुख (भूमध्यसागर) के भयंकर कठिनाइयों में भी फँस जाते थे। इस लम्बी यात्रा में उन्हें अनेक समुद्रों को पार करना होता था।[६]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१; जि० ६, पृ० ३२-३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४; जि० ६, पृ० ३८-३९
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५९
३. बु० का० भा० भू०, पृ० २३२
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६३
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५८
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३९-४१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३९-४२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बन्दरगाह :

जातक साहित्य में समुद्र यात्राओं के अनेक उल्लेख मिलते हैं।[1] इन लम्बी यात्राओं के लिए अनेक बन्दरगाहों (पत्तनों) का उल्लेख जातक कथाओं में मिलता है। यात्रा करने वाले सुवर्णभूमि (दक्षिणी वर्मा) तक पहुँच जाते थे।[2] सुसन्धि जातक के अनुसार भारतवर्ष के पूर्वी-प्रदेश के व्यापारी चम्पा नामक बन्दरगाह से सुवर्ण-भूमि को गये थे।[3] जहाँ विशेषकर पश्चिम के देशों से व्यापार होता था। पूर्वी भारत का दूसरा और सर्वाधिक उपयोगी बन्दरगाह ताम्रलिप्ति था। जो मिदनापुर जिले का वर्तमान तामलुक ही है। जहाँ से ताम्रपर्णी तथा सुवर्णभूमि[4] को व्यापारी जलयानों से जाते रहते थे। पश्चिमी भारत के बन्दरगाहों में सुप्पारक (वर्तमान सोपारा थाना जिला महाराष्ट्र) तथा भरूकच्छ (भडौंच) था।[5]

सार्थवाह

जातक साहित्य में व्यापारिक निर्देशन के लिए सार्थवाह पद का कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण था। सार्थवाह का यह परम कर्त्तव्य होता था कि वह सार्थ की सहायता करते हुए उसे उचित स्थान तक पहुँचावे। सार्थवाह (सत्यवाह) कभी पूर्व-देश से अपरान्त देश जाते थे, कभी अपरान्त से पूर्व।[6] रात में पहरा देने के लिए सार्थ की ओर से सर्दारों (बलनायकों), पहरेदारों[7] (करवान के सरदार) की व्यवस्था होती थी। सार्थवाह एक साथ पाँच सौ बैलगाड़ियाँ (शकट) लेकर

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५-१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३८
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४९
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७; जि० ४, पृ० १६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२; जि० ४, पृ० २१५; श्रीवास्तव, बलराम, ट्रेड एण्ड कामर्स इन एन्सियण्ट इण्डिया, पृ० ८०
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४९
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७६
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०३, २७१, ३३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८१, ३९८, ४७६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चलते थे।[१] व्यापारियों को पेशगी भी दी जाती थी।[२] बनारस के व्यापारी पाँच सौ गाड़ियों के साथ चलकर साठ योजन वाली मरु-भूमि में फँस गये थे। वे अपने साथ लकड़ी, पानी, तिल, चावल इत्यादि लेकर रात्रि में यात्रा करते थे।[३] एक बार जब सार्थ जंगल से जा रहा था तो सार्थवाह ने सभी आदमियों को मनाही कर दी कि बिना उसकी आज्ञा के अनजाने पत्तियाँ, फल या फूल न खायें। क्योंकि एक बार अनजाने फल-फूल खाकर लोग बीमार पड़ गये थे पर सार्थवाह ने उन्हें वमन कराकर दवाई देकर लोगों के प्राण बचाये थे।[४]

आरण्यवासी (आदिम जातियों के लोग) (अटवी मुखवासी) बहुधा सार्थों को कठिन मार्गों पर रास्ता दिखलाते थे जिसके लिए उन्हें पर्याप्त पुरस्कार मिलता था।[५] राज्य की ओर से सार्थ की रक्षा तथा मार्गदर्शन के लिए कुशल मार्गवेत्ताओं की व्यवस्था थी।[६] उनके साथ प्रशिक्षित कुत्ते भी होते थे। पकड़े जाने पर डाकुओं को कड़ी सजा मिलती थी उन्हें बाँधकर कारागृह में डाल दिया जाता था।[७] दिव्यावदान[८] के अनुसार वणिजों और सार्थवाहों के सहयोग-सौहार्द पर ही यात्रा सिद्ध हो सकती थी। यात्रा में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ होते हुए भी अंतरदेशीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार चलाने का श्रेय सार्थवाहों को ही था।[९]

पण्य

जातक साहित्य में व्यापारिक सामग्री (पण्य) का भी उल्लेख मिलता है। व्यापार भिन्न-भिन्न द्रव्यों, धातुओं और वस्तुओं का होता था जिन्हें 'पण्य'[१०] कहते थे। प्रमुख पण्य निम्नलिखित थे :—

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९८, १०७, १९४, २७०, ३६८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७६, १८६, ३०१, ३९८, ५२१
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०४
३. ,, ,, १, पृ० १०७ ,, ,, १, पृ० १८६
४. ,, ,, १, पृ० २७१, ३६८; ,, ,, १, पृ० ३९८, ५२१
५. ,, ,, ५, पृ० २२; ४७१; ,, ,, ५, पृ० १११, ५४९
६. ,, ,, २, पृ० ३३५-३६; ,, ,, ३, पृ० ६०-६१
७. ,, ,, ४, पृ० २३७; ,, ,, ५ पृ० २४
८. दिव्या० ३५८/३०
९. डा० मोतीचन्द्र, प्रा० भा० की प० प०, पृ० ५६
१०. दिव्या० ३/१७, १६/१६, १७/११, ३८/८, १०७/४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हीरे : यह खुरमाल समुद्र में पाये जाते थे।[१]
सोना : यह अग्निमाल समुद्र में पाये जाते थे।[२]
चाँदी : यह दधिमालक समुद्र में पाये जाते थे।[३]
नीलमणि : यह नीलवर्ण कुशमाल समुद्र में पाये जाते थे।[४]
बाँस के रंग के बिल्लौर : यह बाल-माल समुद्र में पाये जाते थे[५]।

रत्न : ये रत्नद्वीप में अधिक मिलते थे। जहाजों द्वारा समुद्र पार कर लोग वहीं जाकर रत्न-संग्रह[६] करते थे। वहीं से रत्न लेकर जम्बूद्वीप (भारतवर्ष) को फिर वापस लौट आते थे।[७]

इसके अतिरिक्त हिरण्य, सुवर्ण[८] मणि, मुक्ता, वैदूर्य, शंख[९], शिला, प्रवाल, रजत, जातरुप, लौह, जस्ता, शीशा, बिल्लौर[१०], रत्न, मूँगा, ताँबा, कांसा (काशिका), हरित वर्ण चन्दन, अजिन-चर्म, हाथी-दाँत[११], गन्ध-धूप, चूर्ण, कपूर, पुष्प[१२] का सामान आदि बहुमूल्य पदार्थों का भी व्यापार होता था।[१३]

अन्तर्देशीय व्यापार की कुछ वस्तुएँ रेशमी, सूती और ऊनी कपड़े, विभिन्न प्रकार की मदिराएँ, बहुमूल्य धातु और मणियाँ, अस्त्र-शस्त्र, लवण, केशर, तगर, गग्गल, लाक्षा, रोचना मंजिष्ठ नील आदि थीं।[१४] देश विदेशों में भेजी

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४०
२. ,, ,, ४, पृ० १३९; ,, ,, ४, पृ० ३४०
३. ,, ,, ४, पृ० १४०; ,, ,, ४, पृ० ३४०-४१
४-५. ,, ,, ४, पृ० १४०; ,, ,, ४, पृ० ३४१
६. अवदान० जि० १/२३/१२-१३
७. वही, २/६६/४
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२६
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१४-१५
१०. ,, ,, २, पृ० २९४-२९५; ,, ,, ३, पृ० २४
११. ,, ,, १, पृ० ३२०-२१; ,, ,, १, पृ० ४६१-६२
१२. ,, ,, १, पृ० २९०-९१; ,, ,, १, पृ० ४२३
१३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १५, २९४-९५; जि० ६, पृ० ५४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८०; जि० ३, पृ० २४-२५; जि० ६, पृ० ६४
१४. कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया, भाग १, पृ० २१५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जाने वाली वस्तुओं में मुख्यत: रेशमी, कपड़े, कम्बल, सुगन्ध, हीरे-मोती आदि थे ।[१]

अश्व :

अश्व व्यापार[२] का विशेषत: उल्लेख किया गया है ।[३] उत्तरापथ के व्यापारी पाँच सौ घोड़ों को लेकर वाराणसी तक आते-जाते थे ।[४] इस व्यापार से उन्हें प्रभूत सामग्री प्राप्त होती थी ।

7127

रेशमी वस्त्र :

नगरों के बीच बाजारों (अन्तरायण)[५] में भी होता था । काशी के बने शुद्ध उत्तम रेशमी वस्त्रों का विशेष रूप से व्यापार होता है जिसे काशेयक कहते थे । उनका मूल्य एक लाख तक होता था ।[६] गन्धार और कोटुम्बर (उदुम्बर) जनपद अपने बहुमूल्य कम्बलों और ऊनी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे ।[७] शिवि देश के दुशाले प्रसिद्ध थे ।[८]

इस प्रकार नाना प्रकार की सामग्री लेकर व्यापारी आवश्यकता के अनुसार ही सामान लेकर दूर-दूर तक जाते रहते थे। बाहर से भी आवश्यक सामान मँगाया जाता था ।

विनिमय और सिक्के

जिस समय समाज में सिक्कों का प्रचलन नहीं था, उस समय लोग वस्तु-

---

१. राइस डेविड्स बुद्धिष्ट इण्डिया, पृ० ९८-१००
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १८; महावस्तु जि० २/१६७/१
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २८७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०८; जि० ३, पृ० १६
५. लेफमैन, ललित, ७७/१८
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५३; जि० ६, पृ० ४५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२०; जि० ६, पृ० ४९१-९२
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५२६-२७; बु० का० भा० भू०, पृ० ५२६
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६०९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विनिमय द्वारा अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त करते थे। धीरे-धीरे सिक्कों का प्रचलन हुआ। डॉ० भण्डारकर के अनुसार बहुत प्राचीन काल से भारत में वस्तु विनिमय थी।[१] राइस डेविड्स का कथन है कि बौद्धयुगीन समाज में सिक्कों का प्रयोग होता था।[२] जातकों के अध्ययन से भी यही सिद्ध होता है।

जातककालीन भारत में 'निष्क', 'सुवर्ण', 'हिरण्य'[३] 'कार्षापण' (कहापण)[४], 'माषक'[५], रूपी[६], 'काकणी'[७] प्रचलित थे। सर्वाधिक प्रचलित सिक्का कहापण (कर्षापण) है। मनुस्मृति में सिक्कों के सम्बन्ध में अधोलिखित उल्लेख मिलता है :—

ते षोडश स्याद्धरणं पुराश्चैव राजतः।
कर्षपणस्तु विज्ञेयस्ताम्रिक कार्षिकः पणः॥[८]

अर्थात् सोलह रौप्य मापकों का एक 'रौप्यधरण' तथा 'राजत' अर्थात् चाँदी का 'पुराण' और ताबें के कर्ष (पैसे) को (कर्ष) तथा 'पग' कहते हैं।

गामणीचण्ड जातक से पता चलता है कि एक जोड़ी बैलों की कीमत चौबीस कार्षापण थी।[९] इससे सिद्ध होता है कि कार्षापण या कहापण चाँदी का भी

---

१. ऐन्श० इ० न्यू०, पृ० १६७
२. ज० रा० ए० सो०, पृ० ३१८, ८६७
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४१, ४६६; जि० ५, पृ० ४१६; जि० ६, पृ० ४६२, ४९४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४९७; जि० २, पृ० १०२, ३८१; जि० ५, पृ० ५०३; जि० ६, पृ० ५०३, ५३४
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४०; जि० ३, पृ० ४४८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८६; जि० ४, पृ० १०८; पा० इ० डि० पृ० २०२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४०, ३५०; जि० ३, पृ० १२९; जि० ४, पृ० ४४९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८६, ४९८; जि० ३, पृ० २९३; जि० ५, पृ० ३६; पा० इ० डि०, पृ० २०२
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४८६; सं० नि० पा० जि० १, पृ० ७, ७३
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २०३; पा० इ० डि०, पृ० २०२
८. मनुस्मृति, पृ० ३९१
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३०५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिक्का होता था।[१] एक गधे की कीमत प्रायः आठ कार्षापण होती थी। कुण्डक कुच्छि जातक में अच्छी जाति के घोड़े की कीमत एक हजार कार्षापण से लेकर छः हजार तक कार्षापण होती थी।[२] महावेस्सन्तर जातक में काशी के बहुमूल्य वस्त्रों की कीमत एक लाख कार्षापण बताई गई है।[४] अच्छी नस्ल के कुत्ते का मूल्य एक कार्षापण था।[५] कण्ह जातक में वाराणसी के व्यापारी ने पाँच सौ गाड़ियों को मरुस्थल पार करने के लिए प्रति बैल दो कार्षापण दिये थे।[६]

माप-मान :

दैनिक जीवन में वस्तुओं के लेन-देन में माप और तौल का विशेष महत्व था।[७] सिन्धु घाटी सभ्यता के आर्थिक जीवन में मिट्टी के खिलौनों के रूप में तुला और मान का उपयोग सिन्धु घाटी के बच्चे करते थे।[८] 'तुला' और 'मान' महत्वपूर्ण व्यापारिक उपकरण के रूप में, प्रागैतिहासिक सिन्धु में ई० पू० तीन सहस्राब्दी पूर्व से ही प्रचलित थे।[९]

जातकों में विभिन्न माप-तौलों का उल्लेख प्राप्त होते हैं। लम्बाई और दूरी की माप का भी उल्लेख जातकों में मिलता है। अंगुल[१०] (उंगली, लम्बाई,

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४२४; जि० ३, पृ० १३०, ३२६; जि० ४, पृ० ४४९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १४४, ४७५; जि० ५, पृ० ३६
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३४३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ ३८८
३. ,, ,, २, पृ० २८९; ,, ,, ३, पृ० १८
४. ,, ,, ६, पृ० ४५०; ,, ,, ६, पृ० ४९१-९२
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५४
६. ,, ,, १, पृ० १९५; ,, ,, १, पृ० ३०१
७. ,, ,, ६, पृ० २३४; ,, ,, ६, पृ० २७२
८. मैके, द इण्डस सिविलाइजेशन, पृ० १७६
९. नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ६७, १३१
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३३८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २; पा० इ० डि०, पृ० ७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नापने का माप), विदत्थि[1] (एक बालिस्ता = १२ अंगुल), यष्ठि[2] (यट्ठि) डण्डा, लम्बाई नापने का माप, कुक्कु[3] (लम्बाई की माप), हत्थ[4] (हाथ, लम्बाई की माप), उसभ[5] कुसभ (२० यट्ठि = एक उसभ, ऊँचाई की माप), युग[6] (युगमंत) (हल की लम्बाई), गावुत[7] (लम्बाई की नाप योजन का १/४ भाग) और योजन[8] के रूप में की जाती थी ।

१ अंगुल (अङ्गुल)	=	३/४ इंच (उंगली भर का माप)[9]
७ अंगुल	=	१ रतन[10]
७ रतन	=	१ यट्ठि (यष्टि), १ यट्ठि = २ विदत्थि (विदट्ठि) = १८ इंच[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३१८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४६७; पा० इ० डि० पृ० ६२१

२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१९; पा० इ० डि० पृ० ५४७

३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३१८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४६७; पा० इ० डि० पृ० २१८

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७; जि० ४, पृ० १८२, २६४; जि० ५, पृ० १३५, ४७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६३; जि० ४, पृ० ३८१, ४६८; जि० ५, पृ० २१६, ५५४; पा० इ० डि० पृ० ५५७

५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २१; जि० ६, पृ० २४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१९; जि० ६, पृ० ३९; पा० इ० डि० पृ० १५६

६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५५; पा० इ० डि० पृ० ५५७

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०९; जि० ५, पृ० ३५६; जि० ६, पृ० ५५, १६६, २६५, ४२६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४११; जि० ५, पृ० ४३९; जि० ६, पृ० ६५, २००, ३०३, ४६७, ४६८, ४७१, ४८६; पा० इ० डि० पृ० २५०

८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५४; जि० ३, पृ० ७६; जि० ६, पृ० ४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२२; जि० ३, पृ० २४३; जि० ६, पृ० ४७

९. मेहता, प्री० बु० इ० पृ० २३७; कौसल्यायन, पा० हि० को०, पृ० ११

१०. बु० का० भा० भू०, पृ० ५५५

११. खु० नि० ना० पा० जि० ३, खण्ड १, पृ० १४६/१; बु० का भा० भू० पृ० ५५५; मेहता, प्री० बु० इ० पृ० २३७ (१ विदत्थि = १ बालिश्त); पा० इ० डि० पृ० ६२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२० यट्ठि	=	१ उसभ, १ विदत्थि = १२ अंगुल या ९ इंच[1]
८० उसभ	=	१ गावुत, १ उसभ = २० यट्ठि = ३० फुट[2]
१ गव्यूति	=	१/४ योजन या लगभग दो मील[3]
४ गव्यूति	=	१ योजन[4]
१ योजन	=	२ मील[5] (योजन का अर्थ 'रथ-युग' = युग भर की दूरी (योजन का प्रयोग विभिन्न स्थान और समय में अलग-अलग होता था)।

१ व्याम (युग-मात्र) = दो हाथ[6]

भार नापने के माप :

१ अम्मण[7]	=	११ द्रोण[8] (१ अम्मण = ४ गैलन) (अनाज नापने का माप)
१ करीस	=	४ अम्मण[9]
१ नहुत	=	दस हजार[10]
१ आलहक	=	१६ पसत[11] (अनाज नापने का माप)

---

१. मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० २३७; बु० का० भा० भू०, पृ० ५५५; पा० इ० डि०, पृ० १५६
२. मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० २३७; बु० का भा० भू०, पृ० ५५५; पा० इ० डि०, पृ० २५०
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २०९; जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४११; पा० इ० डि० पृ० २५०
४. बु० का० भा० भू०, पृ० ५५५
५. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५४; जि० ६, पृ० ४२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२२; जि० ६, पृ० ४७
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५५
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४३०
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३३, ६२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९५, १३२; जि० २, पृ० ४३०; मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० २३७; पा० इ० डि०, पृ० ७४
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३२४
१०. ,, ,, १, पृ० ८३; ,, ,, १, पृ० १५६
११. ,, ,, १, पृ० ४१९; ,, ,; २, पृ० ४१; ा० इ० डि०, पृ० ११०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दूरी नापने के माप :

१ रत्न (हाथ) = एक हाथ भर[१]

१४० हाथ = १ उषभ ७

१२ अंगुल = १ वित्त[२] (वालिस्ता); २ वित्त = १ हाथ और २ हाथ = १ गज[३]।

तराजू का प्रयोग होता था।[४] अनाज तौलने के लिए सर्वाधिक लोकप्रिय साधन 'नालि' था।[५] अनाज तौलने का अन्य माप द्रोण (दोण)[६] जो नालि से बड़ा होता था, प्रयोग करते थे।

महावस्तु में एक स्थान पर कहा गया है कि पुरुष की ऊँचाई भी, ऊँचाई नापने में व्यवहृत की जाती थी।[७]

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जातक युग में समाज में नाना प्रकार के सिक्के तथा भार और लम्बाई एवं दूरी नापने के लिए विभिन्न प्रकार के माप-मान प्रचलित थे। जिनसे उस युग की आर्थिक समृद्धि ही सिद्ध होती है।

व्यापारिक मार्ग

जातक साहित्य में बुद्ध और उनके अनुयायी भिक्षुओं तथा जैन भिक्षुओं के एक स्थान से दूसरे स्थान को आने-जाने का उल्लेख हुआ है। व्यापारी अपना

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६३
२. ,, ,, १, पृ० ६४; ,, ,, १, पृ० १३५
३. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २१६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११३; जि० ६, पृ० २३४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९२; जि० ६, पृ० २७२
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६८; जि० २, पृ० ३५१, जि० ३, पृ० ७१, ५४१; जि० ४, पृ० ६७, १६७; जि० ६, पृ० ३६६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १०३-१०४; जि० ३, पृ० ७७, ३३८; जि० ४, पृ० २०१, २६८, ३६७; जि० ६, पृ० ४१३
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ७०; जि० ४, पृ० ४५६; जि० ५, पृ० १६३; जि० ६, पृ० ३०५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २४५; जि० ५, पृ० ४४, २४४; जि० ६, पृ० ३४४; पा० इ० डि० पृ० ४०४
७. महावस्तु जि० २/३१३/६-९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

माल लेकर एक स्थान से दूसरे स्थान को क्रय-विक्रय हेतु आते-जाते रहते थे। इसीलिए जल और थल मार्गों द्वारा विभिन्न नगर जुड़े हुए थे। भरुकच्छ (भड़ौंच)[१], ताम्रलिप्ति और सोपारा[२] प्रसिद्ध बन्दरगाह थे। महोदय दास के अनुसार न केवल चम्पा से ही, किन्तु काशी से भी जल मार्ग द्वारा सीधे सीलोन तक यात्रा होती थी।[3]

श्रावस्ती (सावत्थी), से राजगृह, सावत्थी से दक्षिणी भारत के प्रतिष्ठान (पैथान) तक और पश्चिम में मथुरा होते हुए तक्षशिला तथा सिन्धु-सौवीर में रोरुक तक स्थल मार्ग जाते थे।[४]

जातक साहित्य से दो प्रकार के व्यापारिक मार्गों—स्थल मार्गों और जल-मार्गों का वर्णन मिलता है।

स्थल मार्ग :

स्थल मार्गों में महापथ और गौणपथ उल्लिखित है। जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

उत्तरापथ—जातक साहित्य में पूर्व से पश्चिम तक (पुब्बत्ता अपन्तं)[५] जाने वाला मार्ग प्रधान मार्ग था। जातक की निदान कथा में तपस्सु और भल्लिक नामक दो व्यापारी पाँच सौ गाड़ियों के साथ उत्कल (उड़ीसा) देश से पश्चिम देश को इसी मार्ग से गये थे।[६] मगध की राजधानी राजगृह से चलकर यह मार्ग उत्तर-पश्चिम में गन्धार राष्ट्र की राजधानी तक्षशिला तक पहुँचता था। श्रावस्ती से होते हुए एक मार्ग संकाश्य नगर पर इस मार्ग से मिलता था। इसे प्राचीनकाल का ग्राण्ड ट्रंक रोड कह सकते हैं।[७] राजगृह से चलकर यह मार्ग नालन्दा, पाटलिपुत्र, वाराणसी, प्रयाग, कान्यकुब्ज (कन्नौज) संकाश्य[८] सोरों

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७१-७२; जि० ३, पृ० १८८-९०; जि० ४, पृ० १३७-३८, १४१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६४-६५, जि० ३, पृ० ३४९-५०; जि० ४. पृ० ३३७, ३३९-३४२

२. डॉ० मोतीचन्द्र, प्रा० भा० की० प० प०, पृ० १८

३. दास, एकोनामिक, हिस्ट्री ऑफ ऐन्शेन्ट इण्डिया, पृ० १२१

४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८६

५. ,, ,, १, पृ० ९८; ,, ,, १, पृ० १७६

६. ,, ,, १, पृ० ८०; ,, ,, १, पृ० १५३

७. बु० का० भा० भू०, पृ० ५३८

८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २६५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४६९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और वेरंजा होता हुआ मथुरा तक जाता था। मथुरा से आगे इन्द्रप्रस्थ और सागल[१] होता हुआ तक्षशिला पहुँचता था। तक्षशिला से आगे चलकर यही मार्ग पश्चिमी और मध्य-एशिया तक जाता था।[२] पश्चिम में स्थित मरु-स्थल को पार करते समय सार्त्थवाह रात्रि में भी चला करते थे और मार्ग निर्देशन करता था। मार्ग निर्देशन तारे देखकर किया करते थे।[३] वण्णुपथ जातक के अनुसार एक बार सार्थवाह पाँच सौ गाड़ियों के साथ व्यापार करने गये थे। वे अपने साथ पानी, तिल, चावल सब वस्तुओं को साथ में लिए हुए थे। वे साठ योजन मरुकन्तार (मरुस्थल) पार करके सिन्धुसौवीर और गान्धार जनपद गये थे।[४]

राजगृह-श्रावस्ती मार्ग—दूसरा प्रसिद्ध मार्ग राजगृह से वैशाली होकर जाता था।[५] इस मार्ग पर श्रावस्ती से आगे चलकर सेतव्या, कपिलवस्तु, कुशीनारा, पावा, वैशाली, पाटलीपुत्र, नालन्दा और राजगृह स्थित थे।[६] नालन्दा से एक सड़क गया को भी जाती थी, जो उसे उस मार्ग से जोड़ती थी, जो ताम्रलिप्ति से गया होता हुआ वाराणसी तक जाता था।[७] श्रावस्ती के समीप ही जेतवन बिहार था जो कई मार्गों द्वारा जुड़ा हुआ था।[८] वैशाली[९] से पाटलीपुत्र होते हुए भी यात्री वाराणसी जाते थे।

दक्षिणापथ—तीसरा प्रसिद्ध मार्ग दक्षिण को जाता था। इसीलिए इसे दक्षिणापथ कहते थे। यह मार्ग श्रावस्ती से चलकर दक्षिण में प्रतिष्ठान[१०] की

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २८३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६५
२. बु० का० भा० भू०, पृ० ५४०
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०७-१०८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८६-८७
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १८६
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २१७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३३०
६. बु० का० भा० भू०, पृ० ५४०; राइस डेविड्स, बुद्धिष्ट इण्डिया, पृ० १०३
७. बु० का० भा० भू०, पृ० ५४०
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ७९-८०
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५९-६०; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६८
१०. जा० अ० रो० जि० ६, ० १९८; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओर से माहिष्मती, उज्जैनी[1], गोनद्ध, विदिशा (वेदिसं), कौशाम्बी[2], साकेत[3] और श्रावस्ती[4] थे। कौशाम्बी नगरी व्यापारिक मार्ग द्वारा वाराणसी तथा राजगृह से जुड़ी हुई थीं।[5] माहिष्मती से एक मार्ग भरुकच्छ[6] को जाता था। जातककालीन प्रसिद्ध उज्जैनी (उज्जयिनी) पश्चिमी समुद्र तट के भरुकच्छ और सुप्पारक जैसे बन्दरगाहों से जुड़ी हुई थी।[7]

जातकों में उपर्युक्त तीन महामार्गों के अतिरिक्त कई अन्य मार्गों का भी उल्लेख हुआ है।

अन्य मार्ग :

विदेह-चम्पा मार्ग——महाजनक जातक के अनुसार विदेह के व्यापारी मिथिला से स्थल-मार्ग के द्वारा पहले चम्पा पहुँचते थे जो साठ योजन दूर थी। चम्पा से नदी मार्ग द्वारा ताम्रलिप्ति तक जाते थे जहाँ से वे सुवर्णभूमि और ताम्रपर्णी की समुद्री यात्राएँ करते थे।[8]

श्रावस्ती-संकाश्य मार्ग—श्रावस्ती से साकेत होते हुए एक मार्ग संकाश्य नगर तक भी जाता था।[9] इस प्रकार श्रावस्ती से संकाश्य और मथुरा होते हुए भी गन्धार राष्ट्र तक (तक्षशिला) जाया जा सकता था।[10] सिन्धु-सौवीर देश और सूनापरान्त जनपद भी व्यापारिक मार्गों के द्वारा श्रावस्ती और राजगृह से जुड़े हुए थे।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४८; जा० अ० हि० २, पृ० ४५६
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ६४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २३१
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २७२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४२६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१०-५११
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४९
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५६
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३२-३४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३६-३८
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३००
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २६-२७; बु० का० भा० भू०, पृ० ५४२
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १०६, १०७, ११०, ११४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातकों में अनेक तरह की सड़कों के उल्लेख हैं, सड़कें कच्ची होती थीं। सड़कें अधिकतर ऊबड़-खाबड़ और साफ-सुथरी नहीं होती थीं।[१]

जब मार्गों पर कोई बड़ी सेना चलती थी तो सड़क ठीक करने वाले मजदूर उसके साथ चलते थे। जो अपने साथ वसुला (वासी), कुल्हाड़ा तथा मूसल आदि रखते थे।[२]

मगध राज बिम्बसार ने जब सुना कि बुद्ध वैशाली से मगध की ओर जाने वाले हैं। तो उन्होंने उनसे सड़क की मरम्मत हो जाने तक रुक जाने की प्रार्थना की। राजगृह से पाँच योजन तक की लम्बी सड़क चौरस कर दी गई और हर योजन पर एक सभा स्थल तैयार कर दिया गया था। गंगा के पार वज्जियों ने भी वैसा ही किया। इसके बाद बुद्ध अपनी यात्रा पर निकले।[3] रामायण से भी इसकी पुष्टि होती है। जब भरत चित्रकूट में राम से मिलने के लिए चले तो उनके साथ सड़क बनाने वालों की अधिक संख्या थी। सेना के आगे मार्ग दर्शक चलते थे।[४]

प्राचीन भारत में सड़कों पर यात्रियों के आराम के लिए धर्मशालाएँ होती थीं। कुलावक जातक में मार्गों पर पुष्करिणियों, शालाओं, कुएँ बनाने का उल्लेख है।[५]

अशोक के प्रस्तर स्तम्भों पर अंकित लेखों से भी इसकी पुष्टि होती है।[६]

इस प्रकार जातक कालीन मार्गों का विवरण तत्कालीन समृद्धि का परिचायक है।

जलमार्ग—नदियों के द्वारा भी माल लाया-ले जाया जाता था। नदी मार्ग से भी यात्राएँ की जाती थीं। नावों के द्वारा व्यापार होता था।[७] नौकाओं के बेड़े का भी उल्लेख मिलता है।[८] महाजनक जातक के अनुसार चम्पा और वाराणसी (मौलनी) के व्यापारी सामान की नौकाओं में लादकर स्वर्ण भूमि

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १९९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०७
३. डा० मोतीचन्द्र, प्रा० भा० की प० प०, पृ० ५२
४. रामायण, अयो० १/२/१३; डा० मोतीचन्द्र, प्रा० भा० की प० प०, पृ० ५१
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८, ९९, २००-२०१; जि० २, पृ० ७०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६४, १७६, ३०८-३०९; जि० २, पृ० २४५
६. अशोक का प्रस्तर स्तम्भ २,५ और १३, पृ० ३०
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६३
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गये थे।[१] मिथिला के तीन सौ बढ़ई गंगा के उस पार गये थे।[२] नदी को नावों द्वारा पार किया जाता था।[३] पण्डर जातक के अनुसार पाँच सौ व्यापारी नौकाओं को लेकर समुद्र में उतरे थे और वे सभी करम्बिय पत्तन नामक बन्दरगाह में पहुँचे थे।[४] वाराणसी के समीप के बड्ढकिगाम के सब बढ़ई अपने परिवारों को साथ लेकर एक बड़ी नाव में बैठकर गंगा भाग कर, समुद्र के समीप एक उर्वर द्वीप में जाकर बस गये थे।[५] गंगा नदी के द्वारा समुद्र से लेकर वाराणसी तक का आवागमन होता था।[६] भारतीय व्यापारी छः छः मास की लम्बी समुद्री यात्रा करते थे।[७] वाराणसी के व्यापारी तम्बपण्णि (ताम्रपर्णि-लंका) के सिरिसवत्थु नामक नगर को गये थे।[८]

बावेरू जातक के साक्ष्य के अनुसार अनेक व्यापारी सम्मिलित रूप से बावेरू देश (बेबिलोन) के साथ व्यापार करते थे। भारतीय पक्षियों में मयूरों का विदेशों में सौंदर्य के कारण अच्छा व्यापार चल सकता था। बावेरू देश में कौओं का भी मुंह-मांगा मूल्य मिल जाता था।[९] महोदय मुकर्जी के अनुसार अशोक के समय में भी भारतीय व्यापारिक सम्बन्ध बेबिलोन (बाबेरू) से था।[१०]

इनके अतिरिक्त व्यापारियों को विदेह से गन्धार[११], मगध से सौवीर[१२], भरुकच्छ से समुद्र के किनारे-किनारे वर्मा[१३] तक जाते हुए पाते हैं। बनारस से गंगा नदी द्वारा उसके मुहाने तक और वहाँ से वर्मा[१४], चम्पा भी को व्यापारी जाते थे।[१५]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३८
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६३
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३३२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ५८
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ७५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६३
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५९
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५-१६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २१५
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १२७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१२
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १२७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २९०-९१
१०. मुकर्जी, आर० के०, इण्डियन सीपिङ्ग, पृ० ५१
११. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २७
१२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२९
१३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३४९
१४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५-१७; जा० अ०हि०जि० ४, पृ० २१५-१६
१५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टम अध्याय

शिक्षा और साहित्य

शिक्षा का उद्देश्य :

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व को सुखी बनाने[1] तथा देश-व्यवहार के ज्ञान को प्राप्त कराना था।[2] शिक्षा मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में एक विनीत और उपयोगी नागरिक के रूप में रह सके तथा अप्रत्यक्ष रूप से इहलोक और परलोक दोनों में आत्मिक विकास में सहायता प्रदान करे। जातक युग में भी अन्य युगों की भाँति मानव ने शिक्षा-पद्धति अपनायी थी जिसके माध्यम से उन्हें ज्ञान प्राप्त होता था।[3] शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सच्चे मार्ग का प्रदर्शन कराता है। प्राचीन भारत के मनीषियों ने भी मनुष्य के उच्च आदर्शों, अधिकारों, कर्त्तव्यों, मनोविज्ञान और गुणों के अनुरूप उसे श्रेष्ठ मानव बनाने का सफल प्रयास किया है यद्यपि वह परिसीमित ही था। वस्तुतः शिक्षा मनुष्य अन्तर्निहित अवगुणों और अमानवीय विकारों को मिटाकर उसे सभ्य बनाने का प्रयास करती है।

जातक साहित्य में भारतीय शिक्षा सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है जिससे उपाध्यायों, शिष्यों उनके जीवन और परस्पर सम्बन्धों शैक्षणिक संस्थाओं तथा अध्ययन के विषयों, विद्याओं, कलाओं और शिल्पों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है।

सामान्यतः शिक्षा उपनयन संस्कार से ही प्रारम्भ होती थी इस समय बालकों की आयु प्रायः सोलह वर्ष होती थी। सोलह वर्ष के उम्र में राजकुमारों को सभी विषयों की शिक्षा पूर्ण हो जाती थी।[4] यहीं से विद्यार्थी के विकास में नया जीवन भी प्रारम्भ होता था। तिलमुट्ठि जातक के अनुसार राजा अपने लड़कों को नगर में प्रसिद्ध आचार्यों के रहते हुए भी शिल्प सीखने के लिए

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२३ ; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२५
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९७
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २३८
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५९; जि० ४, पृ० ३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परदेश भेजते थे ताकि उनका मान मिथ्याभिमान हो जाए, सर्दी-गर्मी सहने की सामर्थ्य आ जाय तथा लोक व्यहार का ज्ञान प्राप्त हो जाय।[१]

प्रवेश :

जातक युग में आज की भाँति परीक्षा, उपाधि, प्रमाण-पत्र वा स्थानान्तरण पत्र जैसी चीजें न थीं। विद्यार्थियों के प्रवेश हेतु उनकी कड़ी परीक्षा ली जाती थी। इस अवसर पर विद्यार्थियों के चरित्र और बुद्धि दोनों की जाँच की जाती थी। मंद बुद्धि के विद्यार्थियों को भी अवसर दे दिया जाता था।[२]

गुरुकुल :

शिक्षा का अध्ययन गुरुकुलों में होता था।[३] अध्ययन काल में विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए रहना पड़ता था। वे लौकिक बन्धनों से मुक्त रहते थे और विद्यार्थी जीवन में न तो उसका विवाह ही होता था और न वे सन्तान ही उत्पन्न करते थे।[४] गुरुकुल अथवा आश्रम में विद्यार्थियों को सादा जीवन बिताना पड़ता था उन्हें फल-फूल और मूल द्वारा जीवनयापन करना पड़ता था।[५] बोये जोते हुए अनाजों को भी प्रायः त्यागना पड़ता था।[६]

लोक प्रसिद्ध आचार्य के आश्रम में ५०० शिष्य फल-फूल और मूल खाकर वेदों का अध्ययन करते थे।[७] विद्या केन्द्रों में शिष्ट व्यवहार की शिक्षा दी जाती थी।[८] स्पष्टतः शिक्षा के साथ-साथ आचार-व्यवहार का विशेष महत्व था। जगत् के कोलाहल से दूर आश्रमों और गुरुकुलों में ऋषियों, मुनियों और आचार्यों द्वारा विद्या के अतिरिक्त व्यवहार की भी शिक्षा मिलती थी।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ७
२. अल्टेकर, प्रा० भा० शि० प०, पृ० ६४
३. महावस्तु जि० २/२०३/८; जि० ३/५६/१७
४. महावस्तु जि० २/२०९/१०-१२; डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २१८
५. जा० अ ०हि० जि० १, पृ० ६२; डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २१८
६. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६८
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३९, ३००, ३१७, ४०५, ४३६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५७, ४३४, ४५८; जि० २, पृ० ६३; महावस्तु, जि० ३/३८२/१६-१७.
८. महावस्तु, जि० ३/४०५/१२-१३
९. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २१८-२१९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जातक युग में बौद्ध विहारों और मठों में भी भिक्षु, अर्हत और आचार्य शिक्षा देते रहते थे।[१] नालन्दा, तक्षशिला और काशी तथा श्रावस्ती प्रसिद्ध विद्या-केन्द्र थे। नालन्दा में सारिपुत्र ने व्याकरण का अध्ययन किया था।[२]

दिनचर्या :

शिष्यों की दैनिक चर्या भिन्न-भिन्न थी। यह कार्यक्रम प्रातःकाल से ही प्रारम्भ हो जाता था। आचार्य एवं शिष्य की सुविधा को ध्यान में रखकर ही अध्ययन का समय निश्चित रहता था। शुभ तिथि तथा अच्छी मुहूर्त (दिन) में ही शिक्षा कार्य होता था।[३] अध्ययन का समय प्रातःकाल होता था। जब मुर्गा बोलता था, उसी समय से छात्र उठते थे।[४] घड़ी के स्थान पर मुर्गे का प्रयोग होता था।

धर्म शिष्य आचार्य का काम करते थे और रात्रि में शिल्प सीखते थे।[५] उन्हें सभी प्रशस्त एवं शुभ नक्षत्र (दिनों) में शिक्षा प्रदान की जाती थी।[६] विद्यार्थी अपने गुरु के लिए वनों से जलाने के लिए लकड़ी एकत्रित करते थे।[७] निर्धन शिष्य जो दिन में आचार्य की गृहस्थी या खेतों में काम करते थे, रात्रि का अपना अधिकांश समय अध्ययन में लगाते थे।[८] विद्यार्थी गुरुकुल में गुरुओं की सेवा करते थे। उन्हें अनेक प्रकार की व्यावहारिक शिक्षा दी जाती थी।[९] शिष्य अपने गुरु की पूजा और उनका आदर करते थे।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध :

जातक युग में गुरु शिष्य सम्बन्ध घनिष्ट थे।[१०] शिष्य अपने गुरुओं का

---

१. दिव्यावदान, पृ० ९६/१५, १७०/१३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६१-६६
२. महावस्तु, जि० २/१८७/१
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८
४. ,, ,, २, पृ० ४१०; ,, ,, ३, पृ० १३०; मेहता, प्री० बु० इ०, पृ० ३०२
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८
६. ,, ,, २, पृ० २७८; ,, ,, ३, पृ० ८
७. ,, ,, १, पृ० ४४७; ,, ,, २, पृ० ७८
८. ,, ,, २, पृ० २७८; ,, ,, ३, पृ० ८
९. महावस्तु जि० ३।४०५।१२,१३
१०. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० १९९; पी० एन० चोपड़ा, डा० बी० एन० पुरी, एम० एन० दास, भा० का० सा० और आ० इ०, पृ० १६६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आदर गुरु-सेवा तथा सेवक की तरह श्रद्धापूर्वक सभी कार्य करते थे।[१] गुरु (आचार्य) शिष्यों से घिरे रहते थे।[२] राजा, माता-पिता तथा देवता की भाँति गुरु का सम्मान और आदर करना छात्रों का कर्तव्य माना जाता था। "तमग्नि-वच्चदेववच्च राजवच्च पितृवच्च मातृवच्चाप्रमत्तः परिचरेत।"[३]

शिष्य आचार्य की सेवा के व्रत को पूरा करते थे।[४] प्रातः समय से उठकर आचार्य का अभिवादन करना, सर्वदा उनसे नीचे आसन पर बैठना, भड़कीले वस्त्र न पहनना उनका कर्तव्य था।[५] शिष्य अपने गुरु की बहुत सेवा करते थे। परिवेष में झाड़ू लगाते, पीने और अन्य काम में लाने का पानी लाकर देते, दातौन पहुँचाने, मुख धोने तथा स्नान करने के लिए जल पहुँचाते थे। अग्नि-शाला तथा सोने बैठने के स्थान को ठीक से रखना, हाथ और पैर दबाना तथा पीठ मलना एवं शौचस्थान को ठीक रखना आदि कार्य करते थे।[६] गुरु भी अपने शिष्य का उपकार करते थे।[७] एक शिष्य ने अपने गुरु के लिए चारपाई के एक पावों का काम करना पड़ा था, उसने अपने जांघों का सहारा लेकर पूरी रात्रि बिता दी थी।[८] शिष्य अपने गुरुओं के लिए यज्ञ के लिए लकड़ियाँ और पत्ते भी वनों से लाते थे। गुरु के माता-पिता के, भोजन करने के समय पानी का बरतन ले जाते, थूकने का बरतन तथा दूसरे पात्र भी ले जाते थे, पानी और पंखा लेकर खड़े रहते थे। शौच के लिए जाते समय परदे की जगह तक पानी का बरतन लेकर जाते थे। इस प्रकार गुरु के प्रति वे कर्तव्यनिष्ठ होते थे।[९] खाद्य-सामग्री आदि भी तैयार रखने का कार्य करते थे, मनुष्यों को पानी भी देते थे।[१०]

---

१. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४४७; जि० २, पृ० ७८
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ५०-५१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २५१
३. अल्टेकर, प्रा० भा० शि० प०, पृ० ४४
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३१
५. अल्टेकर, प्रा० भा० शि० प०, पृ० ४४-४५
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १९०-९१
७. वही
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७८
९. ,, ,, १, पृ० ४४९, ४५२-५३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८१, ८५
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिष्य अपने आचार्य की माँ की भी सेवा करते थे। नहलाते, खिलाते, हाथ-पैर, सिर और पीठ दबाते (मलते) थे।[1] शिष्य गुरु परिवार के अभिन्न अंग थे।[2]

शिष्य लोग अपने आचार्य के पाँव धोते[3] हाथ से छाता, जूता और थैली आदि भी लेकर चलते थे।[4]

आचार्य और शिष्य दोनों ही अपने कर्तव्यों का पालन करते थे। जिससे जातक कालीन शिक्षा पद्धति में शिष्य के कर्तव्यों पर प्रकाश पड़ता है। वैभव-सम्पन्न राजकुमार भी आचार्य के निकट अध्ययन करने की अवधि में सादा जीवन व्यतीत करते थे। आचार्य कुल में उन्हें भी सबके समान सादा भोजन दिया जाता था।[5] आमन्त्रण होने पर ही विद्यार्थी रस, दधि तथा दूध के पके हुए स्वादिष्ट भोजन प्राप्त करते थे।[6]

आचार्य भी शिष्य के यहाँ जाते थे। ऐसे अवसर पर आचार्य प्रायः अपने पूर्व शिष्य के पठन-पाठन के विषय में विवरण प्राप्त करते थे।[7] आचार्य की अनुमति के बिना शिष्य नदी में स्नान करने के लिए भी नहीं जा सकते थे।[8] आचार्य शिष्यों की निवास की पूरी व्यवस्था करते थे। इससे ज्ञात होता है कि आचार्य सदैव अपने शिष्य की ज्ञान-वृद्धि के विषय में सोचते थे।

आचार्य अध्ययन के लिए उन्हीं विद्यार्थियों को चुनते थे जो सदाचारी, सच्चे, उत्साही होते थे। छात्र या तो गुरु के घर में रहते थे या उनकी देख रेख में रहते थे। गुरु और शिष्य के सम्बन्ध अच्छे थे।[9] आचार्य शास्त्रकर्त्ता कहलाते थे।[10]

---

१. जा० अ० रो जि० १, पृ० २८६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१७-१८
२. ,, ,, ४, पृ० २०१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४००
३. ,, ,, २, पृ० ४७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २१६; जि०, पृ० २५२
४. ,, ,, ४, पृ० ५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २५५
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४५९
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४४८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ७९
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४३६
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८
९. सो० १८/२-२०
१०. दिव्यावदान, ३७०/९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आचार्य शिष्यों का आतिथ्य सत्कार भी करते थे।[१] विद्या सिखाते समय विद्या को छिपाकर नहीं रखते थे, जो-जो जानते थे वह सब सिखा देते थे।[२] आचार्य शिष्यों के साथ भिक्षार्थ को भी जाते थे[३]। आचार्य विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए श्रेष्ठ विद्यार्थी को पूरे विद्यार्थी सौंप देते थे।[४] "जब तक मैं बाहर जाऊँगा और लौटकर न आऊँ तब तक विद्यार्थियों को पढ़ाना।" एक बार गाँव के लोगों ने आचार्य को पाठ (सूत्र-पाठ) करने का निमन्त्रण दिया, इन्होंने शिष्य को बुलाकर कहा, "मैं नहीं जाता हूँ तुम इन पाँच सौ ब्रह्मचारियों को लेकर, वहाँ जाकर पाठ समाप्त करने पर हमारा हिस्सा ले आना"।[५]

शिष्य आचार्य से एक दूसरे की शिकायतें भी करते थे।[६] आचार्य अपने शिष्यों से कहते थे कि किस प्रकार से जाना, आना, देखना, पहनना, सिकुड़ना, परसना, ओढ़ना, पात्र लेना, गुजारे भर ले, प्रत्यवेक्षणा कर भोजन, इन्द्र-संयमी, भोजन में मात्रज्ञ, जागरूक, अतिथि कर्तव्य, जाने वालों का कर्तव्य आदि जानना चाहिए। यह चौदह अनुकर्तव्य तथा अस्सी महाकर्तव्य को सम्यक् प्रकार से करना तथा तेरह धुतङ्ग गुणों को धारण करना चाहिए।[७] प्रसिद्ध आचार्य लोग पाँच सौ विद्यार्थियों को शिल्प सिखाते समय तिल-तंडुल, तेल, वस्त्र आदि लेकर हिमालय प्रदेश में जंगल में रह कर पढ़ाते थे।[८]

आचार्य अपने शिष्य से उनके स्वाध्याय के सम्बन्ध में पूछताछ किया करते थे। एक शिष्य अपने आचार्य को सूचित करता है कि समावर्तन के कुछ समय बाद मेरा अध्ययन क्रम चलता रहा पर विवाह के बाद मुझे वैदिक मंत्र विस्मृत हो गये, शीघ्र ही मैं कंठस्थ कर स्वाध्याय चालू कर दूँगा।" इस प्रकार छात्र जीवन की समाप्ति के अनन्तर भी गुरु और शिष्य की घनिष्टता में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आती थी।[९]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ७
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२४
३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४६१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १२१
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ५२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २५२
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १७१; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३३३
६. ,, ,, ३, पृ० ४८६; ,, ,, ४, पृ० १४५-१४६
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ४८३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १४१
८. ,, ,, ३, पृ० ५३७; ,, ,, ४, पृ० १९७
९. ,, ,, २, पृ० ९९-१००; ,, ,, २, पृ० २८०-२८१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुरु अपने सर्वश्रेष्ठ शिष्य को अपनी कन्या व्याह देते थे।[१] इन उपर्युक्त सुन्दर सम्बन्धों के साथ जातकों में कहीं-कहीं दोनों के कटु सम्बन्ध भी उल्लिखित हैं। शिष्य कभी-कभी गुरुओं के साथ प्रतियोगिता भी करते थे और शास्त्रार्थ करने के लिए गुरुओं को ललकारते थे, ऐसे कृतघ्न शिष्य समाज में बड़ी हेय दृष्टि से देखे जाते थे।[२] शिष्य आचार्य के साथ झगड़ा भी करते थे।[३] आचार्य शिष्यों को पीटते भी थे।[४] इन कुछेक अपराधों के साथ-साथ आचार्य का यह सम्मानीय था, उन्हें महान कहा गया है।[५] शिष्य का कर्तव्य है कि वह अपने आचार्य को पितृ तुल्य और मातृ-तुल्य माने और किसी भी अवस्था में उसके प्रति द्रोह न करो।[६]

लेखन सामग्री :

जातक साहित्य में बहुधा अक्षरों को खोदने की प्रथा थी। ये अक्षर—स्वर्ण मालाओं, कुण्डल, स्वर्णपादुका, खड्ग, तीर, वस्त्रों आदि पर भी पाये गये हैं।[७]

जातकों से पता चलता है कि साधारणतया लोग पत्र[८] (चिट्ठी) लिखना और पढ़ना जानते थे।[९] कलम का प्रयोग किया जाता था विशेषकर धनी लोग

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २१९; जि० ६, पृ० ३४७, जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३८०-३८१; जि० ६, पृ० ३९३
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५०-२५३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५८-४६१
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २२३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२५
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १३०, २७८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३१५; जि० ३, पृ० ८
५. जा० अ० रो० जि०, २, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४७०
६. डा० मङ्गलदेव शास्त्री, भा० सं० का० वि०, पृ० ५७
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९०; जि० ६, पृ० ३९०, ४०८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २६८; जि० ६, पृ० ४३७, ४५२
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५१, ४५३; जि० २, पृ० १७३-१७४; जि० ४, पृ० ५५, १२४, १४५; जि० ६, पृ० ३६९, ३८५, ४००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८४, ८६, ३६७; जि० ३, पृ० ९४, १७१; जि० ४, पृ० २५५, ३२६, ३४६; जि० ६, पृ० ४१५-१६, ४३१, ४४५
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लिखने के लिए स्वर्ण पत्रों[१] (सोने के पट्टे, तख्ती) का प्रयोग करते थे, उन्हें अक्षर खोदने की रुखानी[२] से खोदा जाता था। दीवारों तथा कड़ी वस्तुओं पर अक्षर खोदने के लिये रुखानी का प्रयोग किया जाता था।[३]

मोहरों का प्रयोग अधिकांशतः अंगूठी, यंत्र और धन से भरी लोहे की गागरों में किया जाता था।[४] पत्रों को राजकीय मोहर लगाकर भी दूसरे स्थानों को भेजा जाता था।[५] डा० थपलियाल के अनुसार अँगूठी (मुद्रा) का प्रयोग जमानत के रूप में भी किया जाता था।[६]

पालि भाषा साधारणतया लोग लिखने-पढ़ने के लिए करते थे। लेख पत्रों (पण्णं) पर लिखे जाते थे।[७] तथा एक राजा दूसरे राजा को पत्र भेजते थे।[८] झूठे पत्र या झूठी मोहर के द्वारा भी पत्र भेजा जाता था।[९] मोर जातक के अनुसार एक राजा ने एक सोने के पट्टे पर लिखाया था कि "हिमालय प्रदेश में दण्डक-हिरण्य नाम का पर्वत है। वहाँ सुनहरे रंग का मोर रहता है, जो उसका मांस खाते हैं वे अजर-अमर हो जाते हैं।"[१०] सोने की तख्ती पर सिन्दूर

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६, ३७१-३८१; जि० ४, पृ० ७, २५७, ३३५, ४४८; जि० ५, पृ० १२५; जि० ६, पृ० २९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २०३; जि० ३, पृ० ९३-१०१; जि० ४, पृ० २०८, ४६०, ५४१; जि० ५, पृ० ७७, २०६; जि० ६, पृ० ३२
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६१०
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८, ७९; जि० ४, पृ० ४८९; जि० ६, पृ० ५२०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६४, १५१; जि० ५, पृ० ७८; जि० ६, पृ० ५६६
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३४, २२७; जि० २, पृ० १७४; जि० ६, पृ० ३८५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २२१, ३४२; जि० २ पृ० ८४, ३६७; जि० ६, पृ० ४३१
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १७४; जि० ४, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३६७; जि० ४, पृ० ३२६
६. स्टडीज़ इन एन्शियन्ट इण्डियन सील्स, पृ० ३४३
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५१-५२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८४; जि० ६, पृ० ४१५
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४६
९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १२४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३२६
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३६; जि० ४, पृ० ३३५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २०३; जि० ४, पृ० ५४१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से प्रश्नों का उत्तर लिखकर भेजते थे।[1] रानियाँ भी पत्र लिखती थीं तथा उसे लड्डू के अन्दर रखकर धागे से बाँधकर, सुगन्धित करके तथा मोहर लगाकर भेजती थीं।[2] पत्रों को सरकण्डे में बाँधकर संदेश भेजा जाता था।[3] महाबोधि परिव्राजक तथा देवी परस्पर एक दूसरे को पत्र (चिट्ठी) भेजते थे।[4] राजा लोग सोने की पाटी पर घोषणा करके उसे खम्भे पर बाँध देने का आदेश देते थे।[5]

इस प्रकार से हम देखते हैं कि जातक युग में स्वर्ण पत्रों का प्रयोग बहुधा किया जाता था। जिसका मूल्य एक लाख भी होता था।[6]

पाठ्य-विषय :

जातकों में प्रमुखतः अट्ठारह विद्याओं की शिक्षा का बोध होता है।[7] अधिकांश विद्यार्थी शिल्प अथवा शास्त्रों को ही अपने पाठ्यक्रम में चुनते थे।[8]

वेद-ज्ञान :

विद्यार्थी तीनों वेदों का अध्ययन (ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद) करते थे।[9] वेदपाठी (अध्यापक) मन्त्रधर, तीनों वेदों में पारंगत, लक्षण, इतिहास और सद्धर्म में पूर्णतः प्राप्त ब्राह्मण होते थे।[10] उत्तमाचार्य तीनों वेदों को पढ़ाते थे।[11]

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ६७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १५४
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३८५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३१
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४००; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४४५
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २३५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३२०
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४८८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ७७
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ५८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १४६
७. (१) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, (२) स्मृति, (३) व्याकरण, (४) छन्दोविचिति, (५) निरुक्ति, (६) ज्योतिष, (७) शिक्षा, (८) मोक्ष-ज्ञान, (९) क्रियाविधि, (१०) धनुर्वेद, (११) हस्तिशिक्षा, (१२) कामतन्त्र, (१३) लक्षण, (१४) पुराण, (१५) इतिहास, (१६) नीति, (१७) तर्क तथा (१८) वैद्यक यह अट्ठारह विद्याएँ हैं—जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८३
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५६; जि० २, पृ० ९९; जि० ३, पृ० १८; जि० ४, पृ० ४५६
९. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३८३
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५७
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८, ५५, ३४३, ३६९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वेदांग :

वेदों के साथ ही साथ वेदांगों का भी अध्ययन किया जाता था। शिक्षा, कल्प, निरुक्ति, छन्द, व्याकरण और ज्योतिष ये छः वेदांग थे।[1]

ज्योतिष :

मानव जीवन में ज्योतिष का विशेष महत्व था। इससे नक्षत्रों और ग्रहों का ज्ञान होता था।[2]

ज्योतिष के अतिरिक्त अन्य विद्याओं तथा विषयों, लक्षण, मंत्र-विद्या[3], भूत-विद्या[4], अंग-विद्या[5], योग-विधि[6], विष-विद्या[7], शिल्प-ज्ञान[8], शरीर-लक्षणों[9], गाली सम्बन्धी, शिक्षा पद[10], आदि की शिक्षा प्रचलित थी। जातक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि निम्नलिखित अन्य विद्याओं और विषयों का अध्ययन और अध्यापन प्रचलित था।

आयुर्वेद :

आयुर्वेद का अध्ययन काफी विकसित अवस्था में था, जैसा कि भिन्न-भिन्न अंगों और उपांगों के औषधि-ज्ञान के उपचार से प्रतीत होता है।

पशु-शिक्षा :

मनुष्यों की ही भाँति पशुओं की चिकित्सा की भी शिक्षा दी जाती थी।

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४७६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५५२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १८३, २५३-५४, २५८, ३७४
३. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४५६-५७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४४
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५०२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५४५
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१; जि० ५, पृ० ४५८, ४८४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८६; जि० ५, पृ० ५३७, ५६१
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १४९, २५६; जि० ४, पृ० ३२९, ४०१; ४९०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३१२; जि० ४, पृ० १८६, ५३४, ६०८; जि० ५, पृ० ७९, ९७
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १८१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २१६
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १९३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २२९
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५८, २२०; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२१, ३८१
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५३०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सैनिक अधिकारी अश्वों और हस्तियों की चिकित्सा के लिए इन्हें नियुक्त करते थे। इस प्रकार से हस्ति शिक्षा[1] और अश्व शिक्षा[2] का भी प्रचलन था।

नाविक विद्या :

नाविक विद्या की भी शिक्षा दी जाती थी। लोग नाविक विद्या में पारंगत होते थे।[3]

सैनिक शिक्षा :

सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। तक्षशिला राजकुमारों को सैनिक शिक्षा देने का प्रसिद्ध केन्द्र था। युद्ध विद्याओं यथा हस्ति-परिचालन, अश्वारोहण तथा विभिन्न आयुधों के परिचालन की शिक्षा दी जाती थी।[4] तलवार के लक्षण भेद के भी जानकार थे।[5]

धनुर्विद्या :

धनुर्विद्या का काफी प्रचलन था। अक्षण वेध, बाल वेध तथा बारह प्रकार के शिल्प का प्रदर्शन किया जाता था।[6] ज्योतिपाल धनुर्विद्या में पारंगत था।

सूत्रों की शिक्षा :

सूत्रों के अन्तर्गत तीनों पिटक (सूत्र-पिटक, विनय-पिटक तथा अभिधर्म पिटक) की भी शिक्षा दी जाती थी।[7] तथा आठों समाप्तियों और पाँचों अभिज्ञाओं का भी ज्ञान प्राप्त था।[8] स्वर से सूत्र पाठ किया जाता था।[9]

मन्त्रों की भी शिक्षा होती थी तथा उन्हें क्रम से पढ़ाया जाता था।[10]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३४२; जि० २, पृ० ९४, ९५, २२१, २२२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७३-७४, ४२४-२५; जि० १, पृ० ४८७
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७९
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १३७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३३८
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३९८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९१
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५८; जि० ५, पृ० १२९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२७; जि० ५, पृ० २११-२१२
७. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९१, १०८, जि० ४, पृ० २३६, ४३७, ४५८
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३०, २४५, २८९
९. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १०९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २९१
१०. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २८०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण मन्त्र पाठी होते थे।[१] तथा पटिसम्पदा ज्ञान प्राप्त होते थे।[२] कुछ सूत्रों के नाम इस प्रकार हैं—महागोविन्द सूत्र (महागोविन्द सुत्त)[3], आदित्य-परियाय सूत्र (आदित्य-परियाँ)[४], घोतक सकुणोवाद सूत्र (सकुणोवादसुत्तं)[५], महावग सूत्र (महावग्ग सुत्तं)[६], मेत्तसूत्र (मेत्तसुत्तं)[७], अत्तदण्ड सुत्त (अतदण्डसुत्तं)[८], मूलपरियाय सुत्त (मूलपरियायसुत्तं)[९], जनपदकल्याणी सूत्र (जनकल्याणीसुत्तं)[१०], कामसूत्र (कामसुत्तं)[११], हस्तिसूत्र (हस्तिसुत्तं)[१२]।

गणित :

गणनाशास्त्र का ज्ञान प्राप्त था। उँगलियों पर गिनना वे अच्छी तरह से जानते थे।[१3] तथा तख्ती पर वे लिखना-गिनना जानते थे।[१४] अंक विद्या में होशियार होते थे।[१५]

इतिहास :

इतिहास का भी पठन-पाठन होता था।[१६] अर्थधर्मानुशासक ज्ञानी थे।[१७] इन विषयों के अतिरिक्त आगमशास्त्र[१८], नीतिशास्त्र[१९], गन्धर्व शिल्प जिसमें सात

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७
२. ,, ,, २, पृ० १४२; ,, ,, २, पृ० ३२९
३. ,, ,, ३, पृ० ४६९; ,, ,, ४, पृ० १२९
४. ,, ,, ४, पृ० १८०; ,, ,, ४, पृ० ३७९
५. ,, ,, २, पृ० ५८; ,, ,, २, पृ० २३०
६. ,, ,, २, पृ० ५८; ,, ,, २, पृ० २३०
७. ,, ,, २, पृ० ६०; ,, ,, २, पृ० २३३
८. ,, ,, ५, पृ० ४१३; ,, ,, ५, पृ० ४९८-५००
९. ,, ,, २, पृ० २५९; ,, ,, २, पृ० ४६८
१०. ,, ,, १, पृ० ३९३; ,, ,, १, पृ० ५५६
११. जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३६८
१२. ,, ,, २, पृ० २१६
१३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६२; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९६
१४. ,, ,, १, पृ० ४५२; ,, ,, २, पृ० ८४
१५. ,, ,, १, पृ० २९०; ,, ,, १, पृ० ४२३
१६. ,, ,, १, पृ० ३; ,, ,, १, पृ० ५७
१७. ,, ,, ४, पृ० १९७; ,, ,, ४, पृ० ३९६
१८. ,, ,, १, पृ० ३५६; ,, ,, १, पृ० ५०६
१९. ,, ,, ५, पृ० ४९०; ,, ,, ५, पृ० ५६६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तारों वाली सुमधुर रमणीक वीणा दिखाई जाती[१], चिन्तामणि शिक्षा[२], शास्त्रार्थ की शिक्षा[३], सार्त्थवाह शिक्षा[४] की विद्याएँ प्रचलित थीं।

इस प्रकार से स्पष्टतः कहा जा सकता है कि जातक युग में विद्या उन्नत दशा में थी तथा उसका राष्ट्रीय जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था। निदान कथा में एक स्थान पर कहा गया है—"ऐसा कोई हुनर नहीं जो मुझे मालूम न हो।"[५] इन विद्याओं के साथ चाण्डाल भाषा[६], मृगभाषा[७], स्त्री भाषा[८] पढ़ाई जाती थी।

शुल्क :

शिष्य गुरुओं को कभी-कभी शिक्षा शुल्क भी देते थे। यह शुल्क हजार मुद्राओं से दो हजार मुद्राओं तक दिया जाता था।[९] निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति देकर शिल्प सिखाया जाता था। निःशुल्क शिक्षा भी दी जाती थी।[१०] दिव्यावदान में भी एक उपाध्याय की पत्नी को शिष्य द्वारा पाँच सौ कार्षापण देने का उल्लेख मिलता है।[११] जो विद्यार्थी शिक्षा शुल्क देते, आचार्य के घरों में उनके ज्येष्ठ पुत्रों की भाँति रहते थे। ऐसे छात्रों से गृहस्थी के कोई भी कार्य नहीं लिया जाता था। 'धम्मान्तेवासी' अर्थात् मुक्तशुल्क विद्यार्थी आचार्य की गृहस्थी के सभी कार्य करते थे।[१२]

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २९२-९३; जि० २, पृ० २४८-५४;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२५, २४६; जि० २, पृ० ४५६-४६२
२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ५०४; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० १६५
३. ,, ,, ३, पृ० १-२; ,, ,, ३, पृ० १७२-७३
४. ,, ,, १, पृ० १९४; ,, ,, १, पृ० ३०१
५. ,, ,, १, पृ० ३२; ,, ,, १, पृ० ९४
६. ,, ,, ४, पृ० ३९१; ,, ,, ४, पृ० ५९९
७. ,, ,, १, पृ० १५९, १६३, १६४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५४, २५९, २६०
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १८७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३८७
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७३, २८५; जि० ४, पृ० ३८, ५०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४००, ४१७; जि० ४, पृ० २३८, २५१
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५७-५८
११. दिव्यावदान, १५।३।६
१२. जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ८ धर्मशिष्य (बिना फीस चुकाये आचार्य की सेवा करके पढ़ने वालों को धर्म अन्तेवासिक कहते थे)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिक्षा के केन्द्र

जातक युग में छात्रों के विद्याध्ययन करने हेतु निम्न केन्द्र प्रमुख थे।

तक्षशिला :

गान्धार देश के तक्षशिला नगर की प्रसिद्ध एक विशाल विश्वविद्यालय और शिक्षा केन्द्र के रूप में सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में फैली हुई थी।[१] तक्षशिला में उच्चशिक्षा की व्यवस्था होती थी और वय प्राप्त होने अथवा सोलह वर्ष की आयु हो जाने पर ही विद्यार्थी वहाँ पर विद्याध्ययन के हेतु आते थे।[२] तक्षशिला विद्या का प्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ पर तीनों वेद और अट्ठारह[३] विद्याओं की शिक्षा दी जाती थी।[४] इस विद्यालय में शिक्षा पाने के लिए काशी[५], राजगृह[६], मिथिला[७] और उज्जयिनी[८] जैसे सुदूर नगरों से विद्यार्थी आते थे। शिवि, कुरु और कोशल के भी विद्यार्थी तक्षशिला में अध्ययन करते थे।[९] तक्षशिला में एक सौ राजधानियों के क्षत्रिय-ब्राह्मण कुमार विद्या सीखने आते थे।[१०] बनारस के राजपुरोहित का पुत्र जोतिपाल तक्षशिला से धनुर्विद्या तथा

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७३, २८५; जि० ३, पृ० १५८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४००, ४१६; जि० ३, पृ० ३२१
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३५६, ४३६, ५०५; जि० २, पृ० ५२, १६२, १९३, २२७
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५७; मुकर्जी, आर० के० ए० ई० ए०, पृ० ४७८
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २५९, २८५, ३५६, ४०२, ४६४; जि० २, पृ० ८७; जि० ३, पृ० ११५, १२२, ५३७-८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २७२, २८५, ४०९; जि० २, पृ० ८५, ८७; जि० ४, पृ० ५०, २२४; जि० ५, पृ० १२७, २६३
६. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३८; जि० ५, पृ० २४७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९७; जि० ५, पृ० ३३१
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१६; जि० ६, पृ० ३४७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२१; जि० ६, पृ० ३९३
८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९०, ३९२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९८-६००
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २१०; जि० ३, पृ० ४००
१०. ,, ,, १, पृ० ४६३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

युद्धविद्या का पूर्ण ज्ञाता होकर लौटा और बनारस का मुख्य सेनापति नियुक्त हुआ था।[१]

प्रत्येक अध्यापक के आधीन बहुत से विद्यार्थी होते थे, जिनकी संख्या पाँच सौ होती थी।[२] इन विद्यार्थियों में अधिकांश क्षत्रिय तथा ब्राह्मण विद्यार्थी होते थे।[३] वैश्यों तथा उच्च कर्मचारियों के पुत्रों की संख्या बहुत कम होती थी।[४] शूद्रों और चण्डालों का प्रवेश सर्वथा निषिद्ध था।[५]

कोशल के राजा प्रसेनजित जो बुद्ध के समकालीन थे, की शिक्षा भी तक्षशिला में ही हुई थी।[६] गौतम बुद्ध के समकालीन सर्वोच्च चिकित्सक जीवक ने यहीं पर सात वर्षों तक आयुर्वेद का अध्ययन किया था।[७] सम्राट् बिम्बिसार ने उसे राजवैद्य नियुक्त किया था।[८] समग्र भारतवर्ष के क्षत्रिय एवं ब्राह्मण कुमार शिल्प सीखने के लिए तक्षशिला के आचार्यों के पास जाते थे।[९]

तक्षशिला की सभ्यता संसार की अन्य सभ्यताओं के बीच में सर्वोच्च पद ग्रहण करती थी। कौटिल्य आदि राजनीतिज्ञ तथा भृत्य कौमारजीवक जैसे शल्य चिकित्सक इसी विश्वविद्यालय में अध्यापक थे। यहाँ पर देश-विदेश से अनेक विद्यार्थी आकर वेद, धर्मशास्त्र आदि अट्ठारह विद्याओं का अध्ययन करते थे।[१०]

तक्षशिला के अवशेष आज भी मिलते हैं। प्राकृतिक दृश्य रमणीक था,

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १२७; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २०९
२. ,, ,, १, पृ० २३९, ३००, ३१७, ४०२, ४३६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५७, ४३४, ४५८; जि० २, पृ० ६३
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६३; जि० २, पृ० १००, जि० ३, पृ०, १२२, १५८
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९९; जि० ४, पृ० ३८, २३७; जि० ५ पृ० २२७
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९१-९२
६. धम्मपद अट्ठकथा १, ३३७-३३८
७. महावग्ग, पृ० २८७/२३-२८
८. डा० विमल चन्द्र पाण्डेय, भा० व० का सा० ड०, पृ० ३९५
९. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १५८; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३२१
१०. शिवशेखर मिश्र, भा० का सां० वि०, पृ० १६८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसके समीप ही एक नदी बहती थी। विद्यालय भवन पहाड़ियों पर बने थे।[१]

काशी :

काशी नगर भी शिक्षा का प्रमुख केन्द्र थी। यहाँ के प्रख्यात आचार्य भी पाँच सौ शिष्यों को एक साथ शिक्षा प्रदान करते थे।[२] बोधिसत्व स्वयं आचार्य थे। काशी के विद्यालय में कुछ विषयों की शिक्षा विशेष रूप से दी जाती थी जिसमें संगीत मुख्य था।

"वाराणसियं गुत्तिलकुमारो वयव्यतो गन्ध व्वसिव्ये निप्फत्ति पत्वा गुत्तिल गन्धवो नाम सकल जम्बूद्वीपे अघ्य गन्धव्वो अहोति।"[३]

सुदीर्घ काल तक विद्या के केन्द्र के रूप में तक्षशिक्षा काशी से अधिक महत्वपूर्ण रहा। स्वयं वाराणसी के अनेक राजाओं ने अपने राजकुमारों को तक्षशिला में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा था तथा काशी के प्रसिद्ध आचार्य तक्षशिला में स्नातक थे।

"तक्कसिल गत्वा सव्व सिप्पणि उग्गहिणत्वा वाराणसिय दिसापामो आचारियो हुत्वा पंचमाणवकसतानि।"[४]

कोसिय तथा तितिर जातक से पता चलता है कि काशी के प्रसिद्ध आचार्य तीनों वेद तथा अट्ठारह शिल्पों का अध्ययन करते थे।[५] उत्तर भारत में काशी सबसे महत्वपूर्ण विद्या केन्द्र थी।[६] यह उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध नगर वाराणसी है।

श्रावस्ती :

श्रावस्ती भी विद्या का केन्द्र थी। यहाँ पर भी विद्यार्थी शिल्प सीखने के लिए आते थे। श्रावस्ती में तीनों वेदों का जानकार एक ब्राह्मण कुमार बहुत से क्षत्रिय तथा ब्राह्मणकुमारों को वेद पढ़ाता था।[७]

---

१. डा० रामजी उपाध्याय, भा० की० सं० सा०, पृ० ८२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २३९, ५१०; जि० २, पृ० २६०; जि० ३, पृ० १८, २३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३५७-५८; जि० २, पृ० १६०, ४६८; जि० ३, पृ० १८८, ३९२
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २४८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४५८
४. ,, ,, १, पृ० ३५६, ५१०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०६; जि० २, पृ० ९८
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६३; जि० ३, पृ० ५३७; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९८; जि० ४, पृ० १९७
६. अल्टेकर, प्रा० भा० शि० प०, पृ० ८७
७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २८०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रावस्ती के जेतवन-बिहार का निर्माण अनाथपिण्डिक ने गौतम बुद्ध के जीवनकाल में कराया था। इसमें एक सौ बीस भवन और अनेक शालायें थीं। पुस्तकालयों में बौद्धधर्म की पुस्तकों के अतिरिक्त वैदिक तथा अन्य विचारधाराओं के ग्रन्थों का संग्रह भी किया जाता था।[1]

साहित्य और साहित्यकार :

जातकों के अध्ययन से तत्कालीन साहित्य और साहित्यकारों का ज्ञान प्राप्त होता है। पालि भाषा विशेष रूप से लिखने का माध्यम थी तथा पालि भाषा में ही कहानियाँ लिखी जाती थीं। पाली में ही गाथाओं की रचना की जाती थी।[2] गाथाओं के द्वारा ही उपदेश दिये जाते थे।[3] गाथाओं के सम्बन्ध में कहा गया है कि इनका मूल्य सौ से लेकर हजार तक होता था।

> "सहस्सियों इमा गाथा न इमा गाथा सतारहा
> चतारि त्वं सहस्सानि खिप्पं गण्हाहि ब्राह्मणलि"[4]

यद्यपि संस्कृत बोली जाती थी परन्तु ऊँचे लोगों में ही प्रचलित थी।[5] जातक साहित्य के अन्तर्गत कथा, गाथा, सूत्र, नाटक, वेदांग, ज्योतिष, काव्य आदि का भी वर्णन मिलता है। चाण्डाल भाषा भी बोली जाती थी।[6] साहित्य के अन्तर्गत कवियों ने तथा वेदांगों पर आख्यान तथा गाथायें लिखी।[7] हत्थि-सुत्तम में भी हितिथ उल्लेख मिलता है।[8] कविकार विचारपूर्ण तथा सुन्दर ढंग से गाथा, काव्य (गीतों) की रचना करते थे।[9]

---

१. डा० रामजी उपध्याय, भा० की सं० सा०, पृ० ९२
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३५३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३९८
३. ,, ,, ५, पृ० ४८४; ,, ,, ५, पृ० ५६१
४. ,, ,, ५, पृ० ४८४; ,, ,, ५, पृ० ५६१
५. मेहता, रतीलाल; प्री० बु० इ०, पृ० ३०६
६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३९१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५९९ बुद्धिस्ट इण्डिया राइज डेविड, पृ० १४०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६९; जि० २, पृ० ४६-४७; जि० ३, पृ० २३७, ५३७; जि० ४, पृ० ३००, ३८५; जि० ५, पृ० ४६६, ४५०, ४७६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२३; जि० २, पृ० २१६; जि० ३, पृ० ३९६; जि० ४, पृ० १९८, ५०४, ५९३; जि० ५, पृ० ५४४, ५२९, ५५२
८. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ४६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २१५
९. ,, ,, ४, पृ० २८३; जि० ६, पृ० ४१०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४८७; जि० ६, पृ० ४५४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाउम्मग्ग जातक में "चूलनी ब्रह्मदत्त ने कवियों को बुलाकर बहुत सा धन दिया और उन्हें लड़की दिखाकर कहा कि इसके सौन्दर्य के सम्बन्ध में काव्य रचना करो। बहुत सुन्दर गीत बनाकर राजा को सुनाये गये। कवियों से नाटक करने वालों ने सीखकर उन गीतों को रास लीलाओं में गाया। इस प्रकार से गीत फैल गये। राजा ने गवैयों को बुलाकर कहा कि "तुम पक्षियों की गर्दन में कांसे की पत्तियाँ बाँधो जिससे पक्षियों के उड़ने से आकाश में कांसे के बजने की आवाज सारे नगर में फैल जाए।"[१] राजा कवियों को बुलाकर घर में मजलिस भी लगाते थे।[२] राजा स्वयं भी गीतकार होते थे।[३] जयद्दिस जातक में राजा ने नन्द नाम के ब्राह्मण से गाथाएँ सुनकर उसे चार हजार दिये थे।[४] पदकुसल जातक में एक स्त्री ने अपने स्वामी से गीत की याचना की थी और कहा कि मैं लोगों को गीत सुनाकर जीविका चलाऊँगी।[५] चित्तसम्भूत जातक में राजा के मंगल गीत को समझकर रनिवास की स्त्रियाँ तथा गन्धर्व उसी गीत को गाते थे।[६] गवैये (गन्धर्व) गीत गाते थे। विशेषकर द्यूत-मण्डल में पासा फेंकते समय गीत गा-गा कर फेंकते थे।[७] देवेन्द्र मुनि शास्त्री के अनुसार जैन और वैदिक साहित्य में जिस प्रकार संगीत कला का वर्णन मिलता है उसी प्रकार जातक-साहित्य में भी प्राप्त होता है।[८]

कथाओं में ज्योतिष का भी उल्लेख मिलता है।[९] गणना-शास्त्र अच्छी तरह से विकसित था। ज्योतिषशास्त्र तथा दैविकशास्त्र दोनों ही विकसित थे। भिन्न-भिन्न प्रकार के नक्षत्रों का ज्ञान प्राप्त था। गन्धार जातक में एक स्थान पर चन्द्रमा को राहु ने ग्रस लिया, चन्द्रप्रभा विलीन हो गई। अमात्यों को चन्द्रमा का प्रकाश नहीं दिखाई दिया। उन्होंने चन्द्रमा के ग्रस जाने की बात राजा से कही।[१०] पञ्चूपोसथ जातक में कहा गया है 'मैं उसमें से ऐसा निकला मानो

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४११; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४५४
२. ,, ,, ६, पृ० ४११; ,, ,, ६, पृ० ४५४
३. ,, ,, ३, पृ० ४०९; ,, ,, ४, पृ० ६९
४. ,, ,, ५, पृ० २५; ,, ,, ५, पृ० ११४
५. ,, ,, ३, पृ० ५०७; ,, ,, ४, पृ० १६७
६. ,, ,, ४, पृ० ३९३; ,, ,, ४, पृ० ६००
७. ,, ,, १, पृ० २९३; जि० ६, पृ० २८१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२६; जि० ६, पृ० ३२०
८. साहित्य और संस्कृति, पृ० १७६
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९६; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३७७
१०. ,, ,, ३, पृ० ३६५; ,, ,, ४, पृ० २७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राहु के मुख से चन्द्रमा निकला हो"[1] धत .ातक में "मैं वह शश चाहता हूँ जो शश चन्द्रमा में है मुझे वह उतरवा दे"।[2] नक्षत्र की घोषणा होने पर भेरी बजाकर तथा शंख बजाकर कमाते थे।[3] मङ्गल जातक में कहा गया है—इस प्रकार का चन्द्रग्रहण होगा, सूर्यग्रहण होगा, नक्षत्र ग्रहण होगा, तारा उल्का गिरेगा तथा इस प्रकार का दिशा-दाह होगा।[4] इस प्रकार से हम देखते हैं कि जातक साहित्य में लोगों को नक्षत्रों का ज्ञान भलीभाँति ज्ञात था।

इस विस्तृत क्षेत्र में भाषा और लिपि के अतिरिक्त यह भी ज्ञात होता है कि जातक युग में पुस्तकों (पोत्थक) का भी निर्माण होता था।[5] महासुतसोम जातक में एक स्थान पर कहा गया है कि इस सुन्दर पुस्तक में सौ-सौ के मूल्य की चार गाथाएँ हैं।[6] सेतुकेतु जातक में इसी प्रकार लिपटी हुई पोथी का उल्लेख हुआ है।[7]

जातक युग में जिस प्रकार से साहित्य का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है ठीक उसी प्रकार से उस युग के साहित्यकारों का भी उल्लेख मिलता है। वेद ज्ञानी उत्तमाचार्य होते थे।[8] महाशाल दिशा प्रसिद्ध आचार्य थे।[9] तीन वेदों के ज्ञाताओं को त्रिवेदज्ञ कहते थे।[10] तुण्डिल जातक में राजा के मरने के पश्चात् तथा शरीर कृत्य समाप्त करवाकर निर्णयों को पुस्तक में लिखवाकर कहा—

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३३१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५३७
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ८५; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८७
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २८३, २८४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४१३, ४१४
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३७४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५२९
५. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९२; जि० ५, पृ० ४८३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४३; जि० ५, पृ० ५५९-५६०
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४८३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५५९-५६०
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २३५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३९५
८. ,, ,, ४, पृ० ३७९; ,, ,, ४, पृ० ५८७
९. ,, ,, ६, पृ० ३२; ,, ,, ६, पृ० ३७
१०. ,, ,, १, पृ० १६६; ,, ,, १, पृ० २६३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस पुस्तक को देखकर मुकदमें का फैसला करो।[1] महाउम्मग्ग जातक से पता चलता है कि पुरोहित सभी लक्षणों का ज्ञान तथा सभी जानवरों की भाषा का ज्ञाता था, वह सब शास्त्रों को जानता था तथा उनका भाष्य कर्ता था।[2]

नन्द[3], महाकाश्यप सम्यक सम्बुद्ध[4], अग्निभारद्वाज[5], महामोग्गल्लान स्थाविर[6], अनुरुद्ध, आनन्द, सारिपुत्र धर्मसेनापति[7], चुल्लधम्मपाल, उपसेन, महानाम, वज्रबुद्धि (वजिर बुद्धि) क्षेम (खेम) धर्म श्री (धम्मसिरि) और महास्वामी (महासामि)[8], प्रसिद्ध साहित्यकार थे।

जातकों के अध्ययन से उस समय की शिक्षा की स्थिति का स्पष्ट चित्र प्राप्त होता है। शिक्षा केन्द्रों में तो साहित्यकार रहते ही थे साथ ही बौद्ध भिक्षु चलतो-फिरती शिक्षा के केन्द्र थे। जो लोग विद्यालय नहीं जा सकते थे वे इन्हीं परिव्राजकों से उपदेश सुनकर अपना आचार सुधारते थे। ऐसे लोगों का हित करने वाले साहित्यकार देश-देशान्तर में भ्रमण करके अनुभूत साहित्य का निर्माण करते थे। इस प्रकार जातकों के युग में विद्याओं के पठन-पाठन पर बल दिया जाता था। गुरु-शिष्य सम्बध मधुर थे। उन्हें गुरुजनों का स्नेह प्राप्त था। शिष्य भी उनकी सेवा पिता तुल्य करते थे। इसीलिए उन्हें हम गुरु परिवार का अभिन्न अंग भी देखते हैं। नाना विषयों का पठन-पाठन विकसित शिक्षा का परिचायक है। तक्षशिला तो विश्व प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र था ही साथ ही, वाराणसी, मथुरा भी साहित्य के केन्द्र थे।

●

---

१. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २९२; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ४४३
२. ,, ,, ६, पृ० ४७५-४७६; ,, ,, ६, पृ० ५१४
३. ,, ,, ५, पृ० २५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ११४
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९७
५. ,, ,, १, पृ० ४६२; ,, ,, २, पृ० ९६
६. ,, ,, २, पृ० ९; ,, ,, २, पृ० १७२
७. ,, ,, २, पृ० ९३; ,, ,, २, पृ० २७२
८. डॉ० भरत सिंह उपाध्याय, पा० सा० का इ०, पृ० ५६१-५६२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवम अध्याय

चिकित्सा

जातक साहित्य के समय तक चिकित्सा विज्ञान भली-भाँति विकसित हो चुका था। चिकित्सक[1] विभिन्न बीमारियों और उनके उपचार को अच्छी तरह जानते थे। यह चिकित्साशास्त्र पूर्वजों से पैतृक सम्पदा के रूप में प्राप्त होती आई थी।

जातक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस युग में वैद्यकशास्त्र का विशेष महत्व था। राजकीय वैद्य बहुत ही कुशल (सुशिक्षित) होते थे, शुल्क भी लेते थे।[2]

आँख तथा कान के रोगों से दूसरी बीमारियाँ पैदा होती हैं।[3] इसलिए इन रोगों को दूर करने के लिए जातक साहित्य में वैद्य चिकित्सकों[4] का उल्लेख कई बार हुआ है। औषधि लाने वाले को औषधि दारक कहा जाता था।[5] प्रसिद्ध राजकीय कौमार भृत्य जीवक (बुद्ध का समकालीन प्रसिद्ध वैद्य) बुद्ध के लिए दक्षिणा का जल लाया था।[6] वैद्यराज जीवक का भैषज्य और शल्य कौशल प्रसिद्ध था। वास्तव में वह शल्य-चिकित्सा का स्वामी था।

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४; जि० ४, पृ० ३६१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५९; जि० ४, पृ० ५७०
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९, २१३; जि० ४, पृ० १७१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८४, ४१५; जि० ४, पृ० ३७१
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५३
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४, ३१०; जि० ३, पृ० १४३; जि० ४, पृ० १७१, १७४, ४०७; जि० ५, पृ० ८४; ८८, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५९, ४४८; जि० ३, पृ० ३०७; जि० ४, पृ० ३७१, ३७३, ६१५; जि० ५, पृ० १७१, १७५
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १२१
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ११६, ११८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १९७, २००

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शल्य :

चिकित्सक ने एक बार तथागत के पैरों से शल्य चिकित्सा करके खराब खून को निकाल कर सड़ा हुआ मांस काटकर दवाई लगाई और उसे निरोग किया।[१] शल्य चिकित्सा इतनी उन्नत दशा में थी कि किसी भी अंग के भंग हो जाने पर उसे ऐसा जोड़ दिया जाता था वह असली जैसा प्रतीत होता था। एक बार एक व्यक्ति की नाक कट जाने पर शल्य चिकित्सा द्वारा कृत्रिम नासिका जोड़ी गयी थी। उसे रंग दिया गया और वह असली नाक की सदृश दिखाई देने लगी थी।[२] राजा शिवि के चक्षु दान में कुशल वैद्य (जोत्रक) ने उपर्युक्त दवाइयां पीसकर भैषज्य चूर्ण को नील कमल में भरकर आँखों में फूँका था जिससे आँखें पलट गई थीं और फूँकने पर औषधि के जोर से स्वतः आँखें निकलकर लटकने लगी थीं जिन्हें तेज चाकू से काटकर बाहर निकालकर नेत्रहीन ब्राह्मण की आँखों में ठीक प्रकार से लगा दी गई थी।[३] भरहुत स्तूप में भी राजगृह के प्रसिद्ध वैद्य जीवक की अद्भुत कार्य कलापों का चित्र मिलता है। इस कथानक के अनुसार उज्जैन के चण्ड प्रद्योत ने, पाण्डुरोग से पीड़ित थे, जीवक को अपनी सभा में आमंत्रित किया, जहाँ पर वह जाने के लिए तैयार नहीं था। क्योंकि वह जानता था कि तेल के बिना उसका निदान नहीं हो सकता और तेल प्रद्योत को नितान्त अप्रिय था।[४] परन्तु बिम्बसार के कहने पर उसकी चिकित्सा के लिए वैद्यराज जीवक को भेजा था, जिसने चण्ड प्रद्योत के पाण्डुरोग को ठीक किया था।[५]

रोग :

जातक साहित्य में नाना प्रकार के रोगों का उल्लेख मिलता है। शरीर को ३२ प्रकार की गन्दगियों से भरा बताया गया है।[६] रोगों में पाण्डुरोग

---

१. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३३३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४१५
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४५५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ८८
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४०७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ६१४-६१६
४. कनिंघम, भरहुत स्तूप, पृ० १
५. डा० हेमचन्द्र राय चोधरी, प्रा० भा० का रा० इ० पृ० १८१
६. (केस, रोम, नख, दाँत, त्वचा आदि) यह शरीर आँतों, अमाशय यकृत-पेल, उदरस्थ (वस्ती), हृदय, पफ्फुस, वृक्क, प्लीहा (पिहक), सीढ़, थूक, पसीना, वर (पेट), रक्त, लसिका (कोहनी आदि जोड़ों में स्थित तरल पदार्थ), पित्त और चर्वी (वस) इन सबसे भरा हुआ है। इसके नौ स्रोतों से सदा गन्दगी भरी रहती है। आँखों से आँख का मैल, कानों से कान का

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(पीलिया)[1], चैतसिक रोग[2], मानसिक रोग[3], अजीर्ण रोग[4], बदहजमी[5], अहिवातक (प्लेग)[6], रक्तातिसार[7], कृष और पण्डवर्ण[8], कुष्टरोग[9], श्वेत कुष्टरोग[10], वायु रोग (वात रोग)[11], सपत्नीक रोष[12], खुजली (खाज)[13], रतौन्धी रोग[14],

---

मैल, नाक से सीढ़ा, कभी-कभी मुँह से उल्टी, पित्त और कफ भी शरीर से पसीना (स्वेद-जल) छिद्रों वाला शीश मत्यलुङ्ग (खोपड़ी के भीतर का गुदा) से भरा है। जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३९

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४३१; जि० २, पृ० ९२; १०२, ३०२; जि० ३, पृ० ४०१, ४१९; जि० ५, पृ० ९५, २७८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ५८, २७०, २८३; पृ० ३०; जि० ३, जि० ४, पृ० ६१, ७७; जि० ५, पृ० १८२, ३६०

२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १४३-१४४; जि० ४, पृ० ३२९; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३०८, जि० ४, पृ० ५३५

३. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३३७; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २

४. ,, ,, २, पृ० ३८९; ,, , ४, पृ० ४९

५. ,, ,, २, पृ० १८१; ,, ,, २ पृ० ३७६

६. ,, ,, २, पृ० ७९; जि० ४, पृ० २००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २५५; जि० ४, पृ० ३९९

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१५

८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३३१; जि० ५ पृ० ७०; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५३६; जि० ५, पृ० १६०

९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ८८, ९५, ९७; जि० ६, पृ० ३८३, ३८७, जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १७५, १८२, १८४; जि० ६, पृ० ४२९, ४३३

१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ६९, ७२; जि० ६, पृ० १९६, १९७; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३२, २३३; जि० ५, पृ० १५७, १६२

११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३५०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३९५

१२. ,, ,, ५, पृ० ९५; ,, ,, ५, पृ० १८२

१३. ,, ,, ५, पृ० ६९, १९८; ,, ५, पृ० १५७, २८०

१४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४२९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शरीर में जलन[1], खाँसी, दमा, शरीर पीड़ा तथा दुर्बलता[2] आदि के नाम मिलते हैं। इन सभी रोगों की दवा भी उस समय होती थी और लोग उपचार कराकर स्वस्थ होते थे।

औषधि और उनका प्रयोग :

औषधि विज्ञान भी पूर्ण रूप से विकसित अवस्था में था। जहाँ विभिन्न रोगों के लिए भिन्न-भिन्न औषधियाँ थीं वहीं प्रत्येक रोग की औषधि का प्रयोग भी भिन्न प्रकार से किया जाता था। औषधियाँ[3] विशेषकर जड़ी-बूटियों से तैयार की जाती थीं।[4] मानसिक चिकित्सा मनोवैज्ञानिक विधि से होती थी।[5] श्रीवर्धन के सिर में सात वर्ष से निरन्तर होने वाले सिर दर्द को औषधि द्वारा दूर किया गया था।[6]

विष का निदान

अन्धे, बहरे इत्यादि सभी प्रकार के रोगियों के रोग-उपशमन की दवाई थी।[7] नेत्रों के लिए अंजन प्रयोग में लाया जाता था।[8] सिर पर चोट लगने पर तेल मला जाता था।[9] एक बार किम्पक वृक्ष के फल को आम समझकर लोग खा गये थे जिससे वे रोग ग्रस्त हो गये। कुशल वैद्य ने दवा द्वारा वमन कराकर उस गुठली को निकाला और उन्हें निरोग किया था।[10] एक कुटिल

---

१. जा०अ० रो० जि० ५, पृ० २६२; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३४७
२. „ „ ५, पृ०, ७२; जि० ६, पृ० २९५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १६२; जि० ६ पृ० ३३४
३. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१५; जि० ४, पृ० १७१, ३१४; जि० ५, पृ० १९९; जि० ६, पृ० १९६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१७, जि० ४, पृ० ३७१, ५२०; जि० ५, पृ० २८१; जि० ६, पृ० २३२
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २००, ४११; जि० ४, पृ० ११७, २८७, ३१५, ३६१; जि० ५, पृ० २४५; जि० ६, पृ० १९६, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०८; जि० २, पृ० ३०, जि० ४, पृ० ३१८, ४९१, ५२० ५७०, जि० ५, पृ० ३२९, जि० ६, पृ० २३२
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१५
६. „ „ ६, पृ० ३३१; „ „ ६, पृ० ३७१
७. „ „ १, पृ० ५३; „ „ १, पृ० १२१
८. „ „ १, पृ० ४२; „ „ १, पृ० १०७
९. „ „ १, पृ० २९३; „ „ १, पृ० ४२६
१०. „ „ १, पृ० ३६८; „ „ १, पृ० ५२१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जुआरी ने विष लिप्त गोटी मुँह में डाल ली। विष के जोर से वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा था। उसे भी वैद्य ने दवाई देकर वमन कराया था तत्पश्चात् घी, गुड़, मधु, शक्कर आदि पिलाकर उसे निरोग किया था।[१] औषधि के द्वारा बेहोश भी किया जाता था।[२] औषधि को शरीर पर मला जाता और खाया भी जाता था।[3]

पेट के रोग और उनका निदान

नींद न आने से भोजन ठीक-ठीक नहीं पचता था ऐसी दशा में जुलाब दिया जाता था। चैतसिक रोग को शान्त करने के लिए बिना छौंके, केवल पानी में उबले हुए पत्तों के साथ सामाक, नीवार, यबागु दिया जाता जिससे चैतसिक रोग दूर हो जाते थे।[४] इसके लिए ज्ञानोषधि सबसे अधिक लाभकारी थी।[५] आम से रस से उदर-सम्बन्धी वायु विकार को शान्त किया जाता था।[६] घी-तेल को औषधि-वर्ग माना गया है।[७] पाण्डु-वर्ण होने से गात्र धमनियों से लग जाता था।[८] रोग के अनुकूल दवा भी पिलाई जाती थी तथा जख्मों पर लगाई जाती थी।[९] त्रिफला का भी प्रयोग किया जाता था। उसका काढ़ा बनाकर रोगी को पिलाया जाता था।[१०] हर्रों के प्रयोग से पेट साफ होता और शौच शुद्धि होती थी।[११] भूरिदत्त जातक में नाना प्रकार की दवाइयों का उल्लेख मिलता है।[१२]

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५३८-५३९
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २६९; जि० ६, पृ० १८५;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३९५; जि० ६, पृ० २१९
३. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १८५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २१९
४. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १४३-१४४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३०६-३०८
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१६
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ३९२-३९३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ११३
७. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २४३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ४४६
८. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २७८; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३६०
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ८९, ४२३; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १७६, ५०७
१०. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४६४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ९८
११. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५२
१२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १९६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घाव-उपचार :

साधारणतया जख्मों को दवाई से अच्छा किया जाता था। तेल और पट्टियाँ जख्मों पर बाँधी जाती थीं[१] जख्मों को अच्छी तरह धोकर, लेप करके रूई से बाँधते थे। महासुतसोम जातक के अनुसार वैद्यराज ने जख्मों को अच्छी तरह धोया और पीव और रक्त को धोकर, जख्मों को निर्दोष किया। तत्पश्चात् वृक्ष की छाल को पत्थर पर घिसकर उस पर लगाया था।[२]

पशुरोग और निदान :

मनुष्यों की भाँति पशुओं की भी दवा की जाती थी। एक बार एक कुत्ते ने रथ की डोरी खा डाली थी। जिस कुत्ते ने खाई थी, उसकी पहचान करने के लिए सभी कुत्तों को मट्ठा और दूध को मथकर पिलाया गया, जिस कुत्ते ने डोरी खायी थी उस कुत्ते ने चमड़े सहित उल्टी कर दी थी।[३] इसी प्रकार से बैलों को राई के पत्ते मँगवाकर उखल में कूटवाकर पिलाया गया था, जिस बैल ने तिनके खाये थे उस बैल से तिनके बाहर निकले थे।[४]

हाथी के डाक्टर (चिकित्सक) होते थे। एक बार हाथी के पैर में खूँटा लग गया था जिससे पैर सूज गया। बढ़इयों ने उसमें रस्सी बाँधकर उसे खींचकर निकाला फिर पीप निचोड़कर, गर्म पानी से धोया और उसके अनुकूल दवाई लगाई जिससे थोड़े समय में घाव ठीक हो गया था।[५] हाथियों के जख्म के लिए हस्ति वैद्यों ने कौवे की चर्बी तथा बन्दर की चर्बी का प्रयोग गुणकारी बताया है।[६]

पशुओं की भाँति पक्षियों की भी चिकित्सा प्रचलित थी।[७] काले साँप से डसे की मन्त्रों से तथा औषधियों से चिकित्सा की जाती थी। इस प्रकार भूत-

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २९३; जि० ३, पृ० ४२; जि० ४, पृ० ८९; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ४२६; जि० ३, पृ० २११; जि० ४, पृ० २९०; मेहता, रत्तीलाल, प्री० बु० इ० पृ० ३०८
२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ५०४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५८२
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २७७-२७८
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३३५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३७६
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १८-१९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८३
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४८५; जि० ३, पृ० ३५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १२७; जि० ४, पृ० २०
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ४४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रेतादि का दिखावा भी समाज में व्याप्त था जिनका उपचार मन्त्रों द्वारा किया जाता था।[1]

परिचारक :

चिकित्सकों के अतिरिक्त परिचारकों की भी आवश्यकता होती थी। जिसमें मुख्य रूप से दाइयों[2] का उल्लेख कई बार हुआ है। रोगियों के हितैषी अथवा सम्बन्धी भी उनके पास रहते हुए उनकी देख-रेख करते थे।[3]

चिकित्सा शुल्क :

जातकों से पता चलता है कि चिकित्सक शुल्क भी लेते थे[4], कुछ लोगों से कभी-कभी शुल्क नहीं भी लेते थे।[5] कभी-कभी लोग चालाकी करके वैद्यों को शुल्क नहीं देते थे जिससे क्रुद्ध होकर वैद्य उनकी बहुत हानि करते थे। एक बार वैद्य ने एक धनी आदमी की बीमारी की चिकित्सा की, ठीक हो जाने पर उसने वैद्य को कुछ भी नहीं दिया था। वैद्य ने क्रुद्ध होकर दवाई के बहाने उसे ऐसी औषधि दे दी जिससे अन्धा हो गया था।[6]

चिकित्सा विज्ञान इतनी उन्नति पर था कि काला-कुरूप व्यक्ति औषधि के सेवन से सुन्दर रूपवान बन जाता था। सम्बुला ने अपने पति का कोढ़ सल्य-क्रिया के द्वारा ठीक किया था।[7]

जिस प्रकार से मनुष्यों के अंग-भंग हो जाने पर चिकित्सा द्वारा उसे जोड़ कर पूर्ववत स्थिति में कर दिया जाता था, उसी प्रकार पशुओं के भी अंग-भंग होने पर उसे जोड़ दिया जाता था। पशुओं के शारीरिक अंग के कट जाने पर चर्म से चर्म, मांस से मांस और स्नायु से स्नायु को जोड़ दिया जाता था।[8]

---

१. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१४-२१५; जि० ६, पृ० १८१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१७; जि० ६, पृ० २१६
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २, ३, ७४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० २, ३, ८४
३. दिव्या० १५/१७-१८
४. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १९, २१३; जि० ४, पृ० १७१; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १८४, ४१५, जि० ४, पृ० ३७१
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २१३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४१५
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ७४ जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ८५
७. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ९५; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १८२
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १८६; जि० ५, पृ० ३६४; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २४७; जि० ५, पृ० ४४६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस प्रकार जातकों के अध्ययन से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि उस युग में चिकित्सा एवं औषधि-विज्ञान उन्नत दशा में था। मनुष्यों की भाँति पशु-पक्षियों की चिकित्सा होती थी। विभिन्न रोगों में औषधियों का प्रयोग भिन्न रीतियों से किया जाता था। औषधि शुल्क लेकर की जाती थी परन्तु गरीब लोगों की निःशुल्क दवाई की जाती थी। मानसिक रोगों को ज्ञानौषधि से दूर किया जाता था। सम्राट अशोक के दूसरे शिलाभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने भी मनुष्य चिकित्सा और पशु चिकित्सा का प्रबन्ध किया था और उनके लिए औषधि के प्रयोग में आने वाली जड़ी-बूटियों को उत्पन्न करने का भी प्रबन्ध किया था।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दशम अध्याय

कला

कला मानव की भावनाओं और कल्पनाओं का जीता जागता स्वरूप है। भारतीय कला साहित्य की चिरसंगिनी रही है। और यही उसकी परम विशेषता है। जातक साहित्य का इतिहास बौद्ध कला का सर्वोत्कृष्ट स्रोत है। इसके अध्ययन से हमें प्रतिमाओं[१], चित्रों[२], चैत्यों[३], स्तूपों[४], विहारों[५], स्तम्भों[६], देवयातनों[७], प्रासादों[८] तथा नगरों[९] आदि का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९; जि० ३, पृ० ९३, २४०; जि० ४, पृ० ७, १०५; जि० ५, पृ० २८२; जि० ६, पृ० ४३२, ५४१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६६; जि० ३, पृ० २६०, ३९९; जि० ४, पृ० २०८, ३०७; जि० ५, पृ० ३६४; जि० ६, पृ० ४७३, ५९४

२. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९१-२९२; जि० ६, पृ० २७६-७९, ४३२, ४५९, ४८३, ५६४; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३७२-७४; जि० ६, पृ० ३१४-१९, ४७३, ५००, ५२१, ६२१

३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३१, ६५, ७७; जि० २, पृ० २५९, २८२; जि० ३, पृ० ८, १५५, ३५१, ३७५; जि० ४, पृ० २२८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९३, १३५, १५०, जि० २, पृ० ४६८; जि० ३, पृ० ११ २४५, ३१८; जि० ४, पृ० १६, ३५, १००, ४२९

४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९, ३३१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २४९, ५३७

५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०८; जि० २, पृ० १५, ४६, ५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० १५७, १७९, २१४, २२७

६. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७९, ८०, १५३, २१५; जा० अ० रो० जि० ४, पृ० २८१, २८२, ३५४, ४१५

७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १३३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २१९

८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३६३, ५०५-५०६; जि० ४, पृ० ८५, १०६, १३०, १५४, ३१४, ३१९, ३२३; जि० ६, पृ० १३१-३२, १६७-६९, २८९; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २६, १६६, २८६, ३०८, ३३०, ३५५, ५२०, ५२४, ५२८; जि० ५, ५३; जि० ६, पृ० १५१, २०२, ३२७

९. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ४; जि० ६, पृ० ४६, २६९, ३९०, ४२६-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मूर्तियाँ :

जातक साहित्य में मूर्तियों का उल्लेख हुआ है। कुछ मूर्तियाँ सोने की बनी होती थीं।[1] बोधिसत्व स्वयं मूर्तिकार थे। बोधिसत्व ने स्वयं कुमारी की भी एक प्रतिमा बनायी थी और कहा यदि ऐसी कुमारी मिलेगी तो मैं विवाह करूँगा।[2] ललितविस्तर के अनुसार भी शिव स्कन्द नारायण, कुबेर, चन्द्र, सूर्य, वैश्रवण, शक्र, ब्रह्मा, लोकपाल आदि देवताओं की प्रतिमाएँ बनती थीं।[3] बुद्ध की प्रतिमा उनके बत्तीस महापुरुष लक्षणों के अनुरूप बनायी जाती थी।[4]

मूर्ति-निर्माण की वैभवशाली परम्परा सांची, भरहुत, अमरावती और नागार्जुनीय कोड के मूर्तिशिल्प में आज भी जीवित है।[5] पुरातत्त्व की खोजों से भी देवकुलों की पुष्टि होती है। मॉट (मथुरा से लगभग ९ मील उत्तर) से प्राप्त एक अभिलेख में देवकुल का इसी अर्थ में उल्लेख किया गया है।[6]

खिलौने :

मूर्तियों के अतिरिक्त बच्चे के खेलने के लिए खिलौने भी बनाये जाते थे।[7] ये खिलौने मिट्टी तथा सोने और चाँदी के भी बनाये जाते थे। स्वर्ण के खिलौनों में हाथी, घोड़ों के खिलौनों का उल्लेख हुआ है।[8] चित्रित परों वाले मोर के भी खिलौने बनाये जाते थे।[9] खेलने के लिए छोटे-छोटे बरतनों का भी उल्लेख हुआ है।[10] इस समय भी इसी प्रकार के खिलौने प्रचलित हैं।

४३२, ४५९, ५९२; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २०५; जि० ६, पृ० ५८, ३०८, ४३६, ४६७, ४७०-७३, ५००, ६५५

१. जा अ० रो० जि० ३, पृ० ९३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६०

२. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ९३; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २६०

३. लेफमैन ललित, पृ० १२०|१, १३०|१५-१६

४. दिव्या पृ० २८|५६-५७, ४५|१-२, ४७|३२

५. गैरोला वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, पृ० ११३

६. वोगेल, आ० स० इ० एन० रि०; १९११-१२, पृ० १२२; बाजपेयी, बृज का इतिहास, पृ० ८७, पा० टि० १५

७. जा० अ० रो० जि० २, पृ० १४२; जि० ६, पृ० ५६३; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ३२९; जि० ६, पृ० ५, ६, ६२०

८. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १४६; जि० ६, पृ० ६; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३४७; जि० ६, पृ० ५, ६

९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ५६४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ६२१

१०. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० २९१; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ३७२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चित्रकला :

भारतीय चित्रकला विश्व में अपना प्रमुख स्थान रखती है। गुफा चित्रों और भित्ति चित्रों का अनेकों जातक में उल्लेख मिलता है।

तिब्बती इतिहासकार लामा तारनाथ ने लिखा है कि बौद्ध चित्रकला की तीन प्रमुख शैलियाँ प्रचलित थीं, जिनके नाम थे—देव शैली, यक्ष शैली और नाग शैली। बौद्ध चित्रकला के तीन प्रमुख केन्द्र थे—मध्यदेशीय, पश्चिमी और पूर्वी। इन तीन प्रमुख केन्द्रों के अतिरिक्त काश्मीर, नेपाल, बरमा और दक्षिणी भारत में भी बौद्ध चित्रकला के अनेक केन्द्र थे।[१]

जातकों में घड़े[२], मोर के पर[३], खड़ाऊँ (पादुकाएँ)[४], पंखे[५], दरवाजे, खिड़की[६], गजरे[७] आदि में चित्रों के उल्लेख मिलते हैं। कुस राजा ने मिट्टी के बरतन पर महाराजा की रानी का चित्र और कुबड़ी का चित्र तथा बाँस के पंखे पर श्वेत छत्र लिए हुए पानागार तथा वस्तु सहित खड़ी प्रभावती के चित्र के साथ अन्य नानाप्रकार के चित्र बनवाये थे। गजरे में राजा-रानी के साथ अन्य नाना प्रकार के चित्र प्रदर्शित किये गये थे।[८] कुमार स्वामी ने भी उम्मग्ग जातक में आये चित्रों का उल्लेख किया है।[९]

अजन्ता की गुफाओं में जातक की कथाएँ प्रमुख विषय है। इन जातक कथाओं में भगवान् बुद्ध की कई कथाएँ हैं जिनका चित्रकार ने सुन्दरता से अंकन किया है।[१०] अजंता की पहली गुफा में शिवि जातक का चित्रण किया गया है।[११] दूसरे चित्र में महाजनक जातक की कथा है[१२], तीसरे में महत्वपूर्ण चित्र

---

१. द्रष्टव्य—गैरोला, वाचस्पति, भारतीय चित्रकला, पृ० ११४-१५
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २३९
३. „ „ ६, पृ० ५६४; „ „ ६, पृ० ६२१
४. „ „ ६, पृ० २१८; „ „ ६, पृ० २५४
५. „ „ २, पृ० ६६; जि० ५, पृ० २९२;
जा० अ० हि० जि० २, पृ० २४०; जि० ५, पृ० ३७३
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५२१
७. „ „ ५, पृ० २९०; „ „ ५, पृ० ३७३-३७४
८. „ „ ५, पृ० २९०-९२; „ „ ५, ३७२-७४
९. दास, रायकृष्ण, भारत की चित्रकला, पृ० ९
१०. वर्मा, अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृ० ३६
११. शिवि जातक संख्या ४९९
१२. महाजनक जातक संख्या ५३९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संखपाल जातक का है[1], चौथे दृश्य में चम्पेय्य जातक[2] की कथा है, दसवीं गुफा में छद्दन्त जातक[3] की कथा है, सत्रहवीं गुफा में अनेक महत्त्वपूर्ण जातक कथाओं के चित्र अंकित हैं—जिनमें महाहंस जातक[4], सामजातक[5], सुतसोम जातक[6], महिष जातक[7], शिवि जातक[8], मिग जातक[9] आदि के चित्रण हैं। चित्रों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि उनके निर्माता स्थापतियों ने अपनी जीवन की सम्पूर्ण साधना को उनमें रूपान्तरित किया है। इसी कारण कई शताब्दियों के बीत जाने पर भी उनकी सुन्दरता और ताजगी में कोई अन्तर नहीं आने पाया है।

महामानव बुद्ध के जीवन सम्बन्धी दृश्यों में उनका जन्म, सम्बोधि प्राप्ति, धर्मचक्र-प्रवर्तन और महापरिनिर्वाण, माया का स्वप्न, विहार-यात्रा के चार दृष्य, महाभिनिष्क्रमण सुजाता का खीरदान, स्वास्तिक का कुश-प्रदान, मार से युद्ध, चक्रमण, रत्नगृह-निवास, न्यग्रोधाराम में शाक्यों के उपदेश, कपिलवस्तु गमन, उरुवेला में नदी के जल पर चलना, जेतवन-विहार, श्रावस्ती के आम्रवन में उपदेश, वानर के द्वारा दान, इन्द्र का आकर अभिनन्दन करना आदि मुख्य है।[10]

जातक की कथाएँ विशेष रूप से साँची, सारनाथ, मथुरा, अजन्ता की कला कृतियों में विस्तृत रूप से पायी जाती हैं।

नगर-निर्माण

जातक साहित्य से पता चलता है कि उस युग में नगर-निर्माण का कार्य बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया जाता था। नगर द्वार पर शालाएँ होती थीं। महावेस्सन्तर जातक में दान-शलाओं में प्रतिदिन ६ लाख का दान होता था।[11]

---

१. संखपाल जातक संख्या ५२४
२. चम्पेय्य जातक संख्या ५०६
३. छद्दन्द जातक संख्या ५१४
४. महाहंस जातक संख्या ५३४
५. सामजातक संख्या ५४०
६. सुतसोम जातक संख्या ५३७
७. महिष जातक संख्या २७८
८. शिवि जातक संख्या ४९९
९. नन्दिय मिग जातक संख्या ३८५
१०. द्रष्टव्य—डॉ० रामजी उपाध्याय, भारत की संस्कृति साधना, पृ० ४७४
११. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४८४; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५२२-२३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकार में यथास्थान बीच-बीच में गोपुर और अट्टालिकाएँ बनाई जाती थीं। मध्य में राजप्रासाद और दूसरे भवन होते थे।[१] हस्तिशालाएँ "हत्थिशलादयो" और पुष्करिणियाँ होती थीं। निर्माण समाप्त होने पर नगर का नामकरण किया जाता था। महाउम्मग्ग जातक में महाउम्मग्ग नगर (महाउम्मग्गो नगर)[२] का विस्तृत विवरण था। नगर के लकड़ी के कार्य को पूरा करने के लिए तीन सौ बढ़इयों ने कार्य किया (तिन्नि वट्टकि सतानि) था।[३]

विधुर जातक में भोगवती तथा हिरण्यवती नगरों में स्वर्णमय भवनों का वर्णन मिलता है जिसकी अट्टालिकाएँ रक्तवर्ण मणि तथा स्फटिक की बनी हुई थीं। पत्थर से बने प्रासाद में जड़े हुए थे।[४] महाउम्मग्ग जातक में एक ऐसे नगर का वर्णन है जिसमें अनाथों के रहने के लिए भवन, अनाथ स्त्रियों का प्रसूतिका गृह, एक हिस्से में आगन्तुक श्रमण ब्राह्मणों का निवास-भवन, एक हिस्से में शेष आगन्तुक मनुष्यों के ठहरने के लिए भवन तथा एक हिस्से में आगन्तुक व्यापारियों के लिए सामान रखने के लिए भवन, क्रीड़ा-भवन, न्यायालय तथा धर्म-सभा का निर्माण करवाया गया था। नगर में पुष्करणी बनवाई गई थी जो पाँच प्रकार के कमलों से आच्छादित थी।[५] बड़ी-बड़ी पुष्करिणियाँ खुदवाकर उसमें पानी भरवाकर कवँल लगाये जाते थे।[६] नगर में विश्रामगृह, जलाशय, प्याऊ बनवाये जाते थे। चक्रमण (टहलने का स्थान) स्थान भी बनायें जाते थे[७] जिस पर चटाइयाँ बिछाई जाती थीं।[८]

महासुतसोम जातक में अस्सी हजार दूकानें थीं।[९] नगर के वृक्षों के चारों ओर समतल घेरा, वैदिका, तोरण द्वार भी बनाये जाते थे।[१०] वैशाली में गाबुत-गावुत

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७३
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७३
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३२-३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७३
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २६९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३०८
५. ,, ,, ६, पृ० ३३३; ,, ,, ६, पृ० ३७३
६. ,, ,, ६, पृ० ३९०; ,, ,, ६, पृ० ४३६
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ११९, १२१, १२३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १३५, १३७-३८, १४०-४१
८. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १५८; जि० ६, पृ० ४१२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५२; जि० ६, पृ० ४५५
९. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ५११; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५८९
१०. ,, ,, ५, पृ० ५११; ,, ,, ५, पृ० ५८९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की दूरी पर तीन प्राकारें बनी थीं, तीनों जगह पर गोपुर थे, अट्टालिकायें थीं तथा कोठे थे।[१] सीमा के बाहर उपोसथ गृह बनाये जाते थे जिसमें भिक्षु एकत्र होकर सांधिक कृत्य करते थे।[२] महाजनक जातक में अनेक प्राकारों तथा तोरणों वाली मिथिला नगरी समृद्ध दृढ़ अट्टालिकाओं तथा कोठों वाली थी।[३] चार दरवाजे वाले भी नगर बनाये जाते थे।[४]

महाउम्मग्ग जातक में प्राकार में बहुत से दरवाजे थे। उनमें से एक द्वार का मुँह नगर की ओर था। उसमें अट्ठारह हाथ ऊँचा यन्त्रद्वार लगा हुआ था। द्वारों में महाकपाट और उनके खोलने-बन्द करने के यन्त्र लगाये गये (यन्त्रयुक्त द्वार) थे। एक आणि के खींचने से बन्द हो जाते थे और एक आणि के खींचने से खुल जाते थे। कोठे के ऊपर लकड़ी के बड़े पटरों की छत बनायी गयी थी। छत के नीचे की ओर विशेष प्रकार के चूने का पलास्तर करवाया गया, जिनमें से अन्तिम लेप श्वेत (सफेद) होता था। कुल मिलाकर ८० बड़े दरवाजे और ६४ छोटे दरवाजे थे जो सभी यन्त्र युक्त थे। दोनों ओर एक सौ क्षत्रियों के लिए एक सौ सोने के लिए कमरे थे। प्रत्येक कमरे में नाना वर्ण के बिछौने बिछे थे। किसी-किसी में सिंहासन सहित महान शैय्या थी। किसी-किसी में सुन्दर स्त्री मूर्ति थी बिना हाथ से छुए यह पता ही न लगे कि यह सजीव नहीं है। ऐसा प्रतीत होता था कि कृत्रिम है।[५]

नगर सुरक्षा :

नगर के चारों ओर गहरे पानी की खाई (उदक परिखा) होती थी।[६] महाउम्मग्ग जातक में १८ हाथ ऊँचा परकोटा (चार दीवारी) "अट्ठारसहत्थों प्राकारो" था।[७] महावस्तु में भी नगर की सुरक्षा के लिए सात दीवालों (सप्त प्राकार) के निर्माण का उल्लेख मिलता है।[८] नगर निर्माण में विशेष रूप से

---

१. जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५०४; जा० अ० हि० जि०२, पृ० १५२
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४२५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४९
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ५८
४. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २०५
५. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३१-३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७२-७३
६. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७३
७. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३२-३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७३
८. महावस्तु जि० ३/२३१/१५, २/२३४/९-१०, ३/३३८/१२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नगर के बाहर चारदीवारी बनाई जाती थी।[1] तथा पानी की खाई, कीचड़ की खाई, सूखी खाई होती थी। इस प्रकार से तीन खाइयाँ बनायी जाती थीं।[2]

भवन-निर्माण :

छोटी-छोटी पर्णकुटियों से लेकर राज-प्रासाद तक निर्मित होने के उल्लेख मिलते हैं। जातक साहित्य में अनेकों स्तम्भों वाले महल बनाये जाते थे।[3] किन्हीं-किन्हीं स्तम्भों के बनाने में वृक्षों की लकड़ी प्रयोग की जाती थी।[4] प्रासादों में हजार स्तम्भों तक का प्रयोग किया जाता था।[5] ये स्तम्भ सोलह हाथ या आठ हाथ भूमि के अन्दर गाड़े जाते थे। ये एसिका स्तम्भ कहलाते थे।[6] राजमहलों में स्तम्भ सोने, चाँदी, हाथी, दाँत, मणि तथा रत्न जटित होते थे और मण्डपों के बीच में घंटियों की झालर लटकायी जाती थी।[7] स्तम्भों (काष्ठ के स्तम्भों) पर तेल भी मला जाता था।[8] काष्ठ के स्तम्भ बनाने वाले वर्धकी कहलाते थे[9] जिन्हें आजकल बढ़ई कहा जाता है।

लकड़ी के ऊँचे स्तम्भ वास्तु या गृह निर्माण कला के सबसे प्रभावशाली अंग थे। उन्हीं की अनुकृति पर अशोक-कालीन ऊँची पत्थर की लाटें या शैल स्तम्भ और पश्चिमी भारत के चैत्य घरों के सामने के कीर्ति स्तम्भ बनाए गए। चैत्यघरों की छत के नीचे जो लकड़ी के मोटे गर्दने बैठाए गए हैं उनसे कुछ अनुमान लगता है कि जब ऐसे चैत्यगृह पूरी तरह लकड़ी के होते थे तो उनके भीतर के स्तम्भ कितने भारी और ऊँचे होते होंगे।[10]

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७५; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१४
२. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३६
३. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० १५३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ३५४
४. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० ४९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० १३७
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ७९, ८०, १५५; जि० ५, पृ० १६९;
जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २८१-८२, ३५६; जि० ५, पृ० २५१
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७४
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३२; जि० २, पृ० १८९-१९०;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० ९५; जि० २, पृ० ३८६
८. जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४१३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६८
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४२७; जा० अ०हि० जि० ६, पृ० ४५६
१०. डा० अग्रवाल, भारतीय कला, पृ० ७८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्तम्भों के मूर्ति वाले दृश्यों में अनेकों जातकों के नाम अंकित हैं। श्वेतराज के आगमन वाला माया देवी का भाव (स्वप्न) भली-भाँति अंकित है।[1]

सर जान मार्शल ने भी स्तम्भों पर जातकों के चित्रण का वर्णन बड़े ही सजीव ढंग से किया है। स्तम्भों पर महाकपि जातक का चित्रण है।[2]

जातक साहित्य से ज्ञात होता है कि भवन निर्माण का कार्य बड़ी ही कुशलता पूर्वक किया जाता था। महाउम्मग्ग जातक में भवन निर्माण का विस्तृत वर्णन मिलता है। प्रासाद की लम्बाइ-चौड़ाई राजमहल के योग्य थी। तीन सौ नौकाएँ नगर निर्माण का सामान गंगा के पार से लाती थीं। जिसमें शहतीर तथा हल्की लकड़ी लायी गयी थी। कुलावक्क जातक में भी शाला को चार दीवारी शहतीर आदि को प्रयोग में लाया गया था।[3]

लोग प्रासादों के बनवाने में सीढ़ियाँ, सुरंग द्वार, पटड़ा, दरवाजे आदि भी बनवाते थे। भवन में ड्योढ़ी और बरामदे विशेष उल्लेखनीय थे। इसके निर्माण में ईंट तथा मिट्टी का प्रयोग किया जाता था। सुरंगों का भी निर्माण किया जाता था।[4]

सुरक्षा के लिए भवन के चारों ओर चारदीवारी बनाई जाती थी जिसे प्राकार कहते थे।[5] तथा उसके समीप ही खाई होती थीं। भवन में दरवाजों और अट्टालिकाओं का विशेष स्थान था।[6] ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनायी जाती थीं।[7] छत के शहतीरों में कड़ियाँ लगायी जाती थीं।[8] प्रासाद एक तल्ले से लेकर सात तल्लों और सात ड्योढ़ियों के भी होते थे।[9] सुरुचि जातक में रतन प्रासाद

---

१. कनिंघम, भरहुत स्तूप, पृ० १०
२. ए गाइड टू साँची, पृ० ७८
३. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २००-२०१, जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३०९
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४३१; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४७२
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ५०; जि० ६, पृ० २७५, ४००; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २२०; जि० ६, पृ० ३१४, ३४४
६. जा० अ० रो० जि० २, पृ० ९४; जा० अ० हि० जि० २, पृ० २७३-७४
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० २१६; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३७८
८. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० ३१७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३७८
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २२७, २९०, ३४६; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३४३, ४२३, ४९४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की लम्बाई-चौड़ाई आधे योजन थी, सात तल्लों वाला ऊँचा भवन था।[1] भवन सात द्वार-कोठों वाले तथा दुतल्ले, तितल्ले, पाँच तल्ले, सात तल्ले और सात ड्योढ़ियों वाले भी बनाये जाते थे।[2]

तोरणों पर नाना प्रकार के पक्षी, हंस, क्रौञ्च, मयूर, चक्रवाक और मुर्गे, अत्यन्त चित्रित कोयल, मोर, जीव तथा नाना प्रकार के पक्षी बनाये जाते थे।[3] दीवारों पर चतुर चित्रकारों ने नाना प्रकार के चित्र बनाये थे 'कुशल चित्तकारा नानप्पकार चित्रकम्प करिसुं।'[4]

छोटी-छोटी कुटियों के लिए बाँस की दीवारें बनायी जाती थीं जिन पर पत्ते छाये जाते थे जिन्हें पर्णकुटी कहते थे।[5]

स्वच्छता :

भवनों को गोबर तथा चारों प्रकार के गन्धों के लेपन से लिपवाया भी जाता था।[6] मिट्टी गूँथकर दीवार लीपते तथा दरवाजे को मजबूत बनाते थे तथा चारदीवारी और अटारी आदि की मरम्मत भी करते थे।[7]

पानी की नालियाँ साफ की जाती थी तथा नगर (शहर) के बाहर भी मरम्मत की जाती थी।[8]

जातक-साहित्य में कई प्रकार के प्रासादों का उल्लेख मिलता है जो स्फटिक, बिल्लौर, मणिमय, स्वर्ण-निर्मित, हाथी दाँत, रजत, चन्दन आदि से बनाये हुए प्रासाद थे।[9] इनके अतिरिक्त और भी कई विमानों या प्रासादों का उल्लेख

---

१. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३२३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२८
२. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २०५
३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २७६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३१४
४. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ४२७ ३३; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४६८-४७३
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३१८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५२३
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ५०, ५५, ३०५, ३९९; जि० ५, पृ० ४४०; जि० ६, पृ० ४१३; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ११८, १२४, ४४१, ५६२; जि० ५, पृ० ५१७; जि० ६, पृ० ४५६
७. जा० अ० रो० जि० ३, पृ० १ १७; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० २८१-८२
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ३९०; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ४३६
९. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ३६३; जि० २, पृ० १८९-९०; जि० ३, पृ० ३६३; जि० ४, पृ० ३, ४११; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ५१४; जि० २, पृ० ३८६; जि० ३, पृ० ४०६; जि० ४, पृ० २६, ६१९; जि० ६, पृ० २०१, २६८-६९, ३१८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हुआ है यथा रतिवड्ठनप्रासाद, उप्फक प्रासाद, स्तम्भ, कूटागार, किङ्कणी जाल, उद्यान, पोक्खारिणी, द्वारकोष्ठ आदि से युक्त विमान।[1] वैजयन्त प्रासाद[2], तावतिंस भवन[3] (त्रयस्त्रिशंत देवताओं का भवन), चातुर्महाराजिक भवन, नागराज भवन,[4] असुर भवन[5], प्रभास्वर भवन,[6] इन्द्र (शक्र) भवन,[7] कौञ्चप्रासाद[8], मयूर प्रासाद[9] और प्रियकेत प्रासाद, गरुड़ भवन[10], रमणकं सदामत्तं, दूभकं तथा ब्रह्मत्तर प्रासाद[11] चन्दन प्रासाद[12] आदि।

खण्डहाल जातक से ज्ञात होता है कि जातक द्वार-कोष्ठ से अलंकृत थे, जहाँ की चारदीवारी सप्तरत्नमय थी, जहाँ का साठ योजन का बाजार दर्श-नीय था, जो हजार योजन ऊँचे बैजयन्त प्रासाद से सुशोभित था।[13]

चैत्य :

चैत्य बौद्धों के पूजा स्थल थे। जातकों में अलंकृत चैत्यों का भी उल्लेख मिलता है। ये चैत्य तीन प्रकार के होते थे—शारीरिक, पारिमोगिक तथा

---

१. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० ११६; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १३१
२. ,, ,, २, पृ० २१८; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४२०
३. ,, ,, १, पृ० २०२; जि० ३, पृ० २५१; जि० ४, पृ० १७०, १८०; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१०; जि० २, पृ० २६७-७१; जि० ३, पृ० ४०९; जि० ४, पृ० ३७०, ३७९
४. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ७०; जि० २, पृ० २९५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १४२; जि० ३, पृ० २४-२५
५. जा० अ० रो० जि० १, पृ० २०२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० ३१०
६. जा० अ० रो० जि० ५, पृ० १६९; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० २५०
७. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६१; जि० २, पृ० १८८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३१; जि० २, पृ० ३८५
८. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३२७
९. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३२७
१०. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० २८९; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० ३२७
११. ,, ,, १, पृ० ३६३; ,, ,, १, पृ० ५१४
१२. ,, ,, ६, पृ० २३०; ,, ,, ६, पृ० २६८
१३. जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १३१-३२; जा० अ० हि० जि० ६, पृ० १५१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्देशिक ।[१] शक्र देवराज ने त्रयस्त्रिंश (स्वर्ग) लोक में चूड़ामणि चैत्य की स्थापना की थी ।[२] अनिमिस चैतिय[३] (अनिमेष चैत्य), रत्न-चक्रमण चैतिय[४], आलबी के पास अग्गालव चैत्य[५] कन्धक-निवर्तन चैत्य[६], उदयन चैत्य, गौतमक चैत्य, सत्तम्य चैत्य, बहुपुत्र चैत्य आदि का उल्लेख जातकों में मिलता है ।[७]

स्तूप :

'स्तूप बुद्ध या उनके शिष्यों के शरीर-अवशेषों पर निर्मित बुदबुदाकार, अर्द्धाण्डाकार या 'बठिया'कार स्मारक होते थे ।'[८] बाल्मीकि स्तूप से पता चलता है कि उनका आकार वाल्मीकि (बांबी) के समान होता था ।[९] सबसे पहले भगवान् बुद्ध की अस्थियों पर आठ स्तूप तथा एक स्तूप भगवान् बुद्ध के शवदाह के बाद शेष कोयले पर तथा एक स्तूप उस घड़े के ऊपर बनाया गया था जिसमें भगवान् बुद्ध की अस्थियाँ रखी गई थीं । इस प्रकार सबसे पहले १० स्तूप निर्मित हुए थे ।[१०] ये दस स्तूप निम्नलिखित नगरों में बनवाये गये थे ।

राजा अजातशत्रु ने राजगृह में भगवान की अस्थियों का स्तूप बनाया और पूजा की (२) लिच्छवियों ने वैशाली में (३) शाक्यों ने कपिलवस्तु में (४) बुलियों ने अल्लकप्प में (५) कोलियों ने रामग्राम में (६) ब्राह्मण ने बैठदीप में (७) पावा के मल्लो ने पावा में (८) कुशीनारा के मल्लो ने कुशीनारा में (९)

---

१. ज० अ० रो० जि० ४, पृ० ४९,२२८; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २४९, ४२९
२. ,, ,, १, पृ० ६५; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३५
३. ,, ,, १, पृ० ७७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५०
४. ,, ,, १, पृ० ७८; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १५०
५. ,, ,, १, पृ० १६०; जि० २, पृ० २८२; जि० ३, पृ० ३५१; जा० अ० हि० जि० १, पृ० २५६; जि० ३, पृ० ११, १२, २४५; जि० ४, पृ० १६
६. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ६४; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १३४
७. महापरिनिब्बानसुत्त (हिन्दी अनुवाद), पृ० ६७
८. डॉ० लाल, सं० बौ० सा० में भा० जी०, पृ० २३१
५. जा० अ० रो० जि० ४, पृ० ३३१; जा० अ० हि० जि० ४, पृ० ५३७
१०. बु० च० २८/५६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

द्रोण ब्राह्मण ने भी तुम्बका में (१०) मौर्यों ने पिप्पलीवन में भी ।[1]

भगवान बुद्ध ने वैशाली में गौतमक चैत्य में गौतमक सुत्त का उपदेश दिया था ।[2] भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण प्राप्त हो जाने पर एक चैत्य का निर्माण किया गया था ।[3]

अस्थियों के ऊपर मिट्टी का स्तूप बनाया जाता था और हड्डियों को उस स्तूप में रखा जाता था और गन्धमाला आदि से पूजा की जाती थी ।[4]

काश्यप बुद्ध को सुगन्धि आदि से चैत्य पूजा करते पाते हैं ।[5]

स्तूप के चारों ओर सुरक्षा के लिए वेदिका बनायी जाती थी ।[6] वेदिका के चारों ओर प्रकार घिरवाई जाती थी ।[7] स्तूप के चारों ओर सात रत्नमय "द्वारकोष्ठक" का निर्माण किया जाता था ।[8] चारों कोनों में सुगन्धित जल से भरी पुष्करिणियाँ बनाई जाती थीं जिनमें नीले कमलों को आरोपित किया जाता था ।[9] सुधा भोजन जातक से पता चलता है कि सर्वप्रथम स्तूप के निर्माण के लिए भूमि को समतल बनाया जाता था । स्तूप पूरा बन जाने के बाद घेरा, वेदिका तोरणद्वार आदि बनाये जाते थे ।[10] प्रदक्षिणा पथ भी निर्मित किया जाता था ।[11]

विहार और संघाराम :

विहार बौद्ध भिक्षुओं का आवास गृह था । जहाँ भिक्षुओं का संघ निवास

---

१. महापरिनिब्बानसुत (हिन्दी अनुवाद), पृ० १९७-९९
२. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५९; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६८
३. ,, ,, १, पृ० १४; ,, ,, १, पृ० ७३
४. ,, ,, ३, पृ० ३५५, १७५; जा० अ० हि० जि० ३, पृ० ३१८; जि० ४, पृ० ३५
५. जा० अ० रो० जि० २, पृ० २५६; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४६३
६. ,, ,, ४, पृ० २२९; ,, ,, ४, पृ० ४३०
७. ,, ,, ४, पृ० २२९; ,, ,, ४, पृ० ४३०
८. वही
९. वही
१०. जा० आ० रो० जि० ५, पृ० ५११; जा० अ० हि० जि० ५, पृ० ५८९
११. ,, ,, १, पृ० ३१; ,, ,, १, पृ० ९३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करता था, उस बड़े विहार को संघाराम कहते थे।[1] संघारामों में उपोसघ (प्रत्येक महीने की २ अष्टमी, अमावस्या और पूर्णमासी ये चारों दिन उपोसघ कहलाते थे) को भिक्षु एकत्र होकर सांघिककृत्य करते थे।[2]

विहार, गर्मी-सर्दी से, हिंस्र-जन्तुओं से, रेंगने वाले (सर्पादि) जानवरों से, मच्छरों से, बूंदा-बांदी से, वर्षा से और घोर हवा-धूप से रक्षा करता है। ध्यान और योगाभ्यास के लिए (उपयोगी) है, इसलिए भगवान बुद्ध ने विहार-दान को श्रेष्ठ दान (अग्रदान) कहा है।[3] बोधिसत्त्व काश्यप नामक ब्राह्मण ने बुद्ध के उपदेश को सुनकर दस खरब धन व्यय करके विहार (संघाराम) बनवाया था।[4] अनाथपिण्डिक ने रास्ते में पैंतालिस योजन तक लाख-लाख खर्च करके योजन-योजन की दूरी पर विहार बनवाये थे। अट्ठारह करोड़ सुवर्ण मुद्राएँ (असर्फी) खर्च करके उसने जेतवन (श्रावस्ती) में सुन्दर विहार बनवाकर भगवान को दान दिया था।[5] राजा प्रसेनजित ने जेतवन के समीप राजकाराम विहार बनवाया था।[6] राजगृह के समीप ही तपोदाराम विहार था।[7] कोसाम्बी के समीप बदीरकाराम विहार था।[8] अजातशत्रु ने गया सीस (पहाड़ी) पर विहार बनवाया था।[9] कपिलवस्तु के समीप ही न्योग्रोधाराम विहार था।[10] खण्डहाल जातक में प्रव्रजितों के लिए सात विहार बनवाये

---

१. जा० अ० रो० जि० १, पृ० १४७; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १७०–७१, २४०
२. जा० अ० रो० जि० १, पृ० ४२५; जा० अ० हि० जि० २, पृ० ४९
३. ,, ,, १, पृ० ९३-९४, ,, ,, १, पृ० १७०-७१
४. ,, ,, १, पृ० ३८-३९; ,, ,, १, पृ० १०२
५. दत्त, यन०-अरली मोनास्टिक बुद्धिज्म, पृ० १०९
जा० अ० रो० जि० १, पृ० ९२; जा० अ० हि० जि० १, पृ० १६९
६. ,, ,, २, पृ० १५; ,, ,, २, पृ० १७९
७. ,, ,, २, पृ० ५६; ,, ,, २, पृ० २२७
८. ,, ,, १, पृ० १६०; ,, ,, १, पृ० २५६
९. ,, ,, १, पृ० ५०८; ,, ,, २, पृ० १५७
१०. ,, ,, ४, पृ० ५०, २८२, जा० अ० हि० जि० ४, पृ० २०८, २५०, ४८६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गये थे।[1] परिव्राजकाराम और सुदर्शन महाविहार का भी उल्लेख हुआ है।[2]

इस प्रकार जातकों के अध्ययन से कला के विभिन्न अंगों पर विस्तृत प्रकाश पड़ता है, जिससे पता चलता है कि उस युग की स्थापत्य कला उच्च स्तर की थी। सात-सात मंजिल वाले भवनों का निर्माण किया जाता था। भवनों में पूर्णरूपेण शुद्ध, स्वच्छ वायु के गमनागमन के गोवाक्ष निर्मित थे तथा भवनों की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

१, जा० अ० रो० जि० ६, पृ० १४८; जा० अ० हि० जि० ६; पृ० १३३
२. ,, ,, १, पृ० १२; जि० ३, पृ० ८२;
जा० अ० हि० जि० १, पृ० ६९; जि० ३, पृ० २४९

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सहायक ग्रन्थ-सूची

१—मूलाधार ग्रन्थ

ग्रन्थ का पूरा नाम	सम्पादक/अनु०/लेखक	प्रकाशन स्थान	सन्/संवत्
अंगुत्तर निकाय	आर० मारिस ऐण्ड ई० हार्डी	पालि टेक्सट् सोसाइटी, लंदन	१८८२-१९००
अंगुत्तर निकाय	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	
अपादान	एम० ई० लिले	पालि टेक्सट् सोसाइटी, लंदन	
खुद्दक निकाय	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	
खुद्दक निकाय	राहुल सांकृत्यायन, आनन्द कोशल्यायन और जगदीश कश्यप		१९३७
चुल्लनिद्देश	डा० स्टीड	पालि टेक्सट् सोसाइटी, लंदन	१९१८
चुल्लवग्ग	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	१९५६
जातक (रोमन लिपि)	बी० फोसबोल	ट्रूवनेर एण्ड कम्पनी; लन्दन	१८७७-९६
जातक (अंग्रेजी)	ई० बी० कौवेल	लन्दन	१९५७
जातकट्ठकथा (पठमो भागो)	भिक्षु धर्मरक्षित	भारतीय ज्ञानपीठ, काशी	१९५१
जातक संग्रह	एन० बी० टैगर	पूना	१९३६
दीघ निकाय	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	१९५८
दीघ निकाय	राइज डेविड्स और कारपेण्टर, जे० ई०	लंदन	१८९०-१९११
दीपवंश	एच० ओल्डनबर्ग	लंदन	१८७९
धम्मपद (हिन्दी अनुवाद)	राहुल सांकृत्यायन	प्रयाग	१९३३

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धम्मपदट्ठकथा	एच० सी० नारमैन	पालि टेक्सट् सोसाइटी (५ जिल्दे) लंदन	१९०९
पंपचसूदनी	जी०एच० उड्स और डी० कोसाम्बी	लंदन	१९२२
मज्झिम निकाय	एफ० वी० ट्रंकनर एण्ड आर० चारमर	पालि टेक्सट् सोसाइटी, लंदन	१८८८-८९
मज्झिम निकाय	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	१९५८
महापरिनिब्बान सुत्त	भिक्षु कित्तिमा (सं०)	अ० चोजन जाक्याद बुद्धाब्द, वर्मा	२४८५
महापरिनिब्बान सुत्त (हिन्दी अनु०)	भिक्षु धर्मरक्षित	बनारस	सं० २०१५
महावंश	गुणपाल वीर शेखर	अनुला प्रेस, कोलम्बो	१९५५
महावंश	भदन्त आनन्द कौसल्यायन	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	१९४२
महावंश	विलियम जोजर	आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, लंदन	१९०८
महावग्ग	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	१९५६
मिलिन्दपञ्हो (इंगलिश ट्रान्सलेशन)	टी० डब्ल्यू० राइज डेविड्स	से० बु० इ० लंदन	१८९०-९४
मिलिन्दपञ्हो	आर० डी० वडेकर	यूनिवर्सिटी आफ बम्बई	१९४०
विनयपिटक	एच० ओल्डेनबर्ग	पालि टेक्सट् सोसाइटी, लंदन	१८७९-८३
सुत्तनिपात	भिक्षु धर्मरत्न	महाबोधि सभा सारनाथ	१९५१
संयुक्त निकाय	भिक्षु जगदीश कश्यप	श्री नालन्दा महाविहार	
सारत्थप्पकासिनी	एफ०एल० उडवर्ड	लंदन	१९३२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संस्कृत-ग्रन्थ

अवदानशतक जि० १	जे० एस० स्पेयर (सं०)	सेन्टपिटर्स बर्ग	१९०२
अवदान शतक जि० २	जे०एस० स्पेयर (सं०)	सेन्टपिटर्स बर्ग	१९०९
करुणा पुण्डरीक	राय शरतचन्द्र दास बहादुर तथा शरदचन्द्र शास्त्री (सं०)	बुद्धिष्ट टेक्सट् सोसाइटी, कलकत्ता	१८९८
दिव्यावदान	ई०बी० कोवल तथा आर० ए० नील (सं०)	कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस	१८८६
दिव्यावदान	पी०एल० वैद्य (सं०)	मिथिला विद्यापीठ, दरभंगा	१९५९
बुद्धचरित	ई०एच० जान्सटन (सं०)	कलकत्ता, वैप्टिस्ट मिसन प्रेस	१९३६
बुद्धचरित	ई० बी० कोवल सं०)	आक्सफोर्डक्लेरेण्डन प्रेस	१८९३
बुद्ध चरित (प्रथम भाग)	सूर्यनारायण चौधरी (सं० तथा अनु०)	संस्कृत भवन कठौतिया, पूर्णिया (बिहार)	१९५५
दुद्धचरित (द्वितीय भाग)	सूर्यनारायण चौधरी (सं० तथा अनु०)	संस्कृत भवन कठौतिया, पूर्णिया (बिहार)	१९५३
महावस्तु अवदान (३ जिल्दों में)	ई० सेनार्ट (सं०)	पेरिस	१८८२-९७
महावस्तु (इंगलिश ट्रान्सलेशन)	जे० जे० जौन	लंदन	१९४९
महावस्तु अवदान	डा० राधागोविन्द वसाख	कलकत्ता	१९६३-६५
ललित विस्तर (२ जिल्दो में)	एस० लेफमैन (सं०) हाल ए० एम०		१९०२-१९०८
ललित विस्तर	राजेन्द्रलाल मित्रा (सं)	एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता	१८७७
ललित विस्तर (इंगलिश ट्रान्सलेशन)	जे० स्पेयर	एस० बी० बी०, लंदन	१८७५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र	नलिनाक्ष दत्त (सं)	एसियाटिक सोसाइटी कलकत्ता	१९५३
सुखावती व्यूह	एफ० मैक्समूलर और ब्यूनियों नेजियो (सं)	आक्सफर्ड	१८८३
सौन्दरनन्द	हर प्रसाद शास्त्री (सं)	कलकत्ता	१९१०
सौन्दरनन्द (२ जिल्दों में)	जान्सटन (सं)	लंदन	१९३२
सौन्दरनन्द	सूर्यनारायण चौधरी (सं० तथा अनु०)	संस्कृत भवन, कठौतिया, पूर्णिया (बिहार)	१९४८
अर्थशास्त्र कौटिल्य (२ जिल्दों में)	त० गणपति शास्त्री (सं०)	त्रिवेन्द्रम	१९२४
आर्य मंजुश्री मूलकल्प (३ जिल्दों में)	त० गणपति शास्त्री	त्रिवेन्द्रम	१९२०-२५
ऋग्वेद संहिता		अजमेर वैदिक यंत्रालय	सं० १९३७
चरक संहिता	अग्निवेशमहर्षि	बम्बई	१९२२
जातक माला (आर्यसूर)	पी० एल० वैद्य	मिथिला विद्यापीठ	१९५९
बुद्धचर्यावतार (आचार्य शान्तिदेव कृत)	शान्ति भिक्षु शास्त्री (सं०)	बुद्ध विहार लखनऊ	२४९९ बुद्धाब्द
महाभारत	पं० रामनारायणदत्त शास्त्री	गीताप्रेस, गोरखपुर	सं० २०२३
रामायण	पं० रामनारायणदत्त शास्त्री	गीताप्रेस, गोरखपुर	सं० २०१७

आधुनिक ग्रन्थ

अ. अंग्रेजी ग्रंथ—

अग्रवाल, बी० एस०	इण्डिया ऐज़ नोन टु पाणिनि	लखनऊ	१९५३
अम्बेडकर, बी आर०	द बुद्ध एण्ड हिज़ धम्म	सिद्धार्थ कालेज	१९५७
अल्टेकर, ए० एस०	एजूकेशन इन ऐंशेण्ट इण्डिया	बनारस	१९५१
ओमप्रकाश	फूड एण्ड ड्रिंक्स	दिल्ली	१९६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कनिंघम, ए०	ऐशेण्ट ज्याग्राफी आफ इण्डिया	वाराणसी	१९७५
कनिंघम, ए०	स्तूप आफ भरहुत	वाराणसी	१९६२
कुमार स्वामी, ए० के०	यक्षाज	वाशिंगटन	
काला, एस० सी०	भरहुत वेदिका	इलाहाबाद	१९५१
गिल्स, एच० ए०	द ट्रेवल्स आफ फाहियान	कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी	१९२३
जायसवाल, के० पी०	हिन्दू पालिटी	बंगलौर	१९५५
जायसवाल, के० पी०	हिस्ट्री आफ इण्यिा ए० डी० १५०-३५०	लाहौर	१९३३
जेम्स फरगुशन	ट्री एण्ड सरपेण्ट वरशिप इन इण्डिया	दिल्ली	१९७१
जैन, जे० सी०	लाईफ इन ऐशेण्ट इण्डिया	बम्बई	१९४७
डे, एन० एल०	ज्याग्राफिकल डिक्शनरी आफ ऐशेण्ट इण्डिया	लन्दन	१९२७
थपलियाल, के० के०	स्टडीज इन ऐशेण्ट इण्डियन सीलस	लखनऊ	१९७२
दत्त, नलिनाक्ष	एन अर्ली मोनस्टिक बुद्धिज्म	कलकत्ता	१९७१
दत्त, आर० सी०	ए हिस्ट्री आफ सिविलाइ-जेशन इन ऐशेण्ट इण्डिया	कलकत्ता	१८९१
दास, एस० के०	द इकनामिक हिस्ट्री आफ ऐशेण्ट इण्डिया		१९२४
पाण्डेय, आर० बी०	हिस्टारिकल एण्ड लिटरेरी इन्सक्रिप्सन्स	चौखम्बा, बनारस	१९६२
पार्जिटर, एफ० ई०	ऐशेण्ट इण्डियन हिस्टारि-रिकल ट्रेडीशन्स	दिल्ली, वाराणसी पटना	१९६२
पुरी, बी० एन०	इण्डिया ऐज़ डिसक्राईब्ड बाई अर्ली ग्रीक राइटर	इलाहाबाद	१९३९
पुरी, बी० एन०	इण्डियन हिस्ट्री ए-रिव्यू	बम्बई	१९६०
फिक, रिचर्ड	द सोसल आर्गेनाइजेशन इन नार्थ ईष्ट इण्डिया	कलकत्ता	१९२०
फो कोव की	द पिलग्रिमेज आफ फाह्यिान	कलकत्ता	१९४८
बुद्ध प्रकाश	इण्डिया ऐण्ड द वर्ल्ड	होशियारपुर	१९६४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बरुआ, बी० एम०	अशोक एण्ड हिज़ इन्स-क्रिप्सन्स	कलकत्ता	१९४६
बरुआ, बी० एम०	सीलोन लेक्चर	कलकत्ता	१९४५
ब्राउन, सी० जे०	क्वायन्स आफ इण्डिया	कलकत्ता	१९२२
भण्डारकर, डी० आर०	ऐशेण्ट इण्डियन न्यूमिस-मेटिक्स	कलकत्ता	१९२१
मजूमदार, आर० सी०	ऐशेण्ट इण्डिया	पटना	१९६०
मजूमदार, आर० सी०	ऐशेण्ट इण्डियन हिस्ट्री एण्ड सिविलाइजेशन	कलकत्ता	१९२७
मजूमदार, आर० सी० तथा अन्य	द क्लासिकल आकाउण्ट्स आफ इण्डिया	कलकत्ता	१९६०
मलालशेखर, जी० पी०	डिक्शनरी आफ पालि प्रापर नेम्स	लन्दन	१९६०
मार्शल, सर जान	द मानूमेण्टस आफ साँची	आर्क्योलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया ऐनुवल रिपोर्ट	१९१३-१४
मार्शल सर जान	ए गाईड टू साँची	कलकत्ता	१९५५
मुकर्जी, आर० के०	इण्डियन सीपिङ्ग	बम्बई, कलकत्ता मद्रास	१९५७
मुकर्जी आर० के०	अशोक	दिल्ली	१९५५
मुकर्जी आर० के०	ऐशेण्ट इण्डियन एजूकेशन	लन्दन	१९४७
मेहता आर० एल०	प्री० बुद्धिष्ट इण्डिया	बम्बई	१९३९
मैके, ई०	द इण्डस सिविलाईजेशन	लन्दन	१९३५
राय चौधरी, एच० सी	पोलिटिकल हिस्ट्री आफ ऐशेण्ट इण्डिया	कलकत्ता	१९५०
राइज डेविड्स, टी० डब्ल्यू०	बुद्धिष्ट इण्डिया	दिल्ली पटना वाराणसी	१९७१
राइज डेविड्स, टी० डब्ल्यू०	पालि इंगलिस डिक्सनरी	लन्दन	१९५९
राइज डेविड्स, टी० डब्ल्यू०	मिलिन्दपञ्हो (इंगलिश एस० के बी० आक्सफर्ड ट्रान्सलेशन)		१८९०-९४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रंप्सन, इ० जो०	कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया जि० १	कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी	१९२२
ला० बी० सी०	ज्याग्राफी आफ अर्ली बुद्धिज्म	भारतीय पब्लिशिंग हाउस	१९७३
ला० बी० सी०	हिस्टारिकल ज्याग्राफी आफ ऐशेन्ट इण्डिया	पेरिस	१९५४
ला० बी० सी०	ज्याग्राफिकल ऐसेज, भाग १	लंदन	१९३७
ला० बी० सी०	इण्डिया एज़ डिसक्राईब्ड इन अर्ली टेक्सट् आफ बुद्धिज्म एण्ड जैनिज़्म	लंदन	१९४१
वाटर्स	आन युअन्च्वाग्स ट्रेवल्स इन इण्डिया	रायल एसियाटिक सोसइटी	१९०४
विलयम, ए० स्मिथ०	ऐशेण्ट एजूकेशन	न्यूयार्क	१९५५
विन्टर नित्ज	हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर जि० २	कलकत्ता	१९६३
वी० ट्रंकनर	पालि डिक्सनरी	द रायल देनिस एकेडेमी	१९२९
वोगोल, जे० पी०	इण्डियन सरपेण्ट लोर-आर द नागास इन हिन्दू जीजेण्ट एण्ड आर्ट	वाराणसी	१९७२
श्रीवास्तव बलराम	ट्रेड एण्ड कामर्स इन ऐशेण्ट इण्डिया	वाराणसी	१९६८
सरकार, जदुनाथ	इण्डिया थ्रो द ऐजेज़	कलकत्ता	१९४४
सरकार, डी० सी०	सेलेक्ट इन्सक्रिप्सन्स	कलकत्ता	१९६५
साहनी, डी० आर०	कैटलाग आफ द म्यूजियम आफ आर्क्यलाजी ऐट सारनाथ	कलकत्ता	१९५३
हॉर्नर, आई० बी०	ओमेन अण्डर प्रिमेटिव बुद्धिज्म	दिल्ली, बम्बई, मद्रास	१९७५
हापकिन्स, ई० बी०	एपिक मैथालोजी	ट्रूबनर	१९१५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब—हिन्दी ग्रन्थ—

अग्रवाल, वी० एस०	गुप्त अभिलेख	पटना	१९७४
अग्रवाल, वी० एस०	पाणिनिकालीन भारत	बनारस	सं० २०१२
अग्रवाल, वी० एस०	भारतीय कला	वाराणसी	१९६६
अवस्थी, ए० वी० एल०	प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप	कैलाश प्रकाशन	१९६४
अवस्थी, ए० वी० एल०	गरुड़ पुराण-एक अध्ययन	लखनऊ	१९६८
अवस्थी, ए० वी० एल०	प्राचीन भारतीय भूगोल	लखनऊ	१९७२
अलतेकर, अनंत सदाशिव	प्राचीन भारतीय शासन पद्धति	इलाहाबाद	१९५९
आचार्य नरेन्द्रदेव	बौद्ध धर्म दर्शन	पटना	१९५६
उपाध्याय, भरत सिंह	बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन	कलकत्ता	सं० २०११ वि० १८८३
उपाध्याय, भरत सिंह	बुद्धकालीन भारतीय भूगोल	प्रयाग	सं० २०१८
उपाध्याय, भरत सिंह	पालि साहित्य का इतिहास	प्रयाग	सं० १८८५
उपाध्याय, विद्यानन्द मुनि	तीर्थंकर वर्द्धमान	इन्दौर	१९७५
उपाध्याय, बलदेव	बौद्ध दर्शन	बनारस	१९४६
उपाध्याय, भगवतशरण	प्राचीन भारत का इतिहास	पटना	
उपाध्याय, वासुदेव	प्राचीन भारतीय मुद्राएँ	पटना	१९७१
उपाध्याय, वासुदेव	भारतीय सिक्के	इलाहाबाद	सं० २००५
उपाध्याय, रामजी	प्राचीन भारत की सामाजिक संस्कृति	इलाहाबाद	१९६३
उपाध्याय, रामजी	प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका	इलाहाबाद	१९६६
उपाध्याय, रामजी	भारत की संस्कृति साधना	इलाहाबाद	१९६७
उपाध्याय, रामजी	भारत की प्राचीन संस्कृति	इलाहाबाद	१९४८
काश्यप, भिक्षु जगदीश	संयुक्त निकाय, पहला दूसरा भाग	सारनाथ (बनारस)	१९५४
काश्यप, अर्जुन चौबे	आदि भारत	वाणी विहार	१९५३
काणे, महामहोपाध्याय पाण्डुरङ्ग	धर्मशास्त्र का इतिहास	लखनऊ	१९६५

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कनिंघम, अलेग्जेंडर	भरहुत स्तूप	भारतीय पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, वाराणसी	१९७५
कोशाम्बी, धर्मानन्द	भगवान बुद्ध	दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	१९५६
गैरोला, वाचस्पति	भारतीय चित्र[illegible]	इलाहाबाद	१९५८
चतुर्वेदी, ध्रुवनाथ	बौ[illegible]ारत	इलाहाबाद	१९५८
चतुर्वेदी, परशुरा[illegible]	बौद्ध साहित्य में सांस्कृतिक झलक	इलाहाबाद	१९५८
जैन, हीरालाल	भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान	भोपाल	१९६२
जैन, कोमलचन्द्र	बौद्ध और जैन आगमों में नारी जीवन	अमृतसर	१९६७
जैन, जगदीशचन्द्र	जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज	वाराणसी	
जैन, जगदीशचन्द्र	प्राकृत जैन कथा साहित्य	अहमदाबाद	१९७१
जौहरी, मनोरमा	प्राचीन भारत में वर्णाश्रम व्यवस्था	वाराणसी	१९६९
तिवारी, महेश	निदान कथा	वाराणसी	१९७०
त्रिपाठी, श्री हवलदार	बौद्ध धर्म और विहार	पटना	१९६०
दत्त, नलिनाथ तथा श्री कृष्णदत्त वाजपेयी	उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास	लखनऊ	१९५६
दीक्षित, प्रेम कुमारी	महाभारत में राज्य-व्यवस्था	अर्चना प्रकाशन	१९७०
दुबे, सत्यमित्र	मनु की समाज व्यवस्था	इलाहाबाद	१९६४
नगेन्द्र	भारतीय साहित्य संस्कृति और कला	दिल्ली	१९७२
पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र	बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास	लखनऊ	१९६३
पाण्डेय, राजबली	हिन्दू संस्कार	वाराणसी	१९६६
पाण्डेय, विमल चन्द्र	भारतवर्ष का सामाजिक इतिहास	इलाहाबाद	१९६०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुरी, बी० एन०, चोपड़ा पी० एन०, दास, एम० एन०	भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास	दि मैक-मिलन कंपनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड १९७५
पुरी, बी० एन०	भारतीय संस्कृति और इतिहास	इलाहाबाद १९५८
बरजा, बेनीमाधव	भरहुत	कलकत्ता १९३४
बाजपेयी, कृष्णदत्त	प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध	सागर १९७३
बाजपेयी, कृष्णदत्त	ब्रज का इतिहास—[illegible] खण्ड	मथुरा सं० २०११
भदन्त आनन्द कौशल्यायन	अंगुत्तर निकाय (हिन्दी-अनु[illegible])	महाबोधि
भदन्त आनन्द कौशल्यायन	पालि हिन्दी-कोश	[illegible] पटना [illegible]५
भदन्त आनन्द कौशल्यायन	जातक हिन्दी अनुवाद (६ जिल्दों में)	हिन्दी साहित्य संमेलन, १९४१-प्रयाग सं० २०१३
मजूमदार, आर० सी०	प्राचीन भारत में संघठित जीवन	सागर १९६६
मिश्र, शिवनन्दन	प्राचीन श्री लंका का इतिहास	लखनऊ १९७४
मिश्र, इन्दुमती	भारतीय संस्कृति के मूलतत्व	कानपुर
मिश्र, जयशंकर	प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास	पटना १९७४
मिश्र, शिवशेखर	भारत का सांस्कृतिक विकास	लखनऊ विश्व-विद्यालय सं०२०१०
मुकर्जी, आर० के०	हिन्दू सभ्यता	राजकमल प्रकाशन १९५५
मीत्तल, प्रभुदयाल	वृज का सांस्कृतिक इतिहास	दिल्ली, पटना १९६६
मोतीचन्द	सार्थवाह (प्राचीन भारत की पद्धति)	पटना १९५३
मोतीचन्द्र	प्राचीन भारतीय वेश-भूषा	भारती भंडार प्रयाग सं० २००७ वि०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राय, चौधरी एच० सी०	प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास	इलाहाबाद	१९७१
राय, कृष्णदास	भारत की चित्रकला	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी	
राय, उदयनारायण	प्राचीन भारत में नगर तथा नगर जीवन	इलाहाबाद	१९६५
राय, मन्मथ	प्राचीन भारतीय मनोरंजन	इलाहाबाद	सं० २०१३ वि०
राहुल, सांकृत्यायन	पालि साहित्य का इतिहास	लखनऊ	१९६३
राहुल, सांकृत्यायन	दीघ निकाय (हिन्दी अनुवाद)	महाबोधि सभा सारनाथ	१९४२
राहुल, सांकृत्यायन	विनय पिटक (हिन्दी अनुवाद)	महाबोधि सभा सारनाथ (बनारस)	१९३५
राहुल, सांकृत्यायन	मज्झिम निकाय (हिन्दी अनुवाद)	सारनाथ (बनारस) बुद्धाब्द	२५०८
राहुल, सांकृत्यायन	बुद्धचर्या	बनारस	१९५२
राधाकृष्णन	धर्म और समाज		
लाल, अँगने	संस्कृत बौद्ध साहित्य में भारतीय जीवन	कैलाश प्रकाशन लखनऊ	१९६८
लाल, अँगने	अश्वघोषकालीन भारत	कैलाश प्रकाशन लखनऊ	१९७३
लाहा, विमल चरण	प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल	लखनऊ	१९७२
लूनिया, बी० एन०	भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास	आगरा	१९७१
वर्मा, अविनाश बहादुर	भारतीय चित्रकला का इतिहास	बरेली	१९६८
विद्यालंकार, सत्यकेतु	प्राचीन भारत का धार्मिक सामाजिक और आर्थिक जीवन	मंसूरी	१९७५
विद्यालंकार, हरिदत्त	प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास	लखनऊ	१९७२
'वियोगी' पं० मोहन लाल महतो	जातक कालीन भारतीय संस्कृति	पटना	१९५८
शर्मा, सरनामसिंह	पालि-साहित्य और समीक्षा	दिल्ली	१९६१

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शर्मा, गजानन	प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी जीवन	इलाहाबाद	१९७१
शर्मा, मथुरालाल	भारतीय संस्कृति का इतिहास	आगरा	१९५७
शास्त्री, हरगोविन्द	मनुस्मृति	वाराणसी	१९७०
शास्त्री, नेमीचन्द्र	तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा	अखिल भारतवर्षीय दि० जैन विद्वत्परिषद्	१९७४
शास्त्री, कैलाशचन्द्र	जैन धर्म	भारतीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा	१९४८
शास्त्री, मङ्गलदेव	भारतीय संस्कृति का विकास	वाराणसी	१९६६
शास्त्री, देवेन्द्रमुनि	साहित्य और संस्कृति	वाराणसी	१९७०
शुल्क, विश्वनाथ	हिन्दू समाज व्यवस्था	लखनऊ	सं० २०२६ वि०
सिंह, मदन मोहन	बुद्धकालीन समाज और धर्म	पटना	१९७२

शोध पत्रिकाएँ

अंग्रेजी—

आर्क्योलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया ऐनुवल रिपोर्ट
इण्डियन एक्टीक्वेरी
इण्डियन कल्चर
इण्डियन हिस्टारिकल क्वारटरली
एनाल्स आफ द भण्डारकर ओरेन्टल रिसर्च इन्सटीट्यूट
एपोग्राफिया इण्डिका
जर्नल आफ इण्डियन हिस्ट्री
जर्नल आफ रायल एसियाटिक सोसाइटी
जर्नन आफ रायल एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल

हिन्दी—

कल्याण
नागरीप्रचारिणी पत्रिका
आज

●

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो बी एन० पुरी
संग्रह
लखनऊ

State Museum Library
7127
Lucknow

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुस्तक के विषय में

जातक कथाएँ बौद्ध साहित्य की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय पथ-प्रदर्शिका रही है। मूलतः गाथाओं के रूप में है जो खुद्दकनिकाय का एक भाग है जिनकी संख्या लगभग 550 है। ये गाथाएँ जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित है और हर एक परिस्थिति में दिशा निर्देश करती है। यही इनकी सर्वाधिक उपयोगिता है।

डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव ने पालि जातकों का गहन अध्ययन कर तत्कालीन सामाजिक, राजनीति, अर्थ, धार्मिक भौगोलिक दशा कला साहित्य और इतिहास पर व्यापक प्रकाश डाला है। समग्र रूप से यह ग्रन्थ भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन कर्त्ताओं के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ. अंगने लाल
एम. ए. (स्वर्णपदक प्राप्त)
साहित्य रत्न, पी. एच. डी., डी. लिट
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुस्तक के विषय मे

जातक कथाएँ बौद्ध साहित्य की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय पथ-प्रदर्शिका रही है। मूलतः गाथाओं के रूप में है जो खुद्दकनिकाय का एक भाग है जिनकी संख्या लगभग 550 है। ये गाथाएँ जीवन के प्रत्येक पक्ष से सम्बन्धित है और हर एक परिस्थिति में दिशा निर्देश करती है। यही इनकी सर्वाधिक उपयोगिता है।

डॉ. कृष्णा कुमारी श्रीवास्तव ने पालि जातकों का गहन अध्ययन कर तत्कालीन सामाजिक, राजनीति, अर्थ, धार्मिक भौगोलिक दशा कला साहित्य और इतिहास पर व्यापक प्रकाश डाला है। समग्र रूप से यह ग्रन्थ भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन कर्त्ताओं के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

डॉ. अंगने लाल
एम. ए. (स्वर्णपदक प्राप्त)
साहित्य रत्न, पी. एच. डी., डी. लिट
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ